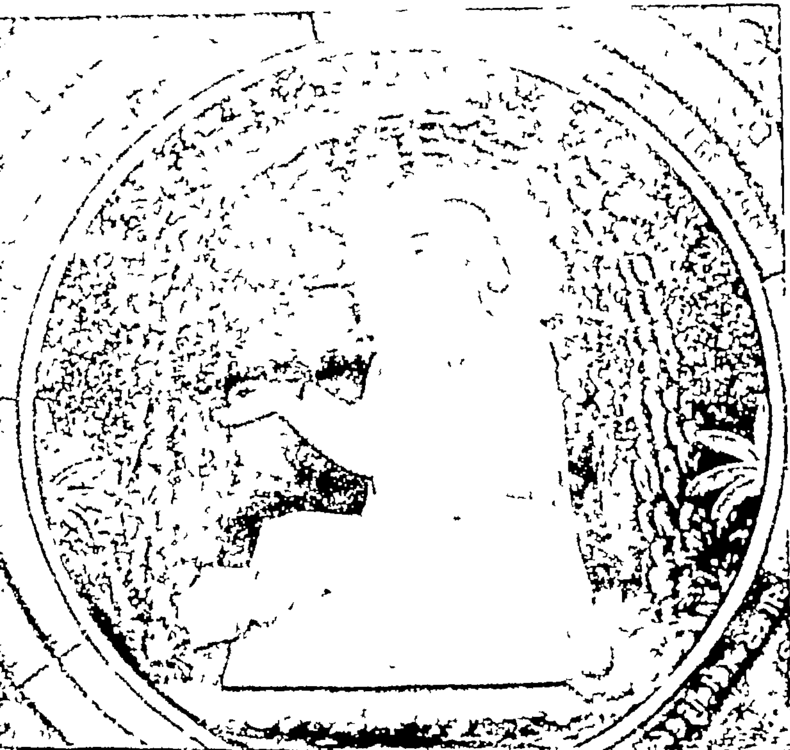
प्रकाशक
द्वारकादास परीख
मंत्री
अष्टछाप स्मारक समिति, मथुरा ।

प्रथमावृत्ति १००० प्रतियाँ
जन्माष्टमी, २०१५ वि०

मुद्रक
ोकीनाथ भीतल
अग्रवाल प्रेस, मथुरा.



भगवत्सेवा में कीर्तन भक्ति को सर्व प्रथम स्थान देने वाले
महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जी
प्राकट्य सवत् १५३५ वैशाख कृष्ण ११



कीर्तन प्रणाली के आदि निर्माता, अष्टछाप के संस्थापक

* संपादन के विषय में *

श्रीद्वारकाधीश जी तृतीय गृह के वर्ष भर के 'कीर्तन-प्रणाली के पद' नामक ग्रन्थ का सम्पादन व संशोधन इसी गृह के अधिपति विद्यमान परम पूज्य व्रजभाषा एवं कीर्तन साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् आचार्य-रत्न गो० श्री व्रजभूषण लाल जी द्वारा हुआ है। आज से पूरे पच्चीस वर्ष पहले वि० सं० १९९० मे जव मेरा निवास कांकरौली मे था तव पूज्यपाद महाराजश्री को अपने निजी प्राचीन हस्त-लिखित संग्रहो के आधार पर अपने यहां मदिर मे गाये जाने वाले इन कीर्तनो का सपादन करते हुए मैंने देखे थे। उस समय पू० पा० महाराज श्री मुद्रित एवं अमुद्रित कीर्तनो की प्रतियो को मिलाते हुए प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध पदों का सकलन, सपादन एवं सशोधन जिस लगन से और गौर पूर्वक करते थे उसको देख कर मुझे वड़ा ही आश्चर्य होता था। क्यों कि उस समय आपकी केवल वाईस वर्ष की ही उम्र थी किन्तु तव भी कीर्तन और भाषा सवधी आपका ज्ञान प्रौढ विद्वानो को भी मात करता था। मुझे स्मरण है कि व्रजभाषा और कीर्तन के एक मथुरास्थ प्रसिद्ध विद्वान को उस समय आपने पूछा था कि 'देवो के द्वारे तें निकसो देवो दुल्हन' और 'देवो के द्वारे ते निकसो प्यारी दुल्हन' इन दो पाठो मे कीर्तन के भाव की दृष्टि से किस पाठ को ग्रहण करना चाहिये। उक्त विद्वान् ने झट कह दिया कि 'प्यारी दुलहन' वाला पाठ ही रखना चाहिए। तव पू० पा० महाराज श्री ने कहा कि नही अभी तो वह कन्या है इसलिये 'प्यारो' की अपेक्षा 'देवी' पाठ ही रखना उत्तम होगा।

उस समय पू. पा. महाराज श्री ने रात और दिन श्रम लेकर ७६१ पदो का संकलन, संपादन और सशोधन किया था। जैसे ही मन्दिर की सेवा पहुँच कर वाहर आते थे वैसे ही इस कार्य मे आप सलग्न हो जाते थे। उस समय भोजन आदि कार्यो मे भी वड़ा विलव हो जाता था। आप संपादन आदि के अनन्तर इन पदो की टाइप-प्रति भी अपने हाथ से हो करते थे।

पू. पा महाराज श्री जैसे विद्वान् हैं वैसे उदार भो हैं। उसी समय मैंने आपके समक्ष आपकी टाइप की हुई प्रति की प्रतिलिपि करने की इच्छा प्रकट की। आपने उसे सहर्ष मुझे दी और मैंने उसकी एक प्रतिलिपि कर भी ली। मुझे मेरे साम्प्रदायिक जीवन के प्रारम्भ से ही अर्थात् वारह वर्ष की वय से ही कीर्तन सुनने और समझने की तीव्र इच्छा रहती थी और आज भी है। इसी के फल-स्वरूप मैं अपने ३८ वर्ष के इस साम्प्रदायिक जीवन मे सैकडो कवियो के अप्रसिद्ध, ऐतिहासिक तथा भावना प्रधान पदो का संग्रह अपने हाथो से तैयार कर सका हूँ। उस समय मैं केवल अन्त सुखाय इन पदो का सग्रह करता था। किन्तु यह किसे ज्ञात था कि आगे चल कर इन पदो और भक्त कवियो के चरित्रो का भी प्रकाशन-कार्य श्री हरि मेरे जैसे एक अविद्वान् के द्वारा ही सम्पन्न करेंगे। यही पुष्टिमार्गीय अङ्गीकृति का लक्षण है। अयोग्य को योग्य करना और योग्य की उपेक्षा करना इस प्रकार के भगवान के 'कर्तुम् अकर्तुम, व अन्यथा कर्तुम्' विरुद्ध धर्मो को कौन नही जानता है। अस्तु

पिछले आठ-दस वर्षो से इस प्रणाली के पदो को छपाने की प्रेरणा मुझे कीर्तन-रसिक भगवदीयो द्वारा कई वार होती रहतो थी। किन्तु वह कार्य मेरे लिये असभव-सा था। क्यो कि ये पद तो केवल ७६१ ही थे जव कि वर्ष भर की प्रणाली के पदो की संख्या १२१० के करीव होती है। अतः

❀ कीर्तन-प्रणाली के पदन को शुद्धि-पत्रक ❀

कृपया पढ़ने से पूर्व इन स्थानों को सुधार लीजिये+

पृ० सं.	पंक्ति सं.	अशुद्ध	शुद्ध
५	१६	जगमोहन में	गोपीवल्लभ भोगआये जगमोहन में
६	२०	राग मालव	सेन के दर्शन मे राग मालव
२२	१०	द्वन्द्व	द्वन्द
२५	१६	राग सारंग	राजभोग दर्शन में राग सारंग
२६	११	हरिये ले ले	हरुवे ले ले
२६	२२	राग विलावल	श्रृंगार समय राग विलावल
३८	३	हो वृषभान	हो चंद्रभान
४२	६	'विष्णुदास' प्रमु	'विष्णुदास' प्रमु
४६	४	विसरायो हो जे	विसरायो हो । जे
४७	४	रसकि	रसिक
४८	२३	वाहन दे हे	वाहन दे हो
७०	१४	विलकिर	किलकिर
७२	३	२२७	२२८
७५	११	स्याम को	स्याम कों
८०	६	२५	२५६
८५	३	अनगित	अगनित
८७	६	गोधन सेवक	गोधन के सेवक
८७	२२	भुजमानो रघुपति	भुजमानो । रघुपति
९६	२३	थिलांग	धिलांग
१०८	२१	॥३॥	॥३॥❀३४२❀
१०९	१५	॥३४६॥	॥३४५॥
११६	२१	॥३६६॥	॥३७६॥
११७	१६	ध्यावत	प्यावत
११७	२५	॥५८१॥	॥३८१॥
११८	१६	रे हांक	दे हांक
११९	२४	❀३६०❀	❀३६१❀
१२०	२०	❀१६६❀	❀३६६❀
१२२	४	❀४०४❀	❀४०३❀
१२२	१२	सुर	'सूर'
१२८	१०	उर वाहक	उर दाहक
१३४	२४	हि रामरा .४६७	हित रामराय ..४६८
१३५	२५	॥४॥	॥४॥❀४७०❀
१५०	५	घूम श्रंवर	घूम श्रंवर
१५६	१७	❀५६३❀	❀५६२❀
१६२	१८	❀५७२❀	❀५७१❀
२४१	२४	रागविलावल	राग विलावल ❀श्रृंगार ओसरा❀
२४२	१७	भोरज लजात	भोर जलजात
२४५	२४	वंदो करो	वंदो कोऊ करो
२५६	६	तेंपूजी	तें पूजी ।
२६५	४	❀८२४❀	❀८२६❀
२६५	१६	❀८२५❀	❀८२७❀
२६६	५	❀८२६❀	❀८२८❀
२६६	१४	❀८२७❀	❀८२९❀
२६८	२२	लहां बलि	लहीं । बलि
२८९	२	वाँह धरों	वाँह धरो
२९२	१७	कुच कुंम कुम	कुच कुंभ कुमकुमा
२९४	१३	❀९१३❀	❀९१२❀
२९५	२	॥२॥	॥२॥९१५❀
२९८	८	❀९६०❀	❀९३०❀
३०६	११	खसी सव	सखी सव
३०७	४	॥२॥	॥२॥९७२❀
३२८	१६	है उर	है डर
३३१	२	डरत वारी	डारत वारी
३३३	१४	सुहाय	सुहायो ।
३३४	१५	दसन धुति	दसन द्यति ।
३३६	६	❀१०९❀	❀१०९५❀
३३६	९	❀१०९❀	❀१०९६❀
३३६	१२	❀१०९❀	❀१०९७❀
३६५	५	❀११८❀	❀११८३❀
३६५	१०	❀११८३❀	❀११८४❀
३६५	१३	❀११८४❀	❀११८५❀
३६५	१८	❀११८५❀	❀११८६❀
३६५	२०	❀११८६❀	❀११८७❀
३६६	३	❀११८७❀	❀११८८❀

+कही कही मात्रा तथा बिंदी छपते छपते टूट गई है, पाठक स्वय यथास्थान सुधार लें इसी प्रकार 'ब' के स्थान पर 'व' और मिले हुए शब्दो को भी समझ कर सुधार लें ।

❀ श्रीद्वारकेशोजयति ❀

❀ तृतीय गृह की कीर्तन-प्रणालिका ❀

❀ उत्सव-सूची ❀



मिती	उत्सव
भाद्र० कृष्ण ८	जन्माष्टमी (श्रीकृष्ण-जयन्ती)
,, ,, ९	नन्दमहोत्सव और श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव ... ...
,, ,, १०	. ...
,, ,, १३	छट्ठी को पालना ... ...
,, ,, १४	श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की वधाई
,, शुक्ल १	राधाष्टमी की वधाई ... ...
,, ,, २	श्रीगिरिधरलाल जी को उत्सव
,, ,, ५	श्रीचन्द्रावलीजी को उत्सव
,, ,, ७	... ...
,, ,, ८	राधाष्टमी
,, ,, ९	श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव
,, ,, १०	... .
,, ,, ११	दान-एकादशी
,, ,, १२	श्रीवामन-जयन्ती
,, ,, १३	... ...
,, ,, १४	... ...
,, ,, १५	... ...
आश्विन कृष्ण १	साँझी को प्रारभ
,, ,, ६	श्रीवालकृष्णजी के उत्सव की वधाई
,, ,, १२	श्रीगोपीनाथजी को उत्सव
,, ,, १३	श्रीवालकृष्णजी को उत्सव
आश्विन कृष्ण १४	.. ..
,, शुक्ल १	....
,, ,, १०	दशहरा अन्नकूट की वधाई
,, ,, ११	... ...
,, ,, १३	छप्पन भोग को उत्सव
,, ,, १५	शरद् (रासोत्सव)

मिती	उत्सव
कार्तिक कृष्ण १	... .
,, ,, २	श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की वधाई
,, ,, ५	. .. .
,, ,, ७	श्रीवालकृष्णलालजी के गादी विराजवे को उत्सव
,, ,, १२	....
,, ,, १३	धनतेरस
,, ,, १४	चतुर्दशी
,, ,, ३०	दीपावली
,, शुक्ल १	अन्नकूट
,, ,, २	भाईदूज (यमद्वितीया)
,, ,, ७	... .
,, ,, ८	गोपाष्टमी
,, ,, ११	प्रबोधिनी
,, ,, १२	... .
,, ,, १३	.. ..
मार्गशीर्ष कृष्ण १	व्रतचर्या प्रारम्भ
,, ,, ५	श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की वधाई
,, ,, ८	श्रीगोविन्दरायजी तथा श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव
,, ,, ११	श्रीगोकुलनाथजी के उत्सव की वधाई
,, ,, १३	श्रीघनश्यामजी को उत्सव
,, ,, १४	श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव
,, शुक्ल २	श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव
,, ,, ४	श्रीमथुराधीश श्रीद्वारकाधीश एक सिंहासन पर विराजे

मिती			उत्सव
मार्गशीर्ष	शुक्ल	७	श्रीगुसांईजी के उत्सव की बधाई तथा श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव
पौष	कृष्ण	७	छप्पन भोग को उत्सव
,,	,,	८	... ...
,,	,,	६	श्रीगुसाईजी को उत्सव
,,	,,	१०	.. ..
,,	,,	११	श्रीविट्ठलनाथजी के उत्सव की बधाई
,,	,,	१३	... .
,,	,,	१४	श्रीविट्ठलनाथजी को उत्सव
,,	,,	३०	... ...
मकर.संक्रान्ति के प्रथम दिन भोगी सक्रान्ति			
,,			... ...
माघ	कृष्ण	४	गुप्त उत्सव
,,	,,	६	श्रीविट्ठलनाथजी को जन्म-दिन
,,	शुक्ल	४	... ...
,,	,,	५	वसन्त-पंचमी
,,	,,	६	... .
,,	,,	१४	पूर्णिमा को होरी रोपण हो तो आज
,,	,,	१५	सायंकाल होरी ,, ,, ,,
,,	,,	१५	प्रात.काल ,, ,, ,, ,,
फाल्गुन	कृष्ण	२	श्रीब्रजभूषणलालजी को जन्म-दिन
,,	,,	४	श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव
,,	,,	७	श्रीनाथजी को पाटोत्सव
,,	,,	८	... .
,,	,,	१३	... ...
,,	शुक्ल	१	....
,,	,,	८	होलिकाष्टक .
,,	,,	११	कुंज-एकादशी
,,	,,	१२	... ...
फा०	शुक्ल	१३	८४ खंभ को बगीचा
,,	,,	१४	.. ...
,,	,,	१५	होरी

मिती			उत्सव
चैत्र	कृष्ण	१	दोलोत्सव
,,	,,	२	द्वितीया पाट
,,	,,	६	गुप्त उत्सव
,,	,,	१०	छप्पन भोग को उत्सव
,,	शुक्ल	१	संवत्सरोत्सव
,,	,,	३	गनगौर
,,	,,	४	... ...
,,	,,	६	श्रीयदुनाथजी को उत्सव
,,	,,	८	श्रीब्रजभूषणजी को उत्सव
,,	,,	६	श्रीराम-जयन्ती तथा श्रीब्रजभूषणजी को उत्सव
,,	,,	१०	... ...
,,	,,	११	श्रीमहाप्रभुजी के उत्सव की बधाई
,,	,,	१५	छप्पन भोग को उत्सव
वैशाख	कृष्ण	७	श्रीमथुरेशजी श्रीद्वारकाधीशजी एक सिंहासन पर विराजें
,,	,,	१०	... ...
,,	,,	११	श्रीमहाप्रभुजी को उत्सव
,,	,,	१२	. ... .
,,	,,	१३	श्रीपुरुषोत्तमजी के उत्सव की बधाई
,,	शुक्ल	१	श्रीपुरुषोत्तमजी को उत्सव
,,	,,	३	अक्षय तृतीया
,,	,,	४	....
,,	,,	११	श्रीद्वारकेशजी के उत्सव की बधाई
,,	,,	१३	....
,,	,,	१४	श्रीनृसिंहजी-जयन्ती तथा श्रीद्वारकेशजी को उत्सव
ज्येष्ठ	कृष्ण	५	छप्पन भोग को उत्सव
ज्येष्ठ	शुक्ल	४	श्रीब्रजनाथजी के उत्सव की बधाई
,,	,,	७	श्रीब्रजनाथजी को उत्सव

नोट—इन उत्सवन के पदन की सूची में उत्सवन की पृष्ठ-संख्या दीनी है। सो वाके अनुसार उत्सवन के दिन निकाल लेने।



नित्य की प्रणाली

प्रथम श्री ठाकुर जी जागे तब नित्य श्री महाप्रभु जी को एक पद, और श्रीगुसांई जी को एक पद, ऐसे दो बिनती के पद गावने। पीछे एक जागवे को, और दो कलेवा के, एक जमुना जी को, और एक खंडिता को ऋतु अनुसार गावनो।

बाल लीला और बधाई के दिन खंडिता को पद नहीं गवे।

मंगल भोग सरे 'मंगल मंगलं व्रज भुवि मंगलं' गावनो। मंगला के दर्शन में, शृंगार समय, और शृंगार के दर्शन में ऋतु अनुसार पद गावने।

ग्वाल बोले धैया के पद गावने। बधाई के दिन होय तो बधाई। बसंत धमार के दिन होय तो वाके कीर्तन गावने। ग्वाल के दर्शन में एक पलना सदा गवे।

राजभोग आये ऋतु अनुसार [सीतकाल में घर भोजन के, व्रजभक्तन के घर भोजन के, उष्णकाल में छाक के चार गावने, ऐसे ही वर्षा में वर्षा की छाक के, बधाई के दिन में बड़ी होय तो एक बधाई, छोटी होय तो चार गवे। ऐसे ही बसंत और धमार में बसंत-धमार चार गवे छोटी होय तो] राजभोग सरे अचवायवे को एक पद गावनो तथा एक बीरी को पद गावनो।

राजभोग दर्शन में, भोग दर्शन में और संध्या के दर्शन में ऋतु अनुसार।

साँझ कों ग्वाल बोले दो पद धैया के, बधाई के दिन मे बधाई, बसंत धमार में बसंत धमार।

शयन भोग आये दो पद व्यारू के, दूसरे भोग में एक पद दूध को। शयन के दर्शन में एक पद ऋतु अनुसार। पोढवे में मान को और एक पोढवे को, ऐसे दो कीर्तन गावने। आश्रय के दो तामें एक श्रीमहाप्रभु जी को और एक श्रीगुसांई जी को गावनो।

[नित्य सेवा के कीर्तनों के लिये देखो समयानुसार कीर्तनों की संख्या सूची]

❀ नित्य-सेवा के ऋतु-समयानुसार के पद-कीर्तनन की संख्या-सूची× ❀

(१) जगावे के समय श्रीमहाप्रभुजी की विनती के—१, २, ८५७ इत्यादि।

(२) श्री ठाकुरजी के जगावे के ३, ७३२, ७७०, ८०३, ११६४*, ११६५* इत्यादि।

(३) कलेऊ के—४, ४८६, ११६६* इत्यादि।

(४) श्रीयमुनाजी के—५, ६३५, ६४० से ६६१ इत्यादि

(५) खंडिता के—४६०, ४६४ से ४६८ ८६२†,८६३†, ६६०, १००८* इत्यादि।

(६) मंगल भोगसरवे के—८, इत्यादि।

(७) मंगला दर्शन के—४६३,४६६‡,७३३,७४४†,७७१†, ८०४†, ८७३†, ६२२†,६२३†, १००८*,१०२८*, १०५०*, १०७४* इत्यादि।

(८) शृंगार ओसरा (समय) के—२३५S, २३६S, ३५७, ३५८, ५२४‡, ५२५‡, ७४५, ७४६, ७६७S, ७७३† से ७७५†, ८०५† से ८०७†, ८५५†, ८७५†, ८७६S, ८७७, ८६२†, ८६३†, ८६४†, ६२५†, १०२०*, १०२१*, १०२६*, १०३०*, १०६३*, १०६६* इत्यादि।

(९) शृंगार दर्शन के—७६८, ७४७,७६४,७७८, ७७६, ६०८†, ६२६†, ६६२†, ६८०, १०१३*, १०२२*, १०३१*, १०६७*, ११०४* इत्यादि।

(१०) ग्वाल समे के—१६४, ५०३ (उराहाने तथा खेल के) धैया के—१२०६।

(११) पलना के—५१, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, ७०, ७१.

(१२) राजभोग आये—

‡ घर भोजन के—३६३, ४१४ से ४१७, ५३५, ५३६ से ५३६.

‡ ब्रज-भक्तन के घर भोजन के—३६२, ३६४, ३६५ इत्यादि।

† छाक के—१७६ से १८१, ३८४ से ३८६, ६०८ से ६१३.

* छाक के—११६७ से १२०० इत्यादि।

(१३) राजभोग सरे अचवायवे के-३६६, ३६०,१२०१.

(१४) वीरी के—३६७†, ३६१†, ५३६, ८७६†, १२०२* इत्यादि।

(१५) माला के—७६५ इत्यादि।

(१६) राजभोग दर्शन के—१६३‡, ४६८‡, ७४०†, ७४८†, ७४६†, ७५०†, १००७*, १०१३*, १०३२*, १०३३*, १०८०* इत्यादि।

(१७) भोग के दर्शन के—१६५, ३६३ से ३६६, ७६७.

(१८) संध्या के—१६६, ३६६,३६७,४०४, ४२०, ७६८, १००३*,१०३५*, १०४१* इत्यादि।

(१९) सांझ की धैया के—१२१०

(२०) शयन भोग आये—३६८ इत्यादि।

(२१) दूसरे भोग के—८६० इत्यादि।

(२२) शयन दर्शन—४२१, ४२८, ४३२† से ४३५, ४३६, ४४०‡ से ४४५‡, ४५४, ७५३, ७५५, ७६८ आदि।

(२३) मान के—२७७, ३१३,४०५, ४४१,४४२, ४४७, ४४८, ४५२, ४५७, ५१०, ६२०, ६३४.

(२४) पोढवे के—६८, १०४, १७०, २७८, ३१४,३२०, ३२१, ४०६, ४६३‡, ५११, ५३१‡, ५३२‡, ५३३‡, ७५६, ८०१, ८६६, ६२१.

(२५) आश्रय माहात्म्य आदि के—१५६, १५७, ४२२, १२०५ इत्यादि।

❊ विशेप समय के ❊

(२६) व्रतचर्या के—१२०३, १२०४.

(२७) लालतमालकोस के—५०३ से ५०६ तक।

(२८) पनघट के—६२४ से ६३३, ६७२ इत्यादि।

(२९) फूलमंडली के—७४१, ७८६ इत्यादि।

(३०) फूल के शृंगार के—६७२, ६७३ इत्यादि।

(३१) खसखाने के—६६६, ६७०, ६७१ इत्यादि।

(३२) नाव के—६१७, ६१८ इत्यादि।

(३३) जलविहार के—६६३ से ६६६ इत्यादि।

(३४) मल्हार के—१००३, १००४, १०१४, १०३८, १०४६, १०४६ इत्यादि।

(३५) मुरली के—६८० इत्यादि।

(३६) सांझी के—१२०६ से १२०८ तक।

(३७) हिलग के—४४०, ११६८, ११७८ आदि।

पाग, फेंटा, दुमाला, पगा, कुल्हे, सेहरा, टिपारा, मुकुट, धोती, पिछौरा आदि शृंगारन के विविध समय के तथा घटान के पद 'उत्सवन के पदन की सूची' में सूं निकासि लेने। —संपादक

× बिना चिह्न वाले बारहो मास गायवे के। * इस चिह्न वाले वर्षाऋतु के। ‡ शीतकाल के। † उष्णकाल के।
S अभ्यग होय तब के।

❀ तिथि-समय की सूची ❀

(१) जन्माष्टमी की बधाई*—श्रावण कृष्ण ४ से भाद्र कृष्ण ८ तक सब समय में
(२) श्री राधाष्टमी की बधाई—भादों सुदी १ से भादों सुदी ८ तक ,,
(३) दान एकादशी के पद—भादों सुदी ११ से आश्विन वदी ३० तक ,,
(४) साँझी के पद—आश्विन कृष्ण १ से ,, ३० तक भोग संध्या में
(५) नवरात्रि के पद—[विलास] आश्विन सुदो १ से ९ तक शृंगार में
(६) अन्नकूट के पद—दशहरा से अन्नकूट [आ. सु. १० तें का. सु. १ तक] सब समय में
(७) गोवर्द्धन लीला इंद्र मान भंग के पद—कार्तिक सुदी ७ तक ,,
(८) व्रतचर्या के पद—मार्गशीर्ष वदी १ से मार्गशीर्ष सुदी १५ तक मंगला शृंगार मे
(९) खंडिता में, ललित मालकोस के पद—पौष में मङ्गला शृङ्गार मे
(१०) पनघट में, राग टोडी के पद—मार्गशीर्ष वदी १ से पौष तक राजभोग में
(११) हिलग के, धनाश्री, आसावरी टोडी राग के — ,, ,,
(१२) श्री गुसांई जी की बधाई—मार्गशीर्ष सुदी ७ से पौषकृष्ण ९ तक सब समय में
(१३) वसंत धमार के पद—वसंत पंचमी से डोल तक सब समय मे
(१४) फूल मण्डली के कुंज के पद—चैत्र कृष्ण २ से राजभोग में,
(१५) श्री महाप्रभु जी की बधाई—चैत्र शुक्ल ११ से वैसाख कृष्ण ११ तक सब समय में,
(१६) खडिता में सुहा, सुघराई राग के पद—स्नान यात्रा सु' रथयात्रा तक
(१७) पनघट में, सारंग के पद—जेठ सुदी १ से १५ तक राजभोग में
(१८) पनघट मे, राग विलावल के—जेठ सुदी ११ सू १५ तक शृंगार में,
(१९) राजभोग में गौड सारंग के पद—स्नान यात्रा सूं रथयात्रा तक।
(२०) भोग में, सारंग राग के—अक्षय तृतीया सूं स्नान यात्रा तक।
(२१) भोग में सोरठ राग के—स्नान यात्रा सूं रथयात्रा तक।
(२२) संध्यार्ति में हमीर राग के—अक्षय तृतीया सू स्नान यात्रा तक।
,, ,, सोरठ राग के—स्नान यात्रा सूं रथयात्रा तक।
(२३) मल्हार के पद—रथयात्रा सूं आरंभ।
(२४) हिंडोरा श्रावण कृष्ण १ से भाद्र कृष्ण १ तक। संध्या में अथवा संध्यार्ति पीछे।

---

*प्रत्येक उत्सव की बधाई के पूर्ण होने पर बाललीला गवे।
बधाई के दिनन में जो विशेष उत्सव आवे वाके पद प्रणाली अनुसार गवें।

❁ श्रीद्वारकेशो जयति ❁



तृतीय गृह की कीर्तन प्रणालिका



उत्सवन के पदन की सूची

❁ भाद्र–कृष्णा ८ (जन्माष्टमी) ❁

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

११४१ सब मिलि ग्वालिनि देत० ३५५
··· नंद वृषभान के हम भाट० (पद-सं.८५०)
··· श्रीव्रजराज के हम ढाढी० (पद-सं.८५१)

राजभोग दर्शन।

··· सब ग्वाल नाचे गोपी गावे० (पद-सं.५२)

भोग के दर्शन।

··· रानीजू जायो पूत सुलच्छन० (पद-सं.२५)
··· आज अति बाढ्यो है अनु० (पद-सं.८५२)

संध्या समय।

··· आज बधावो श्रीव्रजराज० (पद-सं.८५३)

शयन भोग आये।

··· आज छठी जसुमति के सुत ०(पद-सं.४८)
··· मंगलघोस छटी को आयो० (पद-सं.४९)
··· यह धन धर्म ही ते पायो० (पद-सं.३३)
··· गावत गोपी मधु-मृदु बानी० (पद-सं.३१)
··· प्यारे हरि को विमल यश० (पद-सं.३२)
··· ऐसो पूत देवकी जायो० (पद-सं.३४)
··· हरि जन्मत ही आनंद भयो० (पद.सं.३५)

पद-संख्या पद-प्रतीक पृष्ठ-संख्या

··· अहो पिय सो उपाय कछु० (पद-सं.५२१)
··· जनम लियो शुभ लगुन० (पद-सं.३७)
·· आज तो आनंद माइ आज० (पद-सं.३९)
··· आनन्द बधावनो० (पद-सं.३६)
··· रंग बधावनो० (पद-सं.३८)
··· माई आज तो गोकुलगाम० (पद-सं.८५५)
··· जसोदे बधाइयाँ० (पद-सं.४६)
··· श्रीगोपाललाल गोकुल चले० (पद-स-४७)
··· भादो की अति रैन अँधियारी०(पद-सं.४०)
··· अँधियारी भादों की रात० (पद-स.४१)
··· भादों की रैन अँधियारी० (पद-स.४३)
··· श्रवन सुन सजनी बाजे० (पद-स.४४)

शयन दर्शन।

··· रावरे के कहे गोप० (पद-सं.४५)
··· आठें भादों की अँधियारी० (पद सं.४२)

पोढ़वे में।

··· धन रानी जसुमति गृह० (पद-सं.३०)

ग्रहण की रीति

सवेरे मंगलभोग आरोग के जो ग्रहण के दर्शन होयँ तो माहात्म्य के पद नहीं गावे प्रथम—

··· मंगल मंगलं० (पद-सं.८)

गाइ के फेर ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने। राजभोग आरोग के जो ग्रहण के दर्शन खुले तो राजभोग आरती को कीर्तन गायके फेर—

··· चक्र के धरनहार गरुड़ के० (पद-सं.७४०)
११४२ जाकों वेद रटत ब्रह्मा० ३५६

गाय के पीछे ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने। शयनभोग आरोग के जो ग्रहण के दर्शन होयँ तो प्रथम राग मालव में।

··· मोहन नन्दराजकुमार० (पद-सं.२८)

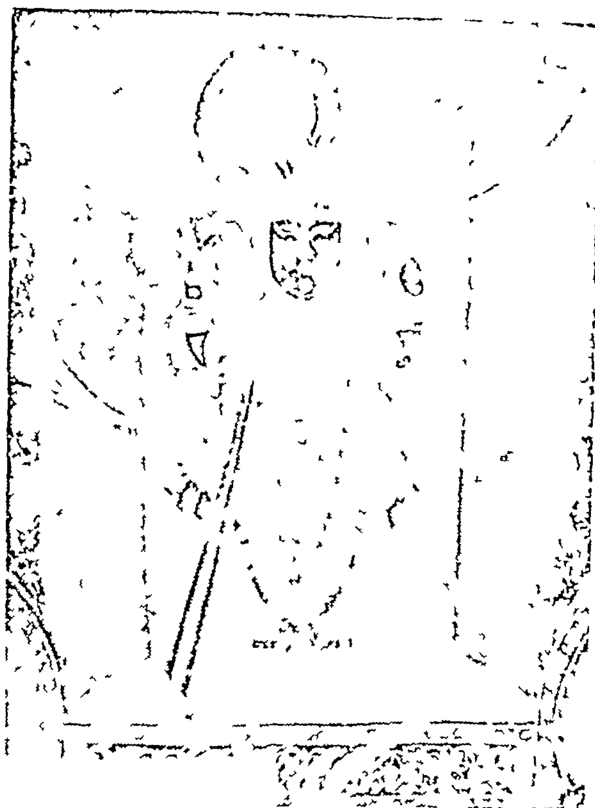
११४३ पद्म धरयो जन ताप० ३५६
११४४ बंदौं धरन गिरिवर भूप० ३५६
··· चरनकमल बंदौं जगदीश० (पद-सं.४२२)

गाइ के ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने। दिवाली के दिन ग्रहण होय तो साँझ कूँ शयन के दर्शन में।

११४५ गाय खिलावन खिरक चले री० ३५६
११४६ गाय खिलाय आये नँदनन्दन० ३५७

फेर जा दिन कान गवे ता दिन दिवाली की रीत मुजब सब कीर्तन होयँ अन्नकूट नहीं होय तहाँ तक अन्नकूट के कीर्तन गवे, इन्द्रकोप के अन्नकूट होय पीछे सात दिन तक गवे।

शीतकाल-संबंधी रीति



राजा अंबरीष के सेव्य

❀ भगवान् श्रीद्वारकाधीश ❀

प्राकट्य-स्थान—विदु सरोवर

(गुजरात, सिद्धपुर-पट्टण)

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी ने वि० सं० १५५२ में इस स्वरूप को कन्नौज

में प्राप्त कर दामोदरदास संभ माथे सेवार्थ

पधराये । पुष्टिमार्ग में म थम

इस स्वरूप

सेव

❀ श्रीद्वारकाधीश जी—तृतीय गृह के वर्ष भर के ❀

* कीर्तन प्रणाली के पद *



जन्माष्टमी* (भाद्र वद ८)

❀ जगायवे के समय के पद ❀ श्री महाप्रभुजी के पद ❀ राग भैरव ❀ श्री वल्लभ श्री वल्लभ श्री वल्लभ गुन गाऊँ। निरखत सुन्दर स्वरूप बरखत हरिरस अनूप द्विजवर कुल भूप सदा वल वल वल जाऊँ ॥१॥ अगम निगम कहत जाहि सुनर मुनि लहें न ताहि सकल कला गुन निधान पूरन उर लाउँ। 'गोविंद' प्रभु नन्दनन्दन श्री लछमन सुत जगत वंदन सुमिरत त्रयताप हरत चरन रेनु पाऊँ ॥२॥ ❀१❀ जय जय श्रीवल्लभ प्रभु श्री विट्ठलेस साथे। निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे। दोस सबै दूर करत भक्तिभाव हृदय धरत काज सबै सरत सदा गावत गुन गाथे ॥ १ ॥ काहे कों देह दमत साधन पर मूरख जन विद्यमान आनन्द त्यज चलत क्यों अपाथे। 'रसिक' चरन सरन सदा रहत हैं बड़भागी जन अपुनो कर गोकुल पति भरत ताहि साथे ॥ २ ॥ ❀ २ ❀ जागिये व्रजराज कुंवर कमलकोस फूले। कुमुदिनी जिम सकुनि रवी मुकलाता भूले ॥१॥ तमचर खग करत रोर बोलत बन मांही। रांभत गऊ मधुर नाद वच्छन हित धाई ॥२॥ विधु मलीन रवि प्रकास गावत व्रजनारी। 'सूर' श्री गोपाल उठे आनन्द मंगलकारी ॥३॥ ❀३❀ कलेऊ के ❀ राग भैरव ❀ जागन मगन प्यारे लाल कीजिये कलेवा। छींकें पर सगरी दधि ऊखल नाहि उतार धरी पहरि लेहु झगुलि फेंट बांध लेहु मेवा ॥१॥ ग्वालन संग खेलन जाओ खेलन मिस भूख लागे कौन परी प्यारे लाल निस दिन की टेवा। 'सूरदास' मदनमोहन घरहि खेलो प्यारे लाल भौंरा चक डोर देहों हंस और परेवा ॥२॥

*श्री के जागवे सूं झांझ पखावज सूं कीर्तन होय।



राजा अंबरीष के सेव्य

❀ भगवान् श्रीद्वारकाधीश ❀

प्राकट्य-स्थान—विंदु सरोवर

(गुजरात, सिद्धपुर-पट्टण)

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी ने वि० सं० १५५२ में इस स्वरूप को कन्नौज में प्राप्त कर दामोदरदास संभरवाले के माथे सेवार्थ पधराये। पुष्टिमार्ग में महाप्रभु ने सर्वप्रथम इस स्वरूप की राज-वैभव से सेवा की है।

* श्री द्वारिकेशो जयति *

❀ श्रीद्वारकाधीश जी—तृतीय गृह के वर्ष भर के ❀

* कीर्तन प्रणाली के पद *



जन्माष्टमी* (भाद्र वद ८)

❀ जगायवे के समय के पद ❀ श्री महाप्रभुजी के पद ❀ राग भैरव ❀ श्री वल्लभ श्री वल्लभ श्री वल्लभ गुन गाऊँ। निरखत सुन्दर स्वरूप बरखत हरिरस अनूप द्विजवर कुल भूप सदा वल बल वल जाऊँ ॥१॥ अगम निगम कहत जाहि सुरनर मुनि लहें न ताहि सकल कला गुन निधान पूरन उर लाउँ। 'गोविंद' प्रभु नन्दनन्दन श्री लछमन सुत जगत वंदन सुमिरत त्रयताप हरत चरन रेनु पाऊँ ॥२॥ ❀१❀ जय जय श्रीवल्लभ प्रभु श्री विट्ठलेस साथे। निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे। दोस सबै दूर करत भक्तिभाव हृदय धरत काज सबै सरत सदा गावत गुन गाथे ॥१॥ काहे कों देह दमत साधन कर मूरख जन विद्यमान आनन्द त्यज चलत क्यों अपाथे। 'रसिक' चरन सरन सदा रहत हैं वड़भागी जन अपुनो कर गोकुल पति भरत ताहि बाथे ॥ २ ॥ ❀ २ ❀ जागिये ब्रजराज कुंवर कमलकोस फूले। कुमुदिनी जिय सकुचि रही भृङ्गलता भूले ॥१॥ तमचर खग करत रोर बोलत बन मांही। रांभत गऊ मधुर नाद वच्छन हित धाई ॥२॥ विधु मलीन रवि प्रकास गावत ब्रजनारी। 'सूर' श्री गोपाल उठे आनन्द मंगलकारी ॥३॥ ❀३❀ कलेऊ के ❀ राग भैरव ❀ छगन मगन प्यारे लाल कीजिये कलेवा। छींकें पर सगरी दधि ऊखल चढि उतार धरी पहरि लेहु भगुलि फेंट बांध लेहु मेवा ॥१॥ ग्वालन संग खेलन जाओ खेलन मिस भूख लागे कौन परी प्यारे लाल निस दिन की टेवा। 'सूरदास' मदनमोहन घरहि खेलौ प्यारे लाल भोंरा चक डोर देहों हंस और परेवा ॥२॥

*श्री के जागवे सूं झाँझ पखावज सूं कीर्तन होय।

❀ ४ ❀ श्री यमुनाजी के ❀ राग भैरव ❀ जय जय श्री सूरजा कलिन्दनन्दिनी। गुल्मलता तरु सुवास कुंद कुसुम मोद मत्त, गुंजत अलि सुभग पुलिन वायु मंदिनी ॥१॥ हरि समान धर्मसील कान्ति सजल जलद नील, कटि नितंव भेदत नित गति उत्तंगिनी। सिक्ता जनु मुक्ता फल कंकन युत भुज तरंग कमलन उपहार लेत पिय चरन वंदिनी ॥२॥ श्रीगोपेन्द्र गोपी संग श्रम जल कन सिक्त अंग अति तरंगनी रसिक सुर सुफंदिनी। 'छीतस्वामी' गिरिवरधर नन्द नन्दन आनन्द कन्द यमुने जन दुरित हरन दुःख निकंदिनी ॥३॥ ❀ ५ ❀ राग भैरव ❀ आज बडो दरबार देख्यो नन्दराय तेरो। भयो सुख सवहि भांति दुःख गयो मेरो ॥१॥ वाजत निसान ढोल ढाढिन जगायो। सोवे कहा उठि न कंथ जसुमति सुत जायो ॥२॥ माँगन जे लिये जात भीख जो तिहारी। गायन के ठाठ लुटत भीर भई भारी ॥ ३ ॥ तेहि देखि लिये जात कीरति तिहारी। तिहुँलोक सुन्यो सुजस भयो अति भारी ॥४॥ सुमन फूलन फूली जसुमति रानी। जाके सर्वसु दिये वसुधा अघानी ॥ ५ ॥ अवलों मैं नेम लियो रह्यो वरसाने। लैहों भीख जव पूत व्हैहै महराने ॥ ६ ॥ अवके महर मोहि माँगनो न कीजे। 'सूरदास' कहत मोकों दास पदवी दीजे ॥७॥ ❀ ६ ❀ राग रामकली ❀ माई सोहिलरा आज नन्द महर घर वाजे वाजे मंदलरा अनुपम गति। सखी सहेली मिल मंगल गावें मोतिन चोक पुरावे ऋषिवर वेद पढ़त ब्रह्मा सिव सुर मुनि नाचत सुरपति ॥१॥ भयो आनन्द तिहूँ पुर-पुर मंगल विप्र अभय कीने व्रजपति। 'जगन्नाथ' प्रभु प्रगट भये हैं कूख सिरानी रानी जसुमति ॥ २ ॥ ❀७❀ मंगल भोग सरे ❀ राग विभास ❀ मंगल मंगलंव्रजभुविमंगलं । मंगलमिहश्रीनंदयशोदा नामसुकीर्तनमेतद्रुचि रोत्संगसुलालितपालितरूपं ॥ १ ॥ श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वार्त जनाशयतापापहमितिमंगलरावं । व्रजसुंदरी वयस्य सुरभीवृंद मृगी गणनिरुपमभावामंगलसिंधुचया ॥ २ ॥ मंगलमीषत्स्मितयुतमीक्षण भाषण

मुन्नत नासापुटगत मुक्ताफलचलनं। कोमलचलदंगुलिदलसंगत वेणुनिनाद-
विमोहित वृन्दावनभुविजातां ॥ मंगलमखिलंगोपीशितुरतिमंथरगतिविभ्रम
मोहितरासस्थितगानं। त्वंजयसततं गोवर्द्धनधरपालयनिजदासान्॥४॥❀८❀
❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग देवगंधार ❀ नैनभर देखो नन्दकुमार। जसुमतिकूख
चंद्रमा प्रगट्यो या व्रजको उजियार ॥१॥ बन जिनि जाउ आज कोउ जन
गोसुत गोप गाय गुवार। अपने अपने भेख सबैं मिलि लाओ विविध
सिंगार॥२॥ हरद दूब अच्छत दधि कुमकुम मंडित करो दुवार। पूरोचोक विविध
मुक्ताफल गावो मंगलचार ॥३॥ चहूँ वेदधुनि करत महामुनि होत नच्छत्र
...। उदयो पुन्यको पुंज सांवरो सकलसिद्धिदातार ॥४॥ गोकुलवधू-
आनंदित सुंदरता को सार। 'दासचत्रभुज' प्रभुचिरजीयो गिरिधरप्रान-
॥५॥ ❀९❀ पंचामृत के दर्शन में ❀ राग देवगंधार ❀ व्रज भयो महर के
यह बात सुनी। सुनि आनंदे सब लोक गोकुल गनित गुनी ॥१॥
...र पूरे पुन्य रुपि कुल सुथिर थुनी। ग्रह लग्न नच्छत्र बलि सोधि
...र धुनी ॥१॥ सुनि धाई सब व्रजनारि सहज सिंगार किये। तन पहेरे
...रे काजर नैन दिये। कसि कंचुकी तिलक ललाट सोभित हार
कर कंकन कंचनथार मंगलसाज लिये ॥२॥ वे अपने अपने मेल
भांतिभली। मानों लालमुनिन की पांति पिंजरन छोर चली। वे
लगीत मिलि दसपांच अली। मानों भोरभयो रवि देखि फूली
ली ॥३॥ उर अंचल उडत न जान्यो सारी सुरंग सुही। मुख मांड्यो
रोरीरंग सेंदुर मांग छुही। श्रम श्रवनन तरुल तरोना बेनी सिथिल गुही।
सिर बरसत कुसुम सुदेश मानो मेघ फुही ॥४॥ पिय पहले पहोंची जाय
अति आनन्दभरी। लई भीतर भवन बुलाय सब सिसु पाँय परी। एक
वदन उघारि निहारत देत असीस खरी। चिरजीयो यसोदानन्द पूरन काम
करी ॥५॥ तव धनि दिन धनि यह रात धनि यह पहर घरी। धनिधनि

धार्मिक प्रवचन करेंगे।
आपका प्रवचन मृगशिर कृष्णा ५ सोमवार ता.
२७-११-६१ से मध्याह्न २ से ४ बजे तक हुआ करेगा

महरिजूकी कूख भागि सुहाग भरी। जिन जायो एसो पूत सब सुख फलन फरी। थिर थाप्यो सब परिवार मनको सूल हरी ॥६॥ सुनि ग्वालन गाय बहोरि बालक बोलि लिये। गुहि गुंजा घसि वनधातु अंगअंग चित्र ठये। सिर दधि माखन के माट गावत गीत नये। मिलिझांझमृदंग बजावत सब नन्दभवन गये ॥७॥ एक नाचत करत कुलाहल छिरकत हरद दही। मानों बरखत भादोंमास नदी घृतदूध बही। जाको जहीं-जहीं चित जाय कौतुक तहीं तहीं। रस आनन्द मगन गुवाल काहू बदत नहीं ॥८॥ एक धाइ नंद जू पे जाय पुनि-पुनि पांय परे। एक दधि रोचन और दूब सबन के सीस धरे। एक आपु-आपुही मांझ हसि-हसि अंक भरे। एक अंबर सवहि उतार देत निसंक खरे ॥९॥ तब नन्द न्हाय भये ठाड़े अरु कुस हाथ धरे। घसि चंदन चारु मगाय विप्रन तिलक करे। नांदीमुख पितर पुजाय अंतर सोच हरे। वर गुरुजन द्विज पहराय सबनके पांय परे॥१०॥ गन गैया गिनी न जाय तरुन सुवच्छ बढ़ी। वे चरिहें जमुनाजू के तीर दूने दूध चढ़ी। खुर रूपे तांबे पीठ सोने सींग मढ़ी। ते दीनी द्विजन अनेक हरखि असीस पढ़ी ॥११॥ तब अपने मित्र सुबंधु हसि-हसि बोलि लिये। मथि मृगमद मलय कपूर माथे तिलक किये। उर मनिमाला पहराय वसन विचित्र दिये। मानों बरखत मास असाढ़ दादुर मोर जिये ॥१२॥ वर बंदी मागध सूत आंगन भवन भरे। ते बोले ले ले नाम हित कोउ ना बिसरे। जिन जो जाच्यो सो दीनों रस नन्दराय ढरे। अति दान मान परिधान पूरन काम करे ॥१३॥ तब अंबर और मगाय सारी सुरंग घनी। ते दीनी वधुन बुलाय जेसी जाय बनी। अति आनंदमगन बहुरि निजगृह गोप धनी। मिलि निकसी देत असीस रुचि अपुनी-अपुनी ॥१४॥ तब घर घर भेरि मृदंग पटह निसान बजे। वर बांधी बंदनमाल अरु ध्वज कलस सजे। तब तादिन ते वे लोग सुख संपति न तजे। सुनि 'सूर' सबन की यह गति जे हरिचरन भजे॥१५॥

❀ १० ❀ अभ्यंग समय ❀ राग धनाश्री ❀ आपुन मंगल गावे हो रानीजू । आज लालको जन्मद्यौस है मोतिन चोक पुरावे ॥१॥ गाम गाम ते जाति आपनी गोपिन न्योति बुलावे । अन्वाचार्य मुनिगर्ग परासर तिनपे वेद पढ़ावे ॥२॥ हरदी तेल सुगंध सुवासित लालें उबटि न्हवावे । हरि तन ऊपर वारि नोछावर 'जन परमानन्द' पावे॥३॥ ❀११❀ राग धनाश्री ❀ मिलि मंगल गावो माइ । आज लाल को जन्मद्यौस है बाजत रंग बधाइ ॥१॥ आंगन लीपो चोक पुरावो विप्र पढ़न लागे वेद । करो सिंगार स्यामसुंदर को चोवा चंदन मेद ॥२॥ फूली फिरत नन्दजू की रानी आनंद उर न समाइ । 'परमानन्ददास' तिहि अवसर बहोत नोछावर पाइ ॥३॥ ❀१२❀ फेर तिलक के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ आज बधाई को दिन नीको । नन्दघरनि जसुमति जायो है लाल भामतो जीको ॥१॥ पंचसब्द बाजे बाजत घर घरते आयो टीको । मंगल कलस लिये ब्रजसुंदरि ग्वाल बनावत छीको ॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन जियो कोटि बरीसो । 'परमानन्ददास' को ठाकुर गोप भेख जगदीसो ॥३॥ ❀१३❀ राग धनाश्री ❀ जसोदा रानी जायो हो सुत नीको । आनंद भयो सकल गोकुल मे गोपवधू लाइ टीको ॥१॥ अक्षत दूब रोचनां मांथे नंदे तिलक दही को । अंचल वारि वारि मुख निरखत कमल नैन प्यारो जीको ॥२॥ अपने अपने भवनते निक्सी पहरे चीर कसूँभी को । 'यादवेन्द्र' गोकुल में प्रगटे कंसकाल भयभीको ॥३॥ ❀१४❀ दरशन होय चुके जगमोहन में ❀ राग देवगंधार ❀ आज वन कोउ वे जिनि जाय । सब गायन बछरन समेत तुम लाओ चित्र बनाइ ॥१॥ ढोटा हो ब्रज भयो रायजु के कहत सुनाय सुनाय । चहुंदिस घोख यह कोलाहल उर आनंद न समाय ॥२॥ कितहो विलंब करत बिन काजे बेगि चलो उठि धाय । अपने अपने मन को चीत्यो नैनन देखो आय ॥३॥ एक फिरत दधि दूध देत है एक रहत गहि पाँय । एक वसन पट देत बधाई एक उठत हसि गाय ॥४॥ बाल वृद्ध

नरनारिन के मन भयो चोगुनो चाय। 'सूरदास' प्रमुदित व्रजवासी गिनत न राजा राय ॥५॥ ❀१५❀ राग देवगंधार ❀ यह सुख देखोरी तुम माइ। बरस गांठ गिरिधरन लाल की बहुरि कुसल सों आइ ॥१॥ आगम के दिन नीके लागत उर सुख लहरि उठाइ। एसी बात कहत व्रजसुंदरि अपअपने मन भाइ ॥२॥ फिर हंसि लेत बलाय कूख की जिहि जन्मे जु कन्हाइ। तुमरे पुत्र अहो नन्दरानी जु सब तन तपत बुझाइ ॥३॥ नन्दकुमार सकल या व्रज में आनन्दबेलि बढ़ाइ। 'श्री विट्ठल गिरिधरनलाल' निधि सबहिन भूखे पाइ ॥४॥ ❀१६❀ राग देवगंधार ❀ जनम फल मानत यसोदा माय। जब नन्दलाल धूरि धूसर वपु रहत कंठ लपटाय ॥१॥ गोद बैठि गहि चिबुक मनोहर बात कहत तुतराय। अति आनन्द प्रेम पुलकित तन मुख चूमत न अघाय ॥२॥ आरति चिन विलोकि वदन विधु पुनि पुनि लेत बलाय। 'परमानन्द' मोद छिन-छिन को मोपे कह्यो न जाय ॥३॥ ❀१७❀ ❀ राग देवगंधार ❀ झगरिन तें हों बहोत खिजाइ। कंचन हार दिये नहिं मानत तूइ अनोखी दाइ ॥१॥ वेगहि नार छेदि बालक को जात है ब्यार भराइ। सत संयम तीरथ व्रत कीने तब यह संपति पाइ ॥२॥ करो बिदा घर जाऊ आपने कालि सांझ की आइ। 'सूरदास' प्रभु गोकुल प्रगटे भक्तन के सुखदाइ ॥३॥ ❀१८❀ राग देवगंधार ❀ जसोदा नाल न छेदन देहों। मनिमय जटित हार ग्रीवा को वह आज हों लेहों ॥१॥ ओरन के हैं सकल गोप मेरे एक भवन तिहारो। मिटि जो गयो संताप जनम को देख्यो नन्द-दुलारो ॥२॥ बहोत दिनन की आसा लागी झगरिन झगरो कीनों। मन ही मन में हसत नन्दरानी हार हिये को दीनों ॥३॥ जाको नाल आदि-ब्रह्मादिक सकल विश्वसंसार। 'सूरदास' प्रभु गोकुल प्रगटे मेटन कों भुवभार ॥४॥ ❀१९❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ ढ़ाढ़ी ❀ हों व्रज मांगनो जू व्रज तज अनत न जाउं। बड़े-बड़े भुवपति राज लोकपति दाता सूर सुजान।

कर न पसारों सीस न नाउं या व्रज के अभिमान ॥१॥ सुरपति नरपति नाग-लोकपति मेरे रंक समान। भांत भांत मेरी आसा पुजये व्रजजन सो जिज-मान ॥२॥ बाबा मैं व्रत करि करि देव मनाये अपनी घरनी संयूत। दियो है विधाता सब सुखदाता गोकुलपति के पूत ॥३॥ बाबा हौं अपनो मन भायो लेहौं कित बोरावत बात। औरन कों धन घन जों वरखत मो देखत हंसि जात ॥४॥ अष्टसिद्धि नवनिधि मेरे मंदिर तुव प्रताप व्रजईस। कहत 'कल्यान' मुकुंद तात करकमल धरो मम सीस ॥५॥ ❀२०❀ राग धनाश्री ❀ नन्दजू मेरे मन आनंद भयो सुनि गोवर्धन ते आयो। तिहारे पुत्र भयो हौं सुनि के अति आतुर उठि धायो ॥१॥ वंदीजन और भिच्छुक सुनि सुनि देस देस ते आये। एक पहले मेरी आसा लागी वहोत दिनन के छाये। ॥टेक॥ तुम दीने कंचन मनि मुक्ता नाना वसन अनूप। मोहि मिले मारग मे मानों जात कहूं के भूप ॥२॥ तुमतो परम उदार दानेश्वर जो मांग्यो सो दीनो। एसो और नाहिं त्रिभुवन में तुम सरता को कीनो ॥टेक॥ कोटि देहु तो परयो रहूंगो विनु देखे नहि जाउं। नंदराय सुन विनती मेरी सबै बिदा भरि पाउं ॥३॥ दीजे मोहि कृपाकर सोई जो हौं आयो मांगन। रानी जसुमति सुत अपने पायन चलि खेलन आवे आँगन ॥टेक॥ मदनमोहन मैया कहि बोले यह सुन के घर जाउं। हौं तो तिहारे घर को ढाढी 'सूरदास' मेरो नाउं ॥४॥ ❀२१❀ राग धनाश्री ❀ नन्दजू तिहारे सुख दुख गये सबन के देव पितर भलो मान्यो। तिहारे पुत्र प्रान सबहिन को भवन चतुर्दस जान्यो ॥१॥ हौं तो तेरो वृद्ध पुरातन ढाढी नाम सुने सिर नाउं। गिरि-गोवर्धन वास हमारो गिरि तजि अनत न जाउं ॥ टेक ॥ ढाढिन मेरी झांझ बजावे हौं करताल बजाउं। मेरो चीत्यो भयो तिहारे जो मांगूँ सो पाउं ॥२॥ अब तुम मोकों करो अजाची ज्यों हौं कर न पसारुं। द्वारे रहूं देहु एक मंदिर स्याम स्वरूप निहारुं ॥ टेक ॥ महाप्रसाद तिहारे घर को

बिन मागे हों पाउं । जब जब जन्म धरों ढाढी को जन्म कर्म गुन गाउं ॥३॥ ले ढाढिन कंचन मनि मुक्ता और वसन मन भाये । टोडर हेम पाटंबर अंबर ले ढाढिन पहराये ॥ टेक ॥ हसि बोली ढाढिन ढाढी सों अब कछु बरन बधाई । एसो दियो न देहे कोऊ जेसी जसुमति हों पहराई ॥४॥ हों पेहरी पहरयो मेरो ढाढी दान मान की अथाइ । नंद उदार भये पहरावत देत भले बनि आइ ॥ टेक ॥ बालक भलें भयो नारायन 'दास' निरख निधि पाइ । भक्ति करू पालने झुलाऊं यह मन अनत न जाइ ॥४॥

❀२२❀ राग धनाश्री ❀व्रजपति मांगिये जू दाता परम उदार । जाके हें बरही बर दीपे हाथी हाथ हजार । अगनित नग मनि वसन मुकुट सिर धरत न लागे वार ॥१॥ कामधेनु सुरपति की गैया सब कोऊ जाने एक । एसी बोलि बोलि विप्रन कूं दीनी ठाठ अनेक ॥२॥ जे नर करन कामना आये तेउ कल्पतरु कीन । तिन अपने घर बेठे ही बेठे फिर फिर अंबर दीन ॥३॥ तुमहि मांगि मांगि वो अजाची करत जाचक नित जात । भये पुरंदर चले पुरन कों फूले अंग न मात ॥४॥ तुमरे पुत्र भयो जग जान्यो दीने नाना दान । बोलों बिरद बिदा नहिं व्हेहों सुनिहो महर सुजान ॥५॥ जब तुमे तात मात यों कहिहै हँसि देहै मोहि पान । तबहि उचित मन भायो लेहों नन्द महर की आन ॥६॥ मेंहरिया उर बास बसूंगो सदा करूं गुनगान । एक बार जो दरसन पाऊं हरिजू को जिजमान ॥७॥ दनुजदवन नंदभुवन प्रगट भये गर्ग बचन परमान । 'जगजीवन' घनस्याम मनोहर कृष्ण स्वयं भगवान ॥८॥

❀२३❀ राजभोग के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ आज नन्दराय के आनन्द भयो । नाचत गोपी करत कुलाहल मंगलचार ठयो ॥१॥ राती पियरी चोली पहरे नौतन झूमक सारी । चोवा चन्दन अंग लगाये सेंदुर मांग समारी ॥२॥ माखन दूध दह्यो भरि भाजन सकल ग्वाल ले आये । बाजत बेन बखान महुवरी गावत गीत सुहाये ॥३॥

हरद दूब अच्छत दधि कुमकुम आंगन बाढो कीच। हसत परस्पर प्रेम मुदितमन लागलाग भुज बीच ॥४॥ चहूँ वेदध्वनि करत महामुनि पंच सब्द ढमढोल। 'परमानन्द' बढ्यो गोकुल में आनंद हृदे कल्लोल ॥५॥ ❀२४❀ भोग के दर्शन में तमूरा सू ❀ राग पूरवी ❀ रानीजू जायो पूत सुलच्छन। विप्रन दान दिये मनि कंचन वधुअन कों पट दच्छन। ॥१॥ जनमत गयो घोख को नसिके सब संताप ततच्छन। 'सूरदास' प्रभु प्रगट भये हैं निज दासन के रच्छन ॥२॥ ❀२५❀ ❀ राग पूर्वी ❀ कन्हैया कब चलिहै पायन चायन और कब कहै मोसों आओ माखन रोटी दे री मैया। कब जैहै वन गौ चरावन धरिहै वेन वखान महुवरी बोल लैहो बलभद्रजू सों भैया ॥१॥ सो दिन कब ह्वैहै आलीरी बालकवृन्द मधि नायक सोभित और मथि पीवे घैया। 'दास कल्यान' कुंवर गिरिधर को मुख निरखत अभिलाख होत जिय जसुमति लेत बलैया ॥२॥ ❀२६❀ संध्या आरती ❀राग गोरी❀ मेरे मन आनन्द भयो हौंतो फूली अंग न समाउं। सात साख को मेरो राजा जा घर बजत वधायो। देव कुसुम बरखत है नीके रानी जसुमति ढोटा जायो ॥१॥ हय गज हीर चीर नाना रंग भादों झरी लगाइ। पुत्र भयो ब्रजराज नृपति घर अष्टमहासिध आइ ॥२॥ आओरी मिलि सखी सुवासिन मिल साथिये धराई। भाभीजू सों झगरो कीजे आज भली बनि आई ॥३॥ वाजे महाघोर सों वाजत जसुमति पकर नचाइ। 'गरीवदास' कों बहो धन दीनों बहोत पंजीरी पाइ ॥४॥ ❀२७❀ राग मालव ❀ मोहन नन्दराय कुमार। प्रगटब्रह्म निकुंजनायक भक्त हित अवतार ॥१॥ प्रथम चरनसरोज वन्दों स्यामघन गोपाल। कनक कुंडल गंड मंडित चारुनयन विसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला सेस संकर हेत। 'दास परमानन्द' प्रभु हरि निगम बोले नेति ॥३॥ ❀२८❀ ❀ राग मालव ❀ पद्म धरयो जनताप निवारन। चक्र सुदर्सन धरयो कमलकर भक्तन की रक्षा के कारन ॥१॥ संख धरयो रिपु उदर विदारन गदा धरी

दुष्टन संहारन। चारों भुजा चार आयुध धरे नारायन भुवभार उतारन ॥२॥ दीनानाथ दयाल जगतगुरु आरति हरन भक्त चिन्तामनि। 'परमानन्ददास' को ठाकुर यह औसर औसर छांडो जिनि ॥ ३ ॥ ❀ २९ ❀ ❀ जागरण के दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ धन रानी जसुमति गृह आवत गोपी जन। वासर ताप निवारन कारन वारंवार कमलमुख निरखन ॥१॥ पकरि देहरी उलंघनो चाहत किलकि किलकि हुलसत मन ही मन। राईलोन उतारि दुहूकर वारिफेर डारत तन मन धन ॥२॥ लेत उठाय लगाय हियो भरि प्रेम विवस लागे दृग ढरकन। ले चली पलना पोढावन लाल कों अरकसाय पोढे सुंदरघन ॥३॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजियो लाल जौंलों गंग जमुन। 'परमानन्ददास' को ठाकुर भक्तवत्सल भक्तन मन रंजन ॥ ४ ॥ ❀ ३० ❀ राग कान्हरा ❀ गावत गोपी मधु मृदु बानी। जाके भवन बसत त्रिभुवन पति राजानन्द यसोदारानी ॥ १ ॥ गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी। गावत गुन गंधर्व काल सिव गोकुलनाथ महातम जानी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जगनायक गावत सेस सहस्र मुखरासी। मन वच कर्म प्रीति पदअम्बुज अब गावत 'परमानन्ददासी' ॥३॥ ❀ ३१ ❀ राग कान्हरा ❀ प्यारे हरि को विमल यस गावत गोपांगना। मनिमयआंगन नन्दराय के बालगोपाल करे जहाँ रिंगना ॥ १ ॥ गिरि गिरि उठत घुटुरुवन टेकत जानु पानि मेरो छगन को मगना। धूसरधूर उठाय गोदले मात यसोदा के प्रेम को मगना ॥ २ ॥ त्रिपद भूमि मापी तब न आलस भयो अब जु कठिन भयो देहरी उलंघना। 'परमानंद' प्रभु भक्त वत्सल हरि रुचिरहार बर कंठ सोहे बघना ॥ ३ ॥ ❀ ३२ ❀ राग कान्हरा ❀ यह धन धर्म हीते पायो। नीके राख जसोदा मैया नारायन ब्रज आयो ॥१॥ जा धन कों मुनि जप तप खोजत वेदहू पार न पायो। सो धन धरयो क्षीरसागर मे ब्रह्मा जाय जगायो ॥ २ ॥ जा धन ते गोकुल सुख लहियत सगरे काज

संवारे। सो धन वारवार उर अंतर 'परमानन्द' विचारे ॥ ३ ॥ ❀ ३३ ❀
❀ राग कान्हरा ❀ एसो पूत देवकी जायो। चारों भुजा चार आयुध धरि कंस निकन्दन आयो ॥१॥ भरि भादों अधरात अष्टमी देवकी कंत जगायो। देख्यो मुख वसुदेव कुंवर को फूल्यो अङ्ग न समायो ॥२॥ अब ले जाहु बेगि याहि गोकुल बहोतभाँति समझायो। हृदय लगाय चूमि मुख हरिको पलना में पोढ़ायो ॥३॥ तब वसुदेव लियो कर पलना अपने सीस चढ़ायो। तारे खुले पहरुवा सोये जाग्यो कोउ न जगायो ॥४॥ आगे सिंह सेस ता पाछे नीर नासिका आयो। हूँक देत बलि मारग दीनो नन्द भवन में आयो ॥५॥ नन्द यसोदा सुनो बिनती सुत जिनि करो परायो। जसुमति कह्यो जाउ घर अपने कन्या ले घर आयो ॥६॥ प्रात भयो भगिनी के मंदिर प्रोहित कंस पठायो। कन्या भई कूखि देवकी के सखियन सब्द सुनायो ॥७॥ कन्या नाम सुन्यो जब राजा पापी मन पछतायो। करों उपाय कंस मन कोप्यो राजा बहोत रिसायो ॥८॥ कन्या मगाय लई राजा ने धोबी पटकन आयो। भुजा उखारि ले गई उर ते राजा मन बिलखायो ॥९॥ वेदहु कह्यो स्मृति हू भाख्यो सो डर मन में आयो। 'सूर' के प्रभु गोकुल प्रगटे भयो भक्तन मन भायो ॥ १० ॥ ❀ ३४ ❀
❀ राग कान्हरा ❀ हरि जन्मत ही आनन्द भयो। नवनिधि प्रगट भई नन्द द्वारे सब दुख दूर गयो ॥१॥ वसुदेव देवकी मतो उपायो पलना मांझ लयो हो। जब ही कमलाकंत दियो हूंकारो यमुना पार भयो ॥२॥ नन्द जसोदा के मन आनन्द गर्ग बुलाय लयो। 'परमानन्द दास' को ठाकुर गोकुल प्रगट भयो ॥३॥ ❀३५❀ राग नायकी ❀ आनन्द वधावनो नन्द महरजू के धाम। वडभागिन जसुमति जायो है कमल नैन घनस्याम ॥१॥ बजत निसान मृदंग ढोल रव मंगल गावत वाम। देत दान कंचन मनिभूसन धेनु वसन लेले नाम ॥२॥ नाचत तरुन वृद्ध और बालक व्रज जन मन अभिराम।

'हरिनारायण श्यामदास' के प्रभु माई प्रगटे हैं पूरन काम ॥३॥ ❀३६❀ ❀ राग नायकी ❀ जन्म लियो सुभ लगुन बिचार। कृष्णपक्ष भादों निस आठे नक्षत्र रोहिनी और बुधवार ॥१॥ संख चक्र गदा पद्म विराजत कुंडल मनि उजियार। मुदित भये वसुदेव देवकी 'परमानन्ददास' बलिहार ॥२॥ ❀ ३७ ❀ राग नायकी ❀ रंग बधावनो हो व्रज में श्रीव्रजराज के धाम। कृष्ण कमलदल नैन प्रगट भये मोहन मूरति पूरन काम ॥१॥ नाचत गावत नेह जनावत आई सब मिलि भाम। 'विचित्र' को प्रभु नैनन देख्यो सुन्दर घनतन स्याम ॥२॥ ❀ ३८ ❀ राग नायकी ❀ आज तो आनन्द माइ आज तो आनन्द माइ आज तो आनन्द। पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक सो आये गृह नन्द ॥१॥ गर्ग परासर और मुनि नारद पढ़त वेद श्रुति छंद। 'हरि-जीवन' प्रभु गोकुल प्रगटे मिटे सकल दुख द्वन्द ॥२॥ ❀ ३९ ❀ राग कान्हरा ❀ भादों की अति रेन अंध्यारी। द्वार कपाट बाट भट रोके दिसदिस कंत कंस भय भारी॥१॥ गरजत मेघ महा भय लागत बीच बड़ी जमुना अति भारी। सब तजि यह सोच जिय उपज्यो क्यों दुरि है ससिवदन उजारी ॥२॥ कित हों बचन बोल पति राखी वरहु जन काहु न समारी। देखो धों एसो सुत बिछुरत कहो कैसे जीवे महतारी ॥३॥ जब विलाप देवकी के मुख दीनबंधु दयाल भक्त हितकारी । छुटि गये निगड गये गो सुरपुर 'सूर' सुमति दे विपति विसारी ॥४॥ ❀ ४० ❀ राग कान्हरा ❀ अंधियारी भादों की रात। बालक कों वसुदेव देवकी पठें पठें पछतात ॥१॥ बीच नदी घन गरजत बरखत दामिनी आवत जात। बैठत उठत सेज सोवरि में कंस डरन अकुलात ॥२॥ गोकुल बजत सुनी बधाई सुनि ले कनहेर सिहात। 'सूरदास' प्रभु आनन्द गोकुल देत नन्द बहो दान ॥३॥ ❀ ४१ ❀ राग कान्हरा ❀ आठे भादों की अंधियारी। गरजत गगन दामिनी कोंधत गोकुल चले मुरारि ॥१॥ सेस सहस्र फन बूंद निवारत सेत छत्र सिर तानी। वसुदेव अंक

मध्य जगजीवन कहा करेगो पानी ॥२॥ यमुना पार भयो तिहि अवसर आवत जात न जान्यो । 'परमानन्ददास' को ठाकुर देव मुनिन मन मान्यो ॥३॥ ❀४२❀

❀ राग कान्हरो ❀ भादों की रात अंधियारी । संख चक्र गदा पद्म विराजत मथुरा जन्म लियो बनवारी ॥१॥ बोलि लिये वसुदेव देवकी बालक भयो परम रुचिकारी । अब ले जाहु याहि तुम गोकुल अधम कंस को मोहि डर भारी ॥२॥ सोवत श्वान पहरुवा चहुँदिस खुले कपाट गयो भय भारी । पाछे सिंह दहाड़त हूँकत आगे है कालिंदी भारी ॥३॥ तब जिय सोच करत ठाडे ह्वै अब विधि कहा विधाता ठानी । कमल नैन को जानि महातम जमुना भइ चरननतर पानी ॥४॥ पहोंचे है गृह नन्दमहर के जिनकी सकल आपदा टारी । गोविन्द' प्रभु बड़भागि यसोदा प्रगटे हैं गोवर्धन धारी ॥५॥ ❀ ४३ ❀

राग विहाग ❀ श्रवन सुनि सजनी बाजे मंदिलरा आज निस लागत परम सुहाइ । अति आवेस होत तन मन में श्री गोकुल बजत वधाइ ॥१॥ देदे कान सुनत अरु फूलत रावल के नरनारी । नन्दरानी ढोटा जायो है होत कुलाहल भारी ॥२॥ आनन्द भरि अकुलाय चली सब सहज सुन्दरी गोपी । प्रादुर्भाव यसोदा सुत को जासों तनमन ओपी ॥३॥ अति ऊंचे चढ़ि चढ़ि के टेरत पसरि उठे सब ग्वाल । गैया बगदावो रे भैया भयो है नन्द जू के लाल ॥४॥ आय जुरे सब गोप ओपसों भयो सवन मन भायो । पंचामृत डारत सीसन ते नाचत गहि नचायो ॥५॥ मंगल साज सिंगार चंद मुखी चंचल कुण्डल हारा । हाथन कंचनथार रहे लसि पग नूपुर झनकारा ॥६॥ धनि दिन धनि यह राति आज की धनि धनि यह गोरी । स्यामसुन्दर चंदे निरखत मानों अंखिया तृषित चकोरी ॥७॥ नाचत सिव सनकादिक नारद हरद दही भरि राजे । इत निसान उत भेरी दुन्दुभी हरखि परस्पर बाजे ॥८॥ जा सुख कों ब्रह्मादिक इच्छत सो विलसत व्रज गेही । कहि 'भगवान हित रामराय'

प्रभु प्रगटे प्रान सनेही ॥ ९ ॥ ❀ ४४ ❀ राग विहाग ❀ रावरे के कहे गोप आज व्रज दूनी ओप कान देदे सुना बाजे गोकुल में मंदिलरा । जसोदा के सुत जायो वृखभान सचुपायो गोपी ग्वाल लेले धाये दूध दधि गगरा ॥१॥ आगे गोप वृन्द वर पाछे त्रिय मनोहर चलि न सकत कोउ पावत न डगरा । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरधारी को जनम भयो फूल्यो फूल्यो फिरे जहाँ नारद सो भंवरा ॥२ । ❀४५❀ राग रायसा ❀ जसोदे बधाइयाँ बधाइयाँ जसोदे बधाइयाँ । नंदरानी दे लाल ऊपना सेस सनेह जिवाइयाँ ॥१॥ सजल चंदा रवि कीता फूली अंग न माइयाँ । आज सबे सुखदानियाँ व्रज भीना सभी भलाइयाँ॥२॥ आनन्द भरियाँ सोहनियाँ सब गोपियाँ तो घर आइयाँ । पुत्र जायो जग जीवना तेडे लागि बडाइयाँ॥३॥ तेडे भागि सुख होंदा सभी घोल घुमाइयाँ। अमृतसार जो लाधा एसी पुरियाँ केतिक मगाइयाँ ॥४॥ अखियाँ ठंडियाँ सोहनियाँ ऐसी साधा सबे पुजाइयाँ। सुखी होए सुरनर मुनि मानो रंक निधि पाइयाँ ॥५॥ दूध दही सिर पाँवड़े नाचे दे ग्वाला खेल मचाइयाँ । बड़भागी नंदजू दानदें मोहो मांगी ठकुराइयाँ ॥६॥ 'रामराय' प्रभु प्रगटिया 'भगवान लला' मन भाइयाँ । जसोदे बधाईयाँ बधाईयाँ जसोदे बधाईयाँ ॥७॥ ❀ ४६ ❀ राग मारू ❀ श्री गोपाललाल गोकुल चले हों बलबल तिहि काल । मोद भरे वसुदेव गोद ले अखिल लोक प्रतिपाल ॥१॥ तरनि तेज तम फूटत जैसे खुलि गये कुटिल कपाट । महावेग बल छाँड़ि आपनो दीनो श्रीयमुना वाट ॥२॥ हरखि हरखि फुंहि फूलसी बरखत अंबुद अंबर छायो । अपनो निजवपु सेस जानि तहाँ बूंद बचावन आयो ॥३॥ भोर भये कुमुदिनी ज्यों सकुची कंसादिक भये मोहे । संतजनन के मन अंबुज मानो फूले डहडहे सोहे ॥४॥ अपनो निज सुख धाम जानि अभिराम तहाँ चलि आये । 'नन्ददास' आनन्द भयो व्रज हरखित मंगल गाये॥५॥ ❀४७❀ ❀ छठी पूजा होय तब ❀ राग कान्हरा ❀ आज छठी जसुमति के सुत का चलो

बधावन माइ । भूसन वसन साज मंगल ले सबै सिंगार बनाइ ॥१॥ भली बात विधि करी वयस बड़ सुत पायो नन्दराइ । पूरन पुन्य सवे व्रजवासी घर घर होत बधाइ ॥ २ ॥ पूरन काम भये व्रजजन के जब ह्वै गई सगाई । 'परमानन्द' बात भइ मनकी मुद मरजादा पाई ॥३॥ ❀४८❀ राग कान्हरा ❀ मंगलद्यौस छठीको आयो । आनन्दे व्रजराज यसोदा मानो यह धन पायो॥ १॥ कुंवर कन्हाइ जायो जसोदा रानी कुल के देव के पाँय परायो । वहु प्रकार व्यंजन धरि आगे सव विधि भलो मनायो ॥ २ ॥ सब व्रजनारी बधावन आइ सुत कों तिलक करायो । जयजयकार होत गोकुल मे 'परमानन्द' यस गायो ॥३॥ ❀ ४९ ❀ महाभोग के दर्शन मे तमूरासूं ❀ राग रामकली ❀ ललना हों वारी तेरे या मुख पर । मेरी दृष्टि लगो जिनि माइ मसि विंदुका दियो भ्रुव पर ॥१॥ सर्वस मैं पहले ही दीनो दतिया न्हेनी न्हेनी दूपर । अब कहा नोछावर करों 'सूर' सुनि ललित त्रिभंगी ऊपर ॥२॥ ❀ ५० ❀ ❀ पलना ❀ राग रामकली ❀ प्रेंखपर्यङ्क शयनं । चिरविरहतापहरमतिरुचिर मीक्षणं प्रकटय प्रेमायनं । ध्रुव० । तनुतरद्विजपंक्तिमतिललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम् । यदवधि परमेतदाशया समभवज्जीवितंतावकीनाम् ॥ १ ॥ तोकता वपुषि तव राजते दृशि तु मदमानिनीमानहरणम् । अग्रिमे वयसि किमु भाविकामेऽपि निज गोपिकाभावकरणम् ॥ २ ॥ व्रजयुवतिहृद्य कनकाचलानारोढुमुत्सुकं तव चरण युगलम् । तत्तु मुहुरुन्नमनकाभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मृदुल मृदुलम् ॥ ३ ॥ अधिगोरोचनातिलकमलकोद्गु ग्रथितविविधमणिमुक्ताफलविरचितम् । भूषणं राजते मुग्धतामृतभरस्यंदि वदनेन्दुरसितम् ॥४॥ भ्रूतटे मातृरचितांजनविंदुरतिशयित शोभया दृग्दोप-मपनयन् । स्मरधनुषि मधु पिवन्नलिराज इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ॥५॥ वचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्तिभरमपनयन् । पालय सदास्मान-स्मदीय 'श्रीविट्ठले' निजदास्यमुपनयन् ॥ ६ ॥ ❀५१❀

❀नन्दमहोत्सव के दर्शन खुले ❀ राग सारंग❀ सब ग्वाल नाचे गोपी गावे । प्रेममगन कछु कहत न आवे ॥१॥ हमारे राय घर ढोटा जायो । सुनि सब लोग बधाये आयो॥ २ ॥ दूध दही घृत कावरि ढोरी । तंदुल दूब अलंकृत रोरी ॥३॥ हरद दूध दधि छिरकत अंगा । लसत पीतपट वसन सुरंगा ॥४॥ ताल पखावज दुंदुभी ढोला । हसत परस्पर करत कलोला ॥ ५ ॥ अजिर पंक गुलफन चढि आये । रपटत फिरत पग न ठहराये ॥ ६ ॥ वारिवारि पट भूषन दीने । लटकत फिरत महा रस भीने ॥ ७ ॥ सुधि न परे को काकी नारी । हसिहसि देत परस्पर तारी ॥ ८ ॥ सुर विमान सब कौतुक भूले । मुदित 'त्रिलोक' विमोहित फूले ॥ ९ ॥ ❀ ५२ ❀ राग सारंग ❀ आंगन नन्दके दधिकादो । छिरकत गोपी ग्वाल परस्पर प्रगटे जगमे जादो ॥ १ ॥ दूधलियो दधिलियो लियो घृत माखन माट संयूत । घरघरते सब गावत आवत भयो महर के पूत ॥ २ ॥ वाजत तूर करत कोलाहल वारिवारि दे दान । जियो जसोदा पूत तिहारो यह घर सदा कल्यान ॥ ३ ॥ छिरके लोग रंगीले दीसे हरदी पति सुवास । 'मेहा' आनंद पुंज सुमंगल यह व्रज सदा हुलास ॥ ४ ॥ ❀ ५३ ❀ राग सारग ❀ नंदजू तिहारे आयो पूत । खोलि भंडार अब देहु बधाइ तुमारे भाग अद्भूत ॥ १ ॥ लेले दधि घृत देहरि पखारो तोरन माल बँधाइ । कंचन कलस अलंकृत रतनन विप्रन दान दिवाइ ॥ २ ॥ विप्र सबे मिलि करत वेद धुनि हरखित मंगल गाये । सब दुख दूरि गये 'परमानन्द' आनन्द प्रेम बढाये ॥३॥ ❀ ५४ ❀ ❀ राग सारंग ❀ नन्द बधाइ दीजे हो ग्वालन । तुमारे स्याम मनोहर आये गोकुल के प्रतिपालन ॥ १ ॥ युवतिन बहु विधि भूषन दीजे विप्रन कों गौदान । गोकुल मंगल महामहोत्सव कमलनैन घनस्याम ॥ २ ॥ नाचत देव विमल गंधर्व मुनि गावे गीत रसाल । 'परमानन्द' प्रभु तुम चिरजीयो नंदगोप के लाल ॥३॥❀५५❀राग सारंग❀ आज महामंगल महराने । पंच

सब्दध्वनि भीर बधाइ घर घर वे रखवाने ॥ १ ॥ ग्वाल भरे कावर गोरस की वधू सिंगारत वाने । गोपी गोप परस्पर छिरकत दधि के माट ढराने ॥ २ ॥ नाम करन जब कियो गर्ग मुनि नन्द देत बहु दाने । पावन जस गावत 'कटहरिया' जाहि परमेश्वर माने ॥३॥ ❀ ५६ ❀ राग सारंग ❀ घर घर ग्वाल देत हैं हेरी । वाजत ताल मृदंग बांसुरी ढोल दमामा भेरी ॥१॥ लूटत झपटत खात मिठाइ कहि न सकत कोउ फेरी । उन्मद ग्वाल करत कोलाहल व्रज वनिता सब घेरी ॥ २ ॥ ध्वजा पताका तोरन माला रुवे सिंगारी सेरी । जय जय कृष्ण कहत 'परमानन्द' प्रगट्यो कंस को वैरी ॥ ३ ॥ ❀ ५७ ❀ राग धनाश्री ❀ नंद महोत्सव हो वड कीजे । अपने लाल पर वारि नोछावर सव काहू कों दीजे ॥ १ ॥ विप्रन देहु गाय और सोनो भाटन रूपो दाम । व्रज जुवतिन पाटंबर भूषन पूजे मन के काम ॥ २ ॥ नाचो गावो करो बधाइ अजन जन्म हरि लीनो । यह अवतार वाल लीला रस 'परमानंद' हि दीनो ॥ ३ ॥ ❀ ५८ ❀ राग सारंग ❀ तुम जो मनावत सोइ दिन आयो । अपनो वोल करो किन जसुमति लाल घुटुरुवन धायो ॥ १ ॥ अब चलिहै पायन ठाडो ह्वै महरि वजाय वधायो । घरघर आनन्द होत सबन के दिनदिन बढत सवायो ॥ २ ॥ इतनो वचन सुनत नन्दरानी मोतिन चोक पुरायो । बाजत तूर तरुनि मिलि गावत लाल पटा बैठायो ॥ ३ ॥ 'परमानन्द' रानी धन खरचत ज्यों विधि वेद वतायो । जा दिन कों तरसत मेरी सजनी गहि अँगुरियन लायो ॥ ४ ॥ ❀ ५९ ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ जसोदारानी सोवन फूलन फूली । तुमारे पुत्र भयो कुल मंडन वासुदेव समतूली ॥१॥ देत असीस विरध जे ग्वालिन गाम गाम ते आई । ले ले भेट सबे मिलि निकसी मंगलचार वधाइ ॥२॥ एसे दसक होंइ जो औरे सव कोउ सचुपावे । वाढो वंस नंदवावा को 'परमानन्द' जिय भावे ॥३॥ ❀ ६० ❀ राग धनाश्री ❀ रानी तेरो चिरजीयो गोपाल । वेगि

वडो वढि होय विरध लट महरि मनोहर वाल ॥१॥ उपजि पर्‍यो यह कूखि भाग्यवल समुद्र सीप जैसे लाल । सब गोकुल के प्रान जीवन धन वैरिन के उरसाल ॥२॥'सूर' कीतो जिय सुख पावत है देखत स्यामतमाल। रज आरज लागो मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल ॥३॥ ❀ ६१ ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ बधाइ माइ आज वधाइ ।ध्रु०। आज वधाइ सव व्रजछाइ। व्रज की नारी सवे जुरि आइ ॥१॥ सुंदर नंदमहरजू के मंदिर । प्रगट्यो है पूत सकल सुख कंदर ॥२॥ होतहि ढोटा व्रजकी सोभा । देखि सखी कछु औरहि ओभा ॥३॥ मालिन सी जहाँ लछमी लोले । वंदनवार वाँधती डोले ॥४॥ वगर बुहारत फिरत अष्टसिद्ध । कोरन साथिया चित्रत नव निध ॥५॥ गृह गृह ते गोपी गमनी जव । रंगीली गलिन मे भीर भई तव ॥६॥ वीथी प्रेम नदी छवि पावे । नंदसदन सागर कों धावे ॥७॥ हाथन कंचन थार रहे लसि । कमलन चढि आये मानो ससि ॥८॥ मंगल कलस जगमगे नग के । भागे सकल अमंगल जग के ॥९॥ फूले ग्वाल मानो रन जीते । भये सवन के मन के चीते ॥१०॥ कामधेनु ते नेक न हीनी । द्वै लच्छ गाय द्विजन कों दीनी ॥११॥ नन्दराय तहाँ अति रस भीने । पर्वत सात रतन के दीने ॥१२॥ नंदराय गृह माँगन आये । वे वहोर्‍यो माँगन न कहाये ॥१३॥ घरके ठाकुर के सुत जायो । 'नंददास' तहाँ सव सुख पायो ॥१४॥ ❀ ६२ ❀ राग आसावरी ❀ वाला मैं जोगी जस गाया । धन जसुमति तेरे या तन कों जिन एसा सुत जाया ॥१॥ गुनन बड़ा छोटा जिनि जानो अलख पुरुष घर आया । जाको ध्यान धरत है मुनिजन निगम खोज नहिं पाया ॥२॥ जो चाहो सो लीजिये रावल करो आपनी दाया । देहु असीस मेरे या सुतकों बाढे अविचल काया ॥३॥ नाहीं लेहों पाट पाटंवर ना लेहों कंचन माया । अपने सुत को दरस दिखावो जो मेरे गुरु ने वताया ॥४॥ विनती किये कहत नन्दरानी सुनि जोगिन के राया ।

देखन न देहुँ तोहि दिगम्बर बालक जाय दिठाया ॥५॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जाय दिठाया। अलख पुरुष है मेरा स्वामी सो तेने भवन छिपाया ॥६॥ बालकृष्ण कों लाय जसोदा करि अंचल की छाया। दरसन पाय चरन रज बंदी सिंगी नाद बजाया ॥७॥ निरख निरख मुख पंकज लोचन नैनन नीर बहाया। देखत बने कहत नहिं आवे नाटक भला बनाया ॥८॥ 'ठाकुरदास' महाप्रभु लीला महादेव लौ लाया। लीला लाल ललित गुन अटक्यो चित नहिं चलत चलाया॥९॥❀६३❀ पलना ❀ राग रामकली ❀ झूलो पालने गोविन्द। दधि मथों नवनीत काढ़ों तुमकों आनन्द कन्द ॥१॥ कंठ कठुला ललित लटकन भृकुटी मन के फंद। निरखि छबि छिनछिन झुलाउं गाउं लीला छंद ॥२॥ द्वै दूध की दतियाँ सुख की निधियाँ हसत जब कछु मन्द। 'चतुर्भुज' प्रभु जननी बलि गिरिधरन गोकुलचंद ॥३॥ ❀ ६४ ❀ राग रामकली ❀ अपने बाल गोपाले रानी जू पालने झुलावे। वारंवार निहारि कमल मुख प्रमुदित मंगल गावे ॥१॥ लटकन भाल भृकुटी मसि बिंदुका कण्ठ कठुला बनावे। सदमाखन मधु सानि अधिक रुचि अंगुरिन करके चटावे ॥२॥ कबहुक सुरंग खिलोना ले ले नाना भाँति खिलावे। देखि देखि मुसिकाय साँवरो द्वै दतियाँ दरसावे ॥३॥ सादर कुमुद चकोर चंद ज्यों रूप सुधारस प्यावे। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल कों हँसि हँसि कंठ लगावे ॥४॥ ❀ ६५ ❀ राग रामकली ❀ नन्द को लाल व्रज पालने झूले। कुटिल अलकावली तिलक गोरोचना चरन अंगुष्ठ मुख किलकि फूले ॥१॥ नैन अंजन रेख भेख अभिराम सुठि कंठ केहरि नख किंकिनी कटि मूले। 'नन्ददासनि' नाथ नन्दनन्दनकुंवर निरखि नागरि देह गेह भूले ॥२॥ ❀ ६६ ❀ राग बिलावल ❀ हालरो हुलरावत माता। बलि बलि जाउँ घोख सुख दाता ॥१॥ अति लोहित कर चरन सरोजे। जे ब्रह्मादिक मनसा खोजे ॥२॥ जसुमति अपनो पुन्य बिचारे। वारंवार मुख कमल

निहारे ॥३॥ अखिल भुवनपति गरुडागामी । नन्द सुवन 'परमानन्द' स्वामी ॥४॥ ❀ ६७ ❀ राग आसावरी ❀ माईरी कमलनैन स्यामसुन्दर झूलत है पलना । बाल लीला गावत सब गोकुल की ललना ॥१॥ लाल के अरुन तरुन चरन कमल नखमनि ससि जोति । कुंचित कच मकराकृति लर लटकत गज मोती ॥२॥ लाल अंगुष्ठा गहि कमलपानि मेलत मुख मांहि । अपनो प्रतिबिंब देखि पुनि पुनि मुसिकाई ॥३॥ रानी जसुमति के पुन्य पुञ्ज वार-वार लाले । 'परमानंद' स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले ॥४॥ ❀ ६८ ❀ ❀ राग विलावल ❀ फूली चायन हुलरावे यसोदाजू लेत बलैया । अनूप पालने झुलाय हरख सों अंचल ओलि मागे विधिना पे जीयो मेरो कान्ह ललैया ॥१॥ यह ब्रजनायक यह ब्रज सोभा गोपी ग्वाल गौ वच्छ पलैया । 'जगन्नाथ कविराय' के प्रभु माइ सब सुख फलन फलैया ॥२॥ ❀ ६९ ❀ ❀ राग आसावरी ❀ वारी मेरे लटकन पग धरो छतियां । कमल नैन बलि जाउँ वदन की सोभित नैंनी नैंनी द्वै दूध की दतियां ॥१॥ यह मेरी यह तेरी यह बाबानन्दजू की यह बलभद्र भैया की यह ताकी जो झुलावे तेरो पलना । इहां ते चली खर खात पीवत जल परिहरो रुदन हँसो मेरे ललना ॥२॥ रुनक झुनक पग बाजत पैंजनिया अलबलकलबल बोलो मृदु बनियाँ । 'परमानंद' प्रभु त्रिभुवन ठाकुर जाहि झुलावे बाबा नंदजू की रनियाँ ॥३॥ ❀ ७० ❀ राग आसावरी ❀ तुम ब्रजरानी के लाला । अहो दधि मथत सुहाइ के लाला ।ध्रु०। दिव्य कनक को पालनो लाल रतन जटित नगहीर । गजमोतिन के झूमका हो लाल ऊपर दच्छिन चीर ॥१॥ घुटुरुन चलत सुहावने लाल पग नूपुर को नाद । कटि किंकिनी रुनझुनन करे लाल सुनत जननी अल्हाद ॥२॥ आधे आधे बचन सुहावने लाल सुनत जननी मन मोद । मुख चूमत स्तन पान देहो लाल ले बैठारति गोद ॥३॥ कुल्हे सुरंग सिर ताफताकी लाल झगुली पीत सुदेस । कण्ठ बधना कर पहोंचियाँ

लाज सोभित सुंदर वेस ॥४॥ तिलक खुल्यो गोरोचना लाल घूंघरवारे केस । नैनी नैनी दतियाँ द्वै दूध की लाल देखियत हंसत सुदेस ॥५॥ काजर लोचन आँज के लाल भोंह मटुक दे ईठ । अपनो लाल काहु देखन न देहों जिनि कोउ लावो डीठ ॥६॥ प्रथम हनी तुम पूतना लाल सकट भंजन तृन मारि । यमलाअर्जुन तारि के लाल अब किन छांड़ो आरि ॥७॥ मेरे लाल की मैया ब्रजरानी बाप गोपकुलराज । धनि धनि तुमारे बलभद्र भैया करत सकल सुर काज ॥८॥ मेरे लाल की गैया अति बाढ़ी चरन वृन्दावन जाँय । पान्यो पीवे नदी जमुना को अंजन खर वे खाँय ॥९॥ मेरे लाल हो प्यारे लाल तुम कंस मारि गढ़ लेहु । मथुरा फेरो ब्रजराज दुहाइ लाल गोप सखन सुख देहु ॥१०॥ लिये उठाय ब्रजराज मोद करि दे उगार हृदे लाय । बहोरयो लिये जननी गोद करि स्तन चले है चुचाय ॥११॥ कहत यसोदा सुनो मेरे 'गोविंद' लेहु कनिया चढ़ाय । जो झूलो तो पालने झुलाउं नातर आंगन बैठि खिलाय ॥१२॥ ❀ ७१ ❀ आरती समय राग कान्हरा। ❀ जसुमति तिहारो घर सुबसबसो । सुनरी जसोदा तिहारे ढोटा को न्हावत हू जिनि बार खसो ॥१॥ कोऊ करत मंगल वेदध्वनि कोउ गाओ कोऊ हंसो । निरखि निरखि मुख कमल नैन को आनंद प्रेम हिये हुलसो ॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवो कोटि वरीसो । 'परमानंद' नंद घर आनंद पुत्र जन्म भयो जगतजसो ॥३॥ ❀ ७२ ❀ राग सारंग ❀ गह्यो नंद सब गोपिन मिलि के देहु हमारी बधाई । अखिल भुवन की जो है महा सिद्धि सो तुमारे गृह आई ॥१॥ बाजत तूर करत कोलाहल मंगलचार सुहाइ । कंचुकी ऊपर कचलर लटकत ये छवि बरनी न जाइ ॥२॥ देदे कनक पाटंवर भूसन ग्वाल सबै पैहराइ । 'परमानंद' नंद के आँगन गोपी महानिधि पाइ ॥३॥❀७३❀

उत्सव श्री बडे ब्रजभूषण जी को (भादों बदी ६)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग देवगंधार ❀ आज बधाई मंगलचार। गावत मंगल गीत युवतिजन नवसत साज सिंगार ॥१॥ मंगल कनक कलस सुभ मंगल वांधी वंदनवार। मंगल मोतिन चौक पुराये पंचसब्द गृहद्वार ॥२॥ घरघर मंगलमहा महोत्सव श्रीवल्लभ अवतार। 'हरिजीवन' प्रभु यज्ञ पुरुष श्रीलछमन भूप कुमार ॥३॥ ❀ ७४ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ श्रीलछमन गृह मंगल भयो प्रगटे श्रीवल्लभ पूरन काम। माधव मास कृष्ण पच्छ सुभ लग्न उदित एकादसी दूसरो याम ॥१॥ मंगल कलस चोक मोतिन के बिबिध बिचित्र चित्र बने धाम। मंगल गावत मुदित मानिनी नख सिख रूप कामसी वाम ॥२॥ मिट्यो तिमिर दुख द्वन्द्व जगत को भोर भयो मानो मिटगइ याम। 'मानिकचन्द' प्रभु सदा बिराजो आय बसो श्री गोकुल गाम ॥३॥ ❀७५ ❀ राग सारंग ❀ सुभ बैसाख कृष्ण एकादसी श्रीवल्लभ प्रभु प्रगट भये। दैवी जीवन के भाग्य विस्तरे निरखत तन के ताप गये ॥१॥ पुष्टि भक्तिरस निज दासन कों अति उदार मन दान दये। 'मानिकचंद' हिय बसो निरंतर श्रीबल्लभ आनंद मये ॥२॥ ❀ ७६ ❀ राग सारंग ❀ जे वसुदेव किये पूरन तप सो फल फलित श्रीवल्लभ देह। जे गोपाल हुते गोकुल मे ते अब आन बसे निज गेह ॥१॥ जे वे गोप वधू ही व्रज में सो अब वेद ऋचा भइ जेह। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल तेइ एइ एइ तेइ कछु न संदेह ॥२॥ ❀ ७७ ❀ राग सारंग ❀ श्री वल्लभनन्दन रूप अनूप स्वरूप कह्यो न जाइ। प्रगट परमानन्द गोकुल बसत है सब जगत के सुखदाइ ॥१॥ भक्ति मुक्ति देत सबन कों निजजन कों कृपा प्रेम बरखत अधिकाइ। सुख मैं सुख रूप सुखद एक रसना कहां लों बरनो 'गोविंद' बलि जाइ ॥२॥ ❀ ७८ ❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ गो वल्लभ गोवर्धन वल्लभ श्री वल्लभ गुन गिने न जाइ। भुव की रेनु तरैया नभ की घन की बूँदे परत लखाइ ॥१॥ जिनके चरन कमल रज वंदित संतन होत

सदा चित चाइ। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल नन्दनन्दन की सब पर छाँहि ॥२॥ ❀ ७९ ❀ राजभोग के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ जब मेरो मोहन चलैगो घुटुरुवन तब हों करोंगी बधाइ। सर्वसु वारि देहुँगी तिहि छिनु मैया कहि तुतराइ ॥१॥ यसोदा के वचन सुनत 'केसो' प्रभु जननी प्रीति जानि अधिकाइ। नंद सुवन सुख दियो मात कों अति कृपाल मेरो नन्दललाइ ॥२॥ ❀ ८० ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ जो पै श्री विट्ठल रूप न धरते। तो कैसे के घोर कलियुग के महा पतित निस्तरते। श्रीविट्ठल नाम अमृत जिन लीनो रसना सरस सुफलते ॥२॥ कीरति विसद सुनी जिन श्रवनन विषय विष परिहरते। 'गोन्विद' वलि दरसन जिन पायो उमग उमग रस भरते ॥३॥ ❀ ८१ ❀ राग गौरी ❀ नातर लीला होती जूनी। जो पै श्री वल्लभ प्रगट न होते वसुधा रहती सूनी ॥१॥ दिन प्रति नई नई छवि लागत ज्यों कंचन नग चूनी। 'सगुनदास' या घर को सेवक यस गावत जाको मुनी ॥२॥❀८२❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ भक्ति सुधा वरखत ही प्रगटे श्री वल्लभ द्विजराज। माधव मास कृष्ण एकादसी पिय पुनीत दिन आज ॥१॥ करुणावंत अतुल सुखसागर संग लिये सकल समाज। वंधु कुमुद अनुचर चकोर के भये मनोरथ काज ॥२॥ आनन्द रूप जगत के भूपन लगत सबन सिरताज। 'विष्णुदास' गुनगनित थकित भये पंडित पावत लाज ॥३॥ ❀ ८३ ❀ राग कान्हरा ❀ श्री लछमन गृह प्रगट भये हैं श्री वल्लभ परमा-नन्द रूप। ब्रह्मवाद उद्धारन कारन गोपीपति पदरति पति भूप ॥१॥ महा-भाग्य पूरन दैवीजन जिन के हित अवतार लियो। प्रगट अनल देखत निज जनकों मायामत को तिमिर गयो ॥२॥ अपने दीन जान करुनामय वचनामृत पोखे संतत सब। नंदराय की फेर दिखाइ 'गिरिधर'की लीला ही जे तब ॥३॥ ❀ ८४ ❀ राग कल्याण ❀ श्री वल्लभलाल के गुन गाउं। माधुरी माधुरी मूरति देखे आनंद सदन मदनमोहन नयन चैन पाउं ॥ १ ॥

श्री वल्लभनन्दन जगत वंदन सीतल चंदन ताप हरन येहि महाप्रभु इष्ट करन चरनन चित लाउं। 'छीतस्वामी' मन वच कर्म परम धर्म येहि मेरे लाड़िलो लड़ाउं ॥२॥ ❀ ८५ ❀ राग कान्हरा ❀ आज धन भाग्य हमारे, प्रगटे श्री विट्ठलनाथ। निरखत त्रिविधताप तन के गये भवसागर ते तारे ॥१॥ स्यामल अंग बदन पूरनचंद देखियत जग उजियारे। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल वल्लभराज ललारे ॥२॥ ❀ ८६ ❀ सेनभोग सरे ❀ राग कान्हरा ❀ गाउं श्री वल्लभनन्दन के गुन लाउँ सदा मन अंग सरोजन। पाउं प्रेम प्रसाद ततच्छिन गाउं गोपाल गहे चित चोजन ॥१॥ नाउं सीस रिझाउं लाले आयो सरन यह जो प्रयोजन। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल छबि पर वारों कोटि मनोजन ॥२॥ ❀ ८७ ❀ पोढ़वे में ❀ राग कान्हरा ❀ कुंज भवन आज मङ्गल है री। किसलयदल कुसुमन की सैया तापर बिछई पीतपिछोरी॥ ओट्यो दूध कनक कटोरा और पानन की भर भर झोरी। सघन कुंज में श्री गिरिधर विलसत ललितादिक चितवत दृग चोरी ॥२॥ होंय मनोरथ मेरे जिय के दंपति पोढ़े एकहि ठोरी। कहे 'श्रीभट' ओटह्वै निरखों क्रीडा करत किसोर किसोरी॥३॥ ❀ ८८ ❀ राग विहाग ❀ कुञ्ज भवन में पोढ़े दोउ। नंदनंदन वृखभाननन्दिनी उपमा को दूजो नहिं कोउ॥ लाल कुसुम की सेज बनाइ कोककला जानत है सोउ। रस में माते रसिक मुकुटमनि 'परमानन्द' सिंहद्वारे होउ ॥३॥ ❀ ८९ ❀

बाल लीला (भादों बदी १०)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग विलावल ❀ जा दिन कन्हैया मोसों मैया कहि बोलेगो॥ सो दिन सुभग ता दिन गिनूँगी री आली रुनक झुनक व्रज गलियन में डोलेगो ॥१॥ भोर ही उठेगो धाय खिरक दुहेगो गाय बन्धन बछरुवा झटक कर खोलेगो। 'परमानन्द'प्रभु नवलकुंवर मेरो गोपन के अङ्ग सङ्ग बन में कलोलेगो ॥२॥ ❀ ९० ❀ शृङ्गार के ओसरा में तमूरा सुं ❀

❀ राग बिलावल ❀ सोभित कर नवनीत लिये। घुटुरुन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये ॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन को तिलक दिये। लर लटकन मानों मत्त मधुपगन मादिक मधुहि पिये ॥२॥ कठुला कण्ठ वज्र केहरि नख राजत है सखी रुचिर हिये। धन्य 'सूर' एको पल यह सुख कहा भयो सतकल्प जिये ॥३॥ ❀ ६१ ❀ राग बिलावल ❀ ब्रज की रीति अनोखी री माइ। जो कोउ नंद भवन में आवत ताको मन हर लेत कन्हाइ ॥१॥ उर वघना मुख माखन सोहे तन की कहा कहों जो निकाइ। घुटुरुन चलत छाँह कों पकरत किलकत हसत खेलत अंगनाइ ॥२॥ मात यसोदा लेत वलैया मन में मोद वढ्यो न समाइ। 'कल्याण' के प्रभु यह छबि निरखत पलक की ओट सही नहिं जाइ ॥३॥ ❀६२❀ शृङ्गार के दर्शन ❀ ❀ राग बिलावत ❀ आज प्रात ही तुतरात वात कहत वलि कन्हैया। जैसे सुक सुक पिक पिक वोल वोलत है अरस परस सुनि सुनि सुख पावत भावत नन्द जसोदा मैया ॥१॥ बचन रचन कहत समझ समझ परत नहिं कछु विच विच दाउ जब कहत मेरी गैया। रीझ रीझ पुलकि पुलकि उर लगात चूमत सुख वार वार कहत यह लेत पुनि बलैया ॥२॥ वहुविध पकवान पान खीर नीर माखन मधु मेवा मिश्री ले प्यावत मथि घैया। वलि वलि ब्रज वनिता जहाँ 'दामोदर'हित चित नित हरत लरत भूखन पट नटवर दोउ भैया ॥३॥❀६३❀ ❀ राग सारंग ❀ आँगन खेलिये झनक मनक। लरिका यूथ संग मन मोहन वालक ननक ननक ॥१॥ पैया लागों पर घर जैवो छाँडो खनक खनक। 'परमानन्द' कहत नंदरानी वानिक तनक तनक ॥ २ ॥ ❀ ६४ ❀ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ दुहूँकर फोंदना मुख मेलत। रामकृष्ण वैठे गोद जननी की कबहुक उतरि घुटुरुन खेलत ॥१॥ चाही रहत खुन खुना सुनि सुनि हंसि वसुधा पगसों पग ठेलत। 'रामदास' प्रभु सिसुता के वस अरवराय खिलोना संकेलत ॥२॥ ❀ ६५ ❀ संध्या आरती मे ❀ राग नट ❀

काहू जोगिया की नजर लगी मेरो बारो कान्हर रोवे। घर घर हाथ दिखाय जसोदा दूध पीये नहिं सोवे ॥१॥ राई लोन उतार यसोदा जोगिया यह को है। 'सूर' प्रभु को यही अचंभो तीन लोक सब मोहे ॥२॥ ❀ ६६ ❀ ❀ सेन के दर्शन में ❀ राग ईमन ❀ चलो मेरे लाड़िले हो पायन पैजनी के चाय। रतन जटित की गढ़ाइ याही लालच कों पहराइ ठुमकि ठुमकि पग धरो मनमोहन लेहुँ बलाय ॥१॥ आज को दिन सुहावनो वलि जाउं लला मेरे आँगन खेलिये धाय। वारोंगी सर्वस्व 'नारायन' विप्रन देहुँगी गाय ॥ २ ॥ ❀ ६७ ❀ पौढ़वे मे ❀ राग विहाग ❀ सोवत नींद आय गइ स्यामहि। महरि उठ पोढ़ाय दुहुन कों आपुन लगी गृह कामहि ॥१॥ वरजत है घर के लोगन कों हरिये ले ले नामहि। गाढ़े वोल न पावत कोऊ डर मोहन वलरामहि ॥२॥ सिव सनकादि अन्त नहिं पावत ध्यावत हैं दिनयामहि। 'सूरदास' प्रभु ब्रह्म सनातन सो सोवत नंद धामहि ॥३॥ ❀६८❀

उत्सव छठी को–पलना (भादों वदी १२)

❀ मंगला के दर्शन मे ❀ राग विलावल ❀ सखीरी नंदनंदन देख। धूरि धूसर जटा जरुली हरि कियो हर भेख ॥ केहरी के नखन देखत रही सोच विचारि। बाल ससि मानो भाल ते ले उर धरयो त्रिपुरारि ॥२॥ नीलपाट पिरोहि मनिगन फनिग धोखे जाय। खुनखुना कर लिये मोहन नचत डमरु बजाय ॥३॥ जलजमाल गोपाल के उर कहा कहूँ बनाय। गंग मानों गौरी के डर लई कण्ठ लगाय ॥४॥ देखि अङ्ग अनंग लज्जित निरखि भयो भय मान। 'सूर' हिरदे सदा वसिये स्याम सिव की वान ॥५॥ ❀६९❀ ❀ राग विलावल ❀ जसोदा अपनों लाल खिलावे प्रेम की कलोलन सों लाड़ लड़ावे। उवट मज्जन करि सिंगार भ्रकुटी मसि विंदुका लावे जाहि गावे वेद ताहि चलन सिखावे ॥१॥ विस्वधरन सवके सरन ताहि थाम गहि हाथ ठुमकि ठुमकि चलत नाथ नूपुर वजावे। तेसेइ सोभित सखा संग

दही लपटाने । पहरे वसन विविध अंग भूसन गिनत न राजा राने ॥४॥ नाचत गावत प्रेम मुदित नर नारी न को पहिचाने । 'व्यास' रसिक तन मन फूले अति निरखि सवे खिसियाने ॥५॥ ❀ १०६ ❀ राग विलावल ❀ वाजत रावल माँझ वधाइ । श्री वृषभानगोप के प्रगटी श्रीराधा आनन्ददाइ ॥१॥ घर घर ते नर नारी मुदित मन सुनत चले उठि धाइ । ललित वचन लोचन भरि निरखत मानों रंक निधि पाइ ॥२॥ नाचत गावत करत कुलाहल घर घर वात लुटाइ । फूले गात न मात कंजलों मानों तमरिपु दरसाइ ॥३॥ कुल मण्डन दुख खण्डन सुंदरि स्याम सरीर सुहाइ । निरवधि नित्य स्नेह परायन 'प्रिय दयाल' वलिजाइ ॥४॥ ❀ १०७ ❀ राग विलावल ❀ आज रावल मे जयजयकार । प्रगट भइ वृखभान गोप के श्री राधा अवतार ॥१॥ गृहगृह ते सव चली वेगते गावत मंगलचार । प्रगट भइ त्रिभुवन की सोभा रूपरासि सुखसार ॥ २ ॥ निर्तत गावत करत वधाइ भीर भई अति द्वार । 'परमानन्द' वृषभान नंदिनी जोरी नन्ददुलार ॥३॥ ❀ १०८ ❀ राजभोग आये ❀ ❀ राग आसावरी ❀ जनम लियो वृषभान गोप के वैठे सव सिंहद्वार री । लग्न धरी वलि नछत्र साधि के गुरुजन कियो विचार री ॥१॥ कंचन मनि आँगन आगे रहि वोलत द्विजवर वेन । कवहुक सुधि पावत सुभवन मे पुत्र जनम के चैन ॥२॥ इतने एक सखी आइ धाइ के जहाँ वैठे वलि ग्वाल । वेगि पुकार कह्यो मुख आली प्रगटी सुता लघु वाल ॥३॥ तव हसि तारी दे गुरुजन कों देख्यो जन्म विधान । हमरे कोटि पुत्र की आसा पूरन करी वृखभान ॥४॥ कर भाजन भृङ्गाजु गर्गमुनि लग्न नछत्र वलि सोध । भये अचरज गृह देखि परस्पर कहत सवन प्रति वोध ॥५॥ सुदि भादों सुभ मास अष्टमी अनुराधा के सोध । प्रीति योग वल वालव करण लग्न धनुप वर वोध॥६॥प्रथम पहर दिन उदित दिवाकर सत्या सुखद सुजात। नामकरन राधा रति रंजन रमा रसिक वहु भाँति ॥७॥ सुनि वृखभान

हुलराउं ग्वालन के मुख की कहानी सुनाउं ॥१॥ कोनधों भवन आये काहू की नजर लागी भोरही ऋषिराज रच्छा बंधाउं । मेरे 'व्रजईस' तुम एसी बूझो न रीस भोरही कुंवर कान्ह झगुली सिवाउं ॥२॥ ❀ १०४ ❀

राधाष्टमी की बधाई (भादों सुदी ८)

❀ शृङ्गार के ओसरा में ❀ राग देवगंधार ❀ जनम बधाई कुंवरि लली की । प्रगटी प्रभा अद्भुत सुगंधिनी हरि अलि कंज कली की ॥१॥ सुमुख समूह सिहात सुनत ही यह विधि बात भली की । कीरति रानी की कल कीरति गावत सुफल फली की ॥२॥ बिनु बछरन गैया खेलत सुभ सगुन दसा कुसली की । बलि को चार सार सोइ सजनी दानव दलन दली की ॥३॥ रोपत बंदनवार द्वार वर रूपी अवल कदली की । रोपति सींक सुवासिनि सथिये सिख नहिं सुनत अली की ॥४॥ अगनित सुत अवतार निवारो को भयो प्रनत पली की । महामोद मूरति को उद्भव लाल अनुज मुसली की ॥५॥ भायो भयो नंदयसोदा को प्रथमहि बात चली की । भायो भयो वृखभान गोप को बचन सहित दृढली की ॥६॥ कनकथार भरि रतन वारने आवनि गली गली की । रावल रावरि कुसुमन झरझरे अरु भरि डलाडली की ॥७॥ नाचत गोपी गोप ओप सों और निसान धुली की । यह भयो दान अमान मानदे और मर्याद मली की ॥८॥ राधा नाम कहत ऋषिवर पढ़ि यह थिर निगम थली की । दधिकादों भादों झर लायो आठे पंथ पथली की ॥९॥ बेगि बधैया गयो महावन बिदा भइ महली की । हेरी देत अघै है नाहीं अब चढ़ि बनी 'बली' की ॥१०॥ ❀१०५ ❀ राग बिलावल ❀ आज बधाइ है बरसाने । कुंवरि किसोरी जनम लियो है सब लोकन बजे निसाने । कहत नंद वृषभान राय सों बहुत बात को जाने । आज भैया हम सब व्रजवासी तेरे हाथ बिकाने ॥२॥ या कन्या के आगे कोटिक बेटन कों को माने । तेरे भले भलो सबहिन को आनंद कोन बखाने ॥३॥ छैल छबीले गोप रंगीले हरद

दही लपटाने । पहरे वसन विविध अंग भूसन गिनत न राजा राने ॥४॥ नाचत गावत प्रेम मुदित नर नारी न को पहिचाने । 'व्यास' रसिक तन मन फूले अति निरखि सबे खिसियाने ॥५॥ ❀ १०६ ❀ राग विलावल ❀ वाजत रावल माँझ वधाइ । श्री वृषभानगोप के प्रगटी श्रीराधा आनन्ददाइ ॥१॥ घर घर ते नर नारी मुदित मन सुनत चले उठि धाइ । ललित वचन लोचन भरि निरखत मानों रंक निधि पाइ ॥२॥ नाचत गावत करत कुलाहल घर घर वात लुटाइ । फूले गात न मात कंजलों मानों तमरिपु दरसाइ ॥३॥ कुल मण्डन दुख खण्डन सुंदरि स्याम सरीर सुहाइ । निरवधि नित्य स्नेह परायन 'प्रिय दयाल' वलिजाइ ॥४॥ ❀ १०७ ❀ राग विलावल ❀ आज रावल मे जयजयकार । प्रगट भइ वृखभान गोप के श्री राधा अवतार ॥१॥ गृहगृह ते सव चली वेगते गावत मंगलचार । प्रगट भइ त्रिभुवन की सोभा रूपरासि सुखसार ॥ २ ॥ निर्तत गावत करत वधाइ भीर भई अति द्वार । 'परमानन्द' वृषभान नंदिनी जोरी नन्ददुलार ॥३॥ ❀ १०८ ❀ राजभोग आये ❀ ❀ राग आसावरी ❀ जनम लियो वृपभान गोप के वैठे सव सिंहद्वार री । लग्न घरी वलि नछत्र साधि के गुरुजन कियो विचार री ॥१॥ कंचन मनि आँगन आगे रहि वोलत द्विजवर वेन । कवहुक सुधि पावत सुभवन मे पुत्र जनम के चैन ॥२॥ इतने एक सखी आइ धाइ के जहाँ वैठे वलि ग्वाल । वेगि पुकार कह्यो मुख आली प्रगटी सुता लघु वाल ॥३॥ तव हसि तारी दे गुरुजन कों देख्यो जन्म विधान । हमरे कोटि पुत्र की आसा पूरन करी वृखभान ॥४॥ कर भाजन शृङ्गजु गर्गमुनि लग्न नछत्र वलि सोध । भये अचरज गृह देखि परस्पर कहत सवन प्रति वोध ॥५॥ सुदि भादों सुभ मास अष्टमी अनुराधा के सोध । प्रीति योग वल वालव करण लग्न धनुष वर वोध॥६॥प्रथम पहर दिन उदित दिवाकर सत्या सुखद सुजात। नामकरन राधा रति रंजन रमा रसिक वहु भाँति ॥७॥ सुनि वृखभान

सुता जिनि मानों ऐसी रमा रति लोल। नाहिन और सुन्दर त्रिभुवन मे श्रीराधा समतोल ॥८॥ नाहिन सची रमा गिरिजा रति रोम-रोम प्रति ठाने। नवनिधि चारि पदारथ को फल आयो सकल ग्रहताने ॥९॥ जब व्याहन सुभ योग होयगी सोभा कहत न आवे। दस और चारि लोक को नायक यह सुता वर पावे ॥१०॥ तब हँसि कह्यो दुर्वासा वेनन सुनो श्रुति सकल गुवाल। मेरेही चित आयो निश्चल नंदमहर घर बाल ॥११॥ वृन्दावन रस-रास रसिकमनि दंपति-संपति माने। संकेत स्थल विहरत दोउ सोइ सकल यह जाने ॥१२॥ युवति यूथ मधि सुभग सिरोमनि वल्लव कुल नंदलाल। यह जोरी जग जुगति होयगी राधारमन गोपाल ॥१३॥ सिव विरंचि जाकी जूठन पावे सो ग्रास परस्पर देत। कुंज निकुंज क्रीडत अद्भुत दोउ निगम अगम रस लेत ॥१४॥ यह विधि कह्यो द्विजराज जुवति सों ग्वाल-मण्डली जाने। जय-जयकार करत सुर लोकन बाजत तूर निसाने ॥१५॥ घर-घर ते गोपी सब निकसी गावत मङ्गल बाल। पिकबेनी मृगनैनी सुन्दरि चलत सु चाल मराल ॥१६॥ जो रस नंदभवन मे उमग्यो ताते दूनो होत। हय गज धेनु कनक भरि दीने बंदीजन द्विज बहोत ॥१७ बसन विचित्र बहुत पहराये सब सिसु देखन जाय। मुख अव-लोकि कहत चिरजीयो पुलकि-पुलकि सचुपाय ॥१८॥ सुर मुनि नाग धरनि जङ्गम कों आनंद अति सुख देत। ससि खंजन विद्रूम सुक केहरि तिनकों छीनि बलि लेत ॥१९॥ 'सूरदास' उर वसो निरन्तर राधा-माधो जोरी। यह छबि निरखि-निरखि सचु पावे पुनि डारे त्रन तोरी ॥२०॥

❀ १०९ ❀ राग धनाश्री ❀ बरसाने वृषभान गोप के आनंद की निधि आइ जू। धनि-धनि कूखि रानी कीरत की जिन यह कन्या जाइ जू ॥१॥ इन्द्रलोक भुवलोक रसातल देखी सुनी न गाइ। सिंधु सुता गिरि सुता सची रति इन समान कोउ नांइ ॥२॥ आनंद मुदित जसोदा रानी लाल की करी

सगाइ। प्रभु 'कल्यान' गिरिधर की जोरी विधिना भली बनाइ ॥३॥ ❀ ११० ❀ राजभोग के दर्शन में ❀ रागसारंग ❀ आज वृषभान के आनंद। वृन्दाविपिन बिहारिन प्रगटी श्रीराधा आनंदकंद ॥१॥ गोपी ग्वाल गाय गोसुत ले चले जसोदा नंद। नंदीसुर ते नाचत गावत आनंद करत सुछंद ॥२॥ लेत विमल यस देत वसन पसु धरत दूब सिर वृन्द। लोचन कुमुद प्रफुल्लित देखियत ज्यों गोरी मुखचंद ॥३॥ जाचक भये परम धन कहियत गोधन-सुधा अमन्द। भये मनोरथ 'व्यासदास' के दूर गये दुख द्वन्द ॥४॥ ❀ १११ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ प्रगट्यो सब व्रज को शृङ्गार। कीरति कूख अवतरी कन्या सुंदरता को सार ॥१॥ नखसिख रूप कहां लों बरनों कोटि मदन बलिहार। 'परमानन्द' वृषभान नन्दिनी जोरी नंददुलार ॥२॥ ❀११२❀ राग खट ❀ आज बधाइ की विधि नीकी। प्रगटी सुता वृषभान गोप के परम भावती जीकी ॥१॥ जिन देखे त्रिभुवन की सोभा लागत है अति फीकी। 'परमानन्द' बलि-बलि जोरी यह सुंदर सांवरे पीकी ॥२॥ ❀११३❀ संध्या भोग आये में ❀ राग नट ❀ आज बरसाने बजत बधाइ। प्रगट भइ वृषभान गोप के सबहिन की सुखदाइ ॥१॥ आनंद मगन कहत युवतीजन महरि बधावन आइ। बन्दीजन मागध याचक गुनि गावत गीत सुहाइ ॥२॥ जय-जयकार भयो त्रिभुवन मे प्रेम-बेलि प्रगटाइ। 'सूरदास' प्रभु की यह जीवन जोरी सुभग बनाइ ॥३॥ ❀ ११४ ❀ संध्या आरती में ❀ राग गौरी ❀ हों तो फूली अंग न समाउं मेरे मन आनंद भयो। नंदीसुर ते चल्यो ढाढी वृषभान गोप के आयो। कीरति जू के कन्या जाइ सब मिलि नाचो गाओ ॥ १ ॥ आओरी सब सखी सुवासिन मिल साथिये धराओ। द्वारे बंदनवार बंधाओ मोतिन चौक पुराओ ॥ २ ॥ सात साख को मेरो राजा जा घर बजत बधाइ। कुंवरि भइ वृषभान नृपति के अष्ट महासिद्धि पाइ ॥३॥

हाटक हीर चीर नानारंग भादों झरी लगाइ। भाभीजू सों झगरो कीजे आज भली बनि आइ ॥४॥ बाजे महाघोर सों बाजे रानी कीरति पकर नचाइ। 'गरीबदास' कों पीत झगुलिया सरस पंजीरी पाय ॥५॥ ❀११५❀ ❀ सेन भोग आये मे ❀ राग कान्हरा ❀ बजत वृषभान के परम बधाइ। प्रगटी कुंवरि राधिका सुखनिधि कीरति कूख सिराइ ॥१॥ आये हुलसि राय जू राजत गिरिधारी बल भाइ। गोप ग्वाल और सब ब्रज-वासिन रावल बहुत भराइ ॥२॥ देवभान वृषभान भान सब आदर देत अघाइ। फिरि-फिरि कहत यही विधि कीनी रानी गोद सुत लाइ ॥३॥ धावत गावत गीत सबै वृषभान के आंगन आइ। धरि-धरि सतिये हरद रोरिन के बंदनवार बँधाइ ॥४॥ कीरति ने हँसि अपनी कुंवरि जसुमति की गोद बैठाइ। फिरि फिरि कहत तुमारे भागिन ऐसी कुंवरि हम पाइ ॥५॥ सबहिन बदन निहारि वारि नोछावर दीनी मन भाइ। 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' कुंवरि की सब कोउ बलि जाइ ॥६॥ ❀ ११६ ❀ राग कान्हरा ❀ माइ प्रगटी कुंवरि वृषभान के। सब मिल कहत ग्वाल कीरति सों आनंदनिधि जाइ आज के ॥१॥ बाजत तूर करत कोलाहल रावल सोभा बरनी न जाइ। गाम-गाम ते टीको आयो अरु संग बजत बधाइ ॥२॥ नंदलाल अरु कुंवरि राधिका जानो कंचन बेल, किसोरी। फिरि फिरि रहत निहारि 'श्रीविट्ठलगिरिधर' सदा रहो यह जोरी ॥ ३ ॥ ❀ ११७ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ जब ते राधा भूतल प्रगटी तब ते विधि को मान हन्यो। मेरी तो यह सृष्टि न होइ अब कछु अदभुत बान बन्यो ॥१॥ एक रूप एक वेस एक गुन वरन विलच्छ ठन्यो। 'कृष्णदास' प्रभु श्री गिरिधर ते केलि कला रस सन्यो ॥ २ ॥ ❀ ११८ ❀ राग कान्हरा ❀ रावल आज कुलाहल माइ। बाजे बाजत भवनन गाजत प्रगटी सबन सुखदाइ ॥१॥ धरत साथिये बंदनवारे रोपी द्वार सुहाइ। गावत गीत गली गोकुल की जे जुरि

न्योंते आइ ॥२॥ श्री वृखभान के आँगन रानी जू वैठी देत वधाइ। 'श्रीविट्ठल 'गिरिधरन' कुंवरि की वरस गाँठि मन भाइ ॥३॥ ❀ ११६ ❀ सेन के दर्शन में ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ रावल राधा प्रगट भइ। अव व्रजवसि सुख लेहु सखीरी प्रगटी कुंवरि रसमइ ॥१॥ या निधि कों सव विधि चाहत है सो कीरति तुमहि दइ। 'रामदास' सुनि गोकुल आयो जसुमति पै जु वधाइ लइ ॥२॥ ❀१२०❀

उत्सव श्री चन्द्रावलीजी को (भादों सुदी ५)

❀ मंगला में ❀ राग देवगंधार ❀ प्रगटी नागरी रूप निधान। देखि देखि वूझत जो परस्पर नहिं त्रिभुवन मे आन ॥१॥ उपमा कों जे जे कहियत है ते जु भये निरमान। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर की जोरी सहज समान ॥२॥ ❀१२१❀ ❀ शृङ्गार के ओसरा में ❀ राग विलावल ❀ श्री वृखभान के हो आँगन मङ्गल भीर। देस देस के भिक्षुक आये पढ़त विरद आभीर ॥१॥ एक सूवा हाथ पढायो। राधे जू को सुजस वुलायो। वृखभान राय मन भायो। सुक कंचन चोंच मढ़ायो ॥२॥ एक कोयल मधुर सिखाइ। राधे कहि लेत वुलाइ। रीझे वृखभानजू ताकों। पग पेंजनी दीनी वाकों ॥३॥ एक मैना मोद वढ़ावे। कीरति की कूखि मल्हावे। रावलपति मृदु मुसिकाने। कछु वारि देत वहु दाने ॥४॥ एक वगुला ढाढी लायो। वह देखत सव मन भायो। ताहि रीझि रही व्रजवाला। उन दीनी मोतिन माला ॥५॥ एक ढाढो सारो पाली। वोलन सिखइ मानों आली। खीचरी चरुवा जसु गायो। उन लियो आपु मन भायो ॥६॥ एक मोर नचावत आयो। उन कुहुक कुहुक जसु गायो। वृखभान राय मन भायो। गजमोती तिने चुगायो ॥७॥ एक मृग छोना गहि आन्यो। नखसिख लों छवि अति आन्यो ॥८॥ वृखभान चरन पर लोटे। सव सखियन के मन पोटे। एक जरकसि पट सिर वाँधे। वनचर धरि लायो काँधे। कूदत गोपिन के भोरे। वनचर ले वलाय त्रन तोरे ॥९॥ एक नंदगाम ते आये। वे ढाढी परम सुहाये। उन चढ़ि गज अति दौराये। रावलपति दिये मन भाये ॥१०॥

कोउ घोरन चढ़ि चढ़ि धाये। वे सुनत बात मन भाये। कीरति उर जनमी राधा। अब देहु मान मन साधा ॥११॥ एक लरकन गोदी लीने। चित्र विचित्र अति कीने। ते मङ्गलगीत सुनावे। मिलि भान भवन सब आवे ॥१२॥ एक ढोलक ताल बजावे। एक महुवरि में जसु गावे। नाचत वृखभान हि भावे। वे तान परे सिर नावे ॥१३॥ एक नट विद्या बहु खेले। गरे डार भुजा भुज पेले। वृखभानहि नाये माथे। टोडर भर दीये हाथे ॥१४॥ एक नाचत तंवक तंवे। वे धाय धरत डग लम्वे। चिरजियो कुंवरि की मौसी। वह दान देत बहु हौंसी ॥१५॥ द्विज वेद पढ़त है साथन। वे कुस लिये सब हाथन। कुंवरीसु आनन्द कन्दे। सुनि भान विप्र पद वन्दे ॥१६॥ नक्षत्र योग सब साधे। जोतिस वेद आराधे। निर्दुःख भइ सुकुमारी। जिन दान दिये अतिभारी ॥१७॥ बहु नाचत गोपी सोहे। तन छवि दामिनी अति मोहे। वृखभान आये ढिंग तिन पे। मनि मोती वारे इनपे ॥१८॥ कहुँ बछरा कहुँ गैया। कूदत मन मे अति छैया। कुंवरि जनम सुनि फूली। आँगन खेलत सुधि भूली ॥१९॥ कहुँ गोपिन के सुत किलके। छवि अङ्ग अङ्ग मे झलके। प्रमुदित जनम लली को। कहुँ कही सी आनि अली के ॥ कहुँ गोप जु हेरी गावे। ते दूध खुरचनी पावे। वे दधि हरदी कों छिरके। सब देवन के मन करके ॥२१॥ कोउ वंदनमालन बाँधे। ऊंचे द्वारन चढ़ि कांधे। वे लेत नेग है अपनो। सखि आज भयो मोहि सपनो ॥२२॥ कहुँ मोतिन चोक पुरावे। एक ठाडी भइ बतावे। घरन ललित छवि छाइ। मानो निपजी है चतुराइ ॥२३॥ रंग रंग बाँस की डलिया। वे फल फूलन सों भरिया। दूब लिये एक आवे। वृखभान के सीस बंधावे ॥२४॥ अपनी निधि जो जाहि प्यारी। लेले आये बेपारी। वृखभान लाय बहु दीने। उनके मन भाये कीने ॥२५॥ कोउ बाँधत ध्वजा पताका। मन में बाढ़ी अभिलाखा। सुर विमान चढ़ि आये। वृखभानजू

वाहि बसाये ॥२६॥ यह सुख देखि समाजे। सुरपति मन में अति लाजे। गोप देह कर हीने। विधिने हम विचित्र कीने॥ जै जै कर फूलन वरखे। वह देखि देखि मन हरखे। कुंवरि किसोरी जनमे। वृखभान धन्य गोपन में ॥२८॥ एकन्त वास मुनि रहते। राधा हरि सुमरन करते। ते जनम सुनत उठि धाये। कुंवरि पद सीस नवाये ॥२६॥ सुख समूह को सागर। श्री वृखभान उजागर। नीरस भगत अंधेरो। ताको तन सुत भयो उजेरो ॥३०॥ यह आनन्द मंगल जितनो। कापे कहि आवे तितनो। अपने हितकों जो गावे। वो मनवाँछित फल पावे ॥३१॥ स्याम दरस हित गावे। वृखभान गोप मन भावे। 'गोवर्धन' गाय हुलासा। ब्रजजन दासिन को दासा ॥३२॥ ❀ १२२ ❀ शृङ्गार के दर्शन में ❀ राग विलावल ❀ बाजे बाजे मंदिलरा वृखभान नृपति दरबारा। प्रगटी है सुभ घरी नक्षत्र ब्रज रोप्यो है बंदनवारा ॥१॥ सखी सहेली मंगल गावे नाचे सांचे तारा। 'गरीबदास' की स्वामिनी बाढ्यो रंग अपारा ॥ २ ॥ ❀ १२३ ❀ ❀ राजभोग आये मे ❀ राग सारंग ❀ महारस पूरन प्रगट्यो आनि। अति फूली घर घर ब्रजनारी श्री राधा प्रगटी जानि ॥१॥ धाइं मंगल साज सब ले महामहोत्सव मानि। आइं घर बृखभान गोप के श्रीफल सेहत पानि ॥२॥ कीरति वदन सुधानिधि देख्यो सुंदर रूप बखानि। नाचत गावत दे कर तारी होत न हरख अघानि ॥३॥ देत असीस सीस चरनन धरि सदा रहो सुख दानि। रस की निधि ब्रज 'रसिकराय' सों करो सकल दुःख हानि ॥४॥ ❀ १२४ ❀ राजभोग के दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ आज चन्द्रभान के वधाइ। सुखमा कूखि अवतरी कन्या घर घर बजत वधाइ ॥१॥ नाम धर्यो चंद्रावलि सुख निधि कोटिक चंद्र लजाने। भादों सुदि पाँचे सुभ वासर अरुन हृदय रस माने ॥२॥ सुनि बृखभान नंद मन हरखे देखि अनूपम सोभा। 'कृष्ण दास' गिरिधर की जोरी देखत रतिपति लोभा ॥ ३ ॥ ❀ १२५ ❀

❀सेन के दर्शन में ❀राग कन्हरा❀ आठे भादों की उजियारी। रावल में वृषभान गोप के प्रगटी श्रीराधा प्यारी॥१॥ श्रुति स्वरूप सब संग करिलीने व्रजपति हेत बिचारी। 'दासगोपाल'वल्लवजू की स्वामिनी वसकीने गिरधारी॥२॥❀१२६ ❀ भादों सुदी ७ ❀ भोग के दर्शन में ❀राग गौरी ❀मुदित निसान बजावही वृषभान नृपति दरबार हो। भादों सुदी आठे उजियारी सुभ नछत्र गुन सार हो। प्रगटी कूखि महर कीरति के श्रीराधा अवतार हो॥१॥गृह-गृह ते गोपी बनि निकसीं गावत मङ्गलचार हो। हरखत चलीं बधाये कुंवरि कर लिये कंचन थारहो॥२॥ धन्य कूखि रानी की यों कहि हँसि-हँसि लागत पाय हो। वदन विलोकि कुंवरि राधा को पुनि-पुनि लेत बलाय हो ॥३॥ यह जोरी गिरिधर सम प्रगटी उपमा को नहिं आन हो। 'रामदास' विप्र भाटन कों देत राय बहु दान हो ॥४॥ ❀१२७❀ संध्या आरती में ❀ राग गौरी ❀ ढाढिन नृत्यत सुलप सुदेस भवन वृषभान के। बरनत बंस निकट कीरति के पहरे अद्भुत वेस। लटकि चलत गति ललित भाल पर श्रमजल सिथिल सुकेस ॥१॥ जो पायो सो सबहि लुटायो भूखन वसन अपार। 'हित अनूप' बैठारी नियरे राखी अपने द्वार ॥२॥ ❀१२८❀ सेन भोग आये में ❀ राग कान्हरा ❀ आज छठी की रात द्योस अति ही मङ्गल कारी। सुजस सुन्यो वृखभानराय को भादों पच्छ अति उजियारी ॥१॥ दूर देस के जुरे न्योतकी सब मन यह ही बिचारी। लगन एक साध्यो सुभ तबही यह न होय विधि की ओलारी॥ ॥२॥ नाग लोक सुरलोक सुभूतल नाहिन यह सोभा अति सारी। अर्धाङ्गी मोहन की जाइ श्री वृषभान सुता री ॥३॥ कवि को विधि ये कहत न आवे सेस सारदा त्रिपुरारी। कुंवरि सो मङ्गलमय अति कीरति 'अग्रदास' यह सुता उर धारी ॥४॥ ❀ १२६ ❀ राग कान्हरा ❀ आज बहुत वृषभान घोख में मङ्गलचार बधाये। प्रगटी आय कूखि कीरति की भये सबन मन भाये ॥१॥ आनंदराय जसोदा रानी सुनत सबन ले धाये। गोप ग्वाल

❀सेन के दर्शन में ❀राग कन्हरा❀ आठे भादों की उजियारी। रावल में वृषभान गोप के प्रगटी श्रीराधा प्यारी॥१॥ श्रुति स्वरूप सब संग करिलीने व्रजपति हेत बिचारी। 'दासगोपाल' वल्लवजू की स्वामिनी वसकीने गिरधारी॥२॥❀१२६ ❀ भादों सुदी ७ ❀ भोग के दर्शन में ❀राग गौरी ❀मुदित निसान बजावही वृषभान नृपति दरबार हो। भादों सुदी आठे उजियारी सुभ नक्षत्र गुन सार हो। प्रगटी कूखि महर कीरति के श्रीराधा अवतार हो॥१॥गृह-गृह ते गोपी वनि निकसीं गावत मङ्गलचार हो। हरखत चली बधाये कुंवरि कर लिये कंचन थारहो॥२॥ धन्य कूखि रानी की यों कहि हँसि-हँसि लागत पाय हो। वदन विलोकि कुंवरि राधा को पुनि-पुनि लेत बलाय हो॥३॥ यह जोरी गिरिधर सम प्रगटी उपमा को नहिं आन हो। 'रामदास' विप्र भाटन कों देत राय वहु दान हो॥४॥ ❀१२७❀ संध्या आरती में ❀ राग गौरी ❀ ढाढिन नृत्यत सुलप सुदेस भवन वृषभान के। बरनत बंस निकट कीरति के पहरे अद्भुत वेस। लटकि चलत गति ललित भाल पर श्रमजल सिथिल सुकेस॥१॥ जो पायो सो सवहि लुटायो भूखन वसन अपार। 'हित अनूप' बैठारी नियरे राखी अपने द्वार॥२॥ ❀१२८❀ सेन भोग आये में ❀ राग कान्हरा ❀ आज छठी की रात घोस अति ही मङ्गल कारी। सुजस सुन्यो वृखभानराय को भादों पच्छ अति उजियारी॥१॥ दूर देस के जुरे न्योतकी सब मन यह ही बिचारी। लगन एक साध्यो सुभ तवही यह न होय विधि की ओलारी॥ ॥२॥ नाग लोक सुरलोक सुभूतल नाहिन यह सोभा अति सारी। अर्धाङ्गी मोहन की जाइ श्री वृषभान सुता री॥३॥ कवि को विधि ये कहत न आवे सेस सारदा त्रिपुरारी। कुंवरि सो मङ्गलमय अति कीरति 'अग्रदास' यह सुता उर धारी॥४॥ ❀ १२६ ❀ राग कान्हरा ❀ आज वहुत वृषभान घोख में मङ्गलचार बधाये। प्रगटी आय कूखि कीरति की भये सबन मन भाये॥१॥ आनंदराय जसोदा रानी सुनत सबन ले धाये। गोप ग्वाल

कुल कीरति जगमे भाग सुहाग दुलारी । 'दामोदर हित' वृन्दावन में विहरत लाल विहारी ॥५॥ ❀ १४८ ❀ सेन के दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ श्रीवृषभानराय जू के आंगन वाजत आज वधाइ । भादों सुदि आठे उजियारी आनंदकी निधि आइ ॥१॥ रस की रासि रूप की सीमा अंगअंग सुंदरताइ । कोटिमदन वारों मुसिकन पर मुख छवि वरनी न जाइ ॥ २ ॥ पूरन सुख पायो व्रजवासी नैंनन निरखि सिराइ ।' कृष्णदास' स्वामिनी व्रज प्रगटी श्री गिरिधर सुखदाइ ॥३॥

उत्सव श्री गिरिधरलाल जी को (भादों सुदी ६)

❀ १४६ ❀ शृंगार के ओसरा में ❀ राग देवगंधार ❀ वहुरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटे विट्ठलनाथ हमारे । द्वापर वसुधा भार हरयो हरि कलियुग जीव उद्धारे ॥ १ ॥ तव वसुदेव गृह प्रगट होय के कंसादिक रिपु मारे । अव श्रीवल्लभ गृह प्रगट होय के मायावाद निवारे ॥ २ ॥ ऐसो कवि को है जग महियां वरने गुन जो तिहारे । 'मानिकचंद' प्रभु कों सिव खोजत गावत वेद पुकारे ॥ ३ ॥ ❀ १५० ❀ राग देवगंधार ❀ प्रगटे श्रीवल्लभ निजनाथ । लक्ष्मण-वंस हंस उज्वल यस द्विजकुल किये सनाथ ॥ १ ॥ दरस परस दिये जीवन कों निरमल हियो कियो । करुनासागर रूप उजागर सरन आपनी लियो ॥ २ ॥ भाव भक्ति दइ भक्तन कों प्रभु कों दिये गहाइ । मनवांछित फल सवहिन पाये जे रहे चरन सिरनाइ ॥ ३ ॥ कीने दास लाल गिरिधर के आपुन भये सहाय । पूजे सकल मनोरथ मन के 'विट्ठल गिरिधरराय' ॥४॥ ❀ १५१ ❀ राग देवगंधार ❀ चहुजुग वेद वचन प्रतिपारयो । धर्मग्लानि भइ जवही जव तवतव तुम वपु धारयो ॥ १ ॥ सतयुग स्वेतवराह रूप धरि हिरण्याक्ष उर फारयो । त्रेता रामरूप दसरथ गृह रावन कुल संहारयो ॥२॥ द्वापर व्रज वूडत ते राख्यो सुरपति पायन पारयो । कंसादिक दानव सव मारे वसुधा भार उतारयो ॥ ३ ॥ कलियुग श्री वल्लभ गृह प्रगटे मायावाद निवारयो । 'मानिकचंद' प्रभु श्री विट्ठल पुरुषोत्तम रूप निहारयो ॥ ४ ॥

❀ राजभोग भीतर तिलक होय तब ❀ राग सारंग ❀ राधाजू को जन्म भयो सुनि माइ। सुक्ल पच्छ भादों निसि आठे घर घर बजत वधाइ ॥१॥ अति सुकुमारि घरी सुभ लच्छन कीरति कन्या जाइ। 'परमानन्द' नंद के आँगन जसुमति देत बधाइ ॥२॥ ❀१४५❀ भोग के दर्शन में ❀ ढाढो आवे जब ❀ राग मारू ❀ जदुवंसी जजमान, तिहारो ढाढी आयो हो। कुंवरि जनम सुन के हों आयो राख हमारो मान ॥१॥ एक बार हों पहले आयो देन वधाइ ताकी। नंदी सुर ब्रजराज। घर्रानि घर कूखि सिरानी जाकी ॥२॥ अबतो मेरे मन को भायो दोऊ नेग चुकावो। नंदरानी कीरतिदे रानी ढाढिन कों पहरावो ॥३॥ वहोत भाँति ढाढिन पहराइ गोपराय बड़ दानी। 'किसोरीदास' कों निरभय करिकेब्रज राख्यो ब्रजरानी ॥४॥ ❀१४६❀शयन भोग आये❀ राग कान्हरा ❀ आज वृखभान के बेटी जाइ। भादों सुदी अष्टमी सुभ दिन धनि धनि कूख जु कीरति माइ ॥१॥ श्रवन सुनत सहचरि जुरि आई अति प्रफुलित सब देत बधाइ। ध्वजा पताका तोरन माला आँगन मोतिन चौक पुराइ ॥२॥ पंच सब्द बाजे वाजत हे प्रमुदित ब्रजजन मंगल गाइ। विप्र वेद उच्चारन लागे जाचकजन वहु करत बड़ाइ ॥३॥ त्रिभुवन की सोभा जु प्रगट भइ श्रीगिरिधर कों सुखदाइ। जैजैकार भयो वसुधा मे हरखि इंद्र पेहोपन बरखाइ ॥४॥ यह जोरी होय ब्रज अविचल राज करो राधा ब्रजराइ। श्री वल्लभसुत चरन कमल रज 'हरीदास' नोछावर पाइ ॥५॥ ❀ १४७ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ भादों सुदि आठे उजियारी। श्री वृखभान गोप के मंदिर प्रगटी श्री राधा प्यारी ॥१॥ नाचत नारि नवेली छबि सों पहरे रंग रंग सारी। घर घर मंगल देखि बरसाने कहत रमा हों वारी ॥२॥ एक आइ एक आवत गावत एक साजत सुनि नारी। चंचल कुंडल ललकें झलके करन विराजत थारी ॥३॥ भइ बधाइ कही न जाइ छबि छाइ अति भारी। रस भरि खोरि पोरि भइ दधि घृत बहि चली उमगि पनारी ॥४॥ कीरति की

कुल कीरति जगमे भाग सुहाग दुलारी । 'दामोदर हित' वृन्दावन में विहरत लाल विहारी ॥५॥ ❀ १४८ ❀ सेन के दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ श्रीवृषभानराय जू के आंगन बाजत आज बधाइ । भादों सुदि आठे उजियारी आनंदकी निधि आइ ॥१॥ रस की रासि रूप की सीमा अंगअंग सुंदरताइ । कोटिमदन वारों मुसिकन पर मुख छवि वरनी न जाइ ॥ २ ॥ पूरन सुख पायो ब्रजवासी नैंनन निरखि सिराइ । 'कृष्णदास' स्वामिनी ब्रज प्रगटी श्री गिरिधर सुखदाइ ॥३॥

उत्सव श्री गिरिधरलाल जी को (भादों सुदी ६)

❀ १४९ ❀ शृंगार के ओसरा में ❀ राग देव गंधार ❀ बहुरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटे विट्ठलनाथ हमारे । द्वापर वसुधा भार हर्यो हरि कलियुग जीव उद्धारे ॥ १ ॥ तव बसुदेव गृह प्रगट होय के कंसादिक रिपु मारे । अव श्रीवल्लभ गृह प्रगट होय के मायावाद निवारे ॥ २ ॥ ऐसो कवि को है जग महियां वरने गुन जो तिहारे । 'मानिकचंद' प्रभु कों सिव खोजत गावत वेद पुकारे ॥ ३ ॥ ❀ १५० ❀ राग देवगंधार ❀ प्रगटे श्रीवल्लभ निजनाथ । लक्ष्मण-वंस हंस उज्वल यस द्विजकुल किये सनाथ ॥ १ ॥ दरस परस दिये जीवन कों निरमल हियो कियो । करुनासागर रूप उजागर सरन आपनी लियो ॥ २ ॥ भाव भक्ति दइ भक्तन कों प्रभु कों दिये गहाइ । मनवांछित फल सबहिन पाये जे रहे चरन सिरनाइ ॥ ३ ॥ कीने दास लाल गिरिधर के आपुन भये सहाय । पूजे सकल मनोरथ मन के 'विट्ठल गिरिधरराय' ॥४॥ ❀ १५१ ❀ राग देवगंधार ❀ चहुजुग वेद वचन प्रतिपार्यो । धर्मग्लानि भइ जबही जव तवतव तुम वपु धार्यो ॥ १ ॥ सतयुग स्वेतवराह रूप धरि हिरण्याक्ष उर फार्यो । त्रेता रामरूप दसरथ गृह रावन कुल संहार्यो ॥२॥ द्वापर ब्रज बूडत ते राख्यो सुरपति पायन पार्यो । कंसादिक दानव सव मारे वसुधा भार उतार्यो ॥ ३ ॥ कलियुग श्री वल्लभ गृह प्रगटे मायावाद निवार्यो । 'मानिकचंद' प्रभु श्री विट्ठल पुरुपोत्तम रूप निहार्यो ॥ ४ ॥

❀ १५२ ❀ राग देव गंधार ❀ अब के द्विजवर व्है सुख दीनो। तब के नंद यसोदा नंदन व्है हरि आनंद कीनो ॥ १ ॥ तब कीनो गोपाल रूप अब वेद स्मृती दृढ चीनो। 'छीतस्वामि' गिरिधरन श्री विट्ठल भक्ति सुधा रस भीनो ॥ २ ॥ ❀ १५३ ❀ राग बिलावल ❀ जै श्री लछमनसुवन नरेस। प्रगट भये पूरनपुरुषोत्तम कलियुग धरि द्विज वेस ॥ १ ॥ जान जन्म दिन हरखहरख मुनि बरखत कुसुम सुदेस। गयो तिमिरअज्ञान तुरत नसि मानो उदित दिनेस ॥ २ ॥ नखसिख रूप कहांलों वरनों पार न पावत सेस। 'विष्णुदास' प्रभु मुख अवलोकत पल नहिं परत निमेस ॥ ३ ॥ ❀ १५४ ॥ ❀संध्याभोग आये में ❀ राग नट ❀ कृपासिंधु श्री विट्ठलनाथ। हस्त कमल छाया निस्तारे जे हुते अधम अनाथ ॥ १ ॥ बाधा कछु न रही अब तनमें भये सुदृढ सनाथ। 'चत्रुभुज' प्रभु सदा बिराजो श्री गिरिवरधर साथ ॥ २ ॥ ❀ १५५ ❀ संध्या आरती में ❀ राग गोरी ❀ हों चरनातपत्र की छैयाँ। कृपा-सिंधु श्रीवल्लभनंदन बह्यो जात राख्यो गहि वहियाँ ॥ १॥ नवनख सरद चंद्रमा मंडल हरत ताप सुमिरत मन महियाँ। 'छीतस्वामि' गिरिधरन श्रीविट्ठल सुजस वखान सकत श्रुति नहियाँ ॥ २ ॥ ❀१५६❀ सेन भोग आये में ❀ राग कान्हरा ❀ श्रीविट्ठलनाथ बसत जिय जाके ताकी रीतप्रीत छबि न्यारी। प्रफुलित वदन कान्ति करुनामय नयनन में झलके गिरिधारी ॥१॥ उग्र स्वभाव परम परमारथ स्वारथ लेस नहीं संसारी। आनंदरूप करत एक छिन में हरिजू की कथा कहत विस्तारी ॥२॥ मन क्रम वचन ताहि को संग करि पैयत ब्रजयुवतिन सुखकारी। 'कृष्णदास' प्रभु रसिक मुकुटमनि गुन निधान श्री गोवर्धनधारी ॥ ३ ॥ ❀१५७❀ सेन के दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ श्री गोकुल जुगजुग राज करो। यह सुख भजन प्रताप तेज ते छिन इत उत न टरो ॥ १ ॥ पावन रूप दिखाय महाप्रभु पतितन पाप हरो। विश्व विदित दीनी गति प्रेतन क्यों न जगत उध्धरो ॥ २ ॥ श्री वल्लभकुल कमल अमल रवि यस मकरंद भरो।

'नन्ददास' प्रभु खटगुण सम्पन्न श्री विट्ठलेस वरो ॥ ३ ॥ ❀ १५८ ❀

श्री राधाजी की बाल लीला (भादों सुदी १०)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग रामकली ❀ कुंवरि राधिके तुव सकल सौभाग्य सीम या वदन पर कोटिसत चंद वारों। खंजन कुरंग मीन सतकोटि नयनन पर वारने करत जिय में न विचारों ॥१॥ कदलि सतकोटि जङ्घन ऊपर वारने सिंह सतकोटि कटिपर नोछावर उतारों। मत्त गज कोटिसत चाल पर कुंभ सतकोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥२॥ कीर सतकोटि नासा ऊपर कुंद सतकोटि दसनन ऊपर कहि न पारों। पक्क कंदूर बंधूक सतकोटि अधरन ऊपर वारि रुचि गर्व टारों ॥३॥ नाग सतकोटि वेनी ऊपर कपोत सतकोटि ग्रीवा पर वार दूर सारों। कमल सतकोटि कर युगल पर वारने नाहिन कोउ लोक उपमाजु धारों ॥४॥ 'दासकुंभन' स्वामिनी सु नखसिख अङ्ग अद्भुत सु ठान कहाँ लग संभारों। लाल गिरिवरधरन कहत मोहि तो लों सुख जोलों वह रूप छिन छिन निहारों ॥५॥ ❀ १५९ ❀ शृङ्गार के ओसरा में ❀ ❀ राग विलावल ❀ अहो मेरी प्रान पियारी। भोर हि खेलन कहाँ जु सिधारी। कुमकुम भाल तिलक किन कीनो। किन मृगमद को बेंदा जु दीनो। छंद—बेंदाजु मृगमद दियो माथे निरखि सखि संसय परयो। सरद निसा को कला पूरन मेन नृप को मद हरयो। विहसि के मुख कहत जननी सुलप बेनी किन गुही। 'सूर' के प्रभु मोहिवे कों रची मनमथ ही तुही ॥१॥ नन्द महर की घरनी यसो है। जिन मेरो बदन जु फिर फिर जो है खेलत बोल निकट बेठारी। कछु मन मे आनन्द कियो भारी। छंद—मनमे जु आनन्द कियो भारी निरखि मुख विह्वल भइ। बाबाजू को नाम पूछत तोहि हसि गारी दइ। पाटी तो पारिं सम्हारि भूपन गोद में मेवा भरी। 'सूर' के प्रभु हरखि हिय में विधिना सों विनती करी ॥२॥ सुनि यह वात कीरति मुसिकानी। मैं नन्दरानी के मन की जानी। मेरी सुता है रूप की

रासी। वो तो कान्ह बनवासी उपासी। छंद—कान्ह उपासी बन विलासी रंग ढंग यह क्यों बने। हीरालाल अमोल मानिक काच कंचन क्यों सने। ललिता बिसाखा सों कह्यो तुम लली तजि कर कित गई। 'सूर' के प्रभु भवन बाहिर जान दीजो मति कहीं ॥३॥ दिन दस पांच अटक जब कीनी। कुँवरि कों कृष्ण दिखाइ दीनी। मुरझि परी तन मन न संभारे। कुँवरि कों डसी भुजङ्गम कारे। छंद—कुँवरि कों कारे डसी सुनि गारुड़ी आये सबै। एक नन्दनन्दन मंत्र बिन सखि विष ये क्यों हूँ न दबे। मनुहारि करि मोहन बुलाये सकल विष देखत नसे। 'सूर' के प्रभु जोरि अविचल जीयो जुग जुग मन बसे॥ ४ ॥ विहंसि उठी तब वदन सम्हारयो। निरखि मोहन तन अचरा डारयो। मुरि बैठी मन भयो हुलासा। कीरति गइ अपने पति पासा। छंद—अपनेजु पति पै गइ कीरति प्रीत रीत बढाइये। मंत्र कीनों ब्याह को सब सखिन मंगल गाइये। वृन्दावन में रच्यो स्वयंवर पहुँप मण्डप छाइये। 'सूर' के प्रभु स्यामसुन्दर राधिका वर पाइये ॥५॥ विधिना विधि सब कीनी। मण्डप करिके भांमरि दीनी। विविध कुसुम बरखावे। तहां भामिनी मंगल गावे। छन्द—गावेजु भामिनी मिलके मङ्गल कहत कंकन छोरियो। नहिं होय यह गिरि उचकि लेवो लाल हंसि मुख मोरियो। छोरयो न छूटे डोरना यह प्रीति रीति ग्रन्थोदरी। 'सूर' के प्रभु युवतिजन मिल गारी मन भामति करी ॥६॥ ❀ १६० ❀ राग विलावल ❀ हित की बात कहत हे मैया। मेरो कह्यो तू मान कन्हैया। होत है तेरे ब्याह की बातें। तू तज चोरी करन की घातें। छन्द—घात तज चोरी करन-की कह्यो मेरो मान ले। इन बाते तोहि लाज न आवे जिये अपुने जान ले। कैबार तोसों कह्यो मोहन बान तू यह ना तजे। 'व्यासदास' लला भलो है इन बातन तू ना लजे ॥१॥ यह सुन के मोहन मुसिकाये। मैया तू झूठी कहत बनाये। हँसि बोली फिर कहत है मैया। माने तू झूठी बूझ

बल भैया । है वृखभान सुता गुनरासी । दिन दिन बाढ़त चन्द्रकला सी । छन्द—चन्द्रकला सी रूप रासी लसत कंचन सी कनी । नीलमनि ढिंग लाल मेरो भली यह बानक बनी । यह सुन के अति हरख हिय में मगन भये मन मोहना । 'व्यासदास' लला भलो है लगत छबि अति सोहना ॥२॥ जब वृषभान गोप सुधि पाये । काहू मिसि वाके घर आये । कीरति कहत लला तू कोहे । देखत ही सब को मन मोहे । नन्द को सुत हलधर को भैया । हेरन आयो निकस गइ गैया । छन्द—गैयाजु हेरन इते आयो प्यास मोंकों अति लगी । प्याओ पानी घोखरानी घाम तन मे अति पगी । बचन सुनि वृखभान-रानी ले चली निज गेहमे । 'व्यासदास' लला भलो है लगत सुख अति देह में ॥३॥ जननी वचन सुनत ही आधे । जल भर लाइ तुरत ही राधे । देत परस्पर दोउ जन अटके । नयन नयन सों मिलत ही मटके । हरि आधीन जबे लखि पाइ । कुंज मिलन की सेन वताइ । छन्द—बताइ कुँज की सेन मोहन आप चलि आये तहाँ । कमल फूले भँवर गूँजे पारथव कुंजे तहाँ। आइ तहां छल पाय राधा संग एकहि सहचरी । 'व्यासदास' प्रभु पानि पकरयो जान मंगल सुभ घरी ॥४॥ छन्द—मंद मंद गहवर घन गाजें । मानों सुरन के बाजे वाजें । झालरि ही झनकार जु ठान्यो । सुक पिक द्विज मानों वेद बखान्यो । छन्द—बोलत सुक पिक मञ्जुल बानी बनी अद्भुत जोरी । लाल बालमुकुन्द दूलह दुलहनी नवलकिसोरी । बहु जतन करि मिले मोहन लाड़िली के कारने । 'व्यासदास' प्रभु की निरखि सोभा करत तन मन वारने ॥५॥

❀१६१❀ राजभोग आयेमें ❀ राग धनाश्री ❀ खेलन गइ नंदबाबा के महर गोद कर लीनी जू । प्रेम सहित आँको भर लीनी उर को कठुला कीनी जू ॥१॥ तेल फुलेल उबटनो कीनो उबटी देह निकाइ हो । सारी नइ आन पहराइ । अङ्ग अङ्ग अधिक बनाइ हो ॥२॥ खटरस भोजन पास थार धरि विधि सों आप जिमाइ हो । मेरो वदन विलोक नैन भरि फूली अङ्ग न समाइ हो ॥३॥

इतनी सुनत सामगे ढोटा बाहर ते घर आयो हो । माँपे हमही दोउ ठाड़े कछु एक बार दुरायो हो ॥४॥ रही पसार ओल सिसुता पे भवन काज बिसरायो हो जे जे सखी गइ मेरे संग सबहिन लाड़ लड़ायो हो ॥५॥ एक एक पाटंबर आछो तिनहूँ कों पहरायो हो । जाकी करि मनुहार बहुत विध आनन्द अधिक बढ़ायो हो ॥६॥ सब ब्रजनारि सिंगारी डोलत बोलत परम सुहाइ हो । फूली फिरत प्रेम पुलकित तन विमल स्याम गुन गायो हो ॥७॥ जब मैं बिदा सदन कों माँगी पान मिठाइ आनी हो । मेरी गोद भरी छाकें भरि चलत बहुत पछतानी हो । ॥८ ॥ तुमकों आंको कही कुंवर और दीनी बात वखानी हो । दइ असीस दोउ चिरिजीयो गंगा जमुना पानी हो ॥ ९ ॥ हसिहसि बात कहत जननी सों श्रीवृषभानदुलारी हो । सुनिसुनि समुझ रहत उर अंतर मुख ही करि मनुहारी हो ॥ १० ॥ जो उनकों अति कुंवर लाडिलो मो पटतर को प्यारी हो । लइ लगाय कुंवरि हिरदेमें देत जसोदा हि गारी हो ॥११ ॥ जहां वृखभान सेज सुख पोढे तहां ले गइ प्यारी हो । जेजे बात चली महरि के कथि कथि अकथ कथारी हो ॥ १२ ॥ अभरन बसन वरन पहराये तन तनसुख की सारी हो । हरखवंत आनंदित दोउ भये पुरुष अरु नारी हो ॥ १३ ॥ एक घोस मैं नंदखिरक में देखे कुंवर कन्हाइ हो । माथे मुकुट पीत पट ओढे उर बनमाल सुहाइ हो ॥ १४ ॥ कुंडल लोल कपोलन की छबि बिचबिच झलकत झांइ हो । लोचन ललित ललाट अधिक छबि सोभा वरनी न जाइ हो ॥ १५ ॥ ता दिन ते हमहू अपने मन बातजु यही बिचारी हो । जो कबहू जगदीस बनावे राधा वर बनमारी हो ॥ १६ ॥ जो हों कियो आपुनो चाहत सोउ तहां ते चाली हो । भली भइ अब होय कहूं ते सुनरी भांवती आली हो ॥ १७ ॥ इत वृषभान जानि सबही विधि उत वे नंद बडभागी हो । इत रानी कीरति परिपूरन उत जसुमति जस जागी हो ॥ १७ ॥ इत

श्री राधा कुंवरि किसोरी उत गिरिधर अनुरागी हो । 'नंददास' प्रभु चलें सदन कों जब नोछावरि वारी हो ॥ १९ ॥ ❀ १६२ ❀ राजभोग के दर्शन में ❀ ❀ राग सारंग ❀ कहाजु भयो मुख मोरे काहू कछू जू कह्यो । रसकि सुजान लाडिलो ललन मेरी अखियन मांझ रह्यो ॥ १ ॥ अब कछु बात फैल परीरी प्रेम जामुन भयो दूध ते दह्यो । त्रिलोक अतिही सुजान सुंदर सर्वस्व हर्‌यो 'गोविंद' प्रभू जू लह्यो ॥२॥ ❀१६३❀ भोग के दर्शन में ❀ ❀राग नट ❀ तू नेक वरजरी जसोदा मैया अपने सांवरे कों । घरघर दधि माखन खात हरत फिरत अलिनमांझ दुरत रूप रावरे को ॥ १ ॥ काहू को कछू रहन न पावत ऊधम मेलत तनकसो सगरे गामरे को । 'नंददास' जसुदा ठाडी हंसत कहा कहिन आवत गोपी प्रेम थावरे को ॥ २ ॥ ❀ १६४ ❀राग नट❀ रूप देखि नैना पलक लगे नहीं । गोवर्धनधर के अंग अंग प्रति जहां ही परत दृष्टि रहत तहीं तहीं ॥ १ ॥ कहारी कहों कछु कहत न आवे चोर्‌यो मन मांगि वे दही । 'कुंभनदास' प्रभु के मिलन की सुंदर बात सखियन सों कही ॥ २ ॥ ❀ १६५ ❀ संध्या आरती मे ❀ राग गोरी ❀ अहो विधना तोपै अचरा पसार मांगौं जनमजनम दीजे याहि ब्रज वसवो । अहीर की जाति समीप नंदसुत घरीघरी घनस्याम हेरिहेरि हंसवो ॥ १ ॥ दधि के दान मिस ब्रजकी वीथिन मे झकझोरन अंगअंग को परसवो । 'छीत स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल सरद रेन रस रास को विलसवो॥ २ ॥ ❀ १६६ ❀ सेनभोग आये मे ❀राग कान्हरो ❀ यह दुलरी बृषभान लइ कब । ना जानों काहू को ढोटा पहुंची पलटे मोहि दइ तब ॥ १ ॥ सुनि मृदु वचन कुंवरि के मुख के वहुरि हसी जननी दोउ तब । यह विवाह अपने श्यामको त्रिभुवन जोट जुगल दंपति कब ॥ २ ॥ एसी बहुरिया व्यार उडावे वडे महर जेंवन बैठे तब । 'कृष्णा' कहे दास गिरिधर की कारज सुफल होय मेरो जब ॥ ३ ॥ ❀ १६७ ❀ राग कान्हारो ❀ जसोदा तब गोपाल बुलायो ।

दुलरी कहां स्याम तेरे गरे की सुनि हस बचन सकुच सिर नायो ॥ १ ॥ दुलरी लइ दइ मोहि पहुंची मैया इन ढोटियन वहुरायो। राधा कही पहले तुम पलटी भले भले कहि भरम जु पायो ॥ २ ॥ अंतर प्रीत वदन उठी मुख झगरो जसुमति के मन भायो। वाल विनोद चरित्र गिरि धर के 'कृष्णा जन' तहां यह जसु गायो ॥ ३ ॥ ❀ १६८ ❀ सेन के दर्शन मे ❀राग केदारा❀ गूजरिया गर्व गहेली उत्तर काहि नहिं देत। चलत गजगति गोरस की माती बोलत अति रंग भरिया ॥ १ ॥ दिन दिन दान मार गइ हेरी इनते कबहू पाले न परिया। 'गोविंद' प्रभु कहत सखनसों घेरो घेरो तब धाय अंचर धरिया ॥ २ ॥ ❀ १६९ ❀ पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ जसुमति सुत पलका पोढावे। अरी मेरो सब दधि बीच कीनों यों कहि के मधुरे स्वर गावे ॥१॥ पोढो लाल कहूं एक कहानी श्रवन सुनत तुमकों एक प्यारी। 'सूर स्याम' अति ही मन हरखे पोढ रहे तब देत हुंकारी ॥२॥ ❀१७०❀

दान एकादशी (भादो सुदी ११)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग देव गंधार❀ हमारो दान देहो गुजरेटी। बहुत दिनन चोरी दधि बेच्यो आज अचानक भेटी ॥ १ ॥ अति सतरात कहांधो करेगी बड़े गोप की बेटी। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर भुज ओढनी लपेटी ॥ २॥ ❀ १७१ ❀ शृंगार के ओसरा में ❀झांझपखावज सूं ❀ राग देवगधार ❀ कहो किन कीनो दान दही को। सदा सर्वदा बेचत यह मग है मारग नित ही को ॥ १ ॥ भाजन ही समेत सीस ते लेत छीन सबही को। ऐसो कबहू सुन्यो न देख्यो नयो न्याय अबही को ॥ २ ॥ कमलनयन मुसिकाय मंद हंसि अंचल गह्यो जवही को। 'दास चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर मन चोर लियो तबही को ॥ ३ ॥ ❀ १७२ ❀ राग देवगंधार ❀ पिछोरी बांहन देहे दान। सूधेमन तुम लेहु गुसांई राखि हमारो मान ॥ १ ॥ मारग रोकि रहत मनमोहन सब गुन रूप निधान। बदन मोरि मुसिकाय भामिनी नयनबान संधान ॥ २ ॥

नन्दराय के कुंवर लाडिले सबके जीवन प्रान । 'परमानंद' स्वामी नागर हो तुमते कोन सुजान ॥३॥ ❀ १७३ ❀ राग आसावरी ❀ माधो जान देहो चली बाट । कमलनयन काहेकों रोकत ओघट जमुना घाट ॥ १ ॥ और सखा देखे हैं कोऊ गहत सीस ते माट । तुम नांही डर मानत मोहन मेरे गोवर्धन बाट ॥ २ ॥ क्यों विकायगो मेरो गोरस भोर करत हो नाठ । चन्द्रावली उझकि 'परमानंद' निसु दिन एकहि हाट ॥३॥ ❀१७४❀ राग देवगंधार❀ मटुकी आन उतार धरी । इन मोहन मेरो अचरा पकरयो तब मैं बहुत डरी ॥ १ ॥ मोपे दान साँवरो माँगत लीने हाथ छरी । मोही कों तुम गहिज़ु रहे हो संग की गई सगरी ॥२॥ पैयां लागि करत हों बिनती दोउ कर जोर खरी । 'परमानन्द' प्रभु दधि बेचन की बिरियाँ जात टरी ॥३॥ ❀ १७५ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ कैसो दान दानी को । करन लागे नई रीत आये हो अनोखे दानी दूध दही मही को अजहु न हम जानी को ॥१॥ चलत हो बिचित्र चाल सुबल तोक कों चखाय काहू सों कहत गाढ़ो जाम्यो काहू सों कहत पानी को । 'नंददास' आसपास लपटि रही कनक बेलि मोंहन की । मटकन में सब ही उरझानी को ॥२॥ ❀ १७६ ❀ राग बिलावल ❀ गोवर्धन की सिखरते हो मोहन दीनी टेर । अति तरंग सों कहत है सब ग्वालिन राखो घेर । नागरि दान दे ॥१॥ ग्वालिन रोकी ना रहे हो ग्वाल रहे पचिहार । अहो गिरिधारी दोरियो सो कह्यो न मानत ग्वार । मोहन जान दे ॥२॥ चली जात गोरस मद माती मानों सुनत नहिं कान । दोरि आये मन भावते सो तो रोकी अंचल तान ॥३॥ एक भुजा कंकन गहे हो एक भुजा गहि चीर । दान लेन ठाड़े भये सो तो गहवर कुंज कुटीर ॥४॥ बहुत दिना तुम बच गई हो दान हमारो मार । आज हों लेहों आपनो दिन दिन को दान समार ॥५॥ रस निधान नव नागरी हो निरख वचन मृदु बोल । क्यों मुरि ठाडी होत हो सो घूँघट पट मुख खोल ॥६॥ हरखि

हिये हरि करखि के हो मुख ते नील निचोल । पूरन प्रगट्यो देखिये मानों चंद घटा की ओल ॥७॥ ललित बचन समुदित भये हो नेति नेति यह बेन । उर आनन्द अति ही बढ्यो सो सुफल भये मिलि नैन ॥८॥ यह मारग हम नित गई हो कबहु सुन्यो नहिं कान । आज नई यह होत है सो मागत गोरस दान । मोहन जान दे ॥९॥ तुम नवीन नव नागरी हो नूतन भूषन अंग । नयो दान हम मांगनो सो नयो बन्यो यह रंग ॥१०॥ चंचल नयन निहारिये हो अति चंचल मृदु बैन । कर नहिं चंचल कीजिये तजि अंचल चंचल नैन ॥११॥ सुन्दरता सब अङ्ग की हो बसनन राखी गोय । निरखि निरखि छबि लाड़िली मेरो मन आकर्षित होय ॥१२॥ ले लकुटी ठाडे भये हो जानि सांकरी खोर । मुसकि ठगोरी लायके मोसों सकत लई रति जोर ॥१३॥ नेंक दूर ठाड़े रहो हो कछू और सकुचाय । कहा कियो मन भांवते मेरे अञ्चल पीक लगाय ॥१४॥ कहा भयो अञ्चल लगी हो पीक हमारी जाय । याके बदले ग्वालिनी मेरे नयनन पीक लगाय ॥१५॥ सूधे बचनन माँगिये हो लालन गोरस दान । मोहन भेद जनाय के सो कहत आन की आन ॥१६॥ जैसे हम कछु कहत है हो एसी तुम कहि लेहु । मन माने सो कीजिये पर दान हमारो देहु ॥१७॥ कहा भरे हम जात है हो दान जो माँगत लाल । भइ अवार घर जान देसो छाँड़ो अटपटी चाल ॥१८॥ भरे जात हो श्रीफल कंचन कमल बसन सों ढाँक । दान जो लागत ताहिको तुम देकर जाहु निसांक ॥१९॥ इतनी बिनती मानिये हो मांगत ओली ओड । गोरस को रस चाखिये सो लालन अञ्चल छोड़ ॥२०॥ संग की सखी सब फिर गई हो सुनि है कीरति माय । प्रीति हिये में राखिये सो प्रगट किये रस जाय ॥२१॥ काल बहुरि हम आइ हैं हो गोरस ले रुव ग्वारि । नीकी भांति चखाइहों मेरे जीवन हों वलिहारि ॥२२॥ सुनि राधे नव नागरी हो हम न करे विश्वास । कर को अमृत छांड़ि

के को करे काल की आस ॥ २३ ॥ तेरो गोरस चाखिवे हो मेरो मन लल-चाय । पूरन ससि कर पायके सो चकोर न धीर धराय ॥ २४ ॥ मोहन कंचन कलसिका हो लीनी सीस उतार । श्रमकन वदन निहारि के सो ग्वालिनि अति सुकुमार ॥ २५ ॥ नव विजना गहि लालजू हो श्रीकर देत दुराय । श्रमित भई चलो कुञ्ज में सो नेक पलोटूं पांय ॥ २६ ॥ जानत हो यह कोन है हो ऐसी ढीठ्यो देत । श्री वृषभान कुमारि है सो तोहि बीच को लेत ॥ २७ ॥ गोरे श्रीनन्दराय जू हो गोरी जसुमति माय । तुम याहीते सांवरे लाल एसे लच्छन पाय ॥२८॥ मन मेरो तारन बसे हो ओर अंजन की रेख । चोखी प्रीत हिये बसे सो याते सांवल भेख ॥ २९ ॥ आप चाल सों चालिये हो यही वड़ेन की रीत । एसी कबहु न कीजिये सो हंसे लोग विपरीत ॥३०॥ ठाले ठूले फिरत हो हो ओर कछू नहिं काम । वाट घाट रोकत फिरो सो आन न मानत स्याम ॥ ३१ ॥ यही हमारो राज है हो ब्रज-मण्डल सब ठोर । तुम हमारी कुमुदिनी हम कमल बदन के भोंर ॥ ॥३२॥ एसे में कोउ आयके हो देखे अद्भुत रीति । आज सबे नन्दलाल जू सो प्रगट होयगी प्रीति ॥ ३३ ॥ ब्रज वृन्दावन गिरि नदी हो पसु पंछी सब संग । इन सों कहा दुराइये प्यारी राधा मेरो अंग ॥३४॥ अंस भुजा धरि ले चले हो प्यारी चरन निहोर । निरखत लीला 'रसिक' जू जहाँ दान मान की ठोर ॥ ३५ ॥ तुम नंद महर के लाल अहो रानी जसुमति प्रान अधार, मोहन जान दे । वृषभान नृपति की वाल अहो रानी कीरति प्रान अधार, नागरि दान दे ॥ ❀ १७७ ❀ शृङ्गार के दर्शन में ❀ राग टोड़ी ❀

कहो जू कैसो दान मांगिये हम देव पूजन आई । कोउ दह्यो कोउ मह्यो माखन बोलि-बोलि अति अछूतो अपनो-अपनो लाई ॥ १ ॥ तुमें पहले कैसे दीजे कान्हर जू तुम तो सबे फवी करत मन भाई । 'नंददास' प्रभु तुमहि परमेश्वर भये अब कछु नइ ये चाल चलाई ॥ २ ॥ ❀ १७८ ❀

❀ राजभोग आये मे ❀ राग सारंग ❀ दानघाटी छाक आई गोकुल ते कावरि भरि रावल की रावरे ने राखी सब घेर । जान तो जवहि देहों नंद जू की आन खैहों भोजन की रही न कछु चाखो एक बेर ॥ १ ॥ अति प्रवीन– जानराय कनक बेला कर मे लिये बांटत मेवा मन प्रसन्न हेर चहुं फेर । सकल पाक परमानंद आरोगत परमानंद 'परमानंद' टोक करत सुवल टेर टेर ॥२॥ ❀१७६❀ राग सारंग ❀ आगे आवरी छकहारी । जब तुम टेरे तव हों बोली सुनी जो टेर तिहारी ॥१॥ मैया छाक सवारे पठई तू कित रही अवारी । अहो गोपाल गेल हों भूली मधुरे बोलन पर वारी ॥ १ ॥ गोवर्धनउद्धरणधीर सों प्रीति वढी अतिभारी । 'जनभगवान' मगन भइ ग्वालिन तनकी दसा बिसारी ॥ ३ ॥ ❀ १८० ❀ राग सारंग ❀ आज दधि मीठो मदनगोपाल । भावत मोहि तिहारो जूठो चंचल नयन विसाल ॥ १ ॥ आन पात बनाये दोना दिये सबन कों बाँट । जिन नहीं पायो सुनोरे भैया मेरी हथेरी चाट ॥ २ ॥ बहुत दिनन हम बसे कुमुदवन कृष्ण तिहारे साथ । एसो स्वाद हम कबहू न चाख्यो सुन गोकुल के नाथ ॥ ३ ॥ आपुन हसत हसावत ग्वालन मानस लीला रूप । 'परमानंद' प्रभु हम सब जानत तुम त्रिभुवन के भूप ॥ ४ ॥ ❀ १८१ ❀ राग सारंग❀ लालन छांडो हो बरिआइ दान आपनो लीजे लालन हो ब्रजराई । यह अव कहा कहावे अचरा एंचत हो जू करत बोली ठोली भांडे सेती एती ठकुराई ॥ १ ॥ जो माँगो जो दैहें अब किन बकहै गहि अरु लीजे गाम आपनो कोन सहे तिहारी दिनदिन की अधिकाई । 'गोविन्द' प्रभु के नयनन सों नैना मिले चितेब चली मुसिकाइ लालन को मन लियोहे चुराई ॥ २ ॥ ❀ १८२ ❀ राग सारंग ❀ कृपा अवलोकन दान देरी महादान वृषभान कुमारी । तृषित लोचन चकोर मेरे तुव वदन इन्दु किरन पान देरी ॥ १ ॥ सब बिध सुघर सुजान सुन्दरी सुन बिनती तू कान देरी । 'गोविन्द' प्रभु

पिय चरन परसि कहै याचक कों तू मान देरी ॥२॥ ❀१८३ ❀राग सारंग ❀ जमुनाघाट रोकी हो रसिक चन्द्रावल । हँसि मुसिकाय कहति ब्रजसुन्दरि छबीले छैल छांड़ो अंचल ॥ १ ॥ दान निवेर लेहो ब्रज सुन्दर छांडो अटपटी कित गहत अलकावलि । कर सों कर गहि हृदय सों लगाय लई 'गोविन्द' प्रभु सों तू रास रङ्ग मिलि ॥ २ ॥ ❀१८४❀ राजभोग के दर्शन ❀ ❀राग सारंग❀ चलन न देत हो यह बटिया । रोकत आय स्यामघन सुन्दर जब निकसत गिरघटिया ॥ १ ॥ तोरत हार कंचुकी फारत मांग निहारत पटिया । पकरत बांह मरोर नन्द सुत गहि फोरत दधि चटिया ॥ २ ॥ 'कुंभनदास' प्रभु कब दान लीनो नइ बात सब ठटिया । गिरधर पांय पूजिये तिहारे जानत हो सब घटिया ॥ ३ ॥ ❀१८५❀ भोग के दर्शन ❀राग नट❀ ये कोन प्रकृति तिहारी हो ललना माइ देखे सो कहा कहै यहां ठाडो इत उत को । सकल ब्रज के बगर में गायन के डगर में घेरो घेरि राखी हम कहा धरावत तुमारो न्याव कितको ॥ १ ॥ दान दान करि राख्यो झूठेइ गाल मारत ऐसे कैसे भरिबोरी माइ इन सों नित नितको । चलो री भवन जांय दान के मिस लूटत हम कहैगी जाय नंदजू सों पायो मैं तो 'गोविन्द' प्रभु के चितको ॥ २ ॥ ❀१८६❀ राग नट ❀ आज वृन्दावन में दधि लूटी । कहां मेरा हार कहां नकवेसर कहां मोतियन लर टूटी ॥ १ ॥ बरज यसोदा अपने मोहन कों झकझोरत मे मटुकी फूटी । 'सूरदास' प्रभु के जु मिलन कों सर्वस्व दे ग्वालन छूटी ॥२॥ ❀१८७❀ संध्या भोग आये ❀ राग नट ❀ कहो जू दान बहो लैहो कैसे । दूध दही को दान कबहू न सुन्यो कान मानो लोंग लादी काहु ने सुन्यो जैसे ॥ १ ॥ आपुही ते लेत किधों काहू लिख दीनों समुझावो धो तैसे । 'गोविन्द' प्रभु तुमैं डर काहू को ब्रजराज कुंवर तातें गाल मारत घर वैसे ॥ २ ॥ ❀१८८❀ संध्या समय❀ राग पूर्वी ❀ ए तुम चले जाओ ढोटा अपने मग कित रोकत ब्रजवधुन बाट । कहत कहा सोई

कहो जू दूर भये जिनि परसो गोरस के माट ॥ १ ॥ दिन दिन को पेंडोरी माई हम कैसे के आवें जांय इन सों परी आंट । 'गोविन्द' प्रभु तुमें डर न काहू को ब्रजराज कुंवर वर जाय चराओ गोधन के ठाट ॥ २ ॥❀१८६❀

❀ सेन भोग आये ❀ राग ईमन ❀ घेरो घेरो ब्रजनारी जान नहीं पावें । चलीय जात उत्तर नहीं देत लेउ छिनाय मटुकिया सीसतें और ढीठ दीखियत भारी ॥ १ ॥ खिरक दुहाय गोरस लिये जात अपने अपने भवन ताको दान मांगत जैसे काहू लादी है लोंग सुपारी । 'गोविन्द' प्रभु आये अनोखे दानी चलो चलो री बुलावत घर के लाल बिहारी ॥ २ ॥ ❀१९०❀

❀ राग ईमन ❀ दधि न वेचिये हमारे कुल एहो तुमसों सौ सौ बार करी नहियां । जोपे दधि बेचिये तो तुमते को लेवा है सुनि ब्रजराज लाडिले ललन कितब गहत वहियां ॥ १ ॥ खिरक दुहाये गोरस लिये जात अपने अपने भवन ताको दान मांगत कहाव कहिये इन सैयां । 'गोविन्द' प्रभु सों कहत प्यारी की सखी चलोजू नेक बलि जाऊं बैठी रानी जसुमति जहियां ॥ २ ॥ ❀१९१❀ राग ईमन ❀ कुंवर कान्ह छाँडो हो ऐसी वतियां कितब करत बरिआई । ज्यों ज्यों बरजत त्यों त्यों होत आगरे डगर में रोकत नार पराई ॥ १ ॥ दूध दही को दान कबहू न सुन्यो कान तुमही यह नई चाल चलाई । 'गोविन्द' प्रभु सों कहत प्यारी की सखी अब ये बातें तुम्हें ही फबि आई ॥ २ ॥ ❀१९२❀ राग कानरा ❀ गिरधर कोन प्रकृति तिहारी अटपटी सघन वीथिन में ब्रजवधून सों अब मारग में अटको । तुम तो ठाले ठूले फिरत हो जू निसदिन हम गृहकाज करे कैसे बच बच निकसत इत उत ते ह्वै ही जात भटको ॥ १ ॥ दान दान कर राख्यो कोने धों दान दियो झूठेइ मारत गाल पटको । 'गोविन्द' प्रभु आये अनोखे दानी ब्रज सुनरी सयानी चटमट कियो मटको ॥ २ ॥ ❀१९३❀ भोग सरे❀

❀ राग कानरो ❀ अहो ब्रजराज राइ कोने दान दियो कोने लियो यह मारग

हम सदाई आवत जात अब कछु नई ये चलाई ॥ १ ॥ जोपे न जान दे तो चलोरी उलटि घर इने तो सबे फवी करत मन भाई । 'गोविंद' प्रभु के नैनन सों नैना मिले चितेव चली कुंवरि नैना मुसिकाई ॥२॥ ❀ १६४ ❀

❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ का पर ढोटा नैन नचावत है को तिहारे बबा की चेरी। गोरस बेचन जात मधुपुरी आय अचानक वन में घेरी ॥ १ ॥ सैनन दे सब सखा बुलाये बात ही बात समस्या फेरी । जाय पुकारों नंदजू के आगे जिनि कोऊ छुओ मटुकिया मेरी ॥२॥ गोकुल बस तुम ढीठ भये हो बहुते कान करत हों तेरी । 'परमानंद दास' को ठाकुर बलि-बलि जाऊँ स्यामघन केरी ॥ ३ ॥ ❀१६५❀ राग कान्हरा ❀ दान माँगत ही मे आन कछु कियो । धाइ लई मटुकिया आय कर सीस ते रसिकवर नन्दसुत रंच दधि पियो ॥ १ ॥ छूटि गयो झगरो हँसि मन्द मुसिकान में तब ही कर कमल सों परसि मेरो हियो । 'चत्रुभुजदास' नैनन सों नैना मिले तब ही गिरिराजधर चोर चित लियो ॥ २ ॥ ❀ १६६ ❀ मान में ❀ राग विहाग ❀ नवल निकुंज नवल मृगनैनी नवल नेह तेरो लागि रह्यो री । चलरी सखी तोहि लाल बुलावे काहे न करत तू मेरो कह्यो री ॥१॥ सुन भामिनी एक बात छवीली आज माग्यो हरि तेरो सह्योरी । छिन-छिन विलम करत बिन काजे तेरो विरह नहिं जात सह्यो री ॥ २ ॥ अधर बिंब राजत कर मुरली राधे-राधे रट नाम लह्यो री । 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर लेहो प्रेम-रस जात बह्यो री ॥ ३ ॥ ❀१६७❀ पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ पोढ़े पिय मदन-मोहन स्याम । अनन्य होय चरनारविंद भज सकल पूरन काम ॥ १ ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारे योग भोग विश्राम । उमापति सुकदेव नारद रटत निसदिन नाम ॥२॥ सकल कला प्रवीन गिरिधर राधिका भुज वाम । कहत 'कृष्णा' सुवस वसिये नंद गोकुल गाम ॥३॥ ❀१६८❀

श्री वामन जयन्ती (भादों सुदी १२)

❀ जन्म के पञ्चामृत समय में ❀ राग धनाश्री ❀ प्रगटे श्रीवामन अवतार। निरखि अदिति मुख करत प्रसंसा जग-जीवन आधार ॥१॥ तन घनस्याम पीतपट राजत सोभित हैं भुज चार। कुण्डल मुकुट कंठ कौस्तुभमनि और भृगु-रेखा सार ॥ २ ॥ देखि वदन आनन्दित सुर-मुनि जै जै करे निगम उच्चार। 'गोविंद' प्रभु वलि वामन ह्वै के ठाड़े वलि के द्वार ॥३॥❀१९९❀

❀ उत्सव भोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ वलि के द्वारे ठाड़े वामन। चारों वेद पढ़त मुखपाठी अति सुमंद स्वर गावन ॥ १ ॥ वानी सुनि वलि बूझन आये अहो देव कहो आवन। तीन पेंड वसुधा हम मागें पर्नकुटी एक छावन ॥ २ ॥ अहो-अहो विप्र कहा तुम मांग्यो अनेक रतन देहु गामन। 'परमानन्द' प्रभु चरन वढ़ायो लाग्यो पीठ नपावन ॥ ३ ॥ ❀ २०० ❀

❀ राग धनाश्री ❀ राजा एक पंडित पौरि तिहारी। चारों वेद पढ़त मुख-पाठी है वामन वपु धारी ॥ १ ॥ अपद द्विपद पसु-भाषा जानत सूरज कोटि उजारी। नगरन में नर-नारी मोहे अवगति अल्प अहारी ॥ २ ॥ सुनि धुनि बलि राजा उठि धाये आहुती यज्ञ बिसारी। सकल रूप देख्यो जु विप्र को किये दण्डवत जुहारी ॥ ३ ॥ चलिये विप्र जहाँ यज्ञवेदी बहुत करी मनुहारी। जो मांगो सो देहुं तुरत ही हीरा रतन भंडारी ॥ ४ ॥ रहो-रहो राजा अधिक न कहिये दोष लगत है भारी। तीन पेंड वसुधा मोहि दीजे जहाँ रचों धर्मसारी ॥ ५ ॥ सुक्र कहे सुनिये बलिराजा भूमि को दान निवारी। यह तो विप्र न होय आपुही आये छलन मुरारी ॥ ६ ॥ कीजे कहा जगतगुरु याचें आपुन भये भिखारी। लेके उदक संकल्प जो कीनो वामन देह पसारी ॥७॥ जै-जैकार भयो भुव मापत दोय पेंड भई सारी। एक पेंड तुम देहु तुरत ही के वचनन सत हारी ॥८॥ सत नहिं छांड़ों सतगुरु मेरे नापो पीठ हमारी। 'सूरदास' प्रभु सर्वसु दीनों पायो राज

पातारी ॥६॥ ❀ २०१ ❀ राग धनाश्री ❀ मेरे क्यों आये विप्र वामन। सुनि के वेद हृदै रुचि वाढ़ी कह्यो जु भीतर आवन ॥१॥ चरन धोय चरनोदक लीनो माँग विप्र मनभावन। तीन पेंड धरती हों माँगों द्वार कुटी एक छावन ॥२॥ वाकों विप्र कहा तुम माँग्यो हीरा रतन देहुँ गामन। 'सूरदास' प्रभु इतनो माँग्यो लाग्यो पीठ मपावन ॥३॥ ❀ २०२ ❀

भादों सुदी १३ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ वलि वामन हो जग पावन करन। कही न परत सोभा नीलमनिन कीसी गोभा गगन गयो जव सुन्दर चरन ॥१॥ वन्यो है भेद अति उतते गंग की धार धसी है धरनि उज्वल वरन। इतते पद की जोत मानों कालिंदी की धार चढ़ी है अमरपुर पाप हरन ॥२॥ रहे हैं चक्रत चाहि सुर नर मुनिवर दुहुँदिस नेह आन किये वरन। 'नंददास' जाके चरित दुरित दवन रंचक श्रवन मिटे जन्म मरन ॥३॥ ❀ २०३ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफ़ी ❀ ऐसो दान न मांगिये हो प्यारे ललना हम पे दियो न जाय। वन मे पाय अकेली युवतिन वातें कहत वनाय। बाट घाट ओघट जमुना तट मारग रोकत आय ॥१॥ कोऊ एसो दान लेत है कोने सिखये पढ़ाय। जो रस चाहो सो रस नाहीं गोरस देहों चखाय ॥२॥ औरन पे ले लीजे हो गिरिधर तव हम देहिं वुलाई। 'सूरस्याम कित करत अचगरी हमसों कुंवर कन्हाई ॥३॥ ❀२०४❀

❀भादों सुदी १४❀ ❀ भोग के दर्शन मे ❀ राग गौरी ❀ श्री वृन्दाविपिन सुहावनो और वंसीवट की छाँथ हो। प्यारी राधा जू दधि ले निकसी कन्हैया ने रोकी आय हो। वृखभान लड़ेती दान दे ॥१॥ अहो प्यारे सबै सयाने साथ के और तुमहु सयाने लाल हो। लिख्यो दिखावो रावरे कब दान लियो पसुपाल हो। नंदराय लला घर जान दे ॥२॥ अहो प्यारी ले आये तो लेइंगे और नई न करिहै आज हो। मोहि नित पहेराय पठावही और वीरा दे व्रजराज हो। वृष०। ॥३॥ अहो प्यारे देस हमारे वाप को जाकी

बाँह बसे नन्दराय हो । रुंध रखाई साँवरे तेरी तिहिं सुख चरती गाय हो । नंद०। ॥४॥ अहो प्यारी देस तिहारे बाप को सो तो सब दीनो साथ हो । सब संकल्प्यो ता दिना जा दिन पियरे किये हाथ हो । वृष० ॥५॥ अहो प्यारे यहां हम लाद्यो है कहा और कहा भरे हम वेल हो । आड़े ह्वै ठाड़े भये मेरी रोकी मही की गैल हो । नंद० ॥६॥ अहो प्यारी अङ्ग अङ्ग बेल सुहावनी और भरे हैं रतन बहु भार हो । जावक लेख्यो पारख्यो तुम निकसी हरियारे हार हो । वृष० ॥७॥ अहो प्यारे कहाँ दुंदुभी घंटा बजें आर को नायक यहाँ आय हो । कहां लों उत्तर देहुगे तुम मुख ललिता के चाय हो । नंद । ॥८॥ अहो प्यारी नूपुर किंकनीं वीछिया और घंटा धुनि नाना भाय हो । नायक रूप लदेनिया सो दिये दमामा जाय हो । वृष० ॥९॥ अहो प्यारे इहाँ हाकम है कहाँ तुम कहत बनाय बनाय हो । यह उत्तर क्यों लों देउगे तुम हो दानिन के राय हो । नंद० ॥१०॥ अहो प्यारी इहाँ है हाकिम गाय के तुम छल बल निकसी आय हो । सैयां सुबल सयानो ढोटा या वन को विठतो खाय हो । वृष० ॥११॥ अहो प्यारे गुजराती डाकोतिया सो लेत ग्रहन को दान हो । जो उनमे हो सांवरे वृखभान बावा राखे मान हो । नन्द० ॥१२॥ अहो प्यारी जनम जनम की हों कहा कहों तुम सुनो सुबल सब साथ हो । असुभ लछिन ते सुभ करों तुम नेकु दिखाबहु हाथहो । वृष० ॥ १३ ॥ अहो प्यारे नवग्रह कहिये दान के जाकी विधि जाने प्योसार हो । एक सोनो संक्रांत को और ऊंट भरे ननसार हो । नन्द० ॥१४॥ अहो प्यारी हों दानी बहु भांति को और जो कोउ दान जो देई हों । जोई जोई विधि करि देउगी सोई सोई विधि करि लेउ हो । वृष० ॥१५॥ अहो प्यारे तोई तन कारे भये और ले ले ऐसो दान हो । क्यों छूटोगे भारते काहू तीरथ हू नहिं न्हात हो । नंद० ॥१६॥ अहो प्यारी गोरज गंगा न्हात हों और जपत गायन को नाम हो । परम

पुनीत सदा रहों कछु लेत नहीं सकुचाउं हो । वृष० ॥१७॥ अहो प्यारे दान ले दान ले लाड़िले कछु गाय बजाय रिझाय हो । जैसी विधि हम देखि है और तेसोई देहिं मंगाय हो । नंद० ॥१८॥ अहो प्यारी नट ह्वै नाच्यो सांवरो और बिरद पढ्यो जैसे भाट हो । महुवरि मे हेरी दई अरु मेटी कुंवर मेरी नाट हो । वृष० ॥१९॥ अहो प्यारे एक सखी चितचोर के और जोरि दई दृग गांठि हो । दंपति रति पहिचानि के और गये मन्मथ दल नाटि हो । नंद० ॥२०॥ अहो प्यारी वे सखियन मे को चली वे तो चले है सखन की ओर हो । पट दोऊ छबि के छटा तन रहे है छबीले छोर हो । वृष० ॥२१॥ अहो प्यारे घूँघट मे अति झलमले और अति आवेसी नैन हो । मुरि चितये त्योंही रहे थकि रहे रसीले बैन हो । नंद० ॥२२॥ अहो प्यारी को लकुटी आडी करे और कौन कहि सके वात हो । रस ही रस बस ह्वै गये और सुफल भये सब गात हो । वृष० ॥२३॥ अहो प्यारे युवती अनेक सुहावनी और अति रस बढ्यो विहार हो । चतुरन मन दोऊ मिले और 'दास वली' वलिहार हो । नंदराय लला घर जान दे ॥२४॥ ❀ २०५ ❀

❀भादों सुदी १५❀राजभोग दर्शन❀ राग सारंग ❀ ए तुम पेंडोइ रोके रहत कैसे के आवे जांय ब्रजबधू तुमही विचार देखो परम सुजान । खिरक़ दुहावन दिनदिन आयो चाहें ऐसे कैसे बने गुसांइ इतउत गहवर गेलो हू न आन ॥ १ ॥ एसी अटपटी कित गहो जू लाडिले कुंवर जो कवहूं परिहै ब्रजराज के कान । 'गोविंद' प्रभु सों कहत प्यारी की सखी तुम यों नेक इत उतरो हमहि देहुधों जान ॥ २ ॥ ❀ २०६ ❀ पोढ़वे में ❀ राग केदारो ❀ पोढिये लाल लाडिली संग ले । नौतन सेज बनी अति सुन्दर बिच-बिच सोंधे के पट दे ॥ १ ॥ हों करिहों चरनन की सेवा जो मेरे नैनन ही सुख ह्वै । 'गोपीनाथ' या रंगमहल में जोरी राज करो अविचल ह्वै ॥२॥ ❀२०७❀

❀०❀

श्री बालकृष्ण जी के उत्सव की बधाई (आसौज वदी ६)

❀ सर्वोत्तम जी की बधाई ❀ राग धनाश्री ❀ जो पै श्रीवल्लभ रूप न जाने। तो कैसे यह जन लीला के नित्य संबंध करि माने ॥ १ ॥ प्राकृत निखिल धर्म नहिं परसत अप्राकृत जो बखाने। प्रतिपादित निगमादिक वचनन साकृति सिद्धि निदाने ॥ २ ॥ कलिकालादि दोस के तम करि पंडित हू नहिं जाने। संप्रति अविषय ताहीते है भुव प्रादुर्भाव कहाने ॥ ३ ॥ दया देखि निज भाव प्रगट कों देत महातम दाने। बानी करि जब तब निज मुख को प्रादुर्भाव बखाने ॥ ४ ॥ तिनको कह्यो अबोध सबन कों तुरत सुबोध बखाने। अष्टोत्तरसत नाम जपन करि पाप होत सब हाने ॥ ५ ॥ अग्निकुमार ऋसीस्वर वरन्यो 'जगती' छंद बखाने। देव रूप श्रीकृष्ण रसानन बीज कारुनिक जाने ॥ ६ ॥ कर विनियोग भक्तियोग में प्रतिवन्ध सब हाने। अधरामृत रस स्वाद कृष्ण को यहे सिद्धि करि माने ॥ ७ ॥ आनन्द परमानन्द रूपमय कृष्णमुखाकृति आने। कृपासिन्धु दैवी जो उद्धारक स्मृति आर्ति ही नसाने ॥ ८ ॥ श्रीभागवत गूढ़ार्थन कों प्रगट परायन जाने। गोवर्धनधर साकृति निश्चय स्थापक वेद बखाने ॥ ९ ॥ मायावाद निराकरन करि सकल वाद बल हाने। मारग भक्ति कमल करि बरनों तिनके रवि करि माने ॥ १० ॥ नर-नारी उद्धार करन कों समरथ प्रगट कहाने। अङ्गीकृत करि गोपीपति मानव निज बस करि आने ॥११॥ अङ्गीकृत मर्यादा बोधक करुनाकर विभु गाने। नाहिन दियो काहुने ऐसो दान परायन जाने ॥ १२ ॥ महाउदार चरित जिनके निज गावत निगम बखाने। करि प्राकृत अनुकृति मोहे सुर-रिपु जनवृन्द समाने ॥ १३ ॥ जो पै अग्नि-रूप तन वल्लभ रूप जलधि नहिं आने। भक्तन के हित कारक ऐसे नहिं देखे न कहाने ॥ १४ ॥ सेवकजन सिच्छा के कारन कृष्ण-भक्ति प्रगटाने। निखिल सृष्टि इष्ट के दाता इच्छा यह मन माने ॥ १५ ॥ लच्छन

सर्व सम्पन्न महाप्रभु कृष्ण ज्ञान यह दाने । याही ते गुरु वेद पुरान पुकार कहत परमाने ॥ १६ ॥ आनन्द भर परिपूरन अम्बुज नयन देखि ललचाने । कृपा-दृष्टि आनन्द दे दासी दास प्रिय पति जाने ॥ १७ ॥ रोष-दृष्टि के पात भये ते भक्त-वृन्द रिपु हाने । याही ते भक्तन करि सेवत यह निरधार वखाने ॥ १८ ॥ सुख को सेवन कहिये जाको दुराराध्य करि माने । दुर्लभ चरन-कमल जाके निज उग्र प्रताप कहाने ॥ १६ ॥ वानी करि पूरत सेवक-जन निज सरनागति आने । श्रीभागवत समुद्र मथन करि रास-रूप हरि जाने ॥ २० ॥ सानिध्य ते जु दियो हित हरि को भक्ति-मुक्ति के दाने । लीला रास विलास एक रचि कृपा कथा परमाने ॥ २१ ॥ अनुभव बिरह करन कों सब कों त्याग एक मन आने । भक्ति आचार दिखायो जन कों मारग कर्म निदाने ॥ २२ ॥ यागादिक भक्तिन के साधक मन क्रम वच करि जाने । पूरन आनंद पूरन रतिपति वागधीस गुन गाने ॥२३॥ याही ते विवुधेस्वर पद की कहियत चित में निसाने । कृष्ण सहंस्र नाम के दायक भक्त परायन माने ॥ २४ ॥ भक्ति आचार विविध वोधन कों नाना वचन वखाने । अपने काज तजे प्रानन तें प्रिय पदारथ जाने ॥ २५ ॥ तादृस भक्तन करि परिवेष्टित देखत मती हिराने । दास जनन के हित के कारन साधन सव दरसाने ॥ २६ ॥ सकल सक्ति ह्वै रूप दिखावत श्री वल्लभ हरि माने । भूतल पुष्टि प्रगट करिवे कों श्रीविट्ठल निधि आने ॥ २७ ॥ पिता भयो राख्यो महिमा सव अपने कुल मधि जाने । दूर कियो हरि माया मत कों गर्व अपहरन आने ॥ २८ ॥ पतिव्रता पति पारलौकिक इहलौकिक वर दाने । गूढ़ हृदय भक्तन मन आसय दायक परगुन गाने ॥ २६ ॥ उपासनादिक मारग करिके मुग्ध मोह नसाने । मारग भक्ति प्रगट करि सव ते वैलक्षन ठहराने ॥ ३० ॥ पृथक् सरन मारग उपदेसक कृष्ण हृदय की जाने । प्रतिक्षन नव निकुञ्ज लीला-रस पूरन निज मन माने ॥ ३१ ॥

तिनकी कथा विवस चित ह्वैके विसरे सव गुन आने। व्रजपति प्रिय ताही ते कहियत प्रिय व्रजवास वखाने ॥३२॥ लीला-पुष्टि करन ए कहियत भक्त काम धर्म दाने। सवन अजानी लीला इनकी मोहन रूप कहाने॥३३॥ सव आसक्त भये भक्तन वस पतित पवित्र वखाने। यस अपने गुनगान श्रवन ते आनंद हृदै वखाने ॥ ३४ ॥ यस पीयूष लहरिन करि छांड़े अन्य भाव पर आने। लीलामृत रस करि पोखे तव कहत फिरत महाराने ॥३५॥ गोवर्धन वास उछाह एक चित लीला-प्रेम समाने। यज्ञ भोग वलि यज्ञ करन कों चार वेद विकसाने ॥ ३६ ॥ सत्य प्रतिज्ञा त्रिगुनातीत सुन नीति विसारद जाने। कीरति वढ़न महा तत्वसूत्र भाष्य प्रकासक माने ॥ ३७ ॥ मायावाद तूल उन्मूलन अग्नि रूप कहि गाने। ब्रह्मवाद उद्धारन कारन भूतल जन्म वखाने ॥ ३८ ॥ अप्राकृत भूषन परिभूषित सहज हास मुख ठाने। ब्रह्मलोक भुवलोक रसातल के भूषन युत जाने ॥ ३९ ॥ उधरे भाग्य अवनीतल के निज सुन्दर सहज कहाने। भक्तन करि सेवित निज पदरज ते ई बहु धन दाने ॥ ४० ॥ यह प्रकार आनन्दनिधि प्रभु के नाम पदारथ गाने। अष्टोत्तरसत ते कहियत जे अपने सर्वस माने ॥ ४१ ॥ श्रद्धा निर्मल वुद्धि करि जे नित्य पढ़त जन माने। एक चित्त करि के अधरामृत सिद्धि याहि ते जाने ॥४२॥ वृथा मुक्ति बिन पाये ताके पाये यह गति माने। कृष्ण पदारथ रस गहिवे कों जप करियत है राने ॥४३॥ यह विधि द्विज कुल पति के 'गिरिधर' नाम वितान वखाने। श्री वल्लभ श्रीविट्ठल प्रभु को निज अनुचर करि माने ॥४४॥

❀२०८❀ राग धनाश्री ❀

जोपे श्री विट्ठलनाथहि गावे। श्रीवल्लभ पद कमल कृपा ते सुगम करि के पावे ॥१॥ जिनके नाम अर्क के उदये पाप ध्वांत मिटावे। विकसित होत हृदय कमलन ते नाम आश्रय करावे ॥२॥ छंद 'अनुष्टुप' ऋषि अग्निसुत तिनके कुमार कहावे। सर्वसक्ति संयुक्त देव श्रीवल्लभ आत्मज

भावे ॥ ३ ॥ सकल इष्ट सिद्धि अर्थन विनियोग निरूपन गावे । श्रीविट्ठल कृपासिन्धु अति भक्त वत्सल जु कहावे ॥ ४ ॥ अति सुंदर है कृष्णलीला रसआविष्ट ताहि जतावे । श्री सहित श्रीवल्लभनंदन दुखते दरसन पावे ॥ ५ ॥ भक्तन करि संदृश्य महाप्रभु भक्तगम्य ही जतावे । निजजन के भय नास करत महा भक्त हृदय कहावे ॥ ६ ॥ दीनानाथ एकआश्रय प्रभु ऐसे ही जु दिखावे । कमल लोचन अरु रासलीलारस तिनके उदधि गवावे ॥ ७ ॥ धर्म सेतु अरु भक्ति सेतु प्रभु सुखमेव्य जू कहावे । ब्रजेस्वर सर्वस्व भक्त के सोकन नास करावे ॥ ८ ॥ सांत स्वभाव सु जानत सवकों मनको दान दिवावे । रुक्मिनिरमन श्रीपद्मावतीपति निगम नेति करि गावे ॥ ९ ॥ भक्तरत्न परीक्षा करि भक्तरक्षा दक्ष जतावे । श्रीकृष्णभक्ति प्रगट करि हमसे असुर जीव उधरावे ॥ १० ॥ महाअसुर को त्याग करे तव दैवी उधार वतावे । सर्वसास्त्रविदनके सिरोमनि वेद पुरान गवावे ॥ ११ ॥ कर्मजाड्य भेदन के दिनमनि उदय प्रताप जतावे । भक्तन नेत्र चंद रूप प्रभु त्रिविध ताप मिटावे ॥ १२ ॥ महालक्ष्मी गर्भरत्न श्रीविट्ठल वैस्वानर-सुत भावे । कृष्ण मारग को उद्भव जिनते कृपारस वरखावे ॥ १३ ॥ भक्तन के चिंतामनि भक्ति कल्पतरु जु कहावे । श्रीगोकुलमधि वास करिके कालिंदी मनभावे ॥ १४ ॥ श्रीगोवर्धन आगमरत्त अति निजजनकों जु जतावे । अचल वृंदावन अति प्रिय गोवर्धनयग्य करावे ॥ १५ ॥ महेन्द्र-मदहर के प्रिय कृष्णलीला सर्वस्व जतावे । श्रीभागवत के भाव जानत प्रभु गूढअर्थ प्रगटावे ॥ १६ ॥ पिताप्रवर्तित भक्तिमारग प्रचार सुविचार वतावे। ब्रजेस्वर पे प्रीति करत निजजन पे कृपा करावे ॥ १७ ॥ करि निमंत्रन जिमाय सवनकों स्त्रीसूद्रादिक उधरावे । वाललीला आदि प्रीति अति तेई वहु मन भावे ॥ १८ ॥ श्रीगोपी संवंधि सत्कथि है निजजन पे वरखावे । अति गंभीर तात्पर्य है तिनके वेद हु पार न पावे ॥ १९ ॥

कथनीय रु गुनकर जिनके सेस सहस्रमुख गावे। पितावंससुधोदधि तिन
चंदरूप कहावे ॥ २० ॥ आपुन से सुत सात प्रगट करि अनेक जी
उधरावे । श्रीगिरिधर अखिल गुनपूरन धर्म रीति प्रगटावे ॥ २१
श्रीगोविंद पिता की भक्ति कों कृपा करिके दिखावे। श्रीबालकृष्ण प्र
महाकृपा सों अदेय दान दिवावे ॥ २२ ॥ श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल तिन सं
कृपारस बरखावे । श्रीगोकुलनाथ विवेचन करि श्रीवल्लभ गुन
दिखावे ॥ २३ ॥ श्रीरघुनाथ महा उदार श्रीविट्ठलप्रभु हि गहावे। श्रीयदु
नाथ ज्ञानगुन पूरन परमारथहि बतावे ॥ २४ ॥ श्रीघनस्याम विरह र
भोगी महात्याग हि जतावे। यह विधि सात सुतहि प्रगट करि भक्तिपंथ
हि दृढावे ॥ २५ ॥ दिसाचक्र मे व्यापक कीरति महाउज्वल चरित कहावे
अनेक भूपति की पंगति तिनके सिर पर चरन धरावे ॥ २६ ॥ विप्रदरि
दावानल भूदेवानल पूज्य कहावे। गौ ब्राह्मन के प्रान रच्छा पर सत्यपरा
यन भावे ॥ २७॥ प्रियश्रुति पंथ महायग्य करत नित त्रिविध ताप
मिटावे। कृष्णअनुग्रह संप्राप्ति महापतित पावन जु कहावे ॥ २८ ॥ अनेक
मारग करि कष्ट जीव अति तिन्है स्वास्थ्य दिखावे। महाप्रभू भ्रम नास
करत सब भक्त अज्ञान मिटावे ॥ २९ ॥ उत्तम महापुरुष सत्ख्याती महा
पुरुप देह कहावे । दर्सनीयतम बानी मधुर अति महाप्रभु सब मन
भावे ॥ ३० ॥ मायावाद निरास करत सदा प्रसन्नवदन जु दिखावे।
मुग्धस्थित मुखकमल प्रसादी विसाल नेत्र मनभावे ॥ ३१ ॥ धरनिमंडल
के मंडन महाप्रभु सेसहु पार न पावे। तीन जगत व्यापक कीरति सत स्याम
कों उज्वल करावे ॥ ३२ ॥ वाक् अमृत आकृष्ट भक्तमन सत्रु हि ताप
बढावे। भक्त संप्रार्थित करत दासदासी के अभीष्ट दिवावे ॥ ३३ ॥ अचिंत
महिमा अमेय महाप्रभु विस्मय देह जतावे। भक्तक्लेस के असह आप सब
दुख सहि रीति दिखावे ॥ ३४ ॥ भक्तन के हित वसिहे महाप्रभु सुंदर

सहज कहावे । आचार्यन के रत्न श्रीविट्ठल परमकृपालु कहावे ॥ ३५ ॥ सर्वानुग्रह मंत्रवेद सर्वसकी दान कुसलता जतावे । गीत संगीत-सास्त्र सिंधु अचल गोधनसखा कहावे ॥ ३६ ॥ गाय गोप गोपिका प्रिय चिंतित तिनकों ज्ञान बतावे । महाबुद्धि विस्ववंद्य पदांबुज जगत विस्मय करावे ॥ ३७ ॥ सदा कृष्णकथाप्रिय सुख उत्पादक कृति प्रगटावे । सर्व संदेह छेदनकों चतुर अति कृपा करिके गवावे ॥ ३८ ॥ सर्वदा स्वपक्ष रक्षन दक्ष प्रतिपक्ष क्षय करावे । गोपी विरह आविष्ट कृष्ण आत्मा सर्व समर्पन करावे ॥ ३९ ॥ निवेदिभक्त सर्वस्व सरन को मारग ही दरसावे । श्रीकृष्ण श्रीवल्लभ के अनुग्रही पे पद प्रार्थना करावे ॥ ४० ॥ ये नामरत्न श्रीविट्ठल पद ध्यान करिके चित लावे । एक सरन ठहै पढत निरंतर ताके चित हरि आवें ॥ ४१ ॥ जोई मनते इच्छा करत सोई असंसय ते पावे । ये नामरत्न है आज्ञा जिनकी श्रद्धा पढि चित लावे ॥ ४२ ॥ मेरे प्रभु तुमारो करो ताकों स्तुति कर बांह गहावे । श्रीविट्ठल पदपद्मपराग अति सों प्रीति हि करावे ॥ ४३ ॥ श्रीरघुनाथकृत यह अति विजयतम कों पावे । तिनकी कृपाते यथामति बरनों अंगीकार करावे ॥ ४४ ॥ निजदासन को 'दास' जान प्रभु निज यस कों जु गवावे । श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल श्रीमद् बाल-कृष्ण पद पावे ॥ ४५ ॥ ❀ २०९ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ सबमिल गावो गीत बधाई । श्रीलछमन गृह प्रगट भये है श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ १ ॥ उघरे भाग्य सकल भक्तन के पुष्टि भक्ति प्रगटाई । जसुमतिसुत निज सुख देवे कों मुखमूरति प्रगटाई ॥ २ ॥ अति सुंदर विधुवदन विलोकत सकल सोक विनसाई । कहत फिरत सबहिन सों फूले आनंद उर न समाई ॥ ३ ॥ श्रीभागवत अर्थ प्रगट करन कों भाग्यन दई है दिखाई । भई न कबहू ठहै है नहिं एसी जैसी अब निधि पाई ॥४॥ सदा बिराजो सीस हमारे यह मूरति मन भाई । चरन रेनु सेवक को सेवक 'दास रसिक' बलि जाई ॥५॥❀२१०❀

उत्सव श्री बालकृष्णजी को (आश्विन वदी १३)

❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ मंगलमंगलं अखिलभुवि मंगलं मंगलमय श्री लक्ष्मणनंद । मंगलरूप महालक्ष्मीपति जलनिधि पूर्णचंद्र ॥१॥ मंगल-मयकृत सातमज गोपीनाथ मङ्गलरूप रुक्मिणीश मङ्गल पद्मावतीशं । मङ्गल जनित तनुज श्रीगिरिधर गोविंद बालकृष्ण गोकुलपति रघुनाथ जगदीशं ॥२॥ मङ्गलवर्धक श्रीयदुपति घनश्याम पितुः समान श्रीविट्ठल शुभाभिधानं । मंगलमयकृत महाप्रियवल्लभ सेवनमत मंगलकृत दैवीसंतानं ॥३॥ मङ्गल मङ्गल गोवर्धनधर मंगलमय रसलीलासागर रससंपूरित भावं । वंदेहं तं सततं मन्मथ 'परमानन्द' मदनमय व्रजपति मुखगतमुरलीरावं ॥४॥ ❀२११❀ ❀ राग सारंग ❀ जयति भटलक्ष्मणतनुज कृष्णवदनानल श्रीइल्लमागारुगर्भ-रत्ने । दैविजनसमुद्धृति करुणकृति निजाविर्भाव विहितबहुविविधयत्ने ॥१॥ महालक्ष्मीपतौ गोपिकानाथ श्रीविट्ठलाभिधसुभगतनुज ताते । प्रथितमाया वादवर्तिवदनध्वंसिविहितनिजदासजनपक्षपाते ॥२॥ पुष्टिपथकथन रचिता नेकसुग्रन्थ मथित भागवतपीयूषसारे । रासयुवतीभावसततभावितहृदयमानस जनितमोदभारे ॥३॥ निजचरणकमलधरणीपरिक्रमणकृतिमात्रपावनविततर्तीर्थ जाले । कृष्णसेवनविहित शरणगतशिक्षणाक्षिप्तसंदेहदासैकपाले ॥४॥ निज वचन पीयूषवर्षित सतत साहित्यपुरुपजनभृत्ययुक्ते । विविधवाचोयुक्ति निगम-वचनोदितैरपिच दूरीकृत दुष्टजनदुरुक्ते ॥५॥ ईदृशे सति शिरसिसर्वदा वल्लभाधीशपद सकलकर्तरि दयालौ । कैव परिवेदना भवति 'हरिदास' जनसकल साधनरहित निजकृपालौ ॥ ६ ॥ ❀ २१२ ❀ राग धनाश्री ❀ प्रगट्या एमा श्रीवल्लभदेव । श्रीलछमनभट गृह बधाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥१॥ गावे एमा गीत रसाल । सवे सुहागिन आइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥२॥ ब्राह्मन एमा बेद पढ़ाय । देत असीस सुहाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥३॥ मोतिन एमा चोक पुराय । बंदनवार बँधाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥४॥ घर घर

एमा मङ्गलचार । ध्वजा कलस फहराइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥५॥ देवन एमा दुंदुभी बजाय । पहोप अंजुलीबरखाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥६॥ दीने एमा बहु विधि दान । नरनारी पेहेराइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥७॥ धनि धनि एमा इलंमागारु । आसा सबै पुजाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥८॥ सब दिन एमा सुख संपति राज । 'हरिजीवन' मन भाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥९॥

❀ २१३ ❀ राग सारंग ❀ पोस निर्दोस सुखकोस सुन्दरमास कृष्ण नौमी सुभग नव घरी दिन आज । श्रीवल्लभसदन प्रगट गिरिवरधरन चारु विधु वदन छबि श्रीय विट्ठलराज ॥१॥ भीर मागध भई पढ़त मुनिजन वेद ग्वाल गावत नवल वसन भूखन साज । हरद केसर दही कीच को पार नहिं मानो सरिता वही नीर निर्झर बाज ॥२॥ घोष आनन्द त्रियवृन्द मङ्गल गावे बजत निर्घोष रस पुंज कल मृदु गाज । 'विष्णुदास' श्रीहरि प्रगट द्विज रूप धरि निगम पथ दृढ़ थाप भक्त पोषन काज ॥३॥

❀ २१४ ❀ राग धनाश्री ❀ भूतल महामहोत्सव आज । श्री लछमनगृह प्रगट भये हैं श्री वल्लभ महाराज ॥१॥ आज्ञा दई दयाकरि श्रीहरि पुष्टि प्रगटवे काज । कलि में जन्म उबारयो ततछिन बूडत वेद जहाज ॥२॥ आनन्द मूरति निरखत नैनन फूले भक्त समाज । नाचत गावत विवस भये सब छाँडि लोक कुल लाज ॥३॥ ॥ घर घर मङ्गल बजत बधाई सजत नये नये साज । मगन भये तन गिनत न काहू तीन लोक पर गाज ॥४॥ लीला सिंधु महारस अब ते बंधी प्रेम की पाज। 'रसिक' सिरोमनि सदा विराजो श्रीवल्लभ सिरताज ॥५॥

❀२१५❀ ❀ राग सारंग ❀ बधाई श्रीलछमनराजकुमार । तिहारे कुल मण्डन श्रीविट्ठल सौरभ को नहिं पार ॥१॥ पोसमास वद नोमी प्रगटे फिर लीनो अवतार । मुनिजन जस गावत आवत है होत है जैजैकार ॥२॥ फूले महाप्रभु श्रीवल्लभ गावत मङ्गलचार । ब्रजजन मन हुल्लास सबन के 'जन गिरिधर' वलिहारि ॥३॥

❀ २१६ ❀ राग सारंग ❀ प्रगटे श्री बालकृष्ण सुजान ।

भक्तन मन आनन्द भयो अति सुन्दर रूपनिधान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठल गृह महा महोत्सव बाजत भेरि निसान । बांधत बन्दनवार तहां मिलि करत युवतीजन गान ॥२॥ श्रीविट्ठल तब महा मुदितमन देत विप्रन बहु दान । आसिरवाद पढ़त है द्विजवर बंदीजन करत बखान ॥३॥ नैनबिसाल दृगंचल चंचल मानों मदन के बान । मृदुल सुभाव मनोहर मूरति बल्लभकुल के भान ॥४॥ रुक्मिनि माय परमसुख दायक निजजन जीवन प्रान । 'केसोदास' प्रभु के गुन अगनित गावत वेद पुरान ॥५॥ ❀ २१७ ❀ राग सारंग ❀ भयो श्री बिट्ठल के मन मोद । पूरनब्रह्म श्रीबालकृष्ण प्रभु धाय लिये जब गोद ॥१॥ बार बार बिधु बदन बिलोकत फूले अंगन समाय । बाल दसा की सहज माधुरी अचवत दृग न अघाय ॥२॥ यह सुख देखे ही बनि आवे जानो रसिक सुजान । दोउ ओर सुत सोभा बाढ़ी 'बिष्णुदास' के प्रान ॥३॥ ❀२१८❀ राग सारंग ❀ भयो यह श्रीवल्लभ अवतार । प्राची दिसि ते सरद चंद्र ज्यों लछमन भूप कुमार ॥ १ ॥ श्रीभागवत गूढ रस प्रगटन कारन कियो विचार । आज्ञा दई निज यज्ञपुरुष कों ताते वह अनुहार ॥ २ ॥ हरि लीलामृत-सिन्धु संपूरित भक्त हेतु अवतार । श्रीगोपीजनवल्लभ वल्लभ करत जु नित्य विहार ॥ ३ ॥ ब्रजपति पद-सेवन मारग जन कारन कियो प्रचार । जिहिं अवसर अनुसरत जीव कछु अर्पत वदन कमल स्वीकार ॥४॥ वाजे बाजत बीन दुन्दुभी झांझ मृदंग और तार । नाचत गावत प्रेम मगन मन निजजन ठाड़े द्वार ॥ ५ ॥ जननी मुदित उछङ्ग लिये सुत मुख देखत बारम्बार । अति सुख पावत हियो सिरावत बड़भागिन जु उदार ॥ ६ ॥ श्री लछमन नव-वधू स्वजन पहराये सब परिवार । भू-देवन कों दिये दान बहु निगम विहित अनुसार ॥७॥ जाके गुन गन सेस सहस्र मुख कहत न आवे पार । यह फल देहु सदा 'रसिकन' कों श्रीवल्लभ जगत उद्धार ॥ ८ ॥ ❀ २१९ ❀ राग सारंग ❀ अबके सबही रूप धर्यो ।

चार वेद के चार वदन कर सकल जगत उधरयो ॥ १ ॥ सुक्ल रक्त अरु पीत कृष्ण पद एक-एक अधिकार। चारों मिल एकत्र लखियत है श्री विट्ठल अवतार ॥२॥ ते जुग में आकास विसद अति अरुन कमलदल नैन। पीत वसन परिधान अङ्ग मानो उनयो गन सुख दैन ॥३॥ ज्ञान रहित जीवन कों 'गिरिधर' राखे सिरधर हाथ। तेसेइ इनकों आप ज्ञान दे कर ग्रहि किये सनाथ ॥४॥ ❀२२०❀ राग सारंग ❀ भाग्यन वल्लभ जनम भयो। सुभ बैसाख कृष्ण एकादसि पूरन विधु उदयो ॥ १ ॥ संतन मन मायामत को अतिगहवर तिमिर गयो। रस स्वरूप ब्रजभूप सबन कों रूप प्रकास दयो ॥२॥ सेवक नयन चकोर सदा सेवामृत-रस अचयो। बचन किरन करि पुष्टि भक्ति-रस सब जग मांझ छयो ॥ ३ ॥ भाव रूप कों भाव रूप ही भजन पंथ जतयो। सबै सिरावो नयन आपुने दुर्लभ पाय लयो ॥ ४ ॥ रस श्रृंगार एक उदवोधक विरह ताप नसयो। 'रसिकन' के मन वसो दिवस निस प्रभु आनंदमयो ॥ ५ ॥ ❀ २२१ ❀ राग आसावरी ❀ पौषकृष्ण नौमी को सुभ दिन पूत अक्काजू जायो हो। सुनि सुनि निजजन अति आनंदे हरखत करत बधायो हो ॥ १ ॥ नारदादि ब्रह्मादिक हरखे सुकमुनि अति सचुपाये हो। श्रीभागवत विवेचन करिके गूढ अर्थ प्रगटाये हो ॥ २ ॥ कलिके जीव उधारन कारन द्विजवपु धर भुव आये हो। अति उदार श्री लछमननन्दन देत दान मनभाये हो ॥ ३ ॥ करत बेदधुनि विप्र महा-मुनि जातकर्म करवाये हो। 'मानिकचंद' प्रभु श्रीविट्ठल के विमल-विमल जस गाये हो ॥ ४ ॥ ❀ २२२ ❀ राग सारंग ❀ भाग्यन बल्लभ भूतल आये। करि करुना लछमन गृह कलि मे ब्रजपति प्रगट कराये ॥ १ ॥ चिंता तजो भजो इनके पद महापदारथ पाये। दास जनन के सकल मनोरथ पूरेंगे मनभाये ॥ २ ॥ साधन करि जिनि देह दुखाओ ये फलरूप बताये। रहो सरन पर दृढ मन करि सब अब आनंद बधाये ॥ ३ ॥ तन मन धन

नोछावर इन पर कर क्यों न देहु उडाये। 'रसिक' सदा वडभागी ते जे श्रीवल्लभ गुन गाये ॥ ४ ॥ ❀ २२३ ❀ राग सारग ❀ पुत्र भयो श्रीवल्लभ के गृह आंगन बजत वधाई। भक्तन के हितकारन प्रगटे श्रीविट्ठल सुखदाई ॥ १ ॥ कंचनथार लिये ब्रजसुंदरि घरघर ते सब आई। तिलक करत आरती उतारत पुनिपुनि लेत बलाई ॥ २ ॥ सहज तिलक मृग मद को दिखियत दृग अंबुजन अघाई। गूढभाव अंतरको जानत रही सकल मुसिकाई ॥ ३ ॥ कहिये कहा कहत नहिं आवे सोभा की अधिकाई। 'श्रीविट्ठल गिरिधर' पूरननिधि भाग्यन दई है दिखाई ॥४॥ ❀ २२४ ❀ ❀ भोगसरे पलना ❀ ढाढी ❀ राग आसावरी ❀ श्रीबल्लभलाल पालने झूले मात इलंमा झुलावे हो। रतनजटित कंचन पलना पर झूमक मोती सुहावेहो ॥ १ ॥ झालर गजमोतिन की राजत दच्छिनचीर उढावेहो। झोटन घुघरू घमकि रहत है झुंझुना झमकि मिलावे हो ॥ २ ॥ चुचुकारत चुटकिये बजावत चुंबन दे हुलरावे हो। बिलकि २ हुलसत मन ही मन बाललीला रस भावे हो ॥ ३ ॥ कबहु उरोजपयपान करावत फिरि पलना पोढावे हो। पीठ उठाय मैया सन्मुख व्है आपुन रीझि रिझावे हो ॥ ४ ॥ महाभाग है मात तात दोउ आपुनपों बिसरावे हो। बल्लभदास आस सब पूरी श्रीबल्लभ दरसावे हो ॥ ५ ॥ ❀ २२५ ❀ ❀ राग आसाबरी ❀ अक्काजू एसो सुत जायो सबहिन के मन भायो हो। श्रीमद्वल्लभ अतिआनंदित दान देत मनभायो हो ॥ १ ॥ द्वारे बंदनवार बंधाई मोतिन चोक पुरायो हो। बाजत ताल मृदंग झांझ अरु बीना नाद सुहायो हो ॥ २ ॥ विप्र सबेमिलि करत बेदधुनि लागत परम सुहायो हो। सुभघरी लग्न नछत्र सोधके श्रीविट्ठल नाम धरायो हो ॥ ३ ॥ बंदीजन और भिच्छुक सुनि सुनि गृह गृह ते उठि धाये हो। कीरति यस बोलत सब मूरति दिन दिन बढत सवायो हो ॥ ४ ॥ सुक मुनि नारदादि ब्रह्मादिक

जाको पार न पायो हो । सो श्रीमद्वल्लभ अक्काजू अपनी गोद खिलायो हो ॥ ५ ॥ श्रीमुख सरदचंद्रमा निर्मल लागत परम सुहायो हो । 'श्रीगिरिवरधर' हरखि निरखि के महा परमसुख पायो हो ॥ ६ ॥ ❀ २२६ ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ तिहारो ढाढी श्रीलछमनराज । तुमारे पुत्र भये पुरुषोत्तम सुफल कियो मेरो काज ॥ १ ॥ तुमारे पितर भये जे पहले महापुरुष अवतार । तिलंगतिलक द्विज यज्ञनारायन किये यज्ञ अपार ॥ २ ॥ तिनके पुत्र भये गंगाधर किये यज्ञ अपार । तिनके गनपति सोमयज्ञ कर यह बड़ोजु सुहाग ॥ ३ ॥ तिनके श्रीविल्लभ अग्निहोत्री तुवपितु अतिही कृपाल । तुम्हारे पुत्र आचार्य श्रीवल्लभ वदन अनल प्रतिपाल ॥ ४ ॥ दैवीजीव उधारन कारन मायावाद निवार । श्रीभागवत स्वरूप वतायो सेवा पुष्टि प्रकार ॥ ५ ॥ इनके पुत्र होंइंगे दोउ हलधर नंदकुमार । गोपीनाथ विट्ठल पुरुषोत्तम तिहूंलोक उजियार ॥ ३ ॥ श्रीविट्ठल के सात होंयगे सुत ते सबै समान । सुतके सुत नाती पंती सब दीपत दीप समान ॥ ७ ॥ नरनारी जे सरन आइहैं ते सव करें सनाथ । नाम सुनाय भक्ति देके पकडे दृढकरि हाथ ॥ ८ ॥ तुव सुत के गुन रूप बखानों सुनत न आवे पार । गोकुलपति मुख निरखि निरखि वपु आकृति सीतल सार ॥९॥ होंतो ढाढी तिहारे घरको तुवसुत करों प्रनाम । परचो रहूं हरिवदन विलोकूं मांगूं न भिक्षा आन ॥ १० ॥ तुमहो परम उदार दानेस्वर जो माग्यो सो दीजे । ढाढिन मेरी इनकी चेरी मोहि तेरो करि लीजे ॥ ११ ॥ निसदिन भक्ति करों तो सुत की इतनी पुजवो आस । जनम-जनम लीला नित देखों वलि बलि 'माधोदास' ॥ १२ ॥ ❀ २२७ ❀ राग धनाश्री ❀ हों जाचक श्रीवल्लभ तिहारो जाचन तुमकों आयो हो । महा उदार देत भक्तन कों अपुअपुनो मन भायो हो ॥ १ ॥ हेम ग्राम भूषन सुख सम्पति सो मोहि मन न सुहायो हो । परचो रहूं नित जूठिन पाऊँ यह मेरो चितलायो हो ॥२॥ प्रफुलित

भयो निरन्तर द्विजवर ब्रह्मवाद तरु छायो हो। गाऊँ गुन लावण्यसिन्धु के 'दास' चरनरज पायो हो ॥३॥ ❀ २२७ ❀ सेन भोग आये ❀ राग कल्यान ❀ गये पाप ताप दूर देखत दरस परस चरन। हों तो एक पतित तिहारो पतितपावन विरद हो तुम जगत के उद्धरन ॥ १ ॥ स्तुति सेस करि न सके सकल कला गुन निधान जानत हों तिहारी सब विधि अनुसरन। 'छीतस्वामी' गिरिवरधर तेसेई श्रीविट्ठलेस हों तो तिहारी जनमजनम सरन ॥ ॥२॥ ❀ २२९ ❀ राग ईमन ❀ श्रीवल्लभ नन्दन चंद देखत तनके त्रिविध ताप जात। मिट गये सब दुरित दूर भक्तन की जीवन-मूरि भामिनी आनंद कन्द ॥ १ ॥ श्रीविट्ठलनाथ विलोकि वढ्यो सुख-सिन्धु की उठत तरंग मिट गये दुख द्वन्द। 'छीतस्वामी' गिरिवरधर विट्ठलेस के गुन गावत आनंद सुखछंद ॥ २ ॥ ❀ २३० ❀ राग ईमन ❀ श्रीविट्ठलनाथ चंद ऊग्यो जग में भक्त चांदनी छाय रही। अंधकार जाके मनके मिट गये सो पिय के मन मांझ लही ॥ १ ॥ निसदिन नाम जपों या मुख ते श्रीवल्लभ विट्ठलेस कही। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल अब जो भई एसी कबहू न भई ॥ २ ॥ ❀ २३१ ❀ राग कानरा ❀ श्रीलछमणवर ब्रह्मधाम काम मूरति पुरुषोत्तम प्रगट भये श्रीवल्लभ प्रभु लीला अवतारी। रसमय आनंद-रूप अनुपम गुन ग्रन्थभरे वचन सुधा सींचत नित निजजन सुखकारी ॥१॥ भजन पंथ कमल भानु अमल भाव दान करत व्रजपति रसरास केलि विहरत 'मनुहारी'। नवललाल पिय 'गिरिधर' दृढकरि कर गहत ताहि जे जन इन सरन आय चरन छत्रधारी ॥ २ ॥ ❀ २३२ ❀ राग कानरा ❀ प्रभु श्रीवल्लभ-गृह जनम लियो। हरिलीला रससिंधु सुधानिधि वचन किरन सब ताप गयो ॥ १ ॥ मायावाद तिमिर जीवन को प्रगट नास पायो उर अंतर। फूली भक्त कुमुदिनी चहुंदिस सोभित भये भक्तमानस सर ॥ २ ॥ मुदित भये कमल मुख तिनके वृथावाद नाहिंन गिनत बल। 'गिरिधर' अन्य भजन

तारागन मंद भये भागे गति चंचल ॥ ३॥ ❀२३३❀आश्विन सुदी १ ❀मंगलादर्शन❀ ❀राग भैरो❀देखो देखोरी नागर नट नृत्यत कालिंदी-तट गोपिन के मध्य राजे मुकुट लटक। काछनी किंकिनी कटि पीतांवर की चटक कुंडल किरन रविरथ की अटक॥१॥ ततथेइ ताताथेइ सब्द उघटत उरपतिरप लेत पगकी पटक। रासमे श्रीराधेराधे मुरली मे येही रटत 'नंददास' गावे तहां निपट निकट॥२॥❀२३४❀ ❀ शृंगार समय ❀ अभ्यंग ❀ राग देवगंधार ❀ कर मोदक माखन मिसरी ले कुंवर के संग डोलत नंदरानी । मिस करि पकरि न्हवायो चाहे वोलत मधुरी वानी ॥ १ ॥ कनक पटा आंगन में राख्यो सीत उष्ण धर्यो पानी । कनक कटोरा सोंधो उवटनो चंदन कांगसि आनी ॥ २ ॥ यों लाइ मज्जन हित जननी चित चतुराइ ठानी । मनमे मतो करत उठिभाजे दुखित केस उरझानी ॥ ३ ॥ निरखि नैनभरि देखत रानी सोभा कहत वानी । गात सचिक्कन यों राजत है ज्यों घन तडित लपटानी ॥ ४ ॥ आओ मनमोहन मेरे ढिंग वात कहों एक छानी । खिलोना एक तात जो लाये वल अजहू नहिं जानी ॥ ५ ॥ राजकुंवर अधन्हातो भाज्यो ताकी कहूं कहानी । वेनी न वाढी रहीजु तनकसी दुलहिन देख हसानी ॥ ६ ॥ वैठे आय न्हाय पट पहरे आनंद मनमें आनी । 'विष्णुदास' 'गिरिधरन सयाने मात कही सोइ मानी ॥७॥ ❀२३५❀ राग देवगंधार ❀कहा ओछी ०है जैं है जात । सुन जसुमति तुम वडरिन आगे जो छिन एक वितात ॥ १ ॥ अति नीको सतभाव भलाइ जो या तन ते कीजे। माय वाप को नाम लिवावत लोकमांझ यस लीजै ॥२॥ सास ननद और पार परोसिन सवहू भांति कह्यो । तोहू मोहि तिहारे घर विन नाहिन परत रह्यो ॥ ३ ॥ वोलि लेहो संकोच करो जिनि जव तुम सुतहि न्हवाओ। 'श्रीविट्ठलगिरिधरन' लाल कों मोहि पे उवटाओ॥४॥❀२३६ ❀ राग विलावल ❀ चलहु राधिके सुजान तेरे हित गुन निधान रास रच्यो कुंवर कान्ह तट कलिंदनंदिनी। नर्तत युवती समूह रास रंग अति कुतूहल.

बाजत रस मुरलिका आनन्दनी ॥१॥ बंसीबट निकट जहाँ परम रमन भूमि तहाँ सकल सुखद बहत मलय वायु मंदिनी। जाती ईपद विकास कानन अतिसय सुवास राका निस सरद मास बिमल चांदनी॥२॥ 'कुंभनदास' प्रभु निहार लोचन भरि घोखनारी नख सिख सौन्दर्य सीम दुखनिकन्दनी। विलसो भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुख सिंधु भेल गोवर्धनधरन केलि जगतवंदिनी ॥३॥ ❀ २३७ ❀ राग विलावल ❀ स्यामाजू आज नागरी किसोर भामती विचित्र जोर कहा कहों अङ्ग-अङ्ग परम माधुरी। करत केलि कण्ठ मेलि वाहु दण्ड गण्ड मण्डल परस सरस लास्य हास्य रासमण्डली जुरी ॥१॥ स्याम सुन्दरी विहार बांसुरी मृदङ्ग तार सकलघोष नूपुरादि किंकिनी चुरी। देखत 'हरिवंस' आली नृत्यत सुगंध ताल वार फेरि देत प्रान देह सुन्दरी ॥२॥ ❀ २३८ ❀ भृङ्गार दर्शन ❀ राग विलावल ❀ नाचत हे नागर बलवीर। नागर नवल नागरी नागर नागर नवरंग स्याम सरीर ॥१॥ नागर सरस सघन वृन्दावन नागर तरनितनूजा तीर। नागर मधुप कोकिला मृग गन नागर मन्द सुगन्ध समीर ॥२॥ नागर चरन कमल सुर सेवत नागर नूपुर मुख मंजीर। नखसिखलों नागर नन्दनन्दन नागर भूखन नागर चीर ॥३॥ 'कृष्णदास' स्वामी नट नागर नागर सुडटी गोपिका भीर। नागर लाल गोवर्धनधारी नागर जस गावत मुनिधीर ॥४॥ ❀ २३९ ❀ भृङ्गार समय ❀ राग विलावल ❀ प्रथम* विलास कियो स्यामाजू कीनो विपिन विहार। उनके विधिकी सोभा बरनो कहत न आवे पार ॥१॥ वाके यूथ की गनना नाहीं निर्गुन भक्त कहावे। ताकी संख्या कहत न आवे सेस हू पार न पावे॥२॥ घोष घोष प्रति गलिन गलिन प्रति रंग रंग अम्बर साजे। कियो सिंगार नखसिख अङ्ग युवती ज्यों करिनी मधि राजे ॥३॥ वहु पूजा ले चली वृन्दावन पानफूल पकवान। ताके यूथ मुख्य चंद्रावली चन्द्रकला सी वान ॥४॥ पहोंची जाय निकुंज

* भृङ्गार समय आज सूं नवमी तक नित्य एक विलास गावनों—

भवन मे दरसी वृन्दा देवी । ताके पद वन्दन करि माग्यो स्यामसुंदर वर होवी ॥५॥ तिहिछिन प्रभुजी आप पधारे कोटिक मन्मथ मोहे। अंग-अंग प्रति रूप-रूप प्रति उपमा रवि ससि कोहे॥६॥ द्वै जुग जाम स्याम स्यामा सङ्ग केलि विविध रंग कीने । उठत तरंग रंग रस उछलित 'दास रसिक' रस पीने ॥ ७ ॥ ❀ २४० ❀ राग बिलावल ❀ द्वितीय विलास कियो स्यामाजू खेल समस्या कीनी । ताकी मुख्य सखी ललिताजू आनन्द महा रस भीनी ॥१॥ चली संकेत बिहार करन बलि पूजा साजि संपूरन । वहु उपहार भोग पायस ले वांह हलावत मूरन ॥२॥ मन्दिर देवी गान करत यस आय मिले गिरिधारी । मनको भायो भयो सवन को काम वेदना टारी ॥३॥ स्यामा को सिंगार स्याम को ललिता नीवी खोली । लीला निरखत 'दास रसिक' जन श्रीमुख स्यामा बोली ॥४॥ ❀२४१❀ राग बिलावल ❀ तृतीय विलास कियो स्यामा जू प्रवीन । खेलन को उछाह सखी एकत्र कीन ॥१॥ तिनमे मुख्य सखी विसाखा जू ऐन । चली निकुंज महल मे कोकिला ज्यों वैन ॥२॥ भोग धरि संभारि वासोंधी सनी । कुसुम रंग अनेक गुही कामिनी ॥३॥ गानस्वर कियो बनदेवी बिहार । नवत्रिया को वेष कोटि काम वार ॥४॥ ढिंग आसन कराय प्यारी कों वैठाय । दोऊ एकत्र कीने निरखत लेत वलाय ॥५॥ यह लीला को ध्यान मम हृदय ठहराय । देखत सुरनर मुनि भूले 'रसिक' वलि वलि जाय ॥६॥ ❀ २४२ ❀ राग बिलावल ❀ चोथो विलास कियो स्यामाजू परासोली वन मांहि । ताके वृच्छ लता द्रुम बेली तनपुलकित आनन्द न समाई ॥१॥ चन्द्रभागा मुख्य यूथावलि अपनी सखी सव नोति बुलाई । खरमण्डा जलेवी लडुवा प्रत्येक अङ्ग को भाव जनाई ॥२॥ साज कियो पूजन देवी को वहु उपहार भेट ले आई । खेलन चली वनी तिहि सोभा ज्यों घन मे चपला चपलाई । पहोंची जाय दरस देवी तव ह्वै गये स्याम किसोर कन्हाई । मनको चीत्यो भयो लालन को

हास विलास करत किलकाई ॥४॥ स्यामा स्याम भुजन भरि भेटे तृन तोरत और लेत वलाई। कहीं न जाय सोभा ता सुखकी कुंजन दुरे 'रसिक' निधि पाई ॥५॥ ❀२४३❀ राग विलावल ❀ पांचमो विलास कियो स्यामा जू कदलीवन संकेत। ताकी सखी मुख्य संजावली पिया मिलन के हेत ॥१॥ चली रली उमगी युवती सव पूजन देवी निकसी। धूप-दीप भोग सञ्जावलि कमल कलीसी विकसी ॥२॥ आनंदभरि नाचत गावत वहु रस में रस उपजाती। मण्डल में हरि ततछिन आये हिलमिल भये एकपांती ॥ ३ ॥ द्वै युग जाम स्याम स्यामा संग भामिनी यह रस पीनो। उनकी कृपादृष्टि अवलोकत 'रसिकदास' रस भीनो ॥४॥ ❀ २४४ ❀ राग विलावल ❀ छटो विलास कियो स्यामा जू। गोधनवन कों चली भामा जू। पहेरे रंग रंग सारी। हाथन लिये पूजन की थारी ॥ १ ॥ ताकी मुख्य सहचरी राई। खेलन कों बहुत सुघराई ॥ छन्द—चली वन-बन विहसि सुन्दरी हार कङ्कन जगमगे। आय मन्दिर पूज देवी भोग सिखरन सगमगे ॥ ता समय प्रभु आप पधारे कोटि मन्मथ मोहिहीं। निरखि सखियन कमलमुख मानों निधन धन ज्यों सोहहीं ॥ खेल को आरम्भ कीनो राधा-माधो बिच किये ॥ वाकी परछांई परी तव 'रसिक' चरनन चित दिये ॥ २॥ ❀२४५❀ राग विलावल ❀ सातमो विलास कियो स्यामाजू गहवरवन में मतो जु कीन। ताकी मुख्य कृष्णावती सहचरी लघु लाघव में अतिहि प्रवीन ॥ १ ॥ बनदेवी है गुञ्जा-कुंजा पहोपन गुही सुमाल। चंद्रावली प्रमुदित विहसत मुख ज्यों मुनिया लाल ॥ २ ॥ रच्यो खेल देवी ढिंग युवती कोक कला मनोज। अति आवेस भये अवलोकत प्रगटे मदन सरोज ॥ ३ ॥ कोऊ भुज धरि कर चरन कोऊ अङ्गो-अङ्ग मिलाय। कुंवर किसोर किसोरी रसिकमनि 'दासरसिक' दुलराय ॥ ४ ॥ ❀ २४६ ❀ राग विलावल ❀ आठमो विलास कियो स्यामाजू सांतनकुण्ड प्रवेस। उनकी मुख्य भामा सारंगी खेलत जनित आवेस ॥ १ ॥ सूरज

मंदिर पूजन करि मेवा सामग्री भोग धरी। आनंद भरी चली व्रज-ललना क्रीडन वन कों उमगि भरी ॥२॥ भद्रवन गमन कियो वनदेवी पूजन चन्दन बन्दन लीने। भोग स्वच्छ फेनी ऐनी सब अम्बर अभरन चीने ॥ ३ ॥ गावत आवत भावत चितवत नन्दलाल के रस माती। कृष्णकला सुन्दर मंदिर में युवती भई सुहाती ॥ ४ ॥ देखि स्वरूप ठगी ललना ते चकचोंधी सी लाई। अचवत दृग न अघात 'दास रसिक' बिहारिन राई ॥ ५ ॥
❀२४७❀ राग बिलावल ❀ नोमो विलास कियो जु लडैती नवधाभक्त बुलाये। अप अपने सिंगार सबै सजि बहु उपहार लिबाये ॥ १ ॥ सब स्यामा जुर चलीं रंगभीनी ज्यों करिनी घनघोरे। ज्यों सरिता जलकूल छांडि के उठत प्रवाह हिलोरे ॥ २ ॥ बंसीवट संकेत सघनवन काम-कला दरसाये। मोहन मूरति बेनु मुकुटमनि कुण्डल तिमिर नसाये ॥ ३ ॥ काछिनी कटि तट पीत पिछोरी पग नूपुर झनकार करे। कङ्कन वलय हार मनि मुक्ता तीन ग्राम स्वर भेद भरे ॥ ४ ॥ सब सखियन अवलोकि स्याम छबि अपनो सर्वसु वारे। कुञ्ज द्वार बैठे पिय-प्यारी अद्भुत रूप निहारे ॥ ५ ॥ पूवा खोवा मिठाई मेवा नवधा भोजन आने। तहां सत्कार कियो पुरुषोत्तम अपनो जन्म-फल माने ॥ ६ ॥ भोग सराय अचवाय वीरा धर नीरांजन उतारे। ज़य-जय सब्द होत तिहुंपुर में गुरुजन लाज निवारे ॥ ७ ॥ सघन कुञ्ज रस-पुञ्ज अलिगुञ्जत कुसुमन सेज सँवारे। रति-रन सुभट जुटे पियप्यारी कामवेदना टारे ॥ ८ ॥ नवरस रास विलास हुलास ब्रजयुवतिन मिल कीने। श्रीवल्लभ चरन कमल कृपा ते 'रसिकदास' रस पीने ॥ ९ ॥ ❀ २४८ ❀
❀ राजभोग दर्शन में ❀ राग सारंग ❀ बलिहारी रास विहारिन की। मरकत मनि कञ्चन-मनि-माला ग्रथन नन्दकुमार की ॥ १ ॥ सारंग राग अलापत गावत बिच मिलवतयति ताल की। नाचत गावत वेन वजावत लेत उदार उगाल की ॥ २ ॥ यमुना सरस मल्लिका मुकुलित त्रिविध समीर सुढ़ार की।

'कृष्णदास' वलि गिरधर नव रंग सुरतनाथ सुकुमार की ॥३॥ ❀२४९❀ ❀ राग सारंग ❀ नाचत रासमे लालविहारी नचवत है ब्रज की सव नारी। ताथेई ताथेई ततता थेई थेई थुंगनि थुंगनि तट कत तारी ॥ १ ॥ श्रीराधा एक तरजत मिलवत लेत अलाप सप्त स्वर भारी । 'कृष्णदास' नटनाव्य रसिक वर कुसल केलि श्रीगोवर्धनधारी ॥२॥ ❀ २५० ❀ भोग के दर्शन ❀ ❀ राग नट ❀ नागरी नटनारायन गायो । तान मान वंधान सप्त-स्वर रागसों राग मिलायो ॥ १ ॥ चरन घूंघरू जंत्र भुजन पर नीको झनक जमायो । ततथेइ ततथेइ लेत गति में गति पति ब्रजराज रिझायो ॥२॥ सकल त्रियन मे सहज चातुरी अंग सुधंग दिखायो । 'व्यास' स्वामिनी धनि-धनि राधा रास में रंग जमायो ॥३॥ ❀ २५१ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ गोपवधू मंडल मधि नायक गोपाललाल रुचिरानन बिंबाधर मुरलिका धरे । अद्‌भुत नटवर विचित्र वेस टेक अति सुदेस कनक कपिस काछ सिखी सिखंड सिखरे ॥ १ ॥ कुकुझां झनकत थुंग थुंग थुंग तकिट धिकिट धिधिकिटि ततथेइ उघटत रास रस भरे । जय जय गिरिराजधरन कोटि मदन मूरति पर 'हरिजीवन' बलिबलि ब्रजपुरंदरे॥३॥❀२५२❀ सेन के दर्शन ❀ राग ईमन ❀ गिड्‌गिड् थुंग थुंग तकिट थुंगन एक चरन कर सों भले भले हो मृदंग बजावे । दूसरे कर चरन सों कठताल झंझंझं झपताल में अवघर गति उपजावे ॥ १ ॥ कंठ सरस सुरहि गावे मोहन मधुर तान लावे सकल कला पूरन वृषभाननंदिनी पिय मन भावे । 'गोविन्द' प्रभु पिय रीझि रहे मुसिकाइ अधरदसन धरिके रहसि उरसि लपटावे ॥ २ ॥ ❀ २५३ ❀ मान पोढवे में राग केदारा ❀ राधिका आज आनंद मे डोले । सांवरे चंद गोविन्द के रस-भरी दूसरी कोकिला मधुर सुर बोले ॥ १ ॥ पहरि तन नीलपट कनक हारा-वली हाथ ले आरसी रूप कों तोले । कहे 'श्रीभट' ब्रजनारि नागरी बनी कृष्ण के सील की ग्रंथिका खोले ॥ २ ॥ ❀ २५४ ❀ राग विहाग ❀ दोऊ मिलि

करत भांवते बतियाँ। मदनगोपाल कुंवरि राधे के नखमनि अंक लिखत उर छतियाँ ॥ १ ॥ तेसिय छिटकि रहीं उजियारी पून्यों चंद सरद की रतियां। केलिरूपिनी यमुना 'श्रीभट' वृन्दावन फूल्यो वहु भांतियां ॥२॥ ❀ २५५ ❀

जा दिन शस्त्र धरे तब भोग के दर्शन में एक दिन

❀ राग मारू ❀ वालिनंदन बली विकट वनचर महाद्वार रघुवीर को वीर आयो। पोरिते दोरि दरवान दससीसते जाय सिर नाय यों कहि सुनायो ॥ १ ॥ सुन श्रवन दसवदन सदन अभिमान को नैन की सैन अंगद बुलायो। विविध आयुध धरे सुभट साजे सबे छत्र की छांह निर्भय जनायो ॥ २ ॥ तब देखि हरिवेस लंकेस हरहरहंस्यो सुनहु सुभट कटक को पार पायो। देव दानव महाराज रावण सभा कहन कों मंत्र तहां कपि पठायो ॥३॥ अरे रंक रावण कहा तंक तेरो इतो दुहूकर जोर विनती वितारों। अभिराम रघुवीर के रोम-पर वीस भुज सीस दस वारि डारों ॥ ४ ॥ झटक हाटक मुकुट पटक पट भूमि सों झार तरवार तुव सिर संहारों। जानकीनाथ के हाथ तेरो मरन कहा मतिमंद तोहि बीच मारों ॥ ५ ॥ पाक पावक करे वारि सुरपति भरे पवन पावन करे द्वार मेरे। गान नारद व्योस वार सुरगुरु कहे वेद ब्रह्मा पढे पोर टेरे ॥ ६ ॥ यक्ष वासुकी प्रभृति नाग गन गंधर्व मुनि विस्व सब जीत मैं किये चेरे। अरे सुनि सठ दसकंधकों कोन भय राम तपसी अपने डेरे ॥ ७ ॥ अरे तपवली सत्यतापेस्वरी तप विना वारि पर कोन पाषान तारे। कोन एसो सुभट जगत जननी जन्यो एक ही वान तकि बालि मारे ॥ ८ ॥ परमगंभीर रघुवीर दसरथतनय सरन गये कोटि अवगुन विसारे। जाहि मिल अंध दसकंध गहि तृन दंत तो भले मृत्यु मुख ते उवारे ॥९॥ कोपि तरवारे गहि काल लंकाधिपति मूढ रिपु राम कों सीस नाऊं। संभुकी सपथ सव कुपथ कायर कृपन स्वास आकास वनचर उडाऊं ॥१०॥ परहिं भहिराय भभकंत रिपु धाइ सो करि कदन रुधिर भैरो अघाऊं। सुभट

राजे सबै देव दुंदुभी अभै एकते एक रन करि दिखाऊं ॥ ११ ॥ जव चढो रावन सुन्यो सीस तव सिव धुन्यो उमंगि रन रंग रघुवीर आयो । रामसर लागि मनो अगिनी गिरि परजली छांडि छिनु सीस नभ भानु छायो ॥१२॥ रुंड भुकरुंड धुक धरहीं परत धरनि पर रुधिर सरिता समर पारपायो । मारि दसकंध नृप वंधु किय 'सूर' प्रभु राजीवलोचन गहि सीय लायो ॥१३॥❀२५❀

❀ संध्या समय ❀ राग मारू ❀ वनचर कौन देस ते आयो । कहां है राम कहां है लछमन कहां ते मुद्रिका लायो ॥१॥ हों हनुमान रामजू को सेवक तुम सुधि लेन पठायो । रावण मारि ले जाऊं तुमकों राम आज्ञा नहिं पायो ॥ तुम जिनि जिय डरपो मेरी माता जोर राम दल धायो । 'सूरदास' रावण कुल खोयो सोवत सिंह जगायो ॥३॥ ❀ २५७ ❀ दूसरे दिन ❀

❀ राग मारू ❀ अरे बालि के बाल एतो बोलि जिनि रामवल कौन मोते वली जगत मांही । कोप करि कीस सों कहत दससीस यों जीवत यहाँ ते गयो चाहत नाहीं ॥१॥ विधिनेजु मोहि वर दियो सिव सुबस मैं कियो बिष्णु मोते डरत कहुँ लुकानो । इन्द्र नित पद पांय परत मीच थरथर करत और को रंक ताहि दृष्टि आनो ॥२॥ अरे मति हीन अति दीन राकस अधम राम अभिरामतें मनुष जाने । दुष्ट खल दवदहन विप्रन दण्डवत करन प्रगट सोइ देव ताहि वेद गाने ॥३॥ हस्यो हहराय घहराय घनबीज लों भली करी वंदर तें कहि जनायो । जान कहा देहुँ अब भखु तो सहित सब गुप्त वैरी सो मैं प्रगट पायो ॥४॥ कितकु वकवाद विन काज नहिं लाज तोहि सूर मन क्रूर तू निकट भूल्यो । जौंलों निरखे नहीं सिंह रघुबीर क्रूर कूकरा लों कुटी मांहि फूल्यो ॥५॥ क्यों धकत व्याध सुनि वचन पुनि परजल्यो जल मिल्यो तेल जैसे अग्नि नायो । जाहुरे जाहु कपि अति बचन ललपि तोहि कहा हनो तू दूत आयो ॥ ६ ॥ कितोक वल तोहिं तू हन सके मोहि सठ जिन न रघुनाथ कों सीस नायो । अरे मत मंद लोचन असीत तुव बाघ को वाल

कहूँ स्याल खायो ॥७॥ सेस ऊपर करौं सुरलोक तरहरौं जो नेक निज भुजाबल संभारों। गूलर सो फोरि ब्रह्मांड डारों कहां तोसे कपि फुनग कों कहा भारों ॥ ८ ॥ 'नंद' रघुचंद वर विहंसि अंगद कह्यो सुनहु मतिमंद परतिया हारी। करले बकवाद घरी पहर पातक मूल सूल पर चोर जैसे देत गारी ॥ ९ ॥ ❀ २५८ ❀

दशहरा अन्नकूट की बधाई (आश्विन सुदी १०)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ प्यारी भुज ग्रीवा मेलि नृत्यत पिय सुजान । मुदित परस्पर लेत गति में गति गुनरास राधे गिरिधरन गुननिधान ॥ १ ॥ सरस मुरलीधुन मिले मधुर सुर रासरंग भीने गावे अवघर तान बंधान। 'चत्रुभुज' प्रभु स्यामास्याम की नटनि देखि मोहे खग मृग वन थकित व्योम विमान ॥ २ ॥ ❀ २५९ ❀ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ उलटो झगा उलटी है सूथन कहत बन्यो नीकोरी मैया। पांय पनैया नंदबाबा की सीस पाग पहली बांध बूझत बलि मो मे को सुंदर है भैया ॥ १ ॥ कटि फेटा और बडी कटारी थकि ढरकि ठोडी तर आय कहूं लपटानो घैया । 'कृष्णजीवन' हरि प्रभु कल्यान की ये छबि निरखत नंदजसोदा भये फिरत गाडी कैसे पैया ॥२॥❀२६०❀ग्वाल बोले❀राग बिलावल ❀गोकुल को कुलदेवता प्यारोगिरिधरलाल। कमलनैन घन सांवरो वपु बाहुविसाल ॥१॥ बेगकरोमेरेकहे पकवान रसाल। वलि मघवा बल लेत है करकर घृतगाल ॥२॥ इनके दिये बाढी है गैया बछ बाल। संगमिलि भोजन करत है जैसे पसुपाल ॥३॥ गिरि गोवर्धन सेविये जीवन गोपाल। 'सूर' सदा डरपत रहे जाते यम काल ॥४॥ ❀२६१❀ ❀ राग बिलावल ❀ नंदादिक ब्रज मिल बैठे है कछू करत है मन्त्र विचार। इन्द्र महोत्सव को दिन आयो मंगवाये नाना उपहार ॥१॥ स्याम सुन्दर हंसि यों जु कहत है तुम काहि भजत हो तात। कोन यज्ञ यह कौन देवता मोसों कहो किन बात ॥२॥ बरस बरस प्रति नेम सों हम देत सक्र वलिदान।

धन बरसे गौ तृन चरे उपजे अधिक धन धान ॥ ३ ॥ श्रीपति श्रीमुख योंजु कहत है व्रजबासिन की औरे रीति । मघवा को जु कहा है जो तुम ताहि डरत भयभीति ॥ ४ ॥ कर्म धर्म है श्रीपुरुषोत्तम गोवर्धनगिरिराज। सुरभी वत्स सब तृनचरे इन ग्वालन के हित काज ॥ ५ ॥ तुम जो कछू कह्यो हो हम सों सब गोकुल तुमारे संग । हम पूजाविधि जानत नाहीं और सकल सुख अंग ॥ ६ ॥ तुम पूजो परवत कों प्रेम सों अरपो सबामेलि ग्वाल । रूप धरे बलि खायगो वपु सुंदर बाहु विसाल ॥ ७ ॥ खटरस भोग साकपाकादिक पूवा पायस पकवान । मांग मांग अनुसान कियो चढि गोत्रसिखर भगवान ॥ ८ ॥ सुरपति भजते जन्म गयो है हम कबहू नहिं देख्यो रूप । तात्काल फल सिद्ध भयो हम पायो इष्ट अनूप ॥ ९ ॥ सक्र सहस्र मुख बिलख्यो बहुत कलान कर काछ । 'विष्णुदास' प्रभु सों हट कियो अर्पी न अंजली छाछ ॥ १० ॥ ❀ २६२ ❀ राग विलावल ❀ सात वरस को सांवरो बोले तुतरात । हंसिहंसि कान्ह कहे सुनो मेरी एक बात ॥ १ ॥ इन्द्र न पूजा कीजिये पूजो गिरि तात । तुम देखत भोजन करे पकवान और भात ॥ २ ॥ यह मतो निरधारि के गोप गृहकों जात । मृदुबानी गिरिधरन की सुनि 'सूर' सिहात ॥ ३ ॥ ❀ २६३ ❀ राग बिलावल ❀ बार-बार हरि सिखवन लागे बोलत अमृत बानी । सुन हो एक उपदेस हमारो चार पदारथ दानी ॥ १ ॥ मेरो कह्यो बेग अब कीजे दूधभात घृत सानी । गोवर्धन की पूजा कीजे गोधन के सुखदानी ॥ २ ॥ यह परतीत नंदजूकों आइ कान कही सोइ मानी । 'परमानंद' इन्द्र मान भंग कर झूटो कीनो पानी ॥ ३ ॥ ❀ २६४ ❀ राजभोग आये ❀ राग विलावल ❀ गोद बैठ गोपाल कहत व्रजराज सों । अहो तात एक बात श्रवन दे सुनो जु मेरी । भवन मांझ हो गयो धरी जहां सोंज घनेरी ॥ मैं हंसि माग्यो माय पे भोजन देरीमोय । कर लकुटी ले यों कह्यो हो यह क्यों देहों तोय ॥१॥ क्षुधित जानके नेक रोहिनी

निकट बुलायो। दूध प्याय चुचकार सीख दे कंठ लगायो॥ यह बलि भुक्ते देवता कह्यो हरे लगि कान। ताते रचिपचि करत है हो साक-पाक पकवान॥२॥ यह निश्चय करि कहो कौन सो देव तुम्हारो। जो इतनी बलि खाय काज कहा करे हमारो॥ कहा देव को नाम है कौन लोक को नाथ। इकलो ही भोजन करे या ले अपनो गन साथ॥३॥ सुनो स्याम चितलाय देव की कहूं कहानी। आगम निगम पुरान कहे ऋषिवर मुनि ज्ञानी॥ सब सुख-निधि सुरलोक है कहियत ताको ईस। सेवत हैं सब देवता हो जाहि कोटि तेतीस॥४॥ जाके अनुचर मेघ बरसि जल धरनी पोखैं। अन्नादिक फल-फूल निपज प्रजा संतोखैं॥ बहु तृन उपजे पसुन कों भरे सरोवर तोय। देव दिवारी पूजिये तो सब ब्रज अति सुख होय॥५॥ एक बात हों कहों बाबा जो साँची मानों। ऐसे अनुचर कोटि-कोटि कहि कहा बखानों। अश्वमेध सत ते लहे इन्द्रासन को भोग। ब्रजरज कन पावे नहीं हो कोटि यज्ञ तप योग॥६॥ सो प्रभु अबही चलो तुमे हों निकट बताऊँ। मन भावे तब वोलि आपने संग खिलाऊँ॥ गोवर्धन की तरेटी हम बच्छ चरावन जांय। अखिल लोक के नाथ सों हो छाक बांटि हम खाँय॥७॥ ब्रह्मा सिव मुनि रटे तनक पावैं न बसेरो। काटे विघ्न अनेक सदा ब्रज बासिन केरो॥ वेद उपनिषद मे कह्यो सो गोवर्धनराय। बडरे बैठ विचार मतो करि गोवर्धन पूजो आय॥८॥ भये नन्द मन मुदित बड़े सब गोप बुलाये। कान्ह कहे सोइ करो भये सबहिन मन भाये॥ सकट पूतना आदि दे डारे विघ्न नसाय। गिरि प्रताप चिरकाल ते हो थिर ब्रजवास बसाय॥९॥ हरखि नन्द उपनंद सकल ब्रज दई दुहाई। सुरपति पूजा मेटि राज गोवर्धन राई॥ आदि लोक बैंकुण्ठ लों ब्रज पर पूरन सोय। ब्रजवासिन हित कारने हो आये हरि गिरि होय॥१०॥ सुनि ब्रजवासी सकल हरखि मन करी बधाई। कहा करेगो इन्द्र हमारे कृष्ण सहाई॥ गोपी

गोसुत गाय ले और बालक संग लाय। गोप चले उत्साह सों हो पूजन कों गिरिराय ॥ ११ ॥ अगनित सकट जुराय साज पूजा की साजे। कान परी नहिं सुने चहूंधा बाजत बाजे ॥ ब्रज-नारिन के यूथ सों चली यसोदा माय। गोधन गाय मल्हावहीं हो उर आनंद न समाय ॥ १२ ॥ चले नंद उपनंद आदि ब्रजनंद अगाऊ। करत परस्पर ख्याल चले मोहन बलदाऊ॥ वृद्ध तरुन बारे सबै ब्रज घर रह्यो न कोय। अपनो कुलपति पूजिये हो महा महोत्सव होय ॥ १३ ॥ दीनो दरसन सैल दूर ते सीस नवायो। निकट आय परनाम करत अघ दूर नसायो ॥ दीप-दान दे नन्दजू रजनी-मुख चहुंओर। गायन कान जगाय के हो बूझत नन्दकिसोर ॥ १४ ॥ आज कुहूकी राति चलो परिक्रमा कीजे। गिरि सन्मुख निस जागि भोर बलि पूजा दीजे ॥ चले हरखि गिरिराज कों सबै दाहिनो देहि। गोवर्धन गोपाल की हो सब गोप बलैया लेहि ॥ १५ ॥ मधि-अधिदैविक रत्न खचित गिरिराज बिराजे। दीपमालिका चहुंओर अद्भुत छबि छाजे ॥ सकल निसा आनन्द में रजनी गई विहाय। विधिवत पूजा कीजिये हो बलि उपहार मंगाय ॥ १६ ॥ गावत गीत पुनीत सकल ब्रजनारी सुहाये। अगनित बाजे विविध अखिल ब्रजराज बजाये ॥ गिरिवर प्रथम न्हवावहीं मानसीगङ्गा नीर। अगनित कलसा हेम के लै नावत धौरी क्षीर ॥ १७ ॥ पुनि चंदन उबटाय स्वच्छ जल गिरिहिं न्हवाये। अरगजा कुंकुम पहोंप चरचि पट पीत उढ़ाये ॥ धूप दीप बहु विधि कियो कुंडवारो धरि भोग। सुख समुद्र लहरनि बढ्यो हो इन ब्रजवासिन योग ॥ १८ ॥ पूजा को परसाद देत ग्वालन मन भाये। माथे टोरा बांधि पीठ थापे सरसाये। नंद-राय आज्ञा दई आंन खिलाओ गाय। कान्ह तोक सों यों कह्यो हो धौरी पहिले खिलाय ॥ १९ ॥ कान्ह गहे पटपीत आन जब बोली धौरी। हूंकत लहैंडे पेलि-बच्छ के सन्मुख दौरी ॥ छुवत बच्छ अकुलाय के डाढ़ मेलि

समुहाय । भली भली खेली कहै सब गोप स्याम की गाय ॥ २० ॥ खेली धूमर गांग बुलाई काजर कारी । औरै अनगित झुण्ड सकल गोपन की न्यारी ॥ सुखपयोधि लहरिन बढ्यो रह्यो सकल ब्रज छाय । अन्नकूट विधि-वत रच्यो नाना पाक बनाय ॥ २१ ॥ बहु विधि व्यंजन मधुर चरपरे खाटे खारे । बेसन के को गिने केइ सुकवनि के न्यारे ॥ तिन मधि पूरयो प्रेम सों नव ओदन को कोट । मध्य चक्र चित्रित धरयो हो गिरि ओदन की ओट ॥२२॥ बहुत भांति पकवान नाम ले कोन बखाने । गिनत न आवे पार परम रुचि धरे संधाने । बासोंधी मिसरी सनी मिलि मृगमद घनसार ॥ नाना-विधि मेवान के हो गिनत न आवे पार ॥२३॥ दधि सिखरन संयाव सेमई पायस प्यारी । बड़ा मगोडी बडी तिलबडी रोचक न्यारी ॥पापर अति कोमल धरे घृत नवनीत मंगाय । औट्यो दूध सद्य धौरी को मिसरी पनो छनाय ॥ २४ ॥ तुलसीदल दे नन्द पहोंप माला पहरावे । सौरभ चन्दन पीत सजल संखोदक नावे ॥ दुहुं कर जोरे दीन ह्वै ध्यान धरत ब्रजराज । प्रत्यच्छ ह्वै भोजन करै हो रूप धरे गिरिराज ॥२५॥ कहत गोप समझाय रूप गिरिराज निहारो । जाके एसो पूत सुफल ब्रजबास तिहारो ॥ मोर पखौवा सिर धरे उर राजत वनमाल । सब देखत भोजन करे हो मानों श्री गोपाल ॥ २६ ॥ यथा-सक्ति फल-पत्र-पाक ब्रजवासी लाये । प्रेम-भक्ति प्रतिपाल परम रुचि सों वे खाये । काहू अति संकोच ते सजि धरि राख्यो गेह । मांगि-मांगि सब पे लियो हो प्रगट जनायो नेह ॥२७॥ सीतल परम सुवास सुखद यमुनोदक लीनो । रह्यो जो सेष प्रसाद बांटि ब्रज-वासिन दीनों ॥ बीरी देत समार के आपुन नंदकुमार । आरोगत ब्रजराज सांवरो ब्रजजन लेत उगार ॥ २८ ॥ महा महोत्सव मान लियो गिरिराज हमारो । ब्रज-वासिन सिर छत्र सदा गोधन रखवारो । ब्रजरानी करि आरतो लागत गिरि के पांय । पटभूषन नोछावरि करि के ग्वालन देत बुलाय ॥ २९ ॥

नंदादिक ब्रज गोप सबै जुरि सन्मुख आये। नयन पानि और ग्रीव सीस गिरिचरन छुवाये। राम कृष्ण के सीस पे देव पानि परसाय। आज्ञा ले घरकों चले हो पद वंदन करवाय ॥३०॥ इन्द्र उठ्यो अकुलाय आज क्यों होत अवेरो। और बेर ब्रज जाइ लेहुँ बलि भोग सवेरो। ब्रज बलि की सुधि लेन कों दीने दूत पठाय। महा महोत्सव देख के कह्यो इंद्र सों जाय ॥३१॥ कोपि इन्द्र घन जोरि सबैं ब्रजलोक पठाये। चहुँओर ते घेर घेर ब्रज बोरन आये। मूसलधार बरसन लग्यो ब्रज कांप्यो अकुलाय। कह्यो सबन ब्रजराज सों हा अब को होय सहाय ॥३२॥ व्याकुल लखि ब्रजवासि कान्ह गोवर्धन धार्यो। वामपानि अंगुरीन एक नख अग्र उद्धार्यो। गोप लकुटिया ले रहे टेकी चहुँधा आय। कोमल कर अतिभार ते हो मति इत उत डिगि जाय ॥३३॥ ले कटि ते कर बेनु धरयो अधरन गिरिधारी। सप्त रंध्र स्वर पूर घोर ऊँची दे भारी। परवत दियो उद्धारि के स्वर पे रह्यो ठहराय। गोपन को बल देखि के फिरि गिरि थाम्यो आय ॥३४॥ सात द्योस निस परी प्रबल अति जलकी धारे। गिरि की छाया सकल गोप गोधन तृन चारे। बूंद न काहू परस ही यह सुनि अतुल प्रताप। परमपुरुष वह जानि के इन्द्र बढ्यो संताप ॥३५॥ ले सुरभी ब्रज आय पांय हरि के सिर नायो। तुम देवन के देव कियो अपनो मैं पायो। अबलों मैं जान्यो नहीं ब्रज वृन्दावन रूप। कृपादृष्टि सों देखिये हो अखिल लोक के भूप ॥३६॥ गिरिधर धरनी कान्ह पानि सुरपति सिर धारयो। धेनुक्षीर अभिषेक मान अपराध निवारयो। स्वर्ग लोक को राज दे करसों थापी पीठ। अब ते यह ब्रत राखियो हो ब्रज पर अमृत दीठ ॥३७॥ इन्द्र पठायो गेह आप ब्रज माया फेरी। देव विमानन आय, बरखि कुसुमन की ढेरी। सब कोऊ गोविन्द को श्रीमुख निरखत आय। देत दान बहु नंदजू हो उर आनंद न समाय ॥३८॥ धाय यसोमति माय लाल कों कंठ लगावे। वारि वारि जलपिवे

चूमकरि नैन छुवावे । सात बरस को सांवरो सात द्योस इक हाथ । गिरिधारयो बल देव के हो सो प्रभु वैकुण्ठनाथ ॥३६॥ सब ब्रजवासी लोग कहत ब्रजराज दुहाई । जय जय सब्द उचार हमारो देव कन्हाई । दे असीस घर कों चले ग्वालगोप ब्रजनारि । 'ब्रजजन' गिरिधर रूप पे हो डारयो सर्वसु वारि॥४०॥ ❀२६५❀राजभोग दर्शन ❀राग सारग❀ गोधन पूजो गोधन गावो । गोधन सेवक संतत हम गोधन ही कों माथो नावो ॥१॥ गोधन मात पिता गुरु गोधन गोधन देव जाहि नित ध्यावे । गोधन कामधेनु कल्पतरु गोधन पे मांगे सोइ पावे ॥२॥ गोधन खिरक खोर गिरि गहवर रखवारो घर बन जहां छावे ।'परमानंद' भावतो गोधन गोधन कों हम हू पुनि भावे ॥३॥❀२६६❀ भोग के दर्शन ❀जवारा धरे तब ❀ राग नट ❀ आज दशहरा सुभ दिन नीको । गिरिधरलाल जवारे वांधत बन्यो है भाल कुमकुम को टीको ॥१॥ आरती करत देत नोछावरि चिर जीयो भावतो जीको । 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सुख त्रिभुवन को लागत फीको ॥२॥ ❀ २६७ ❀संध्या भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ सीतापति सेवक तोहि देखन कों आयो । काके बल क्रोध ते रघुनाथ पठायो ॥१॥ जेते तुव सुभट सुर निकरसे रन लेखों । तेरे दसकंध अंध प्रानन विन देखों ॥२॥ नखसिखलों मीनजाल जारों अङ्ग-अङ्ग । अजहू नहिं संक करत बांदर मति पंग ॥३॥ जोइ जोइ सोइ सोइ कहत परम पावन जान्यो । जैसे नर सन्निपात हीनवुध वखान्यो ॥४॥ काहे तन भसम लाय भांड़ भेख करतो । वन पयान न करि जो लछमन घर हो तो ॥५॥ पाछे ते सीता हरी वँधी मरजाद न राखी । जोपे दसकंध अंध रेखा किन नाखी ॥६॥ अजहुँ ले जाहुँ सिय बीस भुज मानो रघुपति यह पेज करी भूतल धरि पान्यो ॥७॥ मैं ब्रह्मवान करि वल करि नहिं वांध्यो । कैसे प्रताप टरे रघुपति आराध्यो ॥८॥ देखत कपि वाहु दण्ड तन प्रसेद छूट्यो । जयजय रघुनाथ कहत सहज दोष छूट्यो ॥६॥ देखत दल दूर करयो मेघनाद गारयो । आपुन भयो

'सूर' सकुच बंधन ते टारयो ॥१०॥ ❀ २६८ ॥ राग मारू ❀ कपि चल्यो सिय संबोधि के पुनि पायन तन लटकि के। रिपुको कटक विकट ताको चोथो अंस पटकि के ॥१॥ रथ सों रथ भटन सों भट चटपटीसी चटकि के। जारि के गढ़ लंक विकट रावन मुकुट झटकि के ॥२॥ कितेक छेल तंदुल से छरे लेले मूसल मटकि के। गिरि सों गज गेंदसी गहि डारयो भूमि पटकि के ॥३॥ सुरपुर आनन्द उमगि उरसों आंट अटकि के। 'नंददास' वहुरयो नटज्यों उलटि काछो समुद्र सटकि के ॥४॥ ❀२६९ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग मारू ❀ जब कूदयो हनुमान उदधि जानकी सुधि लेन कों। देखन दस माथ अपने नाथ कों सुख देन कों ॥१॥ जा गिरि पर दई कुलांट उछल्यो निकाई। सो गिरि दसजोजन धसि गयो धरनि मांहि ॥२॥ धरनी धसि गई पाताल भार परे जाग्यो। सेस हू को सीस जाय कमठ पीठ लाग्यो ॥३॥ अरुन नैन स्वेत दसन वड़ो पीन गात। उत्तर ते दच्छिन लों मानों मेरु उड्यो जात ॥४॥ जा प्रभु को नाम लेत भवजल तरिजात। सतजोजन सिंधु कूदयो तो केतीइक वात ॥५॥ रामचन्द्र पद प्रताप जगत मे जसु जाको। 'नंददास' सुर नर मुनि कौतिक भूल्यो ताको ॥६॥ ❀ २७० ❀ सेनभोग आये ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ दूसरे कर वान न लेहों। सुनि सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहि वान असुर सब हैहों ॥१॥ सिव पूजा वहुभांति करत है सोइ पूजा परतच्छ दिखै हों। दंत विडार पापफल वर्जित सिव माला कुल सहित चढ़ै हों ॥२॥ करि हों नहीं विलंव कछु अव जो रावन रन सन्मुख पै हों। जैसे अगिन परी उडि तूल में जारि सकल जम पास पठै हों ॥३॥ रवि अरु ससि दोऊ है साखी लंक विभीछन तुमको देहों। सीता सहित समीत'सूर'प्रभु यह व्रत साधि अयोध्या जैहो ॥४॥ ❀ २७१ ❀ राग कान्हरा ❀ जिनि मंदोदरी वरजे हो रानी। पूरव कथा कहा तू जाने मोहि राम विपरीत कहानी ॥१॥ अरी अज्ञान मूढ़ मति वौरी जनकसुता ते त्रिया करि जानी। मोहि गवन करिवो सिवपुर

कों कोन काज अपने में आनी ॥ २ ॥ यह सीता निर्भे वह पदपथ सोखे सात समुद्र को पानी। 'सूरदास' प्रभु रामचन्द्र बिन को तारे रावन अभिमानी ॥ ३ ॥ ❀ २७२ ❀ राग कानरा ❀ तब हों नगर अयोध्या जैहों। एक बात सुन निश्चय मेरी रावन-राज्य बिभीषन दैहों ॥ १ ॥ कपिदल जोरि और सब सेना सागर सेतु बंधे हों। काटि दसों सिर वीस भुजा तब दसरथ-सुत जु कहे हों ॥ २ ॥ छन इक मांहि लंकगढ तोरों कंचन-कोट ढहे हों। 'सूरदास' प्रभु कहत विभीषन रिपु हति सीता लैहों ॥ ३ ॥ ❀ २७३ ❀ राग कानरा ❀ सो दिन त्रिजटी कहि कब व्है है। जा दिन चरनकमल रघुपति के हरषि जानकी हृदय लगै है ॥ १ ॥ कबहुंक लछमन पाइ सुमित्रा माय माय कहि मोहिं सुनै है। कबहुंक कृपावंत कौसल्या वधू-बधू कहि मोहि बुलै है ॥ २ ॥ जा दिन राम रावनहिं मारे ईसहिं दे दससीस चढै है। ता दिन जन्म सफल करि जानों मो हिरदे की कालिम जै है ॥ ४ ॥ जा दिन कंचन–पुर प्रभु ऐहै विमल ध्वजा रथ पे फहरै है। ता दिन 'सूर' राम पर सीता सरवसु वारि बधाई दैहै ॥ ४ ॥ ❀ २७४ ❀ ❀ सेन के दर्शन ❀ राग केदारा ❀ आज रघुपति चढे लंकगढ लेन कों। अवनि चंचल भई सेस सुधि बुधि गई कमठ की पीठ कटि मिल गई ऐनकों ॥१॥ कहत मंदोदरी सुनहु दसकंध पिय जेइ मिलो श्रीय राजीवदलनैन कों। होत अंदोल सागर सप्तक द्वीप दिग्पाल भै भीत उठि चले गैन कों ॥ २ ॥ प्रगट जगदीस लंकेस को वल कहा एक वनचर आय जारि गयो ऐन कों। 'हरिनारायन श्यामदास' के प्रभु सों वैर करि कंत पावे न सुख चैनकों ॥३॥ ❀ २७५ ❀ राग केदारा ❀ जयति जयति श्रीहरिदासवर्य धरने। वारिवृष्टि-निवार घोष--आरति टार देवपति-अभिमान भंग करने ॥ १ ॥ जयति पट पीत दामिनि रुचिर वर मृदुल अंग स्यामल सजल जलद वरने। कर अधर वेनु धर गान कलरव सब्द सहज व्रज-युवति जन चित्त हरने ॥ २ ॥ जयति

वृंदाविपिन भूमि डोलन अखिल लोक वंदन अंबुज असित चरने। तरनि-तनया विहार नंदगोप कुमार कहत 'कुंभनदास' स्वामि सरने ॥३॥ ❀ २७६ ❀ ❀ मान पोढवे में ❀ राग केदारा ❀ बेग चलि साजि दल चतुर चंद्रावली। कसब कंचुकी बंद राखि आनन्दकन्द नंदनंदनकुंवर मिलन को दावरी ॥ १ ॥ नैन पंकज लोल मधुर मोहन बोल राजत भौंह कपोल उदधि को भावरी। चंद्रावली करत केलि मानो मन्मथ पेलि सुरत सागर झेल सहज चढि रावरी ॥ २ ॥ चले गयंद गति नूपुर किंकिनी बजति देख गजवर लजित चलन को भावरी।'दास मुरारी' प्रभु कर कमल मेलि उर जीत गिरि-धरन अब प्रेम लडबावरी ॥ ३ ॥ ❀ २७७ ❀ राग विहाग ❀ चांपत चरन मोहनलाल। पलका पोढी कुंवरि राधे सुंदरी नव बाल ॥ १ ॥ कबहु कर गहि नयन मिलवत कबहु छुवावत भाल। 'नंददास' प्रभु छबी निहारत प्रीति के प्रतिपाल ॥ २ ॥ ❀ २७८ ❀

जा दिन सूं शस्त्र धरे वा दिनसूं मान मे ये कीर्तन होय

❀ राग केदारा ❀ मानगढ क्यों हू न टूटत, अबला के बल को प्रताप। आपुन ढोवा चढि गिरिधर पिय अबला तू चिला चाप मुक्त कटाक्ष घूंघट दरवाजो नहीं खूटत ॥ १ ॥ विविध प्रनत हथनाल गोला चले जू उछट परत काम-कोट नहीं फूटत। 'गोविन्द' प्रभु साम दाम भेद दंड करि घेरा परयो चहुंदिस संचित रुखाई जल क्यों हू न खूटत॥२॥ ❀ २७९ ❀ राग अडानों ❀ आलीरी मानगढ कर लिये बैठी ताकी ओट। नैन तो बंदूक तामे सकुच दारू भरयो बोल गोला चलावे जटाजोट ॥ १ ॥ भौंह धनुस तामे अंजन पनच दिये वरुनी बान मारे तिरछीरी चोट। निस धाय जाय लागे 'तानसेन' के प्रभु छूट्यो हट टूट्यो हैरी काम कोट ॥ २ ॥ ❀ २८० ❀ आश्विन सुदी ११ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभास ❀ चोवा में चहल रहे हो लालन कहां गये दसहरा मनावन। एक ते एक सुघर घोखनारी तुम तो छैल गोवर्धनधारी

सबहिन के मन भावन ॥ १ ॥ करमें कर लीनो हसि एक बीरा दीनो लैलै नाम मोहि लागे गिनावन। 'धोंधी' के प्रभु विन सुभट इतो जनावत बल बतराबत जात सखी आई समुझावन ॥३॥ ❀ २८१ ❀ आश्विन सुदी १५ ❀ ❀ शरद को उत्सव ❀ शृङ्गार समय ❀ राग टोडी ❀ बन्यो रास मंडल माधो गति मे गति उपजावे हो। कर कंकन झनकार मनोहर प्रमुदित वेनु वजावे हो ॥ १ ॥ स्यामसुभग तन पर दच्छिन कर कूजत चरन सरोजे हो। अबला वृंद अवलोकित हरिमुख नयन विकास मनोजे हो ॥ २ ॥ नील पीतपट चलत चारु नट रसनागत नूपुर कूजे हो। कनक कुंभ कुच बीच पसीना मानों हर मोतिन पूजे हो ॥ ३ ॥ हेमलता तमाल अवलंबित सीस मल्लिका फूली हो। कुंचित केस बीच अरुझाने मानों अलिमाला झूली हो ॥ ४ ॥ सरद विमलनिसि चंद बिराजत क्रीडत यमुना कूले हो। 'परमानंद' स्वामी कौतूहल देखत सुर नर भूले हो ॥ ५ ॥ ❀ २८२ ❀ राग टोडी ❀ श्रीवृषभाननंदिनी नाचत रास रंगभरी। उरप तिरप लाग डाट उघटित संगीत सब्द ततथेइ थेइ थेइ बोलत जगत वंदिनी ॥ १ ॥ नाचत स्वर ताल मृदंग लेत युवती सुधंग कोककला निपुन सरस कामकंदिनी। रिझवार देत प्रान प्रभु 'मुकुंद' अति सुजान मोहि कलगान त्रिय प्रेमफंदिनी ॥ २ ॥ ❀ २८३ ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ अन्नकूट कोटिक भांतिन सों भोजन करत गोपाल। आप ही कहत तात अपने सों गिरि मूरति देखो ततकाल ॥१॥ सुरपति से सेवक इनही के सिव विरंचि गुन गावे। इनही ते अष्ट महासिध नवनिध परम पदारथ पावे ॥२॥ हम गृह वसत गोधन वन चारत गोधन ही कुल देव। इने छांड़ जो करत यज्ञ विधि मानों भींत को लेव ॥३॥ यह सुनि आनंदे ब्रजवासी आनंद दुंदुभी बाजे। घर घर गोपी मंगल गावे गोकुल आन बिराजे ॥४॥ एक नाचत एक करत कुलाहल एक देत कर तारी। वनिता वृन्द बांयनो बांटत गूंजा पूवा सुहारी ॥५॥ तब ही इन्द्र

आयुस दियो मेघन जाय प्रलय के बरखो । यह अपमान कियो धो कोने ताहि प्रगट ह्वै परखो ॥६॥ सात द्योस जलसिला सहस्रन महा उपद्रव कीनों । नंदादिक विस्मित चितवत सब तब गिरिवर कर लीनो ॥७॥ सक्र सकुचि सुरभी संग लायो तजी आपनी टेक । गहे चरन गोविंद नाम कहि कियो आप अभिषेक ॥८॥ महरि मुदित वर वसन मंगाये बोलि बोलि सब ग्वालिन दीने । प्रभु 'कल्यान' गिरिधर युग युग यों भक्त अभय पद कीने ॥९॥ ❀ २८४ ❀ राग सारंग ❀ देखोरी हरि भोजन खात । सहस्र भुजा धरि उत जेंवत हैं इत गोपन सों करत है बात ॥१॥ ललिता कहत देखि हो राधा जो तेरे मन बात समात । धन्य सबै गोकुल के वासी संग रहत गोकुल के नाथ ॥२॥ जेंवत देखि नंद सुख लीनो अति आनन्द गोकुल नरनारी । 'सूरदास' स्वामी सुखसागर गुन आगरि नागरि दे तारी ॥३॥ ❀२८५❀ राजभोग सरे ❀ राग गौड़ सारंग ❀ आनि और आनि कहत भचिकि रहत व्रज नारी नर । कटु तिक्त कषाय अम्ल मधुर सलोने प्रकार खटरस सों प्रीतरस सों अरोगत सुन्दर वर ॥१॥ गिरिराज बरन बरनों बरा सिला सिल मोदक ठौर ठौर वृच्छन गूँजा भर । 'राजाराम' प्रभु के जल अचवन कारन कों इन्द्र झारी भरि धरे जलधर ॥२॥ ❀ २८६ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग सारंग ❀ बन्यो रास मण्डल अहो युवती यूथ मधि नायक नाचे गावे । सब्द उघटत थेई थेई ततथेई गति मे गति उपजावे ॥१॥ अङ्ग अङ्ग चित्र किये मोरमुकुट सीस दिये काछनी काछे पीतांबर सोभा पावे । सुर नर मुनि मोहे जहां तहां थकित भये मीठी मीठी तान लालन बेनु बजावे ॥२॥ वनी श्रीराधावल्लभ जोरी उपमा [illegible] ोरी [illegible] है बांह जोरी रीझि रिझावे । 'चतुर बिहारी' प्यारी [illegible] धन यह सुख कहत न आवे ॥३॥ ❀ [illegible] जू नेक कोतिक देखन रच्यो

घसि अङ्ग लगाइ मुकुट काछनी बनाइ मुरली पीतांबर बिराजे यह छबि मोपै कही न बने बेन ॥१॥ सब सखी मिलि नाचत गावत ताल मृदंग मिलि बजावत नृत्य करत मधि मूरति मैंन। 'सूरदास' मदनमोहन हसत कहा हो जू पांव धारिये अहो जोपे सुख दियो चाहो नैन ॥२॥ ❀२८८❀ ❀ राग नट ❀ उरझी कुंडल लट बेसर सों पीतपट बनमाला बीच आन उरझे हैं दोऊ जन। होड़ा होड़ी नृत्य करें रीझि रीझि आंकों भरें तताथेई तताथेई रटत मगन मन ॥१॥ नैन सों नैन प्रान-प्रान सों उरझि रहे चटकीली छबि देखि लटपटात स्यामघन। ग्रीवा सों ग्रीवा मेलि भुजन सों भुज जोरि रास में निसंक नाचें बिहारी बिहारिन ॥२॥ बाजत मृदंग ताल मधुर धुनि रसाल लाग डाट हुरमई सुरन की लेत तान। 'सूरदास' मदन-मोहन रास मंडल मधि प्यारी को अञ्चल लेले पोंछत हैं श्रमकन ॥ ३ ॥ ❀ २८९ ❀ संध्या भोग आये ❀ राग मालव ❀ रास विलास गहै करपल्लव एक एक भुज ग्रीवा मेली। द्वै द्वै गोपी बिच बिच माधो निर्तत संग सहेली ॥१॥ टूट परी मोतिन की माला ढूँढत फिरत सकल ग्वारी। बिगलित कुसुम भाल कच बिलुलित निरखि हसे गिरिवरधारी ॥२॥ सरद विमल नभ चन्द बिराजत निर्तत नन्द किसोरा। 'परमानन्द' प्रभु बदन सुधानिधि गोपी नैन चकोरा ॥३॥ ❀ २९० ❀ राग मालव ❀ ताताथेइ रास मण्डल मे बनि नाचत पिय के संग प्रीतम प्यारी। गावत सरस सु जाति मिलावत चपल कुटिल भ्रुव अनियारी ॥१॥ मालव राग अलापति भामिनी लेत उरप नागर नारी। प्यारी के संग बैनु बजावत सुघरराय गिरिवरधारी ॥२॥ 'कृष्णदास' प्रभु सौभग सींवा सब जुबतिन में सुकुमारी। जोरी अद्भुत प्रगटित भूतल केलिकलारस मनुहारी ॥३॥ ❀ २९१ ❀ सेनभोग आये ❀ राग ईमन ❀ लाल संग रास रंग लेत मान रसिक रमन ग्रग्रता ग्रग्रता तत तत तत थेई थेई गति लीने। सारेगमपधनि धुनि सुनि ब्रजराजकुंवर गावत री अति यति

संगति निपुन तननननननन आन आन गति चीने ॥१॥ उदित मुदित सरद चन्द बन्द टूटे कंचुकी के वैभव निरखि निरखि कोटि मदन हीने । बिहरत वन रास विलास दंपती मन ईषदहास 'छीतस्वामी' गिरिवरधर रस बस तब कीने ॥२॥ ❀ २९२ ❀ राग कान्हरा ❀ रसिकन रस भरे ही नृत्यत रास रंगा । सुलप संच गति लेत ग्रग्र तत तत थेई थेई बाजत मृदंगा ॥१॥ ताल झांझ किन्नरी कातर भेद तैसीय मिली धुनि सरस उपंगा । 'गोविंद' प्रभु रस माते युवतियूथ खसित कुसुम सिर मोतिन मंगा ॥२॥ ❀२९३❀ ❀ राग अडानो ❀ बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु स्यामसुन्दर कमलनैन बांकी भौंह ललित भाल घूँघरवारी अलकें । पीतबसन मोतीमाल हिये पदक कण्ठ लाल हसनि बोलनि गावनि गंडनि श्रवनि कुण्डल झलकें ॥१॥ कर पद भूषन अनूप कोटि मदन मोहन रूप अद्भुत वदन चन्द देखि गोपी भूली पलकें । कहि 'भगवान हित रामराय' प्रभु ठाडे रास मण्डल मधि राधा सों बांहजोटी किये हिये प्रेम ललकें ॥२॥ ❀ २९४ ❀ राग अडानो ❀ बंसीवट के निकट हरि रास रच्यो है मोरमुकुट और ओढ़ें पीतपट । श्रीवृन्दावन कुञ्ज सघन वन सुभग पुलिन और यमुना के तट ॥१॥ आलस भरे उनीदे दोउजन श्री राधाजू और नागरनट । 'व्यास' रसिक तन मन धन फूले लेत बलैया करि अंगुरिन चट ॥ २ ॥ ❀ २९५ ❀ राग अडानो ❀ मंडल मधि रंग भरे स्यामा स्याम राजे । घरररररररररर मुरली घोर गाजे ॥ १ ॥ गान करत ब्रज की भाम लेत सरस सुघर तान अंग अंग अभिराम मन्मथ छबि लाजे । मंदमंद हास करत रीझिरीझि अंक भरत बंसी में लेत तान अति सुदेस छाजे ॥२॥ अद्भुत नट नृत्य करत संगीत की गति जु धरत रुनझुनात नूपुर कटिकिंकिनी कल साजे । धिधिकिट धिधिकिट धिधिकिट ता धिलांता धिलां गिड् गिड् गिड् गिड् गिड् गिड् घन प्रचंड गाजे ॥ ३ ॥ ररर रेनि रीझि रही जज जमुना थकित भई चचच चंद थकित भयो पश्चिम रथ साजे । 'कृष्णदास'

प्रभु बिलास बरखत रस रंग रास वृन्दाविपिने विलास रंग बाढ्यो आजे ॥ ॥ ४ ॥ ❀ २९६ ❀ राग केदारा ❀ सुनि धुनि मुरली बन बाजे हरि रास रच्यो । कुंज कुंज द्रुम बेली प्रफुलित मंडल कंचन मनिन खच्यो ॥ १ ॥ निर्तत जुगलकिसोर जुवतीजन मन मिलि राग केदारो मच्यो । 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी नीकैं आजु गुपाल नच्यो ॥ २ ॥ ❀ २९७ ❀ ❀ राग केदारा ❀ अहो रैनि रीझी हो प्यारे हरि को रास देखि याही ते अधिक बढि गई री गेन । चलि न सकत हरि रूप विमोही रही इकटक आछे नछित्र नैन ॥१॥ छबि सों छूटत बिच बिच तारे मानों मनि के भूषन सब वारि डारे जग एन । चंद हु थकित भयो देखिवे की लालच रह्यो है दीवट करि परम चैन ॥ २ ॥ जोंलों इच्छा भई तोंलों नाचत गोपी गुपाल अद्भुत गति मोपे कही न परे बैन । 'नंददास' प्रभु को विलास रास देखिवे कों मनमथ हू को मन मथ्योरी मैन ॥३॥ ❀ २९८ ❀ सेन दर्शन ❀ वेणु धरें तब ❀ ❀ राग मालव ❀ अलाग लागन उरप तिरप गति नचवत ब्रज ललना रासे । उघटत सब्द ततथेइ ता थेइ मृगनैनी ईषदहासे ॥ १ ॥ चाल चंद लजावति गावति बांधति मदन भोंह पासे । उपजत तान मान सुवंधाने मोहति विस्व चरन न्यासे ॥ २ ॥ नूपुर क्वनित रुनित कटिमेखला कटि तटि काछ नीलवासे । चलत उरज पट किंकिनी कुंडल श्रमजलकन पूरित आसे ॥३॥ मोहनलाल गोवर्धनधारी रिझवति सुघर छैल लासे । अपने कंठ की श्रमजल दल मली माला देत 'कृष्णदासे' ॥ ४ ॥ ❀ २९९ ❀ राग केदारा ❀ पूरी पूरनमासी पूरयो पूरयो है सरद को चंदा । पूरयो है मुरली सुर केदारो कृष्ण कला संपूरन भामिनी रास रच्यो सुखकंदा ॥ १ ॥ तान मान गति मोहन मोहे कहियत औरहि मनमोहंदा । नृत्य करत श्रीराधा प्यारी नचवत आपु बिहारी सो गिड् गिड् तता थेई थेई थेई छंदा ॥ २ ॥ मन आकर्स लियो ब्रजसुंदरी जय जय रुचिर रुचिर गति मंदा । सखी असीस देत

'हरिवंसे' तेसेई बिहरत श्रीवृन्दावन कुंवरि कुंवर नंदनंदा ॥३॥ ❀३००❀
❀ राग केदारा ❀ रास रच्यो हो श्रीहरि श्रीबृन्दावन कालिंदी तट। सरद मास मल्लिका फूली खेलन को मन कियो योगमाया समीप धर उद्भट ॥ १ ॥ तब उडुराज दिसा प्राचीन मुख आयो अरुन किरन प्रसरित कर। निरखि विमल मंडल की सोभा तेसोई वन कोमल कर राजत कल गावत सुमनोहर ॥ २ ॥ यह सुनके आई ब्रज की तिय बहुत अनंद दियो मन हरि कर। द्वै द्वै गोपी प्रति सन्मुख व्है और कछू देखियत नाहिन दृग कुंडल लोल परस्पर॥३॥ धिधि कटि थुंग थुंग गिडि गिडि तत् थेई तत थेई तत थेई थेई उघटत। पीतांबर माला धरि नाचत 'श्रीगिरिधर' मन्मथ-मन्मथ व्है देववधू तन वारत ॥४॥ ❀३०१❀ आरती समय ❀ राग केदारा ❀ श्रीवृषभाननंदिनी हो नाचत लालन गिरिधरन संग लाग डाट उरप तिरप रास रंग राख्यो। झपताल मिले राग केदारो सप्त सुरनि अवघर वर सुघर तान मान रंग राख्यो ॥ १ ॥ पाई सुख सों रति सिद्धि रतिकाव्य विविध रिद्धि अभिनव दल सत सुहाग हुलास रंग राख्यो। वनिता सतयूथ के पिय निरखि थक्यो सघन चंद बलिहारी 'कृष्णदास' सुजस रंग राख्यो ॥ २ ॥ ❀ ३०२ ❀
❀ पोढवे में झांझ पखावज सूं ❀ राग केदारा ❀ सरद उजियारी री नीकी लागे निकसि कुंजते ठाडे। बरन बरन कुसुमन के आभूषन और सोंधे भीने बागे ॥ १ ॥ अति आनंद भरे पिय प्यारी गावत हैं केदारो रागे। 'जन भगवान' आज तृन टूटत कछु रजनी दोऊ जागे ॥२॥ ❀ ३०३ ❀ कार्तिक वदी १ ❀
❀ सेन दर्शन ❀ राग ईमन ❀ स्याम सजनी सरद रजनी पुलिन मधि नृत्य नाट ता त्रग ता त्रग त्रग ता तिरप बंद करत कामिनी। गिडि गिडि धिकि धिडि थिलांग धिधिकिट ता लाग लई झंझंझं झननननन सुर उपंगिनी ॥ १ ॥ स्याम कों यह नाद भावे तक धिकता गति हि लावे ततथेई थेई सब्द उघटि कोक कामिनी। 'कृष्णदास' जसहि गावे कर ता थेई थेई नचावे

काक्रति काक्रति काक्रति काक्रति करे मृदंगिनी ॥ २ ॥ ❀ ३०४ ❀

उत्सव श्रीगिरिधरलाल जी को (कार्तिक वदी ५)

❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ स्याम खिरक के द्वारे करावत गायन को सिंगार । नाना भांति सींग मंडित किये ग्रीवा मेले हार ॥ १ ॥ घन्टा कंठ मोतिन की पटिया पीठन कों आछे ओछार । किंकिनी नूपुर चरन विराजत बाजत चलत सुढार ॥ २ ॥ यह विधि सब ब्रज गाय सिंगारी सोभा बढी अपार । 'परमानन्द' प्रभु धेनु खिलावत पेहैरावत सब ग्वार ॥३॥ ❀३०५❀

❀ राग नट ❀ खिरक खिलावत गायन ठाडे । इत नन्दलाल ललित लरका उत गोप महाबल गाढे ॥ १ ॥ सुनि निजनाम नैंचुकी निकसी वल बछरा जब काढे । अपनी जननी कों जानि लाग पय पीवत नवल अखाडे ॥२॥ नृत्यत गावत बसन फिरावत गिरि के सिखर पर चाढे । 'छीतस्वामी' हम जबते वसे ब्रज सैल सकल सुख बाढ़े ॥ ३ ॥ ❀ ३०६ ❀ संध्या समय ❀

❀ राग गौरी ❀ खेली बहु खेली गांग बुलाई धूमर धौरी । बछरा पर उपरेना फेरत डाढ मेलिकैं दौरी ॥ १ ॥ आप गोपाल कूक मारत हैं गोसुत कों भरि कोरी । धों धों करत लकुट कर लीने मुख पर फेरि पिछौरी ॥३॥ आनन्द मुदित गुपाल ग्वाल सव घेर करत इकठौरी । 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधर ब्रज यह सुख जुग जुग राज करौरी ॥ ३ ॥ ❀ ३०७ ❀ सेन भोग आये ❀

❀ राग कान्हरा ❀ कान जगावन चले कन्हाई । गिरिधर सिंघद्वार व्है टेरत सुनि सब सखा मंडली आई ॥१॥ विविध सिंगार पहरि पट भूषन प्रफुलित उर आनन्द न समाई । रुचिर गैल गिरि गोवर्धन की किलकत हसत सबै सुखदाई ॥२॥ टेरत गांग बुलाई धूमर श्रवन सुनत आतुर उठि धाई । सावधान सब भोर खेलन कों 'चतुर्भुजदास' चले सिर नाई ॥ ३ ॥ ❀ ३०८ ❀

❀ राग कान्हरा ❀ आज अमावस दीपमालिका बडी पर्वनी है गोपाल । घरघर गोपी मंगल गावे सुरभी वृषभ सिंगारो लाल ॥ १ ॥ कहत यसोदा

सुन मनमोहन अपने तात की आज्ञा लेहु। बारों दीपक बहुत लाडिले कर उजियारो अपने गेह ॥ २ ॥ हँसि ब्रजनाथ कहत माता सों धौरी धेनु सिंगारों जाय। 'परमानन्द दास' को ठाकुर जाय भावत है निसदिन गाय ॥३॥ ❀ ३०९ ❀ राग कान्हरा ❀ आज कुहू की रात है माधो दीपमालिका मंगलचार। खेलो द्यूत सहित संकर्षन मोहन मूरति नन्दकुमार ॥ १ ॥ कहत यसोदा सुनो मनमोहन चंदन लेप सरीर करो। पान फूल चोवा दिव्य अंबर मनिमाला ले कंठ धरो ॥ २ ॥ गो क्रीडन पुनि काल होयगो नंदा-दिक देखेंगे आय। 'परमानन्द दास' संग लीने खिरक खिलावत धौरी गाय ॥ ३ ॥ ❀ ३१० ❀ राग कान्हरा ❀ आजु दीपत दिव्य दीपमालिका। मानों कोटि रवि कोटि चंद छवि विमल भई निसि कालिका ॥ १ ॥ गजमोतिन के चौक पुराये बिच बिच वज्र प्रवालिका। गोकुल सकल चित्रमनि मंडित सोभित झाल झमालिका ॥ २ ॥ पहरि सिंगार बनी राधा जू संग लिये व्रजबालिका। झलमल दीप समीप सोंज भरि कर लिये कंचन थालिका ॥ ३ ॥ पाये निकट मदनमोहन पिय मानो कमल अलि मालिका। आपुन हँसत हँसावत ग्वालन पटकि पटकि दे तालिका ॥ ४ ॥ नंदभवन आनंद बढ्यो अति देखत परम रसालिका। 'सूरदास' कुसुमन सुर बरखत कर अंजली पुट मालिका ॥५॥ ❀ ३११ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ मानत परव दिवारी को सुख हटरी बैठे नन्दकुमार। मंगल बाजे होत चहूंदिस भीर बहुत अति आंगन द्वार ॥ १ ॥ कुंवरि राधिका नवल वधू सब करि आई है रुचिर सिंगार। सोंधे भीनी कंचुकी सारी और पेहेरे फूलन के हार ॥ २ ॥ पहले सौदा लेहू हम पे तब लीजो दाऊ पैं जाय। नीके देहों रुगट नहिं खैहों ऐसे कहत लाल मुसिकाय ॥ ३ ॥ हँसि हँसि जात राय नंदरानी हँसत भान सब गोप गुवाल। चुंवति वदन अहो यह घातें कापै सीखे हो नंदलाल ॥ ४ ॥ झगरो करत भरत आनन्द सों चन्द्रावली व्रज

मंगल नारि । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल' सों रंग करत सब गोपकुमारि ॥ ५ ॥ ❀ ३१२ ❀ मान पोढ़ो में ❀ राग केदारा ❀ तोहि मिलन कों वहुत करत है नवललाल श्री गोवर्धनधारी । ऊत्तर वेगि देहो किन भामिनी कहिधों कहा यह बात तिहारी ॥ १ ॥ देखी री तू जो झरोखन के मग तन पहरे झूमक की सारी । तन मन बसी रस प्रानप्यारे के निमिष जिय ते होत न न्यारी ॥ २ ॥ कहिरी सखी कहां हों आऊं बेगि बताय सुठौर सु चारी । 'कुंभनदास' प्रभु वे बैठे हैं जहां देखियत ऊंची चित्रसारी ॥३॥ ❀ ३१३ ❀ ❀ राग केदारा ❀ वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढे ऊंची चित्रसारी । सुंदर वदन निहारन कारन राख्यो वहुत जतनु करि प्यारी ॥ १ ॥ कंठ लगाई भुज दे सिरहाने अधरामृत पीवत पिय प्यारी । तन मन मिली प्रान-प्यारे सों नौतन छवि बाढी अति भारी ॥२॥ 'कुंभनदास' प्रभु सौभग सीवां जोरी भली बनी इकसारी । नव नागरी मनोहर राधे नवल लाल श्रीगोव-र्धनधारी ॥ ३ ॥ ❀ ३१४ ❀

उत्सव श्रीबालकृष्णलाल जी के गादी बिराजे को (कार्तिक वदी ७)

❀राजभोग आये❀राग बिलावल❀आज कहा संभ्रम है तिहारे घर तात । गोप सबै करत काज आनन्द न समात ॥ १ ॥ हाथ जोरि ठाडे हरि पूछत है आय । मोसों यह बात कहो बाबा व्रजराय ॥ २ ॥ बोले नंदराय देव इन्द्र हि बलि देहैं । बरसे जल निपजे नाज वरसलों सुख पैहैं ॥ ३ ॥ वहु दिवस भये करत हैं हम पूजा सब कोय । अब जो हम छांडि देहिं तो न भलो होय ॥ ४ ॥ बोले हरि सुनो तात बात एक मेरी । कर्म के बल सबै होय मिलि सुभाय हेरी ॥ ५ ॥ कर्म के आधीन देव कहो कहा करिहै । ताको कछु चलत नाहिं कर्म बिन न सरिहै ॥ ६ ॥ जो तुम जगदीस जानि पूजत हो याही । यासों हमें काज कहा गौ चारन जाही ॥ ७ ॥ गिरि कानन वसत है हम पूजें ता ईस । सो तो द्विज देव गाय ठाकुर जगदीस ॥ ८ ॥

सुन मनमोहन अपने तात की आज्ञा लेहु। बारों दीपक बहुत लाडिले कर उजियारो अपने गेह ॥ २ ॥ हँसि ब्रजनाथ कहत माता सों धौरी धेनु सिंगारों जाय। 'परमानन्द दास' को ठाकुर जाय भावत है निसदिन गाय ॥३॥ ❀ ३०९ ❀ राग कान्हरा ❀ आज कुहू की रात है माधो दीपमालिका मंगलचार। खेलो द्यूत सहित संकर्षन मोहन मूरति नन्दकुमार ॥ १ ॥ कहत यसोदा सुनो मनमोहन चंदन लेप सरीर करो। पान फूल चोवा दिव्य अंबर मनिमाला ले कंठ धरो ॥ २ ॥ गो क्रीडन पुनि काल होयगो नंदादिक देखेंगे आय। 'परमानन्द दास' संग लीने खिरक खिलावत धौरी गाय ॥ ३ ॥ ❀ ३१० ❀ राग कान्हरा ❀ आजु दीपत दिव्य दीपमालिका। मानों कोटि रवि कोटि चंद छबि विमल भई निसि कालिका ॥ १ ॥ गजमोतिन के चौक पुराये बिच बिच वज्र प्रवालिका। गोकुल सकल चित्रमनि मंडित सोभित झाल झमालिका ॥ २ ॥ पहरि सिंगार बनी राधा जू संग लिये ब्रजबालिका। झलमल दीप समीप सोंज भरि कर लिये कंचन थालिका ॥ ३ ॥ पाये निकट मदनमोहन पिय मानो कमल अलि मालिका। आपुन हँसत हँसावत ग्वालन पटकि पटकि दे तालिका ॥ ४ ॥ नंदभवन आनंद बढ्यो अति देखत परम रसालिका। 'सूरदास' कुसुमन सुर बरखत कर अंजली पुट मालिका ॥५॥ ❀ ३११ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ मानत परव दिवारी को सुख हटरी बैठे नन्दकुमार। मंगल बाजे होत चहूंदिस भीर बहुत अति आंगन द्वार ॥ १ ॥ कुंवरि राधिका नवल वधू सब करि आई है रुचिर सिंगार। सोंधे भीनी कंचुकी सारी और पेहेरे फूलन के हार ॥ २ ॥ पहले सौदा लेहू हम पे तब लीजो दाऊ पैं जाय। नीके दैहों रूगट नाहिं खैहों ऐसे कहत लाल मुसिकाय ॥ ३ ॥ हँसि हँसि जात राय नंदरानी हँसत भान सब गोप गुवाल। चुंवति वदन अहो यह घातें कापै सीखे हो नंदलाल ॥ ४ ॥ झगरो करत भरत आनन्द सों चन्द्रावली ब्रज

मंगल नारि। 'श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल' सों रंग करत सब गोपकुमारि ॥ ५ ॥ ❀ ३१२ ❀ मान पोढवे में ❀ राग केदारा ❀ तोहि मिलन कों बहुत करत है नवललाल श्री गोवर्धनधारी। ऊत्तर बेगि देहो किन भामिनी कहिधों कहा यह बात तिहारी ॥ १ ॥ देखी री तू जो भरोखन के मग तन पहरे झूमक की सारी। तन मन बसी रस प्रानप्यारे के निमिष जिय ते होत न न्यारी ॥ २ ॥ कहिरी सखी कहां हों आऊं बेगि बताय सुठौर सु चारी। 'कुंभनदास' प्रभु वे बैठे हैं जहां देखियत ऊंची चित्रसारी ॥३॥ ❀ ३१३ ❀ ❀ राग केदारा ❀ वे देखो बरत भरोखन दीपक हरि पोढे ऊंची चित्रसारी। सुंदर वदन निहारन कारन राख्यो बहुत जतनु करि प्यारी ॥ १ ॥ कंठ लगाई भुज दे सिरहाने अधरामृत पीवत पिय प्यारी। तन मन मिली प्रानप्यारे सों नौतन छबि बाढी अति भारी ॥२॥ 'कुंभनदास' प्रभु सौभग सींवा जोरी भली बनी इकसारी। नव नागरी मनोहर राधे नवल लाल श्रीगोवर्धनधारी ॥ ३ ॥ ❀ ३१४ ❀

उत्सव श्रीबालकृष्णलाल जी के गादी बिराजे को (कार्तिक वदी ७)

❀राजभोग आये❀राग बिलावल❀आज कहा संभ्रम है तिहारे घर तात। गोप सबै करत काज आनन्द न समात ॥ १ ॥ हाथ जोरि ठाडे हरि पूछत है आय। मोसों यह बात कहो बाबा व्रजराय ॥ २ ॥ बोले नंदराय देव इन्द्र हि बलि देहैं। बरसे जल निपजे नाज वरसलों सुख पैहैं ॥ ३ ॥ बहु दिवस भये करत हैं हम पूजा सब कोय। अब जो हम छांडि देहिं तो न भलो होय ॥ ४ ॥ बोले हरि सुनो तात बात एक मेरी। कर्म के बल सबै होय मिलि सुभाय हेरी ॥ ५ ॥ कर्म के आधीन देव कहो कहा करिहै। ताको कछु चलत नाहिं कर्म बिन न सरिहै ॥ ६ ॥ जो तुम जगदीस जानि पूजत हो याही। यासों हमें काज कहा गौ चारन जाही ॥ ७ ॥ गिरि कानन वसत है हम पूजें ता ईस। सो तो द्विज देव गाय ठाकुर जगदीस ॥ ८ ॥

गोवर्धन पूजो औ देहु विप्रन गाय। अर्पो वलि देहु दान धेनु तृन चराय॥६॥ करवाओ पाक विविध युवतिजन वुलाय। खीर आदि सूप अंत सवै विधि वनाय ॥ १० ॥ ओट्यो संयाव पूवा चुकली दे आदि। रखवाओ दूध सवै खरचो जिनि वादि ॥११॥ पर्वत कों वलि देहु द्विज पूजि गाय खिलाय। गिरि की करा सकट जोरि परकंमा जाय ॥ १२ ॥ भूपन वहु मोल सवै वसन तन वनाय। हसत खेलत गावत गिरि देखो फिर आय ॥ १३ ॥ मेरो तो मतो यह सुनि हो ब्रजराज। भावे तौ कीजे जू मेरो यह काज ॥१४॥ जैसे हरि कह्यो सवन तैसे ही कीनो। रूप वडो धरि के वलि खात दरस दीनो ॥ १५ ॥ सवहिन संग पांय परे मोहन निज रूप। दीनी प्रतीति सवै गोकुल के भूप ॥ १६ ॥ हरि स्वरूप फल ले सव अपने ब्रज आये। निज कर ब्रजवासी हरि फेर ब्रज वसाये ॥ १७ ॥ कोपि इन्द्र पठये मेघ वरसो दिन सात। गिरि धरि ब्रजवासी सव राखि लिये दुख्यात ॥ १८ ॥ देखि रूप आनन्द मे भूख प्यास भुलाई। वरखत है कहां मेघ काहू न सुधि पाई ॥ १६ ॥ सात द्योस ठाडे हरि नेकु न पग हिलायो। एसो ब्रज-वासिन यह भाग्यन ते पायो ॥ २० ॥ सुरपति को गर्व गयो रह्यो अति खिस्याई। उघर गये मेघ सवै उदयो रवि आई ॥ २१ ॥ वोले प्रभु निकसो सव वाहिर रह्यो मेह। निडर भये फिरो सवै करो जिनि संदेह ॥२२॥ राख्यो गिरि भूमि पर भेटे ब्रजवासी। पायो अति परमानन्द गोकुल सुखरासी ॥२३॥ प्रेम भरी व्याकुल व्है चूमत मुख माई। वारवार वालक के कर की वलि जाई ॥ २४ ॥ हरखत ब्रजवासी सव आये घर फेरि। निसदिन वे जीवत हैं सुंदर मुख हेरि ॥ २५ ॥ पछतानो इन्द्र कामधेनु संग लायो। अपनो अपराध पांय परि छमा करायो ॥ २६ ॥ कीनो अभिपेक तहां गङ्गाजल आनी। ऐरावत सूंड हूते अपने प्रभु जानी ॥ २७ ॥ गोविन्द यह नाम धरयो आप भयो दास। मेरो सव गर्व गयो पायो मैं त्रास ॥ २८ ॥ हरि

को अभिषेक होत सबनि वैर टूट्यो । गोविन्द यह नाम लेत सहज दोष छूट्यो ॥ २९ ॥ यह लीला अति अद्भुत 'रसिक' होय गावे। अन्य भजन छांडि चरन हरिजू के पावे ॥३०॥ ❀३१५❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ बडरिन कों आगे दे गिरिधर श्रीगोवर्धन पूजन आवत । मानसी गंगा जल न्हवाइ के पाछे दूध धौरी को नावत ॥ १ ॥ बहोरि पखारि अरगजा चरचत धूप दीप बहु भोग धरावत । दे बीरा आरती करत हैं व्रजभामिन मिलि मंगल गावत ॥ २ ॥ टेरि ग्वाल भाजन भरि दे के पीठ थापि सिर पेच वंधावत । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर ता पाछे धौरी धेनु खिलावत ॥३॥ ❀ ३१६ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ गाय खिलावत सोभा भारी। गौरज रंजित वदन कमल पर अलक झलक घुंघरारी ॥ १ ॥ नखसिख प्रति बहुमोलिक भूषन पहरत सदा दिवारी । फैल रही है खिरक सभा पर नगन रङ्ग उजियारी ॥२॥श्रमकन राजें भाल गंड भुव यह छवि पर बलिहारी। स्रवत हैं री अंचल चंचल सब चढत हैं अटन अटारी ॥३॥भीर बहुत अति जाति की भई मुडहिन पर व्रजनारी । सैनन मे समुझावत सगरी धनि धनि निरखनहारी ॥ ४ ॥ रहे खिलाय धूमरी धौरी गुनन काजरी कारी । 'नंददास' प्रभु चले सदन जब एक बार हुंकारी ॥ ५ ॥ ❀ ३१७ ❀ संध्या समय❀ ❀ राग गौरी ❀ गाय खिलावत मदनगोपाल । कुमकुम तिलक अलंकृत तंदुल झलकि रह्यो नग अंग विसाल ॥ १ ॥ नखसिख अंग गहने की रचना उर मनिगन वनमाल । वसन दसन पर सुदृढ पौरिया दियो है दिठौना भाल ॥ २ ॥ भीर बहुत सखि वडे खिरक में कूक देत सब ग्वाल । हीही हीही सुनि श्रीमुख ते मोहि रही व्रज की सब बाल ॥ ३ ॥ दावन छोर वंधे दोऊ कटि दमकत जंघ रसाल । 'श्रीभट' चटक सजल अङ्ग झांई परे चहूंदिस सोभा जाल ॥ ४ ॥ ❀ ३१८ ❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ जयति व्रजपुर सकल खोरि गोकुल अखिल तरनि तनया निकट दिव्य

दीपावली । जयति नवकुंज वर द्रुम लता पत्र प्रति मानो फूली नवल कनक चम्पावली ॥ १ ॥ जयति गोविन्द गोवृंद चित्रित करे मुदित उमडी फिरै ग्वाल गोपावली । जयति 'व्रजईस' के चरित लखि थकित सिव मोहे विधि लजित सुरलोक भूपावली ॥ २ ॥ ❀ ३१६ ❀ मान पोढवे में ❀ राग बिहाग ❀ राय गिरिधरन संग राधिका रानी । निबिड नवकुंज सय्या रची नवरंग पिय संग बोलत पिकबानी ॥ १ ॥ नीलसारी लाल कंचुकी गौर तन मांग मोतिन खचित सुंदर सुठानी । अर्ध घूंघट ललन वदन निरखत रसिक दंपती परस्पर प्रेम हृदय सानी ॥ २ ॥ लाल तनसुख पाग ढरकि रही भुव पर कुलही चम्पक भरी सेहरो सुबानी । पानि सों पानि गहि उरसों लावत ललन 'गोविन्द' प्रभु व्रज-नृपति सुरत सुखदानी ॥ ३ ॥ ❀ ३२० ❀ ❀ राग बिहागरो ❀ स्यामा जू दुलहिनी दूलहे लाल गिरिधर कौन सुकृत पायो कुंवर रसिक वर । सोहे सिर सेहरो नवल नव नेहरो प्रथम मिलन नैना भये हैं कलप तर ॥ १ ॥ रूप रासि रुचि बाढी प्रेम गांठि परी गाढी ओली बांहि गहि ठाडी गयो है लाज को डर । पोढे पिय कुंज महल तलप कुसुमदल 'स्यामसाहि' जाइ बलि रह्यो है रंगनि ढर ॥ २ ॥ ❀ ३२१ ❀ ❀ मुकुट धरे तब ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ गोवर्धन पूजा करि गोविंद सब ग्वालन पहरावत । आवो सुबाहु सुवल श्रीदामा ले ले नाम बुलावत ॥ १ ॥ अपुने हाथ तिलक दे माथे चन्दन अङ्ग लपटावत । वसन विचित्र सबन के माथे विधि सों बांधि बंधावत ॥ २ ॥ भाजन भरिभरि ले कुनवारो ताको ताहि गहावत । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर ता पाछे धौरी धेनु खिलावत ॥ ३ ॥ ❀ ३२२ ❀ टिपारा धरे तब राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ मदन गोपाल गोवर्धन पूजत । बाजत ताल मृदंग संखधुनि मधुर मधुर मुरली कल कूजत ॥ १ ॥ कुमकुम तिलक लिलाट दिये नव वसन साजि आई गोपीजन । आस पास सुंदरी कनक तन मधि गोपाल बने मरकत मनि ॥२॥

आनन्द मगन ग्वाल सब डोलत हीही धूमरि धौरी बुलावत। राते पीरे बने हैं टिपारे मोहन अपनी धेनु खिलावत॥ ३॥ छिरकत हरदि दूध दधि अच्छत देत असीस सकल लागत पग। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर गोकुल करो पिय राज अखिल युग॥ ४॥ ❀ ३२३ ❀ कुलह धरे तव ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ चले री गोपाल, गोवर्धन पूजन। मत्त गयंद देखि जिय लज्जित निरखि मन्द गति चाल॥ १॥ ब्रजनारी पकवान बहुत कर भरि-भरि लीने थाल। अङ्ग सुगन्ध पहरि पट भूषन गावत गीत रसाल॥ २॥ बाजे अनेक बेनु रव सों मिलि चलत बिविध सुरताल। ध्वजा पताका छत्र चमर धरि करत कुलाहल ग्वाल॥ ३॥ बालक चहूं दिसि सोहत मनों कमल अलिमाल। 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन गोवर्धनधर लाल॥४॥ ❀३२४❀ कार्तिक वदी १२ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग विलावल❀ अपने अपने टोल कहत ब्रजवासियां। सरद कुहू निसि जानि दीपमालिका जु आई। गोपन मन आनन्द फिरत उनमद अधिकाई। घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार॥ सात बरस को सांवरो हो खेलत नंददुवार॥ १॥ बैठि नंद उपनंद बोलि वृखभान पठाये। सुरपति पूजा देति जानि तहां गोविन्द आये॥ वारबार हाहा करे कहि बाबा सो बात। घर घर भोजन होत है सो कौन देव की जात॥ २॥ स्याम तुम्हारी कुसल जानि एक मंत्र उपै हैं। खट रस भोजन साजि भोग सुरपति ही दैहैं॥ नंद कह्यो चुचुकारि कैं जाइ दामोदर सोइ। बरस द्यौस को द्यौस है ह्यां महा महोत्सव होइ॥ ३॥ हरि बोले सब गोप मंत्र वहोरयो फिरि कीन्हों। एक पुरुष निसि आजु मोहि सपनंतर दीन्हों॥ सब देवन को देवता गिरि गोवर्धन राज। ताहि भोग किनि दीजिये ह्यां सुरपति को कहा काज॥ ४॥ बाढे गोसुत गांइ दूध दधि को कहा लेखौ। इह परचो विदमान नैन अपने किनि देखो॥ तुम देखत बलि खाइगो मोंह मांग्यो फल देइ। गोप कुसल

जो चाहिहू तो गिरि गोवर्धन सेइ ॥ ५ ॥ गोपन कियो बिचार सकट सब काहू साजे । बहु विधि करि पकवान चले तहां बाजत बाजे ॥ एक बन ते खेलत चले एक नंदीसुर भीर । एक न पेंडो पावही उमगे फिरत अहीर ॥ ६ ॥ एक पैड़े एक उबटि एक बन ही बन छांही । एक गावत गुन गोपाल उमगि उमगे न समांही ॥ गोपन को सागर भयो गिरि भयो मंदराचार । रत्न भई सब गोपिका कान्ह बिलोवनहार ॥ ७ ॥ लीने विप्र बुलाय यज्ञ आरंभन कीनों । सुरपति पूजा मेटि राज गोवर्धन दीनों ॥ देव दिवारी स्यामु है नर नारी तहां जांहि । तात प्रतीति न मानहू तुम देखत बलि खांहि ॥ ८ ॥ प्रथम दूध दधि आदि बहोत गङ्गाजल ढारयो । वडो देवता जानि कान्ह को मतो विचारयो ॥ जैसो गिरिवर राज जू तैसे अन्न के कोट । मगन भये पूजा करे नर नारी बड छोट ॥ ६ ॥ जैसी कंचनपुरी दिव्य रतननि ते छाई । वलि दीनी ही प्रात छाँह फिरि पूरति आई ॥ बदरौला वृखभान की तहाँ बसे विलोवनहारि । ताकी बलि उन देवता लीनी भुजा पसारि ॥ १० ॥ जहाँ तहाँ दधि धरयो कहा कहों उज्ज्वलताई । उदधि सिखर हो रही भात में देह छिपाई ॥ चहुँ ओर चक्रा धरे चन्दहि पटतर सोय । ठौर ठौर वेदी रची चहुँ विधि पूजा होय ॥११॥ सहस्र भुजा उर धरे करे भोजन अधिकाई । नखसिख लों अनुहारि मानों दूसरो कन्हाई ॥ श्री राधा सों ललिता कहै मेरे हिए समाइ । गहे अंगुरिया नंद की सो ढोटा पूजा खाइ ॥१२॥ पीत दुमालो धरे कंठ मोतिन की माला । भूखन सुभग अनूप झलमले नैन विसाला ॥ गिरि की सोभा साँवरो गिरि कों सोभा स्याम । तैसे परवत भात के ढिंग भैया बलराम ॥ १३ ॥ एक चौरासी कोस घेरि गोपन को डेरा । लम्वे चौवन कोस आजु ब्रजवासिन मेरा ॥ सवहिन कौ मनि सांवरो दीसै सवनि मंझार । कौतुक भूले देवता आये लोक विसार ॥१४॥ वहु विधि व्यंजन अरपि गोप गोपिनि कर जोरे । अगनित किए

अनेक तदपि बरनौं कछु थोरे ।। इहि विधि पूजा कीजि कै गोबिन्द सों कह्यो जाइ । कान्ह कह्यो तब बिहँसि कै 'सूर' सरस गुन गाइ ।। १५ ।। ❀ ३२५ ❀

❀ कार्तिक वदी १३ ❀ शृंगार समय ❀ राग देवगंधार ❀ आज माई धन धोवत नंद-रानी । कार्तिक वदि तेरस दिन उत्तम गावत मंगल बानी ।। १ ।। नवसत साज सिंगार अनूपम करत आप मन मानी । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर कों देखत हियो सिरानी ।। २ ।। ❀ ३२६ ❀ राग देवगंधार ❀ जसोदा मदनगोपाल बुलावे । धन तेरस आओ नित प्यारे लै उछंग हुलरावे ।। १ ।। हरी जरी बागो बहु भूषन रुचिसों बहुत धरावे । 'ब्रजपति' की सोभा मुख निरखत रोम रोम सुख पावे ।। २ ।। ❀ ३२७ ❀ राग देवगंधार ❀ प्यारी अपनो धन जु सँवारे । वारंवार देखि नैनन सों लै जु हृदय में धारे ।। १ ।। रुचिसों सरस सँवारत पिय कों आभूषन बहु सोहे । आगम निरखि दिवारी को मन 'द्वारकेश' को मोहे ।।२।। ❀ ३२८ ❀ राग देवगंधार ❀ धन तेरस दिन अति सुखदाई । राधा मन अति मोद बढ्यो है मनमोहन धन पाई ।। १ ।। राखत प्रीति सहित हिरदे में गुरुजन लाज बहाई । 'द्वारकेश' प्रभु रसिक लाडिली निरखि निरखि मन भाई ।।२।। ❀ ३२९ ❀ कार्तिक वदी १४ ❀ रूप चतुर्दशी ❀

❀ अभ्यंग समय ❀ राग देवगंधार ❀ न्हात बलकुँवर कुँवर गिरिधारी । जसुमति तिलक करत मुख चूमत आरती नवल उतारी ।। १ ।। आनंद राय सहित गोप सब नंदरानी ब्रजनारी । जलसों घोर केसर कस्तूरी सुभग सीसते ढारी ।। २ ।। बहोरि करत सिंगार सबै मिलि सबमिलि रहत निहारी । चंद्रावली ब्रजमंगल रसभरी श्री वृषभान दुलारी ।। ३ ।। मन भाये पकवान जिमावत जात सबै बलिहारी । 'श्री विट्ठल गिरिधरन' सकल ब्रज सुख मानत हैं दिवारी ।। ४ ।। ❀ ३३० ❀ राग देवगंधार ❀ न्हात बलदाऊ कुंवर कन्हाई । अति सुगंध केसर कस्तूरी जलसों घोर मिलाई ।। १ ।। रतन जटित आभूषन वस्तर ब्रजरानी पहिराये । अति आनन्द निहारत फिरि फिर आछी भांति

बनाये ॥ २ ॥ यह दिन दीपमालिका को सुख मानत हैं नंदलाल । फूले गोप ग्वाल सब मानत और सकल व्रजबाल ॥ ३ ॥ अपने संग सखा सब लीने खिरक खिलावत गाय । राजत हैं गिरिधर 'श्री विट्ठल' सब मन हुलसि बढ़ाय ॥ ४ ॥ ❀ ३३१ ❀ राग देवगंधार ❀ न्हवावत सुत कों नंदरानी । मानत परब रूपचौदस को तिलक उबटनो करि हरखानी ॥ १ ॥ बस्तर लाल जरी आभूषन पहिरावत रुचिसों मनमानी । मेवा लै चले गाय सिंगारन 'ब्रजजन' देखि देखि बिहसानी ॥२॥ ❀ ३३२ ❀ राग देवगंधार ❀ आज न्हाओ मेरे कुंवर कन्हाई मानी काल दिवारी । अति सुगंध केसर उबटनो नये बसन सुखकारी ॥ १ ॥ कछु खावो पकवान मिठाई हों तुम ऊपर वारी । करि सिंगार चले दोऊ भैया तृन तोरत महतारी ॥ २ ॥ गोधन गीत गावत ब्रज पुर मे घर-घर मंगलकारी । 'कृष्णदास' प्रभु की यह लीला गिरिगोवर्धनधारी ॥ ३ ॥ ❀ ३३३ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ गुर के गूंजा पूआ सुहारी । गोधन पूजत ब्रज की हो नारी ॥ १ ॥ घर-घर गोमय प्रतिमा धारी । बाजत रुचिर पखावज थारी ॥ २ ॥ गोद लिये मङ्गल गुन गावत । कमलनैन कों पांय लगावत ॥ ३ ॥ हरद दही रोचन के टीके । यह ब्रज सुर पुर लागत फीके ॥ ४ ॥ राती पीरी गाय सिंगारी । बोलत ग्वाल दै दै कर तारी ॥ ५ ॥ 'हरीदास' गोवर्धनधारी । सुख मानत यह बरस दिवारी ॥६॥ ❀ ३३४ ❀ कार्तिक बदी ३० ❀ दिवाली ❀ मंगला दर्शन ❀ ❀ राग बिलावल ❀ पूजा विधि गिरिराज की नंदलाल बतावे । झुंडन-झुंडन गोपिका मिलि मङ्गल गावे ॥ १ ॥ गङ्गाजल सों न्हवाय के दूध धौरी को नावे । विविध बसन पहरायके चंदन चरचावे ॥ २ ॥ धूप दीप करि आरतो बहु भोग धरावे । तिलक कियो बीरा दिये माला पहरावे ॥३॥ खिरक चले लोहरे बड़े मिलि गाय खिलावे । फिरि गिरिधर भोजन कियो सुख 'सूर' दिखावे ॥ ४ ॥ ❀ ३३५ ❀ शृंगार समय ❀ राग बिलावल ❀ घरी

एक छांडो तात बिहार । राम कृष्ण तुम दोऊ भैया आओ बैठो करो सिंगार ॥ १ ॥ जसुमति कहत है आज अमावस दीपमालिका मङ्गल नाम । घर-घर बालक सबै सिंगारे सुनो स्यामघन राम ॥ २ ॥ खेलेंगी गाय ग्वाल नाचे सब गोपी गावे गीत । 'परमानंददास' यह मङ्गल वेद पुरान पुनीत ॥३॥ ❀ ३३६ ❀ राग बिलावल ❀ आज दिवारी बडो परब घर । कहत जसोदा सुनहु लाल तुम लै लकुटी खेलो अपने कर ॥ १ ॥ प्रथम न्हाओ आछे सोंधे सों गुहि बेनी अंजन देहों नटवर । सूथन लाल तास की झगुली धरो चंद्रिका सुभग सीस पर ॥ २ ॥ पाछे पहरि विविध आभूषन मुरली लो मेरे मुरलीधर । देहों भाल मृगमद को बैंदा जो कोउ दृष्टि न दे तेरे पर ॥ ३ ॥ खेलो तुम मेरे आंगन दोऊ हों देखों अपनी आंखन भर । पान फूल मेवा मिसरी सों झोरी भरि ग्वालन देहों सुन्दर ॥ ४ ॥ सुभग सरूप नंदलालन को मोहित होत देखि सब सुर नर । यह विधि कहत नंदजू की रानी सुनि सुनि सर्वसु वारत 'गिरिधर' ॥ ५ ॥ ❀ ३३७ ❀ राग बिलावल ❀ आज दिवारी मङ्गलचार । ब्रजयुवती मिलि मङ्गल गावत चौक पुरावत नंददुवार॥१॥ मधुमेवा पकवान मिठाई भरि भरि लीने कंचनथार । 'परमानंददास' को ठाकुर भूषन वसन रसाल ॥ २ ॥ ❀ ३३८ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ यह दिवारी बरस दिवारी तुमकों नित नित आओ । नंदराय नंदरानी ढोटा पूजें अति सुख पाओ ॥ १ ॥ पुजवो मनोरथ सब ब्रजजन के देव पितर पुजवाओ । 'श्री विट्ठल गिरिधरन' संग ले गोधन पूजन आओ ॥ २ ॥ ❀ ३३९ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ पूजन चले नंद गिरिवर कों वडरे गोप संग नंदलाल । करि सिंगार अपुअपुने घर ते बालक वृद्ध तरुन सब ग्वाल ॥ १ ॥ लै लै नाम खिलावत गायन धौरी धूमर मदनगोपाल । ब्रजवनिता झुंडनि मिलि निरखत मोहन मूरति स्याम तमाल ॥ २ ॥ अगनित अन्न साकपाकादिक धरत विचित्र पहोंप पत्र माल । गिरिवर रूप

स्यामसुंदर धरि आरोगत वपु बाहु विसाल ॥ ३ ॥ मघवा कोपि मेघ पठवाये जाय करी ब्रज पर जलजाल । राखे सब नग वाम हस्त धरि बाजत वेनु अंगुरिन के चाल ॥ ४ ॥ परयो इंद्र सुरभी ले पायन गयो गर्व पूजे तिहिकाल । देत असीस वारने लै लै वंदत चरन-कमलरज भाल ॥ ५ ॥ आज्ञा मांगि चले निज घर कों सब ब्रज के प्रतिपाल । करि नौछावरि देत सवनकों 'ब्रजभूषण' अति परम रसाल ॥६॥ ❀ ३४० ❀ राग सारंग ❀ पूजा करी देव गोधन की राजा नंद लालगिरिधारी । पहले मानत अति आनंद सों बडो परव त्योहार दिवारी ॥ १ ॥ बड़ी बड़ी गोपवधू नंदरानी हटरी भरत सिहाइ सिहाइ । तिन पर बनी पांत सोने की दीये धरत बनाइ बनाइ ॥ २ ॥ हँसत हँसत दोउ संग बावा के कुंवर लाडिले बैठे आइ । देखनकों ब्रजराज हुलसि मन अपने बंधु लिये जु बुलाइ ॥ ३ ॥ गृह-गृह आई ब्रजसुंदरी सौदा लैन दैन इन साथ । हंसि हंसि कहत लाल हम जाने करन न पाओगे कछु घात ॥ ४ ॥ देहों नहीं तोल ते घटती कहत छबीली सों मुसिकात । 'श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल' तुम बहुत रुगट हू खात ॥ ५ ॥ ❀३४१❀ राग सारंग ❀ पूजि सबै रंगभीने, गोवर्धन । सहस्र भुजा धरि गिरिधर दूजो जेंमत स्याम सखन संग लीने ॥१॥ उमडे सुनि-सुनि बाल वृद्ध अगनित साक पाक घृत कीने । जो कोउ सकुच रहीं गुरुजन की बांह पसारि बोलि तेउ लीने ॥ २ ॥ जयजयकार भयो चहुँ दिसि ते भामिनी सव मिलि गावत सुर भीने । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधरन सदा ब्रज राज करो भक्तन सुख दीने ॥ ३ ॥ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ फूले गोप ग्वाल घर घर ते मानत हैं त्यौहार दिवारी । अपनी अपनी गाय सिंगारी बलदाऊ लालन गिरिधारी ॥ १ ॥ हंसि हंसि लाल कहत सबहिन सों हमारे देव की पूजा व्हैहै । भात दही पकवान मिठाई देखेंगे कैसे वह खैहै ॥ २ ॥ यह सुनि गाम गाम ते ग्वालिन गोवर्धन पूजा कों आई । गूंजा पूआ पूरी दधि

खोवा भली भांतिसों सब मिलि लाई ॥ ३ ॥ अंगुरी गहे नंदबाबा की अति राजत हैं दोऊ भैया । मीठे मीठे वचन कहत है देखि सिहात जसोदा मैया ॥ ४ ॥ अति आनंद देत पहरावत पट वस्तर वहुमोलिक नीके । देत असीस 'श्री विट्ठल' प्रभु कों गिरिधरलाल भामते जीके ॥५॥ ❀ ३४३ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ नीकी खेली गोपाल की गैया । कूकैं देत ग्वाल सब ठाडे यह जु दिवारी नीकी भैया ॥ १ ॥ नंदादिक देखत हैं ठाडे यह जु पाहुनी नीकी पैया । वरसद्योस लों कुसल कुलाहल नाचो गावो करो वधैया ।२। धौरी धेनु सिंगारी मोहन वडरे वृषभ सिंगारे । 'परमानंद' प्रभु राय दामोदर गोधन के रखवारे ॥ ३ ॥ ❀ ३४४ ❀ कान जगाय के मंदिर में पधारते समय ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ देखो इन दीपनकी सुघराइ । जानो घन में विधु मंडल राजत तम निसि परम सुहाइ ॥ १ ॥ नंदराय अगनित पांती लै रचि अद्भुत जुगत वनाइ । विविधि सुगंध कपूर आदि दे घृत परिपूरनताइ ॥ २ ॥ घर-घर मङ्गल होत सवन के उर आनंद न समाइ । 'कुंभनदास' प्रभु धेनु खिलावत गिरिधर सब सुखदाइ ॥ ३ ॥ ३४६ ॥ ❀ हटरी मे आरती को टकोरा होय तब ❀ राग कान्हरा ❀ सुरभी कान जगाय खिरक वल मोहन वैठे राजत हटरी । पिस्ता दाख वदाम छुहारे खुरमा खाजा गूंजा मठरी ॥ १ ॥ घर घर ते नरनारी मुदित मन गोपी ग्वाल जुरे वहु ठटरी । टेर टेर लै देत सवन कों लै लै नाम बुलाय निकटरी ॥ २ ॥ देत असीस सकल गोपीजन जसुमति देत हरखि वहु पटरी । 'सूर' रसिक गिरिधर चिरजीयो नंदमहरको नागर नटरी ॥ ३ ॥ ❀ ३४६ ❀ राग कान्हरा ❀ कान जगाय गोपाल मुदित मन हटरी वैठे गोवर्धन धारी । हलधर संग सुवल श्रीदामा गोप ग्वाल सव गाय सिंगारी ॥ १ ॥ देखन कों मोहे सुर नर मुनि रावर मांझ भीर भइ भारी । जयजयकार होत चहुंदिस ते सुरपति करत कुसुम वरखारी ॥ २ ॥ कंचन रतन जटित हीरा नग विस्वकर्मा रचि सुविधि

सँवारी। परम विचित्र बनी अति सुन्दर जगमगात कुहु तिमिर विदारी नंद भवन भरि धरे विविध पकवान अगनित मेवा गरी छुहारी। टेर टेर तब देत सबन कों सिव ब्रह्मादिक गोद पसारी ॥ ४ ॥ करत आरती मात जसोदा मंगल गावति सब ब्रजनारी। 'सूर' रसिक गिरिधर सुख बिलसत बरस बरस प्रति परव दिवारी ॥ ५ ॥ ❀ ३४७ ❀ राग कान्हरा ❀ दीपदान दे हटरी बैठे नवललाल श्री गोवर्धनधारी। द्वै हेरी पांति बनी दीपन की ब्रज सोभा लागत अतिभारी ॥ १ ॥ तेसेई बने हैं नंद के नंदन तैंसीय बनी राधिका रानी। गृह-गृह ते आई ब्रज सुन्दरी मात जसोदा देखि सिहानी ॥ २ ॥ भांति भांति पकवान मिठाई लैं लै गोद सबन की नावत। आरती करत देत नौछावर फिरि-फिरि मंगल गीत गवावत ॥ ३ ॥ उठ कर लाल खिरक में आये टेरि-टेरि सब सखा बुलाये। 'श्री विट्ठल' गिरिधरन लाल ने सब गायन के कान जगाये ॥ ४ ॥ ❀ ३४८ ❀

❀ कार्तिक सुदी १ अन्नकूट ❀ राजभोग आये ❀ राग विलावल ❀ गिरि पर कोपि चढ़यो इन्द्र रिसाय। ध्रु०। अपनेजु व्रत के काज कारन मनमें अति अकुलाय॥ पठयेजु सुरपति दूत तब तहां गये दौरे धाय। देखि के व्रजराज लीला कहो हमसों आय ॥ १ ॥ एक सांवरो सो नंद-ढोटा कछू कही न जाय। उन मेटि के पूजा तिहारी दई गिरिहि लुटाय ॥ श्रवण सुनि सुरराज कोप्यो भयो अपने भाय। काट बंधन देहु सब के लगो गिरिसों जाय ॥२॥ उमडिजु मघवा चहूंदिस ते व्रजहि देहु बहाय। देखि के परिनाम उनको कहो हमसों आय ॥ सप्त निस दिन मान एको करी अति अकुलाय। नीर और समीर दोनों बहे बहुत बहाय ॥ ३ ॥ देखि धीरज धरे न कोऊ कहा भइ जदुराय। बूंद पाहन के समान बरखत जानो ताय ॥ ग्वाल गोपी गौ वछरुवा रहे सबन सुख चाय। तबहि न मान्यो कह्यो उनको है कोउ अबहि सहाय ॥ ४ ॥ देखि के मन को अंदेसो लियो गिरि जो उठाय। धर्यो

नख के अग्र तब जसुमति जु मनहि सिहाय ॥ देहु लकुटी चहुँ ओरन मति कहूं डिग जाय । सप्त सागर जल सुदर्सन लियो सकल समाय ॥ ५ ॥ भींजे नहिं पाषान पहोमी सलिल सहज सुभाय । गती मति हरी सबै इन्द्र की मदजु लोचन छाय ॥ हार मान के चूक अपुनी करों कौन उपाय । जान्यो नहिं परिनाम तुमरो रह्यो भ्रम जु भुलाय ॥ ६ ॥ गयो मद उतर के तब मिल्यो है सिर नाय । तब कियो सनमान हरिजू इन्द्र छूवे पाय ॥ पीठ थापिके कियो अपनो दियो मन जो वढ़ाय । 'केसौदास' के प्रभु की लीला ते सदा गुन गाय ॥ ७ ॥ ❀३४९❀ गोवर्धन पूजा करके पाछे पधारे तब❀ ❀ राग सारंग ❀ वनेरी गोपाल वाल रस आवत । माधुरी मूरति मनमोहन मन भावत ॥ १ ॥ कुंचित केस सुदेस वदन पर वीच वीच जल वूंद रहे । मानो कमलपत्र पर मोती खंजन निकट सलोल गहे ॥ २ ॥ गोपी-नैन भृंग रस लंपट उडि उडि परत वदन मांही । 'परमानंद दास' रस लोभी अति आतुर कहां जांही ॥ ३ ॥ ❀ ३५० ❀ राग कान्हरा ❀ आवत हैं गोकुल के लोचन । नंदकिसोर जसोदानंदन मदनगोपाल विरह दुख मोचन ॥ १ ॥ गोपवृंद में ऐसे सोभत ज्यों नक्षत्र में पूरन चंद । वनजुधातु गुंजा मनि सेली भेख वन्यों हरि आनंद कंद ॥ २ ॥ वर्हा प्रसून कंठ मनि माला अद्भुत रूप नटवर काछै । कुंडल लोल कपोल विराजत मोहन वेनु वजावत आछै ॥ ३ ॥ भक्त भ्रमर पावन जस गावत इहि विधि व्रज प्रवेस हरि कीनों । 'परमानंद' प्रभु चलत ललित गति जसुमति धाय उछंगनि लीनों ॥ ४ ॥ ❀ ३५१ ❀ राग केदारा ❀ आओ मेरे या गोकुल के चंदा । वड़ी वार खेलत जमुना तट वदन दिखाइ देहु आनंदा ॥ १ ॥ गायनि आवन की भई विरियां दिनमनि किरनि भई अति मंदा । आए तात मात छतियां लगे 'गोविंद' प्रभु व्रजजन सुखकंदा ॥ २ ॥ ❀ ३५२ ❀ तिलक होय तब ❀ ❀ ❀ गोवर्धन पूजके घर आये । जननी जसोदा करत आरती

मोतिन चौक पुराये ॥ १ ॥ मंगल कलस विराजत द्वारे वंदनवार बंधाये। 'लालदास' गिरिधर गिरि पूज्यो भये भक्त मनभाये ॥ २ ॥ ❀ ३५३ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग मालव ❀ जै जै जै मोहन बल वीर। जै जै इन्द्रमान मद भंजन श्री गोवर्धन उधरन धीर ॥ १ ॥ जै जै जै गोकुल दुख मोचन जै जै जै वर भेख अभीर। मनिगन अभरन लसत पीतपट जैं जैं जै घनस्याम सरीर ॥२॥ जैं जैं अद्भुत चरित मनोहर श्रीराधा रस गुन गंभीर। 'कृष्णदास' प्रभु सब विधि समरथ अद्भुत जसु गावत मुनि कीर ॥ ३ ॥ ❀ ३५४ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ कान्ह कुंवर के करपल्लव पर मानों गोवर्धन नृत्य करे। ज्यों ज्यों तान उठत मुरली की त्यों त्यों लालन अधर धरे ॥१॥ मेघ मृदंगी मृदंग बजावत दामिनी दमक मानों दीप जरैं। ग्वाल ताल दैं नीके गावत गायन के सुत सुरजु भरैं ॥ २ ॥ देत असीस गोपीजन बरखा को जल अमित भरैं। अति अद्भुत अवसर गिरधर को 'नंददास' के दुखजु हरैं ॥ ३ ॥ ❀ ३५५ ❀

भाई दूज (कातिक सुदी २)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ गोवर्धन नख पर धरयो मेरे वारे कन्हैया। दधि अच्छत फल फूल ले भुज चरचत मैया ॥ १ ॥ जुरि आईं सब घोख की औरेजु अढैया। ग्वाल बाल पायन परे गोपी लेत बलैंया॥२॥ बलदाऊ फूल्यो फिरैं जग जीत्यो रे भैया। 'परमानंद' आनंद में ब्रज बजत बधैया ॥ ३ ॥ ❀ ३५६ ❀ शृङ्गार समय ❀ राग बिलावल ❀ आव गुपाल सिंगार बनाऊं। विविध सुगंध उबटि कें लालन पाछैं उष्ण जल सों जु न्हवाऊं ॥ १ ॥ आंगु अंगोछि गुहों तेरी बेनी फूलनि रचि रुचि भाल बनाऊं। सुरंग पाग जरतारी टोरा रतन जटित सिर पेच बंधाऊं ॥ २ ॥ बागो लाल सुनेरी छापो हरी इजार चरनन बिरचाऊं। पटुका सरस बैंजनी रंग को हंसुली हेम हमेल बनाऊं ॥ ३ ॥ गजमोतिन के हार मनोहर मनि

माला लै तोहि पहेराऊं। कर दर्पन ले देखो बारे निरखि निरखि दोउ दृगनि सिराऊं ॥ ४ ॥ मृदु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लै तुमहि जिमाऊं। 'विष्णुदास' कों यह कृपा फल बाललीला हों निसुदिन गाऊं ॥ ५ ॥ ❀ ३५७ ❀ राग विलावल ❀ पीतांबर को चोलना पहिरावति मैया। कनिक छाप ऊपर धरी झीनी इकतैया ॥ १ ॥ लाल इजार चुनाव की जरकसी चीरा। पहोंची रतन जराय की उर राजत हीरा ॥ २ ॥ देखि देखि मुख जसुमती फूली अंग न माई। काजर दै बैंदा दियो ब्रजजन मुसिकाई ॥ ३ ॥ नंदबबा मुरली दई कह्यो ऐसे बजाइ। जोइ सुने जाको मनु हरै 'परमानंद' गाइ ॥ ४ ॥ ❀ ३५८ ❀ राग बिलावल ❀ बलिहारी गोपाल की गोवरधन धारयो। इन्द्र ढीठ मदमत्त को जिन गर्व प्रहारयो ॥ १ ॥ बहुत यत्न मघवा किये पीछो न समारयो। बैर कियो ब्रजनाथ सों आपुन ही हारयो ॥ २ ॥ लै सुरभी पायन परयो अपराध निवारयो। 'कृष्णदास' के प्रान को हँसि वदन निहारयो ॥ ३ ॥ ❀ ३५९ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ आज बन्यो नव रंग पियारो। ब्रज वनिता मिलि क्यों न निहारो ॥ १ ॥ लटपटी पाग महावर पागे। कुंवरि मनावत अति बड़ भागे ॥२॥ नीलांबर नख रेख जु सोहे। देखत मन्मथ को मन मोहे ॥३॥ कहूं चन्दन कहूं बंदन की छबि। अंग राग बहु भांति रह्यो फबि ॥ ४ ॥ मदनमोहन पिय यह विधि देखौ। 'दास गोपाल' जीवन फल लेखौ ॥१॥ ❀३६०❀ ❀ तिलक होय तब ❀ झांझ पखावज सूं ❀ राग सारंग ❀ आज दूज भैया की कहियत कर लिये कंचन थाल के। करो तिलक तुम वहिन सुभद्रा बल अरु श्रीगोपाल के ॥ १ ॥ आरती करत देत नौछावरि वारति मुक्तामाल के। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर प्रेमपुंज ब्रजवाल कै ॥ २ ॥ ❀ ३६१ ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ लाडिले गोपाल आज हमारे भोजन कीजे। बहुत भांति पकवान मिठाइ खटरस व्यंजन लीजे ॥ १ ॥ सद्य घी खिचरी

अरु खोवा स्याम सलोने लीजे। उर्द के बरा दही में वोरे कछु कोरे कछु भीजे ॥२॥ संग समान सखा सव लावहु बांटि सबन कों दीजे। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर पान्यो पछावरि पीजे ॥ ३ ॥ ❀ ३६२ ❀ राग सारंग ❀ वल गइ स्याम मनोहर गात। तिहारो वदन सुधानिधि सीतल अचवत दृगन अघात ॥ १ ॥ पलक ओट जिनि जाउ पियारे कहत जसोदा मात। छिन एक खेलन जात घोख में पल जुग कल्प विहात ॥ २ ॥ भोजन आन करो दोउ भैया कुंवर लाडिले तात। 'परमानंद' कहत नंदरानी प्रेम लटपटी वात ॥ ३ ॥ ❀ ३६३ ❀ राग सारंग ❀ कहत प्यारी राधिका अहीर। आज गुपाल पाहुने आये परसि जिमाऊं खीर ॥ १ ॥ वहुत प्रीति अंतर्गत मेरे पलक ओट दुख पाऊं। जानत जाऊं संग गिरिधर के संग मिले गुन गाऊं ॥ २ ॥ तिहारो कोऊ विलग न माने लरिकाई की वात। 'परमानंद' प्रभु भवन हमारे नित उठि आओ प्रात ॥ ३ ॥ ❀ ३६४ ❀ राग सारंग ❀ आज गोपाल पाहुने आये निरखे नैंन अघायरी। सुंदर वदन कमल की सोभा मो मन रह्यो लुभायरी ॥ १ ॥ के निरखूं के टहेल करूं एको नहिं वनत उपायरी। जैसे लता पवन वस द्रुम सों छूटत फिरि लपटायरी ॥ १ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाइ व्यंजन वहुत वनायरी। राग रंग मे चतुर 'सूरप्रभु' कैसे सुख उपजाय री ॥ ३ ॥ ❀ ३६५ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ भोजन कर जु उठे दोऊ भैया। हस्त पखारि सुध अचवन करिके वीरी लेहु कन्हैया ॥१॥ मात जसोदा करत आरती पुनि पुनि लेत वलैया। 'परमानंददास' को ठाकुर व्रजजन केलि करैया ॥ २ ॥ ❀३६६❀ राग सारङ्ग ❀ पान खवावत करि करि वीरी। एक टक ह्वै मोहन मुख निरखत पलक न परत अधीरी ॥ १ ॥ हँसत निहारत वदन स्याम को तन की सुधि विसरीरी। 'रसिक' प्रीतम के अंग संग मिलि छतियां भइ अति सीरी ॥ २ ॥ ❀ ३६७ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारग ❀ आओ रे आओ भैया ग्वालो या पर्वत की

छैयां। नाचो गावो करो बधाई सुखन चराओ गैयां ॥ १ ॥ जिन तुमरो पकवान जु खायो सोई रच्छा करि हैं। 'परमानंददास' को ठाकुर गिरिगोवर्धन धरि हैं ॥ २ ॥ ❀ ३६८ ❀ राग सारंग ❀ तार व तारो री ब्रजजन लोचन ही को तारो। सुनि जसुमति तेरो पूत सपूत अति कुल दीपक उजियारो ॥ १ ॥ धेनु चरावन जात दूर तब होत भवन अति भारो। घोख संजीवनि मूर हमारी छिन इत उत जिनि टारो ॥ २ ॥ सात द्योस गिरिराज धरयो कर सात बरस को बारो। 'गोविन्द' प्रभु चिरजीयो रानी तेरो सुत गोप वंस रखवारो ॥ ३ ॥ ❀ ३६९ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मालव ❀ सांवरे बलि गई भुजन की। क्यों गिरि सुबल धरयो कर कोमल बूझति हों गति तन की ॥ १ ॥ इन्द्र रिसाय बरख्यो ब्रज ऊपर ते हू तो हठि हारे। भेटत ग्वाल कहत हँसि भैया तैं हम भले उबारे ॥ २ ॥ हरद दूब अच्छत दधि कुमकुम हरखि जसोदा लाई। कर सिर तिलक चरन-रज वंदित मनों रंक निधि पाई ॥ ३ ॥ परसे चरन कमल ब्रज-सुंदरी हरखि-हरखि मुसिकाई। फिरि-फिरि दरसन करत याहि मिस मन की प्रीति दुराई ॥ ४ ॥ 'सूरदास' सुरपति जिय कंपत सुरभी संग लै आयो। तुम दयाल अविगत अविनासी मैं कछु मरम न पायो ॥५॥❀३७०❀कार्तिक सुदी ७❀शृंगार समय❀राग बिलावल❀ गोवर्धन धरनी धरयो मेरे बारे कन्हैया। दधि अच्छत फल फूल ले भुज पूजत मैया ॥ १ ॥ विप्र बोलि वरनी करी दीनी बहु गैया। ग्वाल बाल पायन परे गोपी लेत बलैया ॥ २ ॥ नंद मुदित मन फूल ही कीरति युग भैया। 'परमानंद' ब्रज राखि लियो खेलत लरकैया ॥ ३ ॥ ❀ ३७१ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ गोवर्धन गिरि कर धरयो मेरे बारे कन्हैया। बूझति जसुमति लाल कों सुत जानि नन्हैया ॥ १ ॥ माखन दूध खवाय के कीनों मोटो री मैया। तेरे पुन्य प्रताप ते कीनी ब्रजजन छैया ॥ २ ॥ इन्द्र मान मर्दन कियो आयो पांय परैया। यह लीला ब्रज नित रहो गावे 'दास'

सदैया ॥ ३ ॥ ❀ ३७२ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ याते जिय भावे सदा गोवर्धनधारी । इन्द्रकोप ते नंद की आपदा निवारी ॥ १ ॥ जे देवता अराधिये ते हरि के भिखारी । अन्य देव कित सेविये बिगरे अपकारी ॥२॥ दुःसासन के क्रोध ते द्रौपदी उबारी । 'परमानंद' प्रभु सांवरो भक्तन हितकारी ॥ ३ ॥ ❀ ३७३ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ चिरजियो लाल गोवर्धन धारी । सात द्योस जल वृष्टि निवारी या ढोटा पर वारी ॥ १ ॥ देवराज परतिग्या मेटी गोपभेख लीला अवतारी । नलकूबर मनिग्रीव उधारे बालक-दसा पूतना मारी ॥ २ ॥ देत असीस सकल गोपीजन राज करो वृन्दावन चारी। 'परमानंददास' को ठाकुर अनुदिन आरति हरत हमारी॥३॥ ❀३७४❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडाना ❀ सुरराज आज पायन परयो गिरिधरन आपुनो करयो । तजि गज ब्रजरज लोटत आयो सुरभी उपहार लायो वदन निरखि मगन भयो कनक दंड लों धरनी परयो ॥ १ ॥ तब गोपाल भये कृपाल पीतांबर फहरायो कान्ह अभय कर सीस धरयो । 'हरिनारायन स्यामदास' के प्रभु माइ चरन सरन रहत सदा ही सब विधि अनुसरयो ॥२॥ ❀३७५❀

गोपाष्टमी (कार्तिक सुदी ८)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ चल री सेन दई ग्वालिन कों मोहनलाल बजायो बैन । प्रात समे जागे अनुरागे वृन्दावन आनंदनिधि माई चले चरावन धैन ॥ १ ॥ बरन बरन बानिक बनि आये पट भूखन जसुमति पहिराये भाल तिलक दे आंजे नैन । 'हरिनारायन स्यामदास' के प्रभु माइ प्रगट भये धरि सीस चंद्रिका सब ब्रजजन सुख दैन ॥२॥ ❀३६६❀ग्वाल बोले❀ ❀ राग आसावरी ❀ प्रथम गो चारन चले कन्हाई । माथे मुकुट पीतांबर की छबि वनमाला पहराई ॥ १ ॥ कुंडल श्रवन कपोल बिराजत सुंदरता बनि-आई । घरघर ते सब छाक लेत है संग सखा सुखदाई ॥ २ ॥ आगे धेनु हांके सब लीनी पाछे मुरली बजाई । 'परमानन्द' प्रभु मनमोहन ब्रजवासिन

सुरति कराई ॥ ३ ॥ ❀३७७❀ राग सारंग ❀ चले वन गोचारन सब गोप। प्रात समें सर कमल खंड ते मनों हंसन के ओप ॥ १ ॥ स्याम पीतपट राम नीलपट जनु काछैं सिखु पुंज। महुवरि वेनु विसान वांसुरी जनु साजैं अलिगुंज ॥ २ ॥ तिन में नंदनंदन की सोभा ज्यों उडुगन में चन्द। 'परमानंद' जसोदा के गृह प्रगटे आनंदकन्द ॥ ३ ॥ ❀ ३७८ ❀ राग आसावरी ❀ मैया गाय चरावन जैहों। तू कहि महर नंदवावासों वड़ो भयो न डरैं हों ॥ १ ॥ श्रीदामा दे आदि सखा सब और हलधर संगलैहों। दह्यो भात कावरि भरि लैहों भूख लगे तब खैहों ॥ २ ॥ वंसीवट की सीतल छैया खेलत में सुख पैहों। 'परमानन्ददास' संग खेलों जाय जमुना तर न्हैहों ॥ ३ ॥ ❀ ३७९ ❀ राग आसावरी ❀ व्रज ते वन कों चलत कन्हैया। ग्वालमंडली मधि वल मोहन पहिलें चराई गैया ॥ १ ॥ नंद सुनंद गोप गोपीजन जसुमति रोहिनी मैया। बड़रे ग्वालन कों सुत सोंपत पुलकित लेत बलैया ॥२॥ दधि ओदन भोजन भरि छींके एकन कांधे चलैया। मुरली मधुर बजावत गावत हरि हलधर दोऊ भैया ॥ ३ ॥ वैठे जाय सघन वन अन्तर गौ दुहि मथत हैं घैया। आपुन पीवत औरन ध्यावत 'रसिक' निरखि बलि जैया ॥ ४ ॥ ❀ ३८० ❀ राग सारंग ❀ आज अति आनंदे व्रजराय। धन्य दिवस वन चलत प्रथम ही कान्ह चरावन गाय ॥ १ ॥ अपनो पीतांबर लकुटी मुरलिका और सिर खौरि बनाय। प्रीति सहित अवलोकि गहत हैं मात पिता के पाय ॥ २ ॥ गौरोचन दूध दधि माथे रोरी अच्छत लाय। निरखि-निरखि सुख अति आनंदित गोपीजन लेत बलाय ॥ ३ ॥ ग्वाल विमल भये लेत परस्पर घर-घर ते सब आय। हेरी लेत बजावत महुवरि उर आनन्द न समाय ॥ ४ ॥ व्रजजन सब मिलि धेनू सोंपति नैन निरखि सुख पाय। 'परमानन्द' प्रभु बानिक ऊपर वारि-वारि बलि-बलि जाय ॥ ५ ॥ ❀ ५८१ ❀ राग सारंग ❀ सोहत लाल लकुट

कर राती। सूथन कटि चोलना अरुन रंग पीतांवर की गाती ॥ १ ॥ ऐसे गोप सबै बनि आये है सब स्याम संगाती। प्रथम गोपाल चले जु वच्छ लै असीस पढ़त द्विज जाती ॥ २ ॥ निकट निहारत रोहिनी मैया आनन्द उपज्यो छाती। 'परमानन्द' नन्द आनन्दित दान देत बहु भांती ॥ ३ ॥

❀ ३८२ ❀ शृङ्गार आरती समय ❀ राग सारङ्ग ❀ चले हरि वच्छ चरावन माई। टेरे पहले तोक श्रीदामा लीने संग लगाई ॥ १ ॥ कहत गोपाल सुनो सब कोऊ वृन्दावन में जैये। मधु मेवा पकवान मिठाई भूख लगे तव खैये ॥२॥ खेलत हँसत करत कोलाहल आये जमुना तीर। 'परमानन्ददास' को ठाकुर राम कृष्ण दोऊ वीर ॥ ३ ॥

❀ ३८३ ❀ राजभोग आये राग सारङ्ग ❀ पीत उपरना वारे ढोटा कहिके टेरे ग्वालिनी। छाक बनाय ले आई विविध विधि कालिंदी तीर उपहारिनी ॥ १ ॥ कहा लेहुगे ऐसी गाय चरायवे में जाय संमारा क्यों न अपनी छकहारिनी। 'रसिक'प्रीतम पिय रूप विमोहित कुंजन कुञ्जविहारिनी ॥ २ ॥

❀ ३८४ ❀ राग सारङ्ग ❀ बंसीबट बैठे हैं नन्दलाल। भयो है मध्यान्ह छाक की बिरिया अपनी अपनी गैया छैंया ले आवो ब्रजवाल ॥ १ ॥ ग्वाल मंडली मध्य विराजत करत परस्पर भोजन नवल वने गोपाल। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सब सुख रसिक रसाल ॥२॥

❀ ३८५ ❀ राग सारङ्ग ❀ विहारीलाल आवो आई छाक। भई अवेर गाय वहु चरावहु उलटावहु रे हांक ॥१॥ अर्जुन भोज सुवल श्रीदामा मधु मङ्गल के ताक। अपुनी अपुनी पातर लेके बैठे फैल फराक ॥ २ ॥ खटरस खीर खांड़ घृत भोजन बहु पकवान पराक। 'सूरदास' प्रभु जैंवत रुचि सों प्रेम प्रीत के पाक ॥ ३ ॥

❀ ३८६ ❀ राग सारङ्ग ❀ कुमुदवन भली पहुँची आय। सुफल भई है छाक तिहारी लाल कदमतर पाय ॥ १ ॥ तहांते उठि चले मानसरोवर संग सखा सब लाय। बैठत तहां ठौर गिरि ऊपर चरत चहुं दिसि गाय ॥ २ ॥ खेलत खावत हँसत परस्पर बातें कहत बनाई।

'रामदास' बलि-बलि बूझनि की कहा कहा व्यंजन लाई ॥३॥ ❀३८७❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ कौन बन जैहो भैया आज । कहत गोपाल सुनोहो बालक करो गमन को साज ॥ १ ॥ ऐसो चतुर कौन नन्दनन्दन जो जाने रस रीति । तहां चलो जहां हरखि खेलिये अरु उपजे मन प्रीति ॥ २ ॥ पूरे बेनु बखान महुवरी छींक कंध चढाये । रोटी भात दही भरि भोजन और आगे दे ग्वाल गाये ॥ ३ ॥ ठौर ठौर कूकैं दे प्रहसत आये जमुना तीर । 'परमानन्द' प्रभु आनन्द रूप राम कृष्ण दोऊ वीर ॥ ४ ॥ ❀ ३८८ ❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ गोपाल आज कानन चले सकारे । छींके कांधे बांधि दधि ओदन गोधन के रखवारे ॥ १ ॥ प्रात समय गोरंभन सुनि के गोपन पूरे शृंग । बजावत पत्र कमल दल लोचन जानो उठि चले भृंग ॥ २ ॥ करतल वेनु लकुटिया लीने मोरपंख सिर सोहे । नटवर भेख वन्यो नंदनंदन देखत सुर नर मोहे ॥ ३ ॥ खग मृग तरु पंछी सचुपायो गोपवधू बिलखानी । बिछुरत कृष्ण प्रेम की वेदन कछु 'परमानन्द' जानी ॥ ४ ॥ ❀ ३८९ ❀ भोग सरे ❀ राग सारङ्ग ❀ छाक खाय-खाय धाय जाय द्रुमन चढ़त फैंटा मुख पोंछत अंगोछत कर सों कर । अवनी डंडान डार दुरावत जाकी आर रोवनी रुवाय छांड़ि हंसे सब हरहर ॥ १ ॥ एक ग्वाल ताकत एक झांकत है रू भये खिजोरा खीझि गारी देत कांपत है थरथर । 'जगजीवन' गिरिधारी तुम पर वारी लाल याही पर राखो दाव कूदे सब धरधर ॥ २ ॥ ❀ ३९० ❀ राग सारङ्ग ❀ बैठे लाल कालिंदी के तीरा । लैं राधे गिरिधर दै पठयो यह प्रसादको वीरा ॥ १ ॥ समाचार सुनिये श्रीमुख के जै कहे स्यामसरीरा । तेरे कारन चुनि चुनि राखे ये निरमोलिक हीरा ॥२॥ सुन्दरस्याम कमलदल लोचन पहिरे है पट पीरा । 'परमानन्ददास' को ठाकुर लोचन भरत अधीरा ॥ ३ ॥ ❀ ३९० ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारङ्ग ❀ गोविंद चले चरावन गैया । हरखि हरखि कहे आज भलो दिन

कहत जसोदा मैया ॥ १ ॥ उबटि न्हवाय बसन भूखन सजि विप्रन देत बधैया। करि सिर तिलक आरती वारति फिरि-फिरि लेत बलैया ॥ २ ॥ 'चत्रभुजदास' छाक छीके सजि सखन सहित बलभैया। गिरिधर गमन देखि आंको भरि मुख चूम्यो नंदरैया ॥ ३ ॥ ❀ ३९२ ❀ भोग के दर्शन ❀ ❀ राग पूरवी ❀ धौरी धूमर कारी काजर पियरी पीयर कहि कहि टेरत। वाम भुजा मुरली कर लीने दच्छिन कर पीतांबर फेरत ॥ १ ॥ दुरि नागर नट कालिंदी तट लकुट लिये कर गावत फेरत। हूंक हूंक एक बार गज सप्त धाई 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधारी हँसि टेरत ॥ २ ॥ ❀ ३९३ ❀ राग पूरवी ❀ गैया गई दूर टेरो जु कान। जो ऊंचे चढि टेर सुनाओ सब बग-देंगी मेरे जान ॥ १ ॥ बृंदावन मे चरत हरे त्रन चित चमकी टेर परत कान। दूध धार धरनी सींचत आई जहांरी गोविंद प्रभु करत कमल मुख-पान ॥ २ ॥ ❀ ३९४ ❀ राग पूरवी ❀ चेरी कीनी हो नन्ददुलारे। नीकी सरस बजाई मुरली गायन के रखवारे ॥ १ ॥ रुचि कर कमल गुंजमाला गरे मोरमुकुट छबि बारे। 'जगन्नाथ' कविराय के प्रभु माई मोही कान्हर कारे ॥ २ ॥ ❀ ३९५ ❀ राग पूरवी ❀ ए हांकि हटकि-हटकि गाय ठठकि ठठकि रही गोकुल की गली सब सांकरी। जारी अटारी झरोखनि मोखनि झांकत दुरि मुरि ठौर ठौर ते परत कांकरी ॥ १ ॥ कुंदकली चंपकली बरखत रसभरी तामें पुनि देखियत लिखे से आंकरी। 'नन्ददास' प्रभु पाछे ते टेरत काहू सों हां करी काहू सों ना करी ॥ २ ॥ ❀ ३९६ ❀ संध्या समय ❀ राग पूरवी ❀ गोधन पाछे पाछे आवत, नटबर काछे छुरित अलक तिलक की छवि मोपे वरनी न जाई। कनक कुंडल लोल लोचन मोहन बेनु बजावत ॥ १ ॥ प्रिय सखा भुजा अंस धरे नील कमल दच्छिन कर मधुव्रत श्रुति देत छेद मंद मधुर गावत। 'गोविंद' प्रभु वदनचंद जुवतिन मन नैन चकोर रूपसुधा पान करत काहेन जिय भावत ॥ २ ॥ ❀३९७❀

❀ सैन भोग आये ❀ राग ईमन ❀ कहो कहां खेलेहो लालन बात कहो मोसों बन की। आओ उछंग सांवरे मोहन गोरज पोंछों बदन की ॥ १ ॥ देखोरी बदन-कमल कुम्हिलानो ओर अवस्था भई तन की। 'रसिक' प्रीतम कों लें नन्दरानी बलि-बलि छगन मगन की ॥ २ ॥ ❀ ३६८ ❀ राग ईमन ❀ लाल तुम कैसे गाय चराई। ग्वालन संग छैया में बैठे कौन बिपिन में जाई ॥ १ ॥ कहां-कहां खेले बालक लीला छुवत परस्पर धाई। लै कांधे हारो जीते कों दियो ठौर पहुँचाई ॥ २ ॥ ठाड़े कहाँ कदम तर गिरिधर मधुरी वेनु बजाई। मूंदे दृग दुरि-दुरि हो ग्वाल तुम दीने कहा बताई ॥३॥ गिरि चढ़ि कहाँ बुलाई गैयां ऊंची टेर सुनाई। 'परमानन्द' प्रभु कहहु कृपानिधि बूझति जसोदा माई ॥ ४ ॥ ❀ ३९९ ❀ राग ईमन ❀ मैया हों न चरैहों गाँय। सबरे ग्वाल घिरावत मोपै दूखत मेरे पाँय ॥ १ ॥ जब हों घेरन जावत नाहीं कितनी बेर चराय। मोहि न पत्याय बूझि बलदाऊ अपनी सोंह दिवाय ॥ २ ॥ हों जानत मेरे कुंवर कन्हैया लेत हिरदे लगाय। 'परमानन्ददास' की जीवन ग्वालन पर जसुमति जु रिस्याय ॥३॥ ❀ ४०० ❀ राग ईमन ❀ मैया में कैसी गाय चराई। बूझि देख बलभद्र दादासों कैसी मैं टेर बुलाई ॥ १ ॥ बिडरि चली सघन बन महियां हेरी दै ठहराई। ग्वालन के लरिका पचिहारे वे सब मेरी दांई ॥ २ ॥ भली-भली कहि महरि हँसत हैं फूली अङ्ग न माई। 'परमानन्द' प्रभु वीर वचन सुनि जसुमति देत बधाई ॥ ३ ॥ ❀ ४०१ ❀ राग कान्हरा ❀ धेनन को ध्यान निसदिन मेरे मोहन कों सपने कहत गोरी गैया नहि आई। आनन उजारी बनवारी हों संमार लाउं वा बिन आउं तो मोहे बाबा की दुहाई ॥ १ ॥ कजरारी कठीवारी मखतूली फोंदावारी झांझरी झनकार प्यारी मो मन भाई। 'हरिनारायन श्यामदास' के प्रभु देखि हों तो झक रही चिरजियो री कन्हाई ॥ २ ॥ ❀ ४०२ ❀ राग ईमन ❀ कैसे-कैसे गाय चराई हो गिरिधर।

गौरज मुख ते झारि जसोदा लेत बलैया फिर कर ॥ १ ॥ कहाँ रहे तुम घाम छाँह मधि घन वरसन लाग्यो बल समेत सुन्दरवर । 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सब सुखसागर हम न डरत इन बादर ॥ २ ॥ ❀ ४०४ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कानरा ❀ आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविंदा कों गायन में बसवोइ भावे । गायन के संग धावे गायन में सचुपावे गायन की खुररज अंग लपटावे ॥ १ ॥ गायन सों व्रज छायो वैकुंठ बिसरायो गायन के हित कर गिरि ले उठावे। 'छितस्वामी' गिरिधारी विट्ठलेस वपु धारी ग्वारिया को भेख धरे गायन में आवें ॥ २ ॥ ❀ ४०४ ❀ मान पोढ़वे में ❀ राग विहाग ❀ काहे न वोलत नागरी बैना। तोहि मिलन कों वहोत करत है गिरिधरलाल कमलदल नैना॥१॥ जवते दृष्टि परी मोहन की विसरयो गोचारन ग्वालन की सेना । रटत है सुर राधे-राधे कहि कहुं बनमाल कहूं उपरैना ॥२॥ ❀४०५❀ राग विहाग❀ बलैया लैहों पोढ रहो घनस्याम । अतिश्रम भयो वन गौ चरावत द्यौस परी है घाम ॥ १ ॥ सियरी व्यार झरोखन के मग आवत अति सीतल सुखधाम । 'आसकरन' प्रभु मोहननागर अंग-अंग अभिराम ॥ २ ॥ ❀ ४०६ ❀

प्रबोधिनी (कार्तिक सुदी ११)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग विलावल ❀ गोविंद तिहारो सरूप निगम नेति-नेति गावे । भक्त हेत स्यामसुन्दर देह धरि आवे ॥ १ ॥ योगी मुनी ज्ञानी ध्यानी सपने नहीं पावे । नंद-घरनि बांधि-वांधि कपि ज्यों नचावे ॥ २ ॥ गोपीजन प्रेम आतुर संग लागि वोले । मुरली के नाद सुनत गृह तजि वन डोले ॥ ३ ॥ श्रुति स्मृति वेद पुरान कहत मुनि बिचारी । 'परमानंद' प्रेम कथा सवहिन तें न्यारी ॥ ४ ॥ ❀ ४०७ ❀ शृंगार समय ❀ देव जगे तव ❀ ❀राग विलावल❀ जागे जगजीवन जगनायक। कियो प्रवोध देवगन जव ही उठे जगत सुखदायक ॥१॥ जा प्रभु की प्रभुताई भारी सिव ब्रह्मादिक पायक ।

कमला जाके पाँय पलोटत निपुन निगम से गायक ॥ २ ॥ जब-जब भीर परे भक्तन पै तब-तब होत सहायक । 'परमानंद' प्रभु भक्तवत्सल हरि जिनके मन वच कायक ॥ ३ ॥ ❀ ४०८ ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग बिलावल ❀ आज प्रबोधिनी परम मोदकर चलि प्यारी पिय पै लै जाऊं । बहुत ईख रस-कुंज पुंज रचि चहूं ओर दीपकन सुहाऊं ॥१॥ चित्र-विचित्र भूमि अति चित्रित करि उत्थापन हरिहि जगाऊं । ताल मृदङ्ग झांझ संखध्वनि द्वारे वंदनवार बँधाऊं ॥ २ ॥ चार याम जागरन जागिकैं चारि भोग अधरामृत पाऊं । 'रसिक' प्रभू के रहसि-सिंधु मैं नैनन-मीन झकोर न्हवाऊं ॥ ३ ॥ ❀४०९❀ राग बिलावल ❀ आज एकादसी देव-दिवारी तजो निद्रा उठो गिरिधारी । सकल विस्व को प्रबोध कीजे जागो परम चतुर बनवारी ॥ १ ॥ सुभग महूरत भवन बधाई निरखत बसन परम रुचिकारी । 'परमानंददास' या छवि पर वारि-वारि जाऊं बलिहारी ॥ २ ॥ ❀४१० ❀ राग बिलावल ❀ सुकल पक्ष और सुकल एकादसी हरि प्रबोध दिन आयो । चंदन भवन लिपाय जसोदा मोतिन चौक पुरायो ॥ १ ॥ मंडप रच्यो समार ईख सों वंदनवार बंधाई । चहूंओर धरिकैं दीपावलि ब्रजनारी मिलि मंगल गाई ॥ २ ॥ पंचामृत विधि सालिग्रामे राजा नंद न्हवावे । नौतन तूल रचे पाटंबर प्रेम सहित पहिरावे ॥ ३ ॥ वेद पुरान मंत्र मरियादा विधि जगदीस जगावे । कंद मूल फल पानादिक लै बहुविधि भोग धरावे ॥ ४ ॥ लखि ब्रजनारि जाय घर अपने भवन सकल विधि कीनों । जसुमति सुत पधराय प्रेम सों भक्त मांगि सब लीनों ॥ ५ ॥ नंद-भवन में आय ब्रजवधू चारजाम निसि जागे । उन उपनेह पुष्टि-रस कारन मोहन भोजन मांगे ॥ ६ ॥ अपुने-अपुने गृह ते भरिकैं लावत हैं पकवान । ब्रजभामिनी के हाथ लेत हैं देत पुष्टिरस दान ॥ ७ ॥ दै बीरा आरती उतारत यह विधि चारों याम । विट्ठल प्रभु की कृपादृष्टि ते 'माधो' पूरन काम ॥८॥ ❀४११❀ राग बिलावल ❀ सुभग

प्रबोधिनी सुभग आज दिन सुभग सखी प्रीतमहि मिलाऊं। चहूंओर दीपक घृत पूरित मध्य इन्नु की कुंज बनाऊं ॥ १ ॥ सुभग भूमि पर चौक पुराऊं तहाँ प्रभु कों पधराऊं। घंटा ताल मृदङ्ग संखधुनि ऊपर सुभग सफेदी उढाऊं॥ २ ॥ चारों याम जागरन कराऊं चारों भोग धराऊं। हरखि-हरखि गुन गाऊं 'स्याम के दास' सदा सुख पाऊं ॥ ३ ॥ ❀ ४१२ ❀ ❀ आरती समय ❀ राग विलावल ❀ नंद को लाल उठ्यो जब सोय। देखि मुखारविंद की सोभा कहो काके मन धीरज होय ॥ १ ॥ मुनि-मन हरन युवति को बपुरी रतिपति जात मान सब खोय। ईषदहास दसन-दुति बिकसत मानिक ओप धरे जानो पोय॥ २ ॥ नवलकिसोर रसिक चूड़ामनि मारग जात लेत मन गोय। 'सूरदास' मन हरन मनोहर गोकुल बसि मोहे सब लोय ॥ ३ ॥ ❀ ४१३ ❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ यह तो भाग्यपुरुष मेरी माई। मोहन कों गोदी में लीने जैंवत हैं ब्रजराई ॥१॥ चुचकारत पौंछत अंबुज मुख उर आनंद न समाई॥ २ ॥ चिबुक केस जंब गहत किलकि कैं तब जसुमति मुसकाई। माँगत सिखरन दै री मैया बेला भरि के लाई॥ ३ ॥ अङ्ग-अङ्ग प्रति अमित माधुरी सोभा सहज निकाई। 'परमानंद' नारद मुनि तरसत घर बैठे निधि पाई॥ ४ ॥ ❀ ४१४ ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ सुत हि जिमावत जसोदा मैया। सानत कौर मधुर मृदु मीठो दै मुख लेत बलैया॥ १ ॥ खेलन कों उठि-उठि भाजत हैं राखत है बहोरैया। आओ चिरैया आओ खुमरैया ग्वालिन लेत बलैया॥ २ ॥ तुम जैंओ मिल संग लाल के बहु विधि ख्याल खेलैया। 'श्रीविट्ठल गिरिधर' माता की प्रीति कही नहीं जैया॥ ३ ॥ ❀ ४१५ ❀ राग धनाश्री ❀ लाल कों मीठी खीर जो भावे। बेला भरि लावत है जसोदा बूरो अधिक मिलावे ॥ १ ॥ कनिया लिये जसोदा ठाड़ी रुचिकर कोर बनावे। ग्वाल-वाल वनचर के आगे झूठो हाथ दिखावे ॥२॥ ब्रजरानी जो चहुँधा चितवत

तन मन मोद बढ़ावे । 'परमानंददास' को ठाकुर हँसि-हँसि कंठ लगावे ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ४१६ ❀ राग आसावरी ❀ हरि भोजन करत विनोद सों। करि-करि कौर मुखारविंद में देत जसोदा मोद सों ॥ १ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई दूध दह्यो घृत ओद सों। 'परमानंद' प्रभु करत हैं भोजन भोग लग्यो संखोद सों ॥ २ ॥ ❀ ४१७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ आज माई मनमोहन पिय ठाड़े सिंहद्वार मोहत ब्रजजन मन । तेसीय मोहन सिर पाग बनी तेसीय कुल्है सुरंग तेसीय बनी मालबन ॥ १ ॥ तेसीय कंठ मनि तेसोई मोतिनहार तेसीय पीत बरुनि खुली है स्याम तन । 'गोविंद' प्रभु के जु अङ्ग-अङ्ग पर वारि फेरि डारों कोटि मदन ॥ २ ॥ ❀ ४१८ ❀ राग नट ❀ आजु बने ब्रजराज-कुंवर बैठे सिंहद्वार निकसि अङ्ग-अङ्ग अङ्ग नव नव छबि बरनी न जाई । अलक तिलक नासिकाजु कपोल लोल कुंडल छवि देखत दवत कोटि-कोटि रवि अधर अरुन दसननि में झांई ॥ १ ॥ लटपटे पेच पाग लाल पीत कुलहि भरि गुलाल लटकत सिर सेहरो बलि सोभा अधिकाई । 'गोविंद' प्रभु बानिक देखि विथकित सब ब्रजजन मन रूपरासि गिरिवरधर सुन्दर मनिराई ॥ २ ॥ ❀ ४१९ ❀ संध्या समय ❀ राग श्री ❀ कनक कुंडल मंडित कपोल अति गौरज छुरति सुकेस । मदगज चाल चलत सुरभिन संग लाड़िलो कुंवर ब्रजेस ॥ १ ॥ नैन चकोर किये ब्रजवासी पीवत वदन राकेस । अति प्रफुलित मुख कमल सबन के गोपकुल नलिन दिनेस ॥ २ ॥ अति मद तरुन विघूर्नित लोचन अति विकसित रस कृपावेस । चितवत चलत माधुरी बरखत 'गोविंद' प्रभु ब्रज-द्वार प्रवेस ॥ ३ ॥ ❀ ४२० ❀सेनदर्शन❀राग मालव❀ वंदे धरन गिरिवर भूप । राधिका मुखकमल लंपट मत्त मधुप सरूप ॥१॥ वंदे रसिकवर संगीत सुखनिधि क्वनित वेनु अनूप । 'कृष्णदास' उदार उर पर लोल माल अनूप ॥ २ ॥ ❀ ४२१ ❀ ❀ राग मालव ❀ चरन कमल वंदों जगदीस जे गोधन के संग धाये । जे पद

कमल धूरि लपटानी कर गहि गोपिन के उर लाये ॥ १ ॥ जे पद कमल युधिष्ठिर पूजत राजसूय यज्ञ में आये । जे पद कमल पितामह भीषम भारत में देखन पाये ॥ २ ॥ जे पद कमल संभु चतुरानन हृदय-कमल अन्तर राखे । जे पद कमल रमा उर भूखन वेद भागवत मे भाखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोक त्रय पावन बलिराजा के पीठ धरे । ते पद कमल दास 'परमानंद' गावम प्रेम पियूष भरे ॥ ४ ॥ ❀ ४२२ ❀ जागरन ❀ राग पूरवी ❀ सोहत लाल पाग सांकरे पेचन की चोकरी । सुंदर कुसुम केसन बिच राखी सो ग्रथित कुँदकली ॥ १ ॥ सुरत श्रम सिथिल अति लोचन निर्तत भुव रस-भरी । 'गोविंद' प्रभु प्यारी संग बैठे जहां निविड निकुंज दरी ॥२॥ ❀४२३❀ ❀ राग पूरवी ❀ सोहत कनक कुसुम करन । अरु सोहत मोतिन के अवतंस लटकि मनमथ मन हरन ॥ १ ॥ लाल पाग आधे सिर सोहत कुल्है चंपक भरन । 'गोविंद' प्रभु सिंहद्वार ठाडे जहां प्रिय सखा भुज अंस धरन ॥२॥ ❀ ४२४ ❀ राग पूरवी ❀ आज बने री लालन गिरिधारी । बानिक पर बलि जाऊं चंपक भरी कुल्हे सिर पर लटकत कसूंबी पाग छबि भारी ॥१॥ बरुनी पीत स्याम अंग अरगजा मोहे देखि मन्मथ मनुहारी । 'गोविंद' प्रभु रीझि वृषभाननंदिनी कंचुकी छोरि भरत अङ्कवारी ॥ २ ॥ ❀ ४२५ ❀ ❀ राग पूरवी ❀ तरुन तमाल तरे त्रिभंगी तरुन कान कुंवर ठाडे हैं सांवरे वरन । मोर मुकुट पीतांबर बनमाला बिराजत गरे सोभा देत ब्रजजन मन हरन ॥ १ ॥ सखा अंस पर भुज दिये कर लिये मुरली अधर मधुर तान सी तरन । 'कल्यान' के प्रभु गिरिधर बस किये आली बंक विलोकन श्रीगोवर्धनधरन ॥ २ ॥ ❀ ४२६ ❀ राग कल्यान ❀ मोहनलाल के ढिंग ललना यों सोहै जैसे तरु तमाल के ढिंग फूल सोने जरद को । बदन कांति अनूप भांति नहिं समात नीलांबर गगन में जैसे प्रगट्यो ससि सरद को ॥१॥ मुक्ता आभूपन दुति प्रतिबिंबित अङ्ग-अङ्ग चूनों मिलि रंग दूनो होत जैसे

हरद को। 'सूरदास' मदनमोहन गोहन की छवि वाढी मेटत दुख निरखि नैन मैन दरद को ॥ २ ॥ ❀ ४२७ ❀ राग कल्यान ❀ मेरे तो कान्ह हैं री प्रान सखी आन ध्यान नाहिनैं मेरे मन के हरन सुख के करन। लटपटी पचरंग पाग ढरकि रही वाम भाग कुमकुम को तिलक भाल नैन-कमल स्याम वरन ॥ १ ॥ भ्रुकुटी कुटिल लोल कपोल रत्न जटित कुंडल डोल मानों ससि प्रगट भयो उदय किये युगल तरनि। प्रभु'कल्यान' गिरिधर की सोभा निरखि विथकित भई मोहि लई इन माई मुरली अधर मधुर धरनि ॥ २ ॥ ❀ ४२८ ❀ राग कल्यान ❀ लाल की रूप माधुरी नैनन निरखि नेकु सखी हो। मनसिज मनहरन हास सांवरो सुकुमार-रास नख सिख अङ्ग-अङ्ग उमगि सौभग सींव नखी हो ॥ १ ॥ लटपटी पचरंग पाग ढरकि रही वाम भाग चंपकली कुटिल अलक बीच वीच रखी हो। आए इत दृग अरुन लोल कुंडल मंडित कपोल अधर अरुन दिपति की छवि क्यों हू न जात लखी हो ॥ २ ॥ अभयद भुज-दंड मूल पीनअंस सानु-कूल कनक निकर्ष लसद्दुकूल दामिनी धरखी हो। उर पर मंदार हार मुक्तालर वर सुढार मत्त द्विरद गति त्रियन की देह दसा करखी हो ॥३॥ मुकुलित वय नवकिसोर वचन रचन चित के चोर मधुरितु पिक साव नूत मंजरी चखी हो। नटवत 'हरिवंश' गान राग रागिनी कल्यान तान सप्त सुरनि लेत इते पर मुरलिका वरखी हो ॥४॥ ❀ ४२९ ❀ राग कल्यान ❀ माई वांके लोचन नीके, चितै चितै चित चोर्यो। वह मूरति खेलत नैनन में लाल भावते जीके ॥ १ ॥ एक वार मुसिकाय चले जव हृदय गहे गुन पी के। 'परमानंद' प्रभु आन मिलावहु प्रौढ वेस ये ती के ॥२॥ ❀४३०❀ ❀ राग ईमन ❀ तेरे सुहाग की महिमा मोपै कही न जाई। मदनमोहन पिय वे वहु नायक ताको मन लियो है रिझाई ॥ १ ॥ कवरी-कुसुम गुहत अपुने कर लिखत तिलक भाल रसभरे रसिकाई। 'गोविंद' प्रभु रीझि हदे

सों लगाइ लई लाडिले कुंवर मन भाई ॥ २ ॥ ❀ ४३१ ❀ राग ईमन ❀ जब जब देखों जाय हरि को बदन तब नैंना मेरे मोपे न आवहीं। ऐसे रूप लालची ललचाइ रहे ज्यों बिछुरे जलचर जल पावहीं ॥ १ ॥ सोभा सरसी न जाइ रस मे मिलि मग्न भये अब सखी हम हूं सों न बतरावहीं। 'मुरारीदास' प्रभु पिय एते पै निठुर भये अपनी ओर दुरावहीं ॥ २ ॥ ४३२ ❀ राग ईमन ❀ जिय की न जानत हो पिय अपुनी गरज के हो गाहक। मृदु मुसिकाय ललचाय आय ढिंग हरत परायो मन नाहक ॥१॥ कपटी कुटिल नेह नहिं समुझत छल सों फिरत घर-घर रस चाहक। दई निर्दई स्याम घन सुंदर 'परमानंद' उर वाहक ॥२॥ ❀ ४३३ ❀ राग ईमन ❀ हसि पीक डारी हो अचरा परी, हों जु चली जाति गली मोहन बैठेछाजें। निरखि बदन गृह कल न परत तन कछुक सकुच मैं व्रजजन की जियधरी ॥ १ ॥ सुंदर कर कमल फेरि कैं सेन दई जहां निबिड कुंजदरी। लैं चलि मोहि जहां री 'गोविंद' प्रभु रहि न परतु पिय प्रेम हृदोरी उमगि भरी ॥२॥ ❀ ४३४ ❀ राग कान्हरा ❀ नैंन छबीले तरुन मदमाते। चंचल भृकुटी चलत छबि ऊपजति आनि-आनि मुसिकाते ॥ १ ॥ भक्त कृपा रस सदाइ प्रफुल्लित मनहु कमलदल राते। 'गोविंद' प्रभु को श्रीमुख निरखत पान करत न अघाते ॥ २ ॥ ❀ ४३५ ❀ राग कान्हरा ❀ आजु बनी वृषभानकुंवरि कहे दूती अंचल वारति तृन तोरति कहति भले जु भले जु भामा। बदन जोति कंठ पोति छूटी छूटी लर मोतिन सादा सिंगार हार कुच बिच अति सोभित वोरसरी दामा ॥ १ ॥ एक रसना रूप कैंसे के बरनों कीरति विसद अङ्ग-अङ्ग अति प्रवीन पियमन अभिरामा। 'गोविंद' बलि बलि सखी कहे रचिपचि विरचि कीनी स्याम रमन कों तू ही स्यामा ॥ २ ॥ ❀ ४३६ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ अधर मधुर पूरित मुखरित मोहन बंस। चलत दृगंचल चपल करज अति विलुलित पारिजात अवतंस ॥ १ ॥ मानों गजराज

कलभ अति मद गलित आवत लटकत भुजा धरे प्रिय सखा अंस। 'गोविंद' प्रभु को जु श्रीदामा प्रभृति सब जय-जय करत प्रसंस ॥ २ ॥ ❀ ४३७ ❀ राग कान्हरा ❀ आजु बने री लाल गोवर्धनधर । रतन खचित छाजे पर बैठे वृन्दारन्य पुरंदर ॥ १ ॥ ग्रथित कुसुम अलकावलि अति छबि ध्वनित मधुप अवतंसनि पर । लटकि-लटकि जात श्रीदामा अंक मधि हँसि मिलवत कर सों कर ॥ २ ॥ मनि कौस्तुभ हृदै पदक जगमगात कंठ माल गजमोतिन लर । 'गोविंद' प्रभु जु सकल ब्रज मोह्यो अंग-अंग ललन सुंदर वर ॥ ३ ॥ ❀ ४३८ ❀ पहली आरती ❀ राग अडाना ❀ जहाँ तहाँ ढरि परति ढरारे प्रीतम तेरे नैन । जे निरखति तिनके मन वस करि सोंपति है लैं मैन ॥ १ ॥ छिन सनमुख छिन ही होति टेढ़े एक अवस्था कबहू न ऐन । 'रसिक' प्रीतम तिनके बिन देखैं छिन नाहीं मन चैन ॥२॥ ❀ ४३९ ❀ राग अडाना ❀ ब्रज की पौरि ठाड़ो सांवरो ढिठौना जिन हों तो लई मोहि । जब ते मैं देखे स्यामसुंदर री चलि न सकत मग दीनी कामनृप नोई ॥ १ ॥ को लै आई काके चलन चलाई कौनै वहियाँ गही सो धौं कोहि । 'सूरदास' मदनमोहन देखैं मेरी गति आगे कहा भई बूझों तोहि ॥२॥ ❀४४०❀ राग अडाना ❀ तेरी ऽब भौंह की मरोरनि में त्रिभंगी ललित भये अंजन दै चितवत भये स्यामा स्याम। तेरी मुसकनि हृदै दामिनी सी कोंधै जाय दीन ह्वै जगन्नाथ आधो-आधो लीने नाम ॥ १ ॥ ज्यों-ज्यों आली तू नचावत त्यों-त्यों नाचत प्यारो अब मया कीजे वलि चलिये निकुंज धाम । 'सूरदास' मदनमोहन की तू तन-मन उनके कलप बीते तेरे बिनु घरी याम ॥ २ ॥ ❀ ४४१ ❀ राग नायकी ❀ तू मोहि कित लाई री यह गली । देखो जोई डरपत सोई भई आगे मोहन ठाड़े अब कैसे जैंवोरी मेरी माई ॥ १ ॥ रसन दसन धरे करसों कर मीड़त री दूती सों खीजत अति आनंद हृदै न माई । 'गोविंद' प्रभु की तेरी मिली वातें हों

सब जानति भली कीनी बड़े नग सों भेट कराई ॥ २ ॥ ❀ ४४२ ❀ राग नायकी ❀ आली के दृगन पर वारों मीन खंजन । अति ही सलोने लोने अति ही सुढार ढारे अति कजरारे भारे बिना ही अंजन ॥ १ ॥ स्वेत असित कटाछिन तारे उपमा कों मृग कंजन । पानप पूरे तेरे री नैना गिरिधर पिय-हिय के रंजन ॥ २ ॥ ❀ ४४३ ❀ राग नायकी ❀ सुन री सखी तेरो दोस नाहीं मेरो पिय रसिया । जो देखे सो भूलि रहत है कौन-कौन के मन बसिया ॥ १ ॥ सो को जो न करी बस अपने जा तन नेकु चिते हँसिया । 'परमानंद' प्रभु कुंवर लाड़िलो अबहि कछू भींजत मसिया ॥ २ ॥ ❀ ४४४ ❀ राग नायकी ❀ प्यारी पिय कों बरजि । काहे कों लरत आली मेरे री आंगन में तेरे री लालन मोहे काहे की गरजि ॥१॥ हों ठाड़ी अपने आंगन में आये री लालन अपुनी मरजि । 'सूरदास' प्रभु रस के रंगीले लाल कब की हों ठाड़ी तोसों करत अरजि ॥२॥ ❀४४५❀दूसरी आरती पाछे❀ ❀ तुलसी की रुगाई होय तब ❀ राग ❀ धनि-धनि माता तुलसी बड़ी । नारायन के चरनन चढ़ी ॥१॥ जो कोई तुलसी की सेवा करे । कोटिक पाप छिन में परिहरे ॥ २ ॥ जो कोई तुलसी की फेरी देत । सहज जनम सफल करि लेत ॥ ३ ॥ दान पुन्य में तुलसी होय । कोटिक फल पावे नर सोय ॥ ४ ॥ जा घर तुलसी करैं निवास । ता घर सदा विष्नु को वास ॥ ५ ॥ 'कृष्णदास' कहे बारंबार । तुलसी की महिमा अपरंपार ॥ ६ ॥ ❀४४६❀ ❀ फेर दर्शन खुले ❀ राग केदारा ❀ तू ऽब चलि सखी सिंगार हार साजि सेवति किन पियहि प्यारी । माधवी मधुर बोलसरी एरी गुलाब को लै मनुहारी यह सुभाव न जाई बरजे जुहीऽब नेकु नेरी केतुकी लै समुझाई तू मान निवारी । मेरो सिरखंडी जो मिले री 'गोविंद' प्रभु तो-तोपर केवारो नवलकुंवर कुच बिच चंपो बिहारी ॥ २ ॥ ❀ ४४७ ❀राग केदारा❀ हों तोसोंऽब कहा कहों आली री कौन बेर की बहेलावत ही मोहि । मदनमोहन नव निकुंज कबके

निसि जागत है प्रीति की रहै इतनी सकुच नाहिने तोहि ॥ १ ॥ अब कहा आयुस होतु है मोकों तुम ही तो सुहाग के वर आवेस वसोहि। मोहि कहा तेरोई प्रवीन प्रीतम सुख पावे सोई करो 'गोविंद' प्रभु अपने कंठ राखि तू पोहि ॥ २ ॥ ❀ ४४८ ❀ राग केदारा ❀ आज बनी कुंजेस्वर रानी। चिकुर चारु सिर सिथिल सगवगी अरु विविध कुसुम बेनी बानी ॥ १ ॥ नैन सुरङ्ग गिरिधर रसमाते कमल खंजन सोभा बिलखानी। 'गोविंद' प्रभु तू न्याय बस करे धनि-धनि विधाता सो अपुनी चातुरी सकल तोमे आनी ॥ २ ॥ ❀ ४४९ ❀ राग केदारा ❀ स्याम कपोलनि में कनक कुंडल झांई। कुंचित कच बीच राखी जु चंपकली अरुझाई ॥ १ ॥ विस्वमोहन तिलक देखत मनमथ रह्यो लुभाई। 'गोविंद' प्रभु पर कोटि चंद वारों हो कीरती जुन्हाई ॥ २ ॥ ❀ ४५० ❀ राग विहाग ❀ मिले पिय सांकरी गली। मदनमोहन पिय हँसि गहि डारी मोतिन चंपकली ॥ १ ॥ वारिज वदन देखि उमगि चली री घूंघट में न समात नैन अली। 'गोविंद' प्रभु दंपती परस्पर रहे रसमत्त रली ॥ २ ॥ ❀ ४५१ ❀ राग विहाग ❀ सिखवत केतिक रात गई। चंद उदे वरु दीसन लाग्यो तू नहिं और भई ॥ १ ॥ सुनि हो मुग्ध कह्यो नहिं मानत जोभी हिरदै कई। 'परमानंद' प्रभु कों तू नहिं मिलत तो प्रतिकूल दई ॥ २ ॥ ❀ ४५२ ❀ राग विहाग ❀ तेरे सिर कुसुम विथुर रहे भामिनी सोभा देत मानों नभ-घन तारे। स्याम अलक छूटि रही री वदन पर चंद छिप्यो मानो बादर कारे ॥ १ ॥ मोतिन माल मानों मानसरोवर कुच चकवा दोऊ न्यारे। 'धोंधी' के प्रभु तीनलोक बस कीने तैं वसि किये आली नंददुलारे ॥ २ ॥ ❀ ४५३ ❀ राग विहाग ❀ विधाता विधी हू न जानी। सुन्दर वदन पान करन कों रोम-रोम प्रति नैंनां दिये क्यों न करी यह वात अयानी ॥१॥ श्रवन सकल वपु जो होत री कवही जब सुनत पिय मुख अमृत मधुरी वानी। भुजा कोटि-कोटि होती तो भेटति

'गोविन्द' प्रभु तऊ न मन अघाय सयानी ॥ २ ॥ ❀ ४५४ ❀
❀ राग बिहाग ❀ वदनकमल पर बैठे मानों युगल खंजरी। ता ऊपर मानों मीन चपल अरु तापर अलकावली गुंजरी ॥ १ ॥ अरु ऐसी छबि लागे मानों उदित रवि निकर फूली किरनि कदंब मंजरी। 'गोविन्द' बलि-बलि सोभा कहांलों बरनौं मदन कोटि दल गंजरी ॥ २ ॥ ❀ ४५५ ❀
❀ तीसरी आरती ❀ राग विहाग ❀ मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटिक वारों री माई। जिहिं जिहिं अंगनि दृष्टि परत है तहिं तहिं रहत लुभाई ॥ १ ॥ अलक तिलक कुंडल कपोल छबि एक रसना मोपैं बरनी न जाई। 'गोविंद' प्रभु की या बानिक पर बलि-बलि रसिक-चूडामनिराई ॥ २ ॥ ❀ ४५६ ❀
❀ राग विहाग ❀ लाडिली न माने लाल आपु पाउं धारो। जैसे हठ तजे प्यारी जतन बिचारो ॥ १ ॥ बातें तो बनाय कही जेती मति मेरी। कैसे हू न माने लाल ऐसी त्रिया तेरी ॥ २ ॥ अपुनी चोंप के काजे सखी भेख कीनो। भूखन बसन साजे बीना कर लीनो ॥ ३ ॥ ठाडी स्यामा कुंजद्वार चकित निहारी। कोन गांव बसति हो रूप उजियारी ॥ ४ ॥ गाम तो है नंदगाम तहां की हों प्यारी। नाम तो है स्यामा सखी तेरे हितकारी ॥५॥ कर सों कर जोरि स्यामा निकट बैठाई। सप्त सुरनि मिलि सुलप बजाई ॥ ६ ॥ रीझि मोतिहार चारु उर पहिरावे। हमारो सांवरो भट्ट ऐसैं ही बजावे ॥ ७ ॥ जोई जोई चाहो बलि सोई मांगि लीजे। यह दान मांगू सांवरे सोई दान कीजे ॥ ८ ॥ मुख सों मुख जोरि स्यामा दर्पुन दिखायो। निरखि छबीली छबि प्रतिबिंब लजायो ॥ ९ ॥ छल तो उघरि आयो हँसि पीठ दीनो। 'नंददास' प्रभु प्यारी आंकों भरि लीनो ॥ १० ॥ ❀ ४५७ ❀
❀ कार्तिक सुदी १२ ❀ मंगल भोग आये ❀ राग ललित ❀ सखी मोहि सोनो सीतल लाग्यो। मिलि रस रंग प्रेम आतुर है चार जाम जुग जाग्यो ॥१॥ करि मनुहारि बहोरि हों पठई अधर सुधारसमांग्यो। 'रसिक' प्रीतम पिय वे

बहुनायक तेरे प्रेम-रस पाग्यो ॥ २ ॥ ❀ ४५८ ❀ राग ललित ❀ रेन विदा होंन लागी । घट गई जोति मंद भये तारे फूल वासना पागी ॥ १ ॥ सोने सजि सिंगार किये हैं अपुने प्रीतम संग जागी । 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कों नंदनन्दन अनुरागी ॥ २ ॥ ❀ ४५६ ❀ राग खट ❀ पाछली रात परछांहि पातन की रंग भीने कृष्ण जू डोलत द्रुम-द्रुम तरनि । बने देखत बने लागि अद्भुत मने जोति की सोति सों निकसि रहे सब धरनि ॥१॥ कृष्ण के दरस कों अंग के परस कों महा आरति भरी चली मज्जन करन । नूपुरनि धुनि सुनत थकित सी ह्वै रही परि गयो दृष्टि गोपाल सांवरे बरन ॥ २ ॥ जरकसी पाग पर मोर चंद्रिका बनी कमलदल नैन भुव वंक छवि मनहरन । धाई धमि भरन कों रस वचन कहन कों आवनी वताय छवि सों धारत चरन ॥ ३ ॥ रोम रोम रमि रह्यौ मेरो मन हरि लियो नांहि बिसरत वाकी झुकनि मे भुज भरनि । कहे 'भगवान हित रामराय' प्रभु रंग रंगीली लाज तजि परी परवस परनि ॥ ४ ॥ ❀ ४६० ❀ राग खट ❀ आज नन्दलाल मुखचंद नैनन निरखि परम मंगल भयो भवन मेरे । कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र करि वारों तव ही जवै नेकु हेरे ॥ १ ॥ सकल सुख सदन हरखित बदन गोपवर प्रवलदल मदनदल संग घेरे । कहो कोऊ कैसे हू नांहि सुधि बुधि वने 'गदाधर मिश्र' गिरिधरन टेरे ॥२॥ ❀४६१❀ ❀ राग पंचम ❀ जागे हो रैंन तुम सव नैना अरुन हमारे । तुम कियो मधु-पान घूमत हमारो मन काहे ते जु नन्ददुलारे ॥ १ ॥ नख-छत पिया उर पीर हमारे उर कारन कोन पियारे । 'नन्ददास' प्रभु न्याय स्याम घन बरसे अनत जाय हम पर झूम झुमारे ॥२॥ ❀ ४६२ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ मंगल आरती गोपाल की, माई । नित प्रति मंगल होति निरखि मुख चितवनि नैन बिसाल की ॥ १ ॥ मंगल रूप स्यामसुन्दर को मंगल भृकुटी सुभाल की । 'चत्रुभुज' प्रभु सदा मंगलनिधि बानिक गिरिधरलाल की

॥ २ ॥ ❀ ४६३ ❀ दर्शन मंगल भये पीछे ❀ राग बिलावल ❀ लालन तहिं जाहु जाके रस लंपट अति । अति अलसाने नैन देखियत प्रगट करत प्यारी-रति ॥ १ ॥ अधर दसन छत वसन पीक सह अरु कपोल श्रमबिंदु देखियति । नख लेखनि तन लखी स्याम पट जय पताक रन जीतिय रतिपति ॥ २ ॥ कितव वाद तजो पिय हम सों जैसो तन स्याम तेसोई मन अति । 'गोविंद' प्रभु पिय पाग संवारहु गिरत कुसुम सिर मालति ॥३॥ ❀ ४६४ ❀ राग बिलावल ❀ जानि पाये हो ललना बलि-बलि ब्रजनृप-कुंवर जाके बिबिसन सब निस जागे अब तहीं अनुसर ॥ १ ॥ अपनी प्यारी के रति चिन्ह हमहिं दिखावन आये देत लोंन दाधे पर । 'गोविंद' प्रभु स्यामल तन तैसेई हो मन जनम हि ते जुवतिन प्रान हर ॥ २ ॥ ❀ ४६५ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ मोहन घूमत रतनारे नैन सकुचत कछु कहत बैन सैन ही सैन ऊतर देत नंद के दुलारे । भूषन बसन अटपटे और सीस पाग लटपटी रति रन ले झटपटी अति सुभग स्याम प्यारे ॥१॥ सुबस कियो कुंजसदन भोर आये जीति मदन पलटि पहिरे बसन अजहुँ नहिं संवारे । 'चत्रभुज' प्रभु गिरिवरधर दर्पन लै देखिये जू सेंदुर को तिलक भाल अधरन मसि कारे ॥२॥❀४६६❀राग बिलावल❀ साँझ के साँचे बोल तिहारे । रजनी अनत जागे नंदनंदन आये निपट सवारे ॥१॥ अति आतुर जु नीलपट ओढ़े पीरे बसन बिसारे । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर भले वचन प्रतिपारे ॥२॥❀ ४६७ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग जैतश्री ❀ न्याय दीन दूलहै हो नंदलाल । रीझि बिकाय जहाँ बसे तहां नव दुलही ब्रजबाल ॥१॥ सिथिल चाल अति डगमगी हो बसन मरगजे गात । सोभित हैं अति रसमसे मानों व्याह भयो जागे रात ॥२॥ नैन ललोहे घूमि रहे हैं चितवनि चित हरि लेत । कहि भगवान हि 'रामराय' प्रभु बसन बधाई देत ॥ ३ ॥ ❀ ४६७ ❀ ❀ कार्तिक सुदी १३ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ चिरियन की चिहुचान सुनि

प्रात उठी दुलही। फूलन की सेज सुख लूटयो कनक वेली उलही ॥ १ ॥ सास ननद की कान मानि वड़ी भोर जागी। रमकि झमकि आय जसुधा के पाँय लागी ॥२॥ तब रानी दियो असीस अचल सुहाग तेरो। सुंदर जोरी निरखि-निरखि हियो सिरात मेरो ॥३॥ सुख की करन दुख की हरन कीरति की जाई। 'रामराय' प्रभु ऐसी वधू पूरे पुन्यन पाई ॥४॥ ❀ ४६६ ❀ ❀ शृङ्गार समय ❀ राग विलावल ❀ ललिता जू के आज वधायो। श्रीवृंदाबन व्याह रचायो। आली सव न्योति बुलाई। वे मंगलनिधि न्योतो लाई। छंद—मंगल न्योतो लाई सखियन मंडली अद्भुत रची। बांधि बंदनवार चहुँदिस मध्य निधि वेदी सची। संकेत देवी पूजि ललिता हरखि अति आनन्द भरी। मेरी नवल राधा दुलहिनी मिले कुंवर दूल्हे हरी ॥१॥ देवी वहुभांति पुजाई। सो विधिना विधि आन मिलाई। जो राधे जिन हरि आराधे। आज लगन सोई अनुपम साधे। छंद—सोई लग्न परम अनूप साधे हरखि मंगल गाइये। महा मंगल रूप अद्भुत भांति मंडप छाइये। मेरी उवटि राधा दुलहिनी जव स्याम कों उवटन कियो। स्नान करि सिर गूंथि मौरी मुकुट मोहन के दियो ॥ २ ॥ करसों कर जोरि फिराई। भांवरि दे कें ढिंग बैठाई। हँस करि दई है वधाई। ललिता फूली अंग न समाई। छन्द—फूली तो अंग न समाय ललिता रंग के वल भरि रही। आज भाग सुहाग की कछु जात नहि मोपे कही। धन्य यह दिन रात यह धन धन्य यह पल सुभ घरी। धनि धन्य नवलकिसोर दूल्हे दुलहिनी राधा वरी ॥३॥ यह दूलह है निपट सयानो। या दुलहिन के रूप लुभानो। आली छिन छिन विलम न कीजे। अञ्चल जोरि वारनो लीजें। छंद—अञ्चल जोरि दियो जु सखियन विचार गौने को कियौ। करि दिये कुंज प्रवेस दोऊ धन्य 'ललिता' को हियो। जहां नवल सखी अनेक छबि पर वारने वलि वलि गई। या व्याह की रस रीति सखियन जात नहिं मोपै कही ॥ ४ ॥

❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ श्रीवृषभान सदन भोजन कों नंदादिक मिलि आये हो। तिनके चरन कमल धरिवे कों पट पांवड़े बिछाये हो ॥१॥ राम कृष्ण दोउ वीर बिराजत गौर स्याम दोउ चंदा हो। तिनके रूप कहत नहिं आवैं मुनिजन के मन फंदा हो ॥२॥ चंदन घसि मृगमद मिलाय के भोजन भवन लिपाये। विविध सुगंध कपूर आदि दे रचना चौक पुराये ॥३॥ मंडप छायो कमल कोमल दल सीतल छांह सुहाई। आसपास परदा फूलन के माला जाल गुहाई ॥४॥ सीतल जल कुमकुम के जलसों सबके चरन पखारे। करि बिनती कर जोरि सबन सो कनक पटा बैठारे ॥ ५ ॥ राजत राज गोप भुवपति संग विमल वेस अहीरा हो। मनहु समाज राजहंसन को जुरे सरोवर तीरा हो ॥६॥ धरे अनेक जटित कटोरा और कंचन की थारी। ढिंग ढिंग धरी सबन के सुंदर सीतल जल भरि झारी ॥७॥ गावन लागी गीत व्याह के सुकुमारी व्रजनारी। अति हुलास परिहास परस्पर यह सुख सोभा भारी ॥८॥ परोसन लागे पुरोहित हितसों जिनकी वदन बड़ाई। तिनके दरस परस संभाषन मनों सुरसरिता आई ॥९॥ ओदन की उज्वलता मानों सहज रूप धरि आये। यह हित प्रीति प्रीतम जन हितसों प्रकटहि आप जनाये ॥१०॥ बरी बरा अरु वरन बिजोरा पापर पीत बनाये। कनक बरन बेसन बहुतेरे प्रकार न जात गिनाये ॥११॥ आमल वेल आम अदरक रस नींबू मिले संधाने। सद सीरा और सुरभी घृत सों सौरभ घ्राण बखाने ॥१२॥ बासोंधी सिखरन अरु खोवा अमृत रसना तोषे। अमल कषाय कटुक तीक्षन रस लोंन मधुर रस पोषे ॥१३॥ कन्द मूल फल फूल पत्र जो व्यंजन सबै प्रकारा। ये हैं मनो प्रगट भूतल में अमृत के अवतारा ॥१४॥ और बहुत विधि खटरस व्यंजन परोसनवारे हारे। यद्यपि होय सारदा की मति तदपि न जात संभारे ॥१५॥ सीतल सुगंध चारु सुकोमल विविध भाँति पकवान। तेऊ प्रकार परे नहिं कबहू सुरपति हूँ के कान ॥१६॥ करि

आचमन उठे सब ब्रजजन मनमें अति सुख पाये। पट भूषन बीरा सोंधेसों पूजि सदन पधराये ॥१७॥ यह सुख संपति यह रस सोभा कापै जात वखाने। जूठिन जाय उठाय 'गदाधर' भाग्य आपुने माने॥१८॥ ❀४७१❀ राजभोग दर्शन❀ ❀ राग जैत श्री ❀ राधे जू नव दुलही, दूल्हे हो मदनगोपाल। मानों तरुन तमाल मूल मिलि नौतन कनक बेल उलही ॥१॥ रूप-भूप युवराज विराजत बैस किसोर एक सुलही। 'मदनमोहन' पिय स्याम सुदंपति जो जिय चाह हुती सो लही ॥ २ ॥ ❀ ४७२ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ राधा प्यारी दुलहिन जू को दुलहा देखिरी आवत है ब्रज लटकत। ग्वाल संग ऊंचे सुर गावत श्रवन सुनत मन अटकत ॥१॥ देखत ही जु समात हृदै में अँखियाँ हू नहिं खटकत। प्रभु 'कल्यान' गिरिधर मुख निरखत समर-सरन गहि सटकत ॥ २ ॥ ❀ ४७३ ❀ सेन दर्शन ❀ राग विहाग ❀ जुगल वर आवत हैं गठ जोरे। संग सोभित वृषभान नंदिनी ललितादिक तृन तोरै ॥ १ ॥ सीस सेहरो बन्यो लाल के निरखि हँसत मुखमोरे। निरखि-निरखि बलि जाय 'गदाधर' छवि न वढ़ी कछु थोरै ॥ २ ॥ ❀ ४७४ ❀

उत्सव श्री ब्रजभूषणजी को (मार्गशीर्ष सुदी २)

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारङ्ग ❀ श्रीवल्लभ श्रीलक्ष्मन गृह प्रगट भये माई। काहे कों सोच करत कर्मन निधि पाई ॥ १ ॥ ब्रजजन की रास मूरति भाग्यन दई है दिखाई। सृष्टि आपुनी करि आसुर तें वचाई ॥२॥ लीला सब प्रगट करी सेवक जनन बताई। हरि सों हठि करि श्री भागवत की टीका प्रगटाई ॥ ३ ॥ भाग्यन के पूरे जे तिन कीरति गाई। 'रसिक' सदा लक्ष्मन सुत सेवो सुखदाई ॥ ४ ॥ ❀ ४७५ ❀

श्री द्वारिकाधीश और श्री मथुराधीश कांकरोली में एक सिंहासन पर विराजे (मार्गशीर्ष सुदी ४)

❀ मङ्गला दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ आज गृह नंद महर के वधाई। प्रात

समय मोहन मुख निरखत कोटि चंद छबि छाई ॥ १ ॥ मिलि ब्रजनारी मङ्गल गावत नंद भवन में आई । देत असीस जियो जसुमति-सुत कोटिक वरस कन्हाई ॥ २ ॥ नित आनंद बढ़त वृंदावन उपमा कही न जाई । 'सूरदास' धनि-धनि नंदरानी देखत हियो सिराई ॥ ३ ॥ ❀ ४७६ ❀ ❀ शृङ्गार समय ❀ राग देवगंधार ❀ नंदराय के नव निधि आई । माथे मुकुट श्रवन मनिकुंडल पीत बसन अरु चार भुजाई ॥ १ ॥ बाजत बीन मृदंग संख धुनि घसी अरगजा अङ्ग चढ़ाई । दधि पीवत और चंदन छिरकत रपटि परत हैं लेत उठाई ॥ २ ॥ अच्छत दूब लिये चढि ठाडे द्वारन बंदन-वार बंधाई । 'सूरदास' सब मिले परस्पर दान जु देत नंद न अघाई ॥३॥ ❀ ४७७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग ❀ धनि गोकुल जहाँ गोविंद आये । धनि दिन नंद सुमंगल निसदिन धनि जसोमति जिन गोद खिलाये ॥१॥ धनि वे वालकेलि जमुनातट धनि बन सुरभीवृंद चराये । धनि वह समय धनि वह लीला धनि वह वेनु अधर धरि गाये ॥ २ ॥ धनि वे चरन सदा सुखदायक भक्त जनन के हृदै रहाये । धन्य 'सूर' ऊखल धनि गोपी जिनके हित गोपाल बंधाये ॥ ३ ॥ ❀ ४७८ ❀ भोग के दर्शन ❀राग नट❀ बसो मेरे नैनन में यह जोरी । नव दूल्है ब्रजराज लाडिलो दुलहिन नवल किसोरी ॥ १ ॥ नवल पाग सिर नवल सेहरो नवल छबी बरने ऐसो कोरी । 'हित हरिवंस' करत नौछावरि देत पीतपट छोरी ॥२॥ ❀४७९❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ दिन दूल्है मेरो कुंवर कन्हैया । नित उठि सखा सिंगार बनावत नित ही आरती उतारति मैया ॥ १ ॥ नित-प्रति मोतिन चौक पुरावत नित-प्रति विप्रन वेद पढैया । नित ही राई नोंन उतारति नित ही 'गदाधर' लेत बलैया ॥ २ ॥ ❀ ४८० ❀ संध्या भोग आये ❀ राग नट ❀ तू बनरा रे वनि-बनि आया मो मन भाया सुख उपजाया । अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि धरि सिर सेहरा अति सुंदर अङ्ग सुगन्ध लगाया ॥ १ ॥ अपने

संग सकल जन सोहैं तिलक ललाट बनाया। 'रसिक' प्रीतम बलिहारी तेरी उठि के अङ्ग लगाया ॥ २ ॥ ❀ ४८१ ❀ सेन दर्शन ❀ राग विहाग ❀ लालन की बातन पर बलि जैये। हँसि तुतराय कहत माता सों दुलहिन मोकों चैये ॥ १ ॥ गातन गोरी बैसन थोरी दुलहिन को कर गहिये। अब ही सांझ समे करि गौना मंदिर में पधरैये ॥ २ ॥ नंदराय नंदरानी हिलि मिलि सुख सों मोद बढैये। 'सूर' स्याम के रूप सील गुन ब्रज में कहाँ ते पैये ॥ ३ ॥ ❀ ४८२ ❀

श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई [मार्गशीर्ष सुदी ७]

❀ सेहरा धरे तब ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग सारंग ❀ प्रगटे श्री विट्ठलेस चलो जहां जाइ मेरे नैनन को सिंगार दूल्है कर पाइ ॥ ध्रु० ॥ गावत निकसी बाल सबै श्री गोकुल आई। नखसिख साज सिंगार साज तब बिविध बजाई ॥ भेट साज अब कहा कहों भरि लिये कंचन थाल। मानों बहु विधि राज ही हो बहु बिधि वचन रसाल ॥ १ ॥ गावत मंगलचार द्वार श्रीवल्लभ ठाड़े। लै लैं सुत को नाम वाम रुचि दूनी वाढ़े ॥ बोलि लई सब भवन में सब सखियन के वृंद। अरुन वसन बडलोचनी मृगी कहूँ के चंद ॥ २ ॥ आलिंगन सब धाई पांय सब युव-तिन लागी। निरखि लाल मुख वाल अक्काजू तुम वड़भागी ॥ मनि मानिक मुक्ता सबै हो नाना दान दिवाय। मानों मन्मथ मन वढ्यो हो फूले अङ्ग न माय ॥ ३ ॥ सब मिल देत असीस ईस ब्रह्मादिक नायक। चिरजियो श्रीविट्ठलेस घोख के सब सुखदायक ॥ राज करो निज भवन में हो कहत है वारंवार। श्रीगिरिधर यस गावहीं हो 'रामदास' वलिहार ॥ ४ ॥ ❀ ४८३ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सारंग ❀ जयति रुक्मिनीनाथ पद्मावती-प्रानपति विप्रकुलछत्र आनंदकारी। दिव्य वल्लभवंस जगत निस्तार-करन कोटि उडुराज सम तापहारी ॥ १ ॥ जयति भक्तजनपती

समय मोहन मुख निरखत कोटि चंद छबि छाई ॥ १ ॥ मिलि ब्रजनारी मङ्गल गावत नंद भवन में आई। देत असीस जियो जसुमति-सुत कोटिक बरस कन्हाई ॥ २ ॥ नित आनंद बढ़त वृंदावन उपमा कही न जाई। 'सूरदास' धनि-धनि नंदरानी देखत हियो सिराई ॥ ३ ॥ ❀ ४७६ ❀ ❀ शृङ्गार समय ❀ राग देवगंधार ❀ नंदराय के नव निधि आई। माथे मुकुट श्रवन मनिकुंडल पीत बसन अरु चार भुजाई ॥ १ ॥ बाजत बीन मृदंग संख धुनि घसी अरगजा अङ्ग चढ़ाई। दधि पीवत और चंदन छिरकत रपटि परत हैं लेत उठाई ॥ २ ॥ अच्छत दूब लिये चढि ठाडे द्वारन बंदनवार बंधाई। 'सूरदास' सब मिले परस्पर दान जु देत नंद न अघाई ॥३॥ ❀ ४७७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग ❀ धनि गोकुल जहाँ गोविंद आये। धनि दिन नंद सुमंगल निसदिन धनि जसोमति जिन गोद खिलाये ॥१॥ धनि वे वालकेलि जमुनातट धनि बन सुरभीवृंद चराये। धनि वह समय धनि वह लीला धनि वह वेनु अधर धरि गाये ॥ २ ॥ धनि वे चरन सदा सुखदायक भक्त जनन के हृदै रहाये। धन्य 'सूर' ऊखल धनि गोपी जिनके हित गोपाल बंधाये ॥ ३ ॥ ❀ ४७८ ❀ भोग के दर्शन ❀राग नट❀ बसो मेरे नैनन में यह जोरी। नव दूल्है ब्रजराज लाडिलो दुलहिन नवल किसोरी ॥ १ ॥ नवल पाग सिर नवल सेहरो नवल छवी बरने ऐसो कोरी। 'हित हरिवंस' करत नौछावरि देत पीतपट छोरी ॥२॥ ❀४७९❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ दिन दूल्है मेरो कुंवर कन्हैया। नित उठि सखा सिंगार बनावत नित ही आरती उतारति मैया ॥ १ ॥ नित-प्रति मोतिन चौक पुरावत नित-प्रति विप्रन वेद पढैया। नित ही राई नोंन उतारति नित ही 'गदाधर' लेत बलैया ॥ २ ॥ ❀ ४८० ❀ सध्या भोग आये ❀ राग नट ❀ तू बनरा रे बनि-बनि आया मो मन भाया सुख उपजाया। अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि धरि सिर सेहरा अति सुंदर अङ्ग सुगन्ध लगाया ॥ १ ॥ अपने

को ॥२॥ ❀ ४८८❀ भोग राग नट ❀ भोगी भोग करत सब रस को । आस पास प्रफुलित मन फूले गावत भक्त सुजस को ॥ १ ॥ करत टहेल निज महेल निरंतर कहत श्रीराधा बस को । 'कृष्णदास' ठाडो सिंहद्वारे पीवत प्रेम पियूष को ॥२॥ ❀४८९❀ संध्या राग गोरी ❀ भोगी को रस बिलसत आवत देखो बन ते नंदकुमार । सीस कुलहि अंग वसन आभूखन उर पहिरे कुसुमन के हार ॥ १ ॥ अति आनंद प्रेमरस माते नाचत गावत दे कर तार । 'कृष्णदास' प्रभु मुख अवलोकत ब्रजजन ठाडे सब सिंहद्वार ॥ २ ॥ ❀ ४९० ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडाना ❀ तेरी हों वलि-वलि जाऊं गिरिधरन छबीले । कुलहि छबीली अरु पाग छबीली अलक छबीली तिलक छबीलो माई री नैन छबीले प्यारी जू के रंग रंगीले ॥ १ ॥ अधर छबीले वसन छबीले वेन छबीले हो अति सरस सु ढीले । 'गोविंद' प्रभु नखसिख अंग अंगन लालन अति ही रसीले ॥ २ ॥ ❀ ४९१ ❀ राग कान्हरा ❀ कहा री कहों मनमोहन को सुख वरनत मोपें वरन्यो न जाय । आलिंगन परिरंभन चुंवन अधरामृत रस पीवत पिवाय ॥ १ ॥ निस वासर संग तजत न तिल भर राखत अपुने हृदय लगाय । 'कृष्णदास' ढिंग ठाडी ललिता कर लै वीन वजावत गाय ॥२॥ ❀४९२ ❀पोढवे मे ❀राग विहाग❀ नीकी रितु लागे सीत की । अंसन दे पिय प्यारी जु पोढे वात करत रस रीत की ॥१॥ वन गई एक रजाई भीतर होत परस्पर जीत की । 'गदाधर' प्रभु हेमन्त मनावत चाह वढी नव प्रीत की ॥२॥ ❀४९३❀ मकर संक्रांति ❀ जागवे में ❀ ❀ राग भैरव ❀ भोर भये भोगी रस विलस भये ठाडे । जागे जामिनी जगाय भामिनी अंग-अंग समाय स्वास सिथिल निडर देत आलिंगन गाढे ॥ १ ॥ घूमत रसमत्त मगन सूधे हु डग परत पग न छिन-छिन चित चोंप चोजन मोजन मनों वाढे । अति रस मे रसिक राय सोभा वरनी न जाय वलि 'विहारीदास' प्रेम-रंग रंगि काढे ॥ २ ॥ ❀ ४९४ ❀ मंगला दर्शन ❀

पतित-पावन करन कामीजन कामना सब निवारी। मुक्तिकांचीय जन भक्ति दायक प्रभु सकल सामर्थ्य गुन गनन भारी ॥ २ ॥ जयति सकल तीरथ फलित नाम स्मरन मात्र ब्रज नित्य गोकुलविहारी। 'नंददासनिनाथ' गिरिधर आदि प्रगट अवतार गिरिराज धारी ॥ ३ ॥ ❀ ४८४ ❀ टिपारा धरे जब ❀ सैन दर्शन ❀राग केदारा❀ श्रीविट्ठलनाथ आनंदकंद। प्रगट पुरुषोत्तम श्रीब्रज में देखि द्विजवर चंद ॥ १ ॥ तब यसोदानंद कहियतु अब श्री वल्लभनंद। तब धरयो नट भेख गिरिधर अब जु श्रुतिपथ छंद ॥ २ ॥ तब बकी आदि अनेक आरति मेटि सब दुख द्वंद। अब कृपा करि के हरे प्रभु पाप 'मानिकचंद' ॥ ३ ॥ ❀ ४८५ ❀

उत्सव श्री गुसाईंजी को* [पौष वदी ६]

❀ कलेऊ को पद ❀ राग भैरव ❀ हों बलि जाऊं कलेऊ कीजे। खीर खांड घृत अति मीठो है अब को कोर बछ लीजे ॥ १ ॥ बेनी बढ़े सुनो मनमोहन मेरो कह्यो जो पतीजे। ओट्यो दूध सद्य धौरी को सात घूंट भरि पीजे ॥ २ ॥ वारने जाऊं कमलमुख ऊपर अचरा प्रेम जल भीजे। बहुरयो जाइ खेलो जमुना तट 'गोविंद' संग करि लीजे ॥३ ❀४८६❀

मकर संक्रांति

❀ एक दिन पहिले भोगी संक्रांति ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मालकोस ❀ बनठनि भोगी रस बिलसनि कों भोर भवन ठाडे पिय प्यारी। ओढि कबा फरगुल जु परस्पर सीत समे सुंदर सुखकारी ॥ १ ॥ रितु हेमंत सिसिर दोऊ ठाडी ले करि सोंझ विविध रुचिकारी। 'कृष्णदास' प्रभु को मुख निरखत अति आतुर ब्रजनारी ॥१॥ ❀ ४८७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ भोगी भोग करत सब रस को। नन्दनन्दन जसुधा को जीवन गोपिन प्रानपती सरवसु को ॥ १ ॥ तिल भर संग तजति नहीं निजजन गान करत मन-मोहन जस को। तिलवा भोग धरत मन भावत 'परमानंद' सुख देन दरस

* शंखनाद सूं झांझ पखावज बजे।

को ॥२॥ ❀ ४८८❀ भोग राग नट ❀ भोगी भोग करत सब रस को । आस पास प्रफुलित मन फूले गावत भक्त सुजस को ॥ १ ॥ करत टहेल निज महेल निरंतर कहत श्रीराधा बस को । 'कृष्णदास' ठाडो सिंहद्वारे पीवत प्रेम पियूष को ॥२॥ ❀४८९❀ संध्या राग गोरी ❀ भोगी को रस बिलसत आवत देखो बन ते नंदकुमार । सीस कुलहि अंग वसन आभूखन उर पहिरे कुसुमन के हार ॥ १ ॥ अति आनंद प्रेमरस माते नाचत गावत दे कर तार । 'कृष्णदास' प्रभु मुख अवलोकत ब्रजजन ठाडे सब सिंहद्वार ॥ २ ॥ ❀ ४९० ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडाना ❀ तेरी हों वलि-वलि जाऊं गिरिधरन छबीले । कुलहि छबीली अरु पाग छबीली अलक छबीली तिलक छबीलो माई री नैन छबीले प्यारी जू के रंग रंगीले ॥ १ ॥ अधर छबीले बसन छबीले बेन छबीले हो अति सरस सु ढीले । 'गोविंद' प्रभु नखसिख अंग अंगन लालन अति ही रसीले ॥ २ ॥ ❀ ४९१ ❀ राग कान्हरा ❀ कहा री कहों मनमोहन को सुख बरनत मोपैं बरन्यो न जाय । आलिंगन परि-रंभन चुंवन अधरामृत रस पीवत पिवाय ॥ १ ॥ निस वासर संग तजत न तिल भर राखत अपुने हृदय लगाय । 'कृष्णदास' ढिंग ठाडी ललिता कर लै बीन बजावत गाय ॥२॥ ❀४९२ ❀पोढवे मे ❀राग विहाग❀ नीकी रितु लागे सीत की । अंसन दे पिय प्यारी जु पोढे वात करत रस रीत की ॥१॥ बन गई एक रजाई भीतर होत परस्पर जीत की । 'गदाधर' प्रभु हेमन्त मनावत चाह बढी नव प्रीत की ॥२॥ ❀४९३❀ मकर सक्रांति ❀ जागवे में ❀ ❀ राग भैरव ❀ भोर भये भोगी रस बिलस भये ठाडे । जागे जामिनी जगाय भामिनी अंग-अंग समाय स्वास सिथिल निडर देत आलिंगन गाढे ॥ १ ॥ घूमत रसमत्त मगन सूधे हु डग परत पग न छिन-छिन चित चोंप चोजन मोजन मनों बाढे । अति रस मे रसिक राय सोभा बरनी न जाय वलि 'विहारीदास' प्रेम-रंग रंगि काढे ॥ २ ॥ ❀ ४९४ ❀ मंगला दर्शन ❀

❀ राग खट ❀ तरनि-तनया तीर आवत ही प्रात समै गेंदुक खेलत देख्यो आनंद को कंदवा। काछिनी किंकिनी कटि पीतांवर कसि वांधे लाल उपरना सिर मोरन के चंदवा ॥ १ ॥ पंकज नैन सलोने वोलत मधुरे वोल गोकुल की सुंदरी संग आनन्द सुछंदवा। 'कृष्णदास'प्रभु गिरिगोवर्धनधारी लाल चारु चितवनि खोलत कंचुकी के वंदवा ॥ २ ॥ ❀ ४६५ ❀

❀ शृंगार समय ❀ राग आसावरी ❀ जानि परव संक्रांति नंद-घर गर्गादिक मिलि आये हो। देखि तहां व्रजराज मुदित मन भीतर भवन बुलाये हो ॥ १ ॥ दोऊ कर जोरि किये पद वंदन करि सनमान वैठाये हो। सव ही विप्र मिलि वेद-मंत्र पढि सब आसीस सुनाये हो ॥ २ ॥ महरि जसोदा अति हरखित मन लालन उवटि न्हवाये हो। करि सिंगार दे विविध सामग्री मेवा गोद भराये हो ॥ ३ ॥ कहति जसोदा दोऊ भैया मिलि दान देहो मन भाये हो। आज परव संक्रांती को दिन खेलो सखन वुलाये हो ॥४॥ यह सुनि वचन हरखि वल-मोहन धाय महर पै आये हो। देखि मुदित 'व्रजराज' हुलसि के लीने कंठ लगाये हो ॥ ५ ॥ ❀ ४९६ ❀ राग पंचम ❀

वोलि पठाई स्याम पै जसुमति रोहिनी कियो सनमान। अपुनो परिकर सवै बुलावो मकर परव संक्रम वडो जान ॥ १ ॥ रीझि गोपाल पे दान करावो तुम हो चतुर सुजान। मनमान्यो सब सोंज करावो भरि-भरि तिल गुड़ दान ॥ २ ॥ सव सखियन मिलि मंगल गावो अपुने भवन निधान। 'सूर' स्याम कों अंक मध्य लै विप्र पै असीस पढ़ाय दीजेवहु विधिदान ॥३॥ ❀४९७❀

❀ राग पंचग ❀ कहत नंदरानी गोपाल सों तात को वुलाय लाओ वडो परव उत्तरायन। द्विजन कों दान देहों असीस वचन पढैहों खेलन न जाओ लालन वैठ रहो आंगन ॥ १ ॥ यह सुनि मोहन कियो सिंगार सखा संग लै चले खिरक गोदोहन जाहि देखे विन परत नहीं चैन। 'सूर'स्याम वावा सों कहत हैं जु आज कहा तिहारे मैया कहो मोसों यह सुनि मोदक ले

आये भवन ॥ २ ॥ ❀ ४९८ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग पंचम ❀ खेले सांवरो गोपाल गोप कुंवर के साथ गेंदुक चलाय अवनी लिये सुहाग। लीजो रे लीजो रे बोलत भांवते अनुराग ॥ १ ॥ कुंडल हलन चूडामनि नूपुर झनकार। झुकी पाग सुंदर मुख पर सोभित श्रमवार ॥ २ ॥ ऐसे ही मे मो तन चितवन कीनी मुसिकान। 'रामराय' गिरिधर 'भगवान' जीवन प्रान ॥३॥ ❀ ४९९ ❀ तिलवा भोग आये ❀ सवेरे होय तो पंचम इत्यादि कोई भी राग ❀ ❀ सांझ कूं राग कान्हरा ❀ आज भलो संक्रांति पुन्य दिन ताते मोदक लेहो मेरे लाल। बरसाने ते न्योति बुलाई संग लिये व्रजबाल ॥ १ ॥ नीके धोय मधुर रस वांध्यो भरि-भरि राखे कंचन थाल। बैठो रतन जटित सिंहासन सखा संग लै अपुने ग्वाल ॥ २ ॥ खेलो वैठो आय परस्पर सखा मंडली जोरि गोपाल। आपुन खाओ देहो सबन कों करो परस्पर ख्याल ॥ ३ ॥ देखत फूलत मात-बबा दोऊ वारत हैं मोतिन की माल। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर प्रेम प्रीति प्रतिपाल ॥४॥ ❀५०० ❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ बैठे व्रजराज गोद मोद सों गोपाललाल देत द्विजजन कों दान। व्रजवधू मङ्गल थाल साजि कर मे लिये गावत सुघर सुजान तरंग तान ॥ १ ॥ आये निकट जसुमति के आंगन लाई भीतर भवन मांझ विविध भांति सों कियो सनमान। 'सूरज' प्रभु की महिमा सारी सुरत मंगाये व्रज-तरुनी पहिराये सब पठाई भवन कीन दान ॥ २ ॥ ❀ ५०१ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग आसावरी ❀ ग्वालिन तें मेरी गेंद चुराई। अब ही आन परी पलका पर अपनी ओट दुराई ॥ १ ॥ रहो रहो लाडिले झूंठ न वोलो छतियां छूओ न पराई। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर कहां सीखे चतुराई ॥ २ ॥ ❀ ५०२ ❀ राग आसावरी ❀ खेलत मे को कहां को गुसइयां। श्रीदामा जीते तुम हारे वरवट ही कहा करत बडैयां ॥ १ ॥ जाति पांति कुल ते न वड़े हो कछु एक अधिक तिहारे गैयां। याही ते जु देत अधिकाई हम सब

बसत तिहारी छैयां ॥ २ ॥ रुगट करे तासों को खेले सखा रहे ठकठैयां । 'परमानंद' प्रभु खेल्यो चाहो तो पोत देहो करि नन्द दुहैया ॥३॥ ❀५०३❀ ❀ राग आसावरी ❀ देखो सखी मोहन मदन गोपाल । बागो घेरदार सिर टोपा पहिरे मोजा लाल ॥ १ ॥ पचरंग कबा छींट की फरगुल ओढि धरे वनमाल । ले चोगान गेंद खेलन चले संग लिये ब्रजवाल ॥ २ ॥ करति आरती मात जसोदा गावत गीत रसाल । 'कृष्णदास' प्रभु पर न्योछावरि वारत मुक्तामाल ॥ ३ ॥ ❀ ५०४ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सारंग ❀ तुम मेरी मोतिन लर क्यों तोरी । रहि ढोटा तू नंद-महर को करन चहति कहा जोरी ॥ १ ॥ मैं जान्यो मेरी गेंद चुराई लै कंचुकी बिच होरी । 'परमानंद' मुसिकाय चली तब पूरनचंद चकोरी ॥२॥ ❀५०५❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ गहे रहे भामिनी की बांह । मदनगोपाल मनोहर मूरति जानत हो सब मन मांह ॥ १ ॥ ठाडे बात करत राधा सों तहां जसोधा आई । झूठे ही मिस करि झगरन लागे तैं मेरी गेंद चुराई ॥ २ ॥ कोन टेव तिहारे ढोटा की बरजति काहे न माई । या गोकुल मे स्याम मनोहर उलटी चाल चलाई ॥ ३ ॥ सुनि मृदु वचन स्याम स्यामा के महरि चली मुसिकाई । 'परमानन्द' अटपटी हरि की सबै बात मन भाई ॥ ४ ॥ ❀ ५०६ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडाना ❀ कान्ह अटा चढि चंग उडावत हों अपुने आंगन हू ते हेरो । लोचन चार भये नन्दनन्दन काम-कटाक्ष भयो भटु मेरो ॥ १ ॥ कितो रही समुझाय सखी री हटक्यो न मानत री बहु तेरो । 'नन्ददास' प्रभु अबधों मिले हैं एंचत डोर किधों मन मेरो ॥ २ ॥ ❀ ५०७ ❀ राग अडाना ❀ कान्ह अटा पर चंग उडावत मैं इतते उत आंगन हेरयो । नैन भये विभिचारी नारायन भाजत लाज किधों भटभेरो ॥ १ ॥ मोहि तो यह जक लगी रहत है क्यों हू क्यों हू फिरत न फेरयो । 'परमानन्द' प्रभु यह अचंभो एंचत डोर किधों मन मेरो ॥२॥ ❀५०८❀

❀ राग विहाग ❀ खेलत गेंद राय-आंगन में हरि-हलधर दोऊ भैया । किल-कत हँसत करत कोलाहल सो छबि निरखि जसोधा मैया ॥ १ ॥ सुबल श्रीदामा सखा संग लै और सकल ब्रज के लरकैया । 'कृष्णदास' प्रभु की छबि निरखत तन मन वारत लेत वलैया ॥ २ ॥ ❀ ५०९ ❀ ❀ मान पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ आवत जात हों हार परी री ॥ ज्यों-ज्यों प्यारो विनती करि पठवत त्यों-त्यों तू गढ मान चढी री ॥ १ ॥ तिहारे वीच परे सो बावरी हों चोगान की गेंद भई री । 'गोविंद' प्रभु कों वेग मिलि भामिनी सुभग यामिनी जात वही री ॥२॥ ❀५१०❀ राग विहाग ❀ गिरिधर सेन कीजे आय । चांदनी यह घटत नाहीं कहत जसोदा माय ॥१॥ खेल सोई खेलिये बलि जो हमहि सुहाय । जा खेलते तेरे चोट लागे सो खेल देहो वहाय ॥ २ ॥ खेलि मदनगोपाल आये जननी लेत बलाय । पीओ पय तुम धोरी धेनु को सुख करहु माखन खाय ॥ ३ ॥ स्वच्छ सेज सुगंध बहु विधि लाल पोढे आय । 'मदनमोहन' लाल के सखि चरन चांपति माय ॥४ ॥ ❀ ५११ ❀

श्रीविट्ठलनाथ जी को जन्मादिन (माघ वदी ९)

❀ शृंगार समय ❀ राग विलावल ❀ आज नंद जू के द्वारे भीर । गावत मंगल गीत सबै मिलि प्रगटे हैं सुंदर वलवीर ॥ १ ॥ एक आवत एक जात विदा व्है एक ठाडे मन्दिर के तीर । एकन कों गौ दान देत हैं एकन कों पहिरावत चीर ॥ २ ॥ एकन कों फूलमाल देत हैं एकन कों घसि चंदन नीर । 'सूरदास' ने नव निधि पाई धन्य जसोदा पुन्य सरीर ॥३॥ ❀ ५१२ ❀ राग विलावल ❀ आनन्द आज नन्द जू के द्वार । दास अनन्य भजन रस कारन प्रगटे स्याम मनोहर ग्वार ॥ १ ॥ चन्दन सकल धेनु तन मंडित कुसुम दाम सोभित आगार । पूरन कुंभ बने कंचन के वीच रुचिर पीपल की डार ॥ २ ॥ युवति-यूथ मिलि गोप विराजत वाजत प्रनव मृदंग

सुतार । 'हित हरिवंश' अजर ब्रज-बीथिन दूध दही मधु घृत के खार ॥३॥ ❀ ५१३ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ मोद विनोद आज घर नन्द । कृष्णपच्छ आठैं निसि प्रगटे या गोकुल के चंद ॥ १ ॥ बंदनवार अरविंद मनोहर बीच बने पट कीर सुछंद । गोपी ग्वाल परस्पर छिरकत पुलकित विहरत मत्त गयंद ॥ २ ॥ भवन द्वार गोमय वर मन्डित बरखत कुसुम उमापति इन्द्र । 'विट्ठलदास' हरद दधि मधु घृत रंजित पान करत मकरंद ॥ ३ ॥ ❀ ५१४ ❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ धन्य जसोदा भाग्य तिहारो जिन ऐसो सुत जायो हो । जाके दरस परस सुख उपजत कुल को तिमिर नसायो हो ॥ १ ॥ विप्र सुजन चारन बंदीजन सबै नंदघर आये हो । नौतन हरद दूब दधि अच्छत हरखित सीस बंधाये हो ॥ २ ॥ गर्ग सरूप कहे बहु लछिन अवगति हैं अविनासी हो । 'सूरदास' प्रभु को जसु सुनिकैं आनन्दे ब्रजवासी हो ॥ ३ ॥ ❀ ५१५ ❀ राग आसावरी ❀ गाओ गाओ मङ्गलचार बधावो नन्द के । आओ आंगन कलस साजि के दधि फल नूतन डार ॥ १ ॥ उर सों उर मिलि नन्दराय जू गोपन सबै निहार । मागध सूत बंदीजन मिलि के द्वारे करत उचार ॥ २ ॥ पायो पूरन आस करि हो सब मिलि देत असीस । नन्दराय को कुंवर लाडिलो जीयो कोटि बरीस ॥ ३ ॥ तब ब्रजराज आनन्द मगन मन दीने बसन मगाय । ऐसी सोभा देखि के जन 'सूरदास' बलि जाय ॥ ॥ ४ ॥ ❀ ५१६ ❀ ❀ राग आसावरी ❀ देखो अद्भुत अवगति की गति कैसो रूप धरयो है हो । तीन लोक जाके उदर बसति हैं सो सूप के कोने परयो है हो ॥ १ ॥ नारदादि ब्रह्मादिक जाको सकल विस्व सर साधे । ताकी नार छेदत ब्रज-जुवती बांटि तगा सों बांधे ॥ २ ॥ जा मुख कों सनकादिक सोचत सकल चातुरी ठाने । सोइ मुख निरखत महरि जसोदा दूध लार लपटाने ॥ ३ ॥ जिन श्रवनन सुनि गज की आपदा गरुडासन बिसराये । तिन श्रवनन के

निकट जसोदा गाये और हुलराये ॥ ४ ॥ जिन भुजान प्रहलाद उबा-रयो हरनाकुस उर फारे । तेई भुज पकरि कहत ब्रजगोपी नाचो नैकु पियारे ॥ ५ ॥ अखिल लोक जाकी आस करत है सो माखन देखि अरे हैं । सोई अद्भुत गिरिवर हू ते भारी पलना मांझ परे हैं ॥ ६ ॥ सुन नर मुनि जाको ध्यान धरत है संभु समाधि न टारी । सोई प्रभु 'सूरदास' को ठाकुर गोकुल गोप-विहारी ॥ ७ ॥ ❀ ५१७ ❀ राग आसावरी ❀ देवक उदधि देवकी सीप वसुदेव स्वाति जल बरख्यो हो । उपज्यो सुवन विमल मुक्ताफल सुनि-सुनि सब जग हरख्यो हो ॥१॥ निर्मोलक नग हाथ जसोदा नंद जू को चित आकरख्यो । विधि नारद सिव सेष जवेरी तिन पै जात न परख्यो ॥ २ ॥ सुर नर मुनि जाको ध्यान धरत हैं सो ब्रज-युवतिन निरख्यो । सोई स्यामा उर हार बिराजत 'कल्यान' श्रीगिरिधर सरख्यो ॥३॥ ❀ ५१८ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ सबन सों कहति जसोदा माय जनम दिन लाल को फिर आयो ॥ ध्रु० ॥ जब वीते सब मास बहुरि आयो जब भादों । दिन आठे बुधवार होत गोकुल दधिकादो ॥ बोलि लई ब्रजसुंदरी हो हिलि-मिलि मंगल गाय । बांधति वंदनवार मनोहर मोतिन चोक पुराय ॥ १ ॥ केसर चंदन घोरि लाल बलि प्रथम न्हवाये । नाना वसन अनूप कनक भूषन पहराये ॥ रोरी को टीको दियो हो अंजन नैन लगाय । देत नोछावर रोहिनी हो फूली अंग न माय ॥ २ ॥ बजत बधाई द्वार नगारे भेरी ढोला । ब्रज कौतूहल होय उमग्यो मानो सिंधु कलोला ॥ भई दुंदुभी की गरजना हो सुर विमान चढि आये । सिव विरंचि स्तुति करैं हो सुर सुमनन बरखाये ॥ ३ ॥ गाम-गाम ते विप्र भाट गंधर्व जु आये । जाको जैसो चाव दान तिन तैसो पाये ॥ भलीभांति पूजा करी हो नीके नंद जिमाय । दै असीस घर कों चले हो सोंधे सों लपटाय ॥ ४ ॥ ऐसी लीला देखि फिरत फूले ब्रजवासी । फूली धेनु और वच्छ फूले द्रुम कंज पलासी ॥

गोवर्धन फूल्यो सदा हो फूली श्रीयमुना बहाय । 'रामदास' मन फूल भई श्री गिरिधर को जस गाय ॥ ५ ॥ ❀ ५१९ ❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ सांवरो मंगल रूप-निधान । जा दिन ते हरि गोकुल प्रगटे दिन-दिन होत कल्यान ॥ १ ॥ बैठि रहो स्याम गुन सुमरो रेन दिना सब याम । 'श्रीभट' के प्रभु नैन भरि देखो पीताम्बर घनस्याम ॥२॥ ❀ ५२० ❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा❀ अहो पिय सो उपाय कछु कीजे । जा उपाय ते या बालक कों राखि कंस ते लीजे ॥ १ ॥ मनसा वाचा और कर्मणा नृप कों कोन पतीजे । छल-बल करि उपाय कैसे हू काढि अनत ही दीजे ॥ २ ॥ नाहिन ऐसो भागि हमारो सुख लोचन पुट पीजे । 'सूरदास' ऐसे सुत को यस श्रवनन सुनि सुनि जीजे ॥३॥ ❀५२१❀ ❀ राग कान्हरा ❀ रानी तेरो भाग्य सबनते न्यारो । जायो पूत सुपूत सुलच्छन कुलदीपक उजियारो ॥१॥ गोद लिये हुलरावत गावत उर लावत अति प्यारो । 'परमानंददास' को ठाकुर गोकुल अखियन तारो ॥ २ ॥ ❀ ५२२ ❀ माघ सुदी ४ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग मालकोस ❀ सिसिर ऋतु को आगम भयो प्यारी बिदा भयो हेमंत । बिरहिन के भागिन ते आली आवत चल्यो बसंत ॥ १ ॥ जाहि दूतिका के भवन बसे हो भांवरि लीने कंत । 'कुंभनदास' प्रभु या जाड़े को आय गयो है अंत ॥२॥ ❀ ५२३ ❀ ❀ शृंगार समय ❀ राग मालकोस ❀ मदन मत कीनो री मतवारो । नागरी नवल प्रेम रस बसि कीनो नंददुलारो ॥ १ ॥ केधों प्रीतम पराये भवन मे करत हैं नित टारो । आज रेन अकिली सोय रहीहूँ सीत दहत तन भारो ॥ २ ॥ प्रथम कियो कर जोरि मिलन हित पायो प्रान-पियारो । 'परमानंद' प्रभु या जाड़े कों दीजे देस निकारो ॥ ३ ॥ ❀ ५२४ ❀ ❀ राग मालकोस ❀ विधाता अबलन कों सुख दीजे । जोपै प्रीतम पर घर जैहैं यह दुख तुम सुन लीजे ॥ १ ॥ बैरी मनोज उठति अंग-अंग मे

सीत लगे तन छीजे। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर या जाड़े कों विदा करि दीजे ॥ २ ॥ ५२५ ॥ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग ललित ❀ बसंत ऋतु आई आये पिय घर वन फूले उपवन हों फूली सब तन। विरह विथा वह गई पतझर भई नई कोंपल उनये आनंद घन ॥ १ ॥ मत्त मधुपगन गुंजत कोकिल धुनि अलापत गावत सब ब्रजजन। 'हरिवल्लभ' प्रभु की वलि जैये कैसे के रिझैये उनही को मन ॥२॥ ❀ ५२६ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ महल मेरे आये भवन मेरे आये अति मन भाये सुहाये लाल सिसिर हेमंत ऋतु सुखद जान। मानो मनमथ के मन मथवे कों रतिपति पियपति गोपीस कान ॥ १ । हों फूली अंग-अंग छबि निरखत मूर्तिवंत मानो वसंतराज फूल फूल्यो सुंदर सुजान । कामना द्योस जान अगम दिन अमित मान उरज श्रीफल भेट अंकसों प्रति अंक देत 'गोविंद' प्रभु रसबस करि देत दान ॥ २ ॥ ❀ ५२७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग माला ❀ सारंग नैनी री काहेकों करत है री तू मान । गोरी गर्व छांडि दे ताते होत कल्यान ॥१॥ जिनि हठ कर री तू नट नागर सों मोहे देव गंधार । रंग रंगीली सुघर-नायकी यह अडानो जानि ॥ २ ॥ कान्हर मुरली वजावे गावे सरद रेनि काननि। 'नंददास' केदारो करि के योंही विहाय गयो मान ॥३॥ ❀५२८❀ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ हरि जू राग अलापत गौरी । होंय बाट घाट घर तजिके सुनत वेनु धुन दौरी ॥ १ ॥ गई हों तहां जहां निकुंजवन अरु वैठे किसलय की चोरी । देखी मैं पीठ दीठ द्रुम फरकत पीत पिछोरी ॥२॥ लीनी हों वोलि हो मेरी सखी री देखि वदन भई वौरी । 'परमानन्द' नंद के नंदन मोहि मिले भरि कौरी ॥३॥ ❀५२९❀ सेनभोग आये ❀राग कल्यान ❀ हिम ऋतु अति हितकारी री सजनी रग महल वैठे दोऊ तन गसे। फवि रहे बसन विचित्र जुगल अंग फूल गुलाव की छवि रही पिय दृग से ॥१॥ सीत मीत व्है अंक लगे दुरि मृदु वतियन चित चोरत हँसहँसे। 'वृंदावन

हित रूप' जाय बलि झलकत बदन विधु हिये परम लसे ॥२॥ ❀ ५३०❀ ❀राग कान्हरा ❀ हिमऋतु सिसिरऋतु अति सुखदाई। प्यारी जू के फरगुल सोहे प्रीतम ओढे सरस कवाई ॥ १ ॥ पर गये परदा ललित तिवारी धरी अंगीठी अति सुखदाई। जरत अंगार धूम अंबर लों सरस सुगंध रह्यो तहां छाई ॥ २ ॥ जब-जब मधुर सीत तन व्यापत बैठत अंग सों अंग मिलाई। श्रीवल्लभ पद रज प्रताप ते'रसिक'सदा बलि जाई ॥३॥ ❀५३१❀ ❀ रागमाला ❀ ए मन मान मेरो कह्यो काहे कों रिसानी प्यारी तू। प्रथम री भैरो गुन जन गाइये याही ते सुघराई होतु ॥ १ ॥ मालकोस की तानन ले-ले राजत रूप बिहाग। 'द्वारकेस' प्रभु वसंत खिलावत याही तैं बढत सुहाग ॥ २ ॥ ❀ ५३२ ❀ सेन दर्शन ❀ राग ❀ आली री सजि सिंगार सायंकाल चली ब्रजबाल पिय दरसवे कों मत द्विरद गेन। मानो शिशुमार चक्र उदय होत गगन मध्य ध्रुव नक्षत्र की परिक्रमा देन ॥१॥ मानो ऋतु वसंत आई अंग-अंग छबि छाई दंपति समाज मोपै कही न परत बैन। 'मुरारीदास' प्रभु प्यारी चित्र-विचित्र गति सेवत निरखि पिया की छबि अद्भुत कोक रची मेन ॥ २ ॥ ❀ ५३३ ❀

वसन्त पंचमी (माघ सुदी ५)

❀शृंगार समय❀ रागमाला भैरो ❀ भोर भयो जागे जाम लाल हो अब रामकली उदे भयोभान। गुन की कली गुन पूरनप्यारी कहा अब होत देव गान ॥१॥ भयो बिभास आभास सब देखियत बलि-बलि जाऊं तू सुनि लेरी कान। आसा न करि तू अपुने प्रीतम की सोरठ समजि ले मन ही मन आन ॥२॥ सारंग नाम जाको ताके पास जाय आली सो नट भयो कहा करे अभिमान। चितवति चित पूरव मुख बैठी मधुमाध मद भयो तोकूं आन ॥ ३ ॥ ये क्रोध भयो गोरी कोन गुनन ते ए मन कहा करों कहा कहूं आन। केदारुन दुख मिट गयो कान्हर तेरो जीवन प्रान ॥ ४ ॥ रेन बिहाय गई प्यारी

पिय पास गई मदनमोहन पिय अति ही सुजान । चलत हिंडोल अंकमाल सोभा बन ठन 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी ललित चरन चित धरूं ध्यान ॥ ५ ॥ ❀ ५३४ ❀ राजभोग आये ❀ राग टोडी ❀ परोसत गोपी घूंघट मारे । कनक लता सी सुंदर सीमा आई है ज्योनारे ॥ १ ॥ झनक-मनक आंगन में डोलत लावण्य मोर सँवारे । नंदराय नंदरानी तें- दुरि लाले भले निहारे ॥ २ ॥ घर की सोंज मिलाय थार में आगे लै जब धारे । परम मिलनिया मोहन जू की हांसी मिस हूंकारे ॥३॥ रुचिर काञ्छनी जटित कोंधनी जूरो वांह उघारे । 'परमानंद' अवलोकन कारन भीर वहुत सिंहद्वारे ॥ ४ ॥ ❀ ५३५ ❀ राग टोडी ❀ परोसति पाहुनी ज्योनारी । जेंवत राम कृष्ण दोऊ भैया नंदवावा की थारी ॥ १ ॥ मोही मोहन को मुख निरखत विकल भई अतिभारी । भू पर भात कुरै भई ठाडी हसँत सकल ब्रजनारी ॥ २ ॥ कै याहि आंच हिये की लागी नव- जोवन सुकुमारी । 'परमानंद' यसोमति ग्वालिन सैनन वाहिर टारी ॥ ३ ॥ ❀ ५३६ ❀ राग टोडी ❀ चित्र सराहत दुरि मुरि चितवत गोपी वहुत सयानी । टकझक मे झुकि वदन निहारति अलक संवारति पलकन मारति जानि गई नंदरानी ॥ १ ॥ परगये परदा ललित तिवारी कंचनथार जव आनी । 'नंददास' प्रभु भोजन घर में उर पर कर धरयो वे उतते मुसिकानी ॥ २ ॥ ५३७ ❀ राग टोडी ❀ मोहन जेंवत एरी जिनि जाओ तिवारी । सिंहपौरि ते फिरि फिरि आवत वरजी है सौ वारी ॥ १ ॥ रोहिनी आदि निकसि भई ठाडी दै आडी मुख सारी । तुम तरुनी जोवन मदमाती ऐसी ये देखनहारी ॥ २ ॥ गरजत लरजत प्रतिउत्तर दै कोऊ वजावत तारी । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर अव ही वैठे थारी ॥३॥ ❀५३८❀ भोग सरे ❀ राग टोडी ❀ खंभ की ओझल ठाडो सुवल प्रवीण सखा करमे जटित डवा वीरा सों भरयो जेंवत हेरी मोहन । परदा परे तिवारी तीन्यो ता मधि झलकत

अंग अंग रंग सोहन ॥ १ ॥ जाहीकों देखत रानी ताही कों उठत झुक कोऊ नहीं पावत समयो जोहन । 'नंददास' प्रभु भोजन करि बैठे तब मै दई री सेन पान खाय आवन कहयोरी गोहन ॥ २ ॥ ५३९ ❀ वसंत के दर्शन❀ झांझ पखावज सूं ❀ राग वसंत ❀ हरिरिह ब्रजयुवतीशतसंगे । विलसति करिणीगणवृतवारणवर इव रतिपतिमानभंगे । ध्रु व०। विभ्रमसंभ्रमलोल-विलोचनसूचितसंचितभावं । कापि दृगंचलकुवलयनिकरैरंचति तं कलरावं ॥ १ ॥ स्मितरुचिरुचिरतराननकमलमुदीच्य हरेरतिकंद । चुंबति कापि नितंबवतीकरतलधृतचिबुकममंदं ॥ २॥ उद्भटभावविभावितचापलमोहन निधुवनशाली । रमयति कामपि पीनघनस्तनविलुलितनववनमाली ॥ ३ ॥ निजपरिरंभकृतेनुद्रुतमभिविद्य हरिं सविलासं । कामपि कापि बलादक-रोदग्रे कुतुकेन सहासं ॥ ४ ॥ कामपि नीवीबंध विमोक्ससंभ्रमलज्जितनयनां । रमयति संप्रति सुमुखि बलादपि करतलधृतनिजवसनां ॥ ५ ॥ प्रियपरि-रंभाविपुलपुलकावलि द्विगुणितसुभगशरीरा । उद्गायति सखि कापि समं हरिणा रतिरणधीरा ॥६। विभ्रमसंभ्रमगलदंचलमलयांचितमंगमुदारं । पश्यति सस्मितमपि विस्मितमनसा सुदृशः सविकारं ॥७॥ चलति कयापि समं सकर-ग्रहमलसतरं सविलासं । राधे तव पूरयतु मनोरथमुदितमिदं हरि रासं ॥८॥ ❀५४०❀राग वसंत❀विहरतिहरिरिह सरसवसंते । नृत्यति युवतिजनेन समंसखि विरहिजनस्य दुरंते ॥ ध्रु०॥ ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे । मधुकर निकरकरंबितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे ॥१॥ उन्मदमदनमनोरथ पथिकवधूजनजनितविलापे । अलिकुलसंकुलकुसुमसमूह निराकुलबकुल-कलापे ॥ २ ॥ मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले । युवजनहृदय-विदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ॥३॥ मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेसर-कुसुमविकासे । मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृत स्मरतूणविलासे ॥ ४ ॥ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे । विरहिनिकृंतनकुंतमुखा-

कृति केतकिदंतुरिताशे ॥ ५ ॥ माधविकापरिमलललिते नवमालतिजाति सुगंधौ । मुनि-मनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबंधौ ॥ ६ ॥ स्फुट-दतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते । वृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ॥७॥ 'श्रीजयदेव' भणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारं । सरसवसंतसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारं ॥८॥ ❀ ५४१ ❀ उत्सव भोग-आये ❀ राग वसंत ❀ गावत चली वसंत बधावो नंदराय-दरबार । बानिक बनिठनि चोख-मोख सों व्रजजन सब इकसार ॥ १ ॥ अंगिया लाल लसत तन सारी झूमक नव उर-हार । बेनी ग्रथित रुरत नितंब पर कहा कहूं बडडे बार ॥ २ ॥ मृगमद आड बडेरी अखियाँ आंजी अँजन पूरि । प्रफुलित वदन हसत दुलरावति मोहन जीवनमूरि ॥ ३ ॥ पग जेहरि केहरि कटि किंकिनी रह्यो विथकि सुनि मार । घोष-घोष प्रति गलिन-गलिन प्रति बिछु-वन के झनकार ॥ ४ ॥ कंचन कुंभ सीस पर लीने मदन-सिंधु ते भरि कै । ढांपे पीत वसन जतनन करि मौर मंजरी धरि कै ॥ ५ ॥ अबीर गुलाल अरगजा सोंधो विधि न जात विस्तारी । मैंन-सैन ज्योनार देन कों कमलनि कमलन थारी ॥ ६ ॥ पहुंची जाय सिंहपोरी जब विपुल जुवति समुदाई । निज मन्दिर ते निकसि जसोदा सन्मुख आगे आई ॥ ७ ॥ भई भीर भीतर भवनन में जहां व्रजराजकिसोर । भरति भांवते प्रानपिया कों घेरि फेरि चहुं ओर ॥ ८ ॥ व्रजरानी जब मुरि-मुसिकानी पकरन भई जब कर की । ल सङ्ग सखी लखी कछु बतियां मिस ही मिस उत सरकी ॥ ९ ॥ कुमकुम रङ्ग सों भरि पिचकारी छिरकैं जे सुकुमारी । बरजत छींटे जात दृगन मे धनि वे पोंछनहारी ॥ १० ॥ चन्दन वन्दन चोवा मथि कै नीलकंज लप-टावे । अलक सिथिल और पाग सिथिल अति पुनि वे बांधि बनावे ॥११॥ भरति निसंक भई अङ्कवारी भुजन बीच भुज मेलैं । उन्मद ग्वालि वदति नहिं काहू झेल-खेल रस रेलैं ॥ १२ ॥ कियो रगमगो ललित त्रिभंगी

भयो ग्वालिन मनभायो। टकझक मे झुकि एकहि बिरियां लालन कंठ लगायो ॥ १३ ॥ ताल मृदङ्ग लिये श्रीदामा पहुँचे आय सहाई। हलधर सुबल तोक मधुमंगल अपनी भीर बुलाई ॥ १४ ॥ खेल मच्यो मणि-खचित चौक में कविपै कहा कहि जावे। 'चत्रुभुज'प्रभु गिरिधरनलाल छबि देखे ही बनि आवे ॥ १५॥ ❀ ५४२ ❀ राग बसंत ❀ श्रीपंचमी परम मंगल दिन मदन-महोत्सव आज। बसंत बनाय चली ब्रजसुंदरि लै पूजा को साज ॥ १ ॥ कनक कलस जल पूरि पढत रति काममंत्र रसमूल। तापर धरी रसाल मंजरी आवृत पीत दुकूल ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा नव केसर घनसार। धूप दीप नाना नीरांजन विविध भांति उपहार ॥ ३ ॥ बाजत ताल मृदङ्ग मुरलिका बीना पटह उपंग। गावत राग बसंत मधुर सुर उपजत तान तरंग ॥ ४ ॥ छिरकत अति अनुराग मुदित गोपीजन मदन-गोपाल। मानो सुभग कनक कदली मधि सोभित तरुन तमाल ॥ ५ ॥ यह विधि चली रतिराज बधावन सकल घोष आनन्द। 'हरिजीवन' प्रभु गोवर्धनधर जय-जय गोकुलचन्द ॥ ६ ॥ ❀ ५४३ ❀ राग बसंत ❀ कुच गडुवा जोबन मौर कंचुकी वसन ढांपि राख्यो है वसन्त। गुन मन्दिर अरु रूप बगीचा ता मधि बैठी है मुख लसन्त ॥१॥ कोटि काम लावन्य बिहारी जू जाहि देखत सब दुख नसन्त। ऐसे रसिक 'हरिदास' के स्वामी ताहि भरन आई मिलन हसन्त ॥ २ ॥ ❀ ५४४ ❀ राग बसंत ❀ लाल ललित ललितादिक सङ्ग लिये बिहरत वर वसन्त ऋतु कला सुजान। फूलन की कर गेंदुक लिये पटकत पट उरज छिये हसत-लसत हिलि मिलि सब सकल गुन निधान ॥ १ ॥ खेलत अति रस जो रह्यो रसना नहिं जात कह्यो निरखि-परखि थकित भये सघन गगन जान। 'छीतस्वामी' गिरिवर-धर विट्ठल पद पद्मरेनु वर प्रताप महिमा ते कियो कीरति गान ॥ २ ॥ ❀ ५४५ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग बसंत ❀ गिरिधरलाल की बानिक ऊपर

आज सखी तृन टूटे री । चोवा चन्दन अगर कुमकुमा पिचकाइन रङ्ग छूटे री ॥ १ ॥ लाल के नैना रगमगे देखियत अङ्ग अनंगन लूटे री । 'कृष्णदास' धनिधन्य राधिका अधर सुधारस घूटे री ॥२॥ ❀ ५४६ ❀ भोग के दर्शन❀ ❀ राग वसंत ❀ आवो बसंत वधावो ब्रज की नारि । सखि सिंहपौरि ठाडे मुरारि ॥ ध्रु० ॥ नौतन सारी कसुंभी पहरि के नवसत आभरन सजिये । नव-नव सुख मोहन संग विलसत नवल कान्ह पिय भजिये ॥ १ ॥ राधा चन्द्रभागा चन्द्रावली ललिता भाम सुसीले । संजावली कनक घट सिर पर अंबमौर यव लीले ॥ २ ॥ चोवा चन्दन अगर कुमकुमा उडत गुलाल अबीरे । खेलत फाग-भाग वड गोपी छिरकत स्याम सरीरे ॥ ३ ॥ वीना बेनु झांझ डफ वाजे मृदङ्ग उपङ्गन ताल । 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर रसिक कुंअर गोपाल ॥ ४ ॥ ❀ ५४७ ❀ राग वसंत ❀ देखो वृन्दावन श्रीकमलनैन । आयो-आयो मदन गुन गुदर दैन ॥ १ ॥ द्रुम नव दल सुमन अनेक रंग । प्रति ललित लता संकुलित संग ॥ २ ॥ कर धरे धनुप कटि कसि निषंग । मानो बने सुभट साजे कवच अंग ॥ २ ॥ कोकिला कूजि रहे हंस मोर । रथ सैल सिला पदचर चकोर ॥ ४ ॥ वर ध्वज पताक तरु तार केर । निर्झर निसान वाजे भमर भेर ॥ ५ ॥ जहां नेम सुमनि अति मलय वात । मानो तेज वसन वाने उडात ॥ ६ ॥ रुचिर राजत विपिन विलोल पात । धपि धाय धरत अति तुरत गात ॥ ७ ॥ 'सूरदास' इमि बदत बाल । आयो काम कृपन सिव क्रोध काल ॥ ८ ॥ फिरि चितयो चपल लोचन विसाल । यह अपनों करि थापिये गोपाल ॥९॥ ❀५४८❀ ❀ संध्या समय ❀ राग वसंत ❀ नंद के द्वारे, आई हम । खेलत फाग वसंत पंचमी सुख समाज विचारे ॥ १ ॥ कोऊ लै अगर कुमकुमा केसर काहू के मुख पर डारे । कोऊ अबीर गुलाल उडावे आनन्द तन न संभारे ॥२॥ मोहन कों गोपी निरखत सव नीके वदन निहारे । चितवनि मे सव ही

बस कीनी नागर नन्ददुलारे ॥ ३ ॥ ताल मृदंग मुरली डफ बाजे झांझन की झनकारे । 'सूरदास' प्रभु रीझि मगन भये गोपवधू तन वारे ॥४॥❀५४९❀ ❀ सेनभोग आये ❀ राग वसंत ❀ राधे जू आज बन्यो है वसंत । मानो मदन विनोद विहरत नागरी नव कंत ॥ १ ॥ मिलत सन्मुख पाटली पट मत्त मान जुही । बेली प्रथम समागम कारन मेदिनी कच गुही ॥ २ ॥ केतकी कुच कमल कंचन गरे कंचुकी कसी । मालती मद विसद लोचन निरखि मुख मृदु हसी ॥ ३ ॥ विरह ब्याकुल कमलिनी-कुल भई बदन विकास । पवन परसत सहचरी पिक गान हृदय विलास ॥ ४ ॥ उत सखी चम्पक चतुर अति कदम नौतन माल । मधुप मनिमाला मनोहर 'सूर' श्रीगोपाल ॥ ५ ॥ ❀ ५५० ❀ राग वसंत ❀ प्यारी नवल नव बन केलि । नवल विटप तमाल अरुझी मालती नव-बेलि ॥ १ ॥ नव वसंत हसंत द्रुम-गन ज़रा जारे पेलि । नवल मिथुन विहँग कूजत मची ठेलाठेलि ॥ २ ॥ तरनितनया तट मनोहर मलय पवन सहेलि । बकुल कुल मकरंद लंपट रहे अलिगन झेलि ॥ ३ ॥ यह समै मिलि लाल गिरिधर मान दुख अवहेलि । 'कृष्णदासनिनाथ' नवरंग तू कुमारी नवेलि ॥ ४ ॥ ❀ ५५१ ❀ ❀ राग वसंत ❀ प्यारी देखि बन के चेन । भृङ्ग कोकिल सब्द सुनि सुनि होत प्रमुदित मैन ॥ १ ॥ जहां बहत मंद सुगंध सीतल भामिनी सुख सेन । कोन पुन्य अगाध को फल तू जो बिलसत ऐन ॥ २ ॥ लाल गिरिधर मिल्यो चाहत मोहन मधुरे बैन । 'दास परमानन्द' प्रभु हरि चारु पंकज नैन ॥ ३ ॥ ❀ ५५२ ❀ राग वसंत ❀ प्यारी देखि बन की बात । नव बसंत अनंत मुकुलित कुसुम अरु द्रुम पात ॥ १ ॥ बेनु-धुनि नंदलाल बोली तुम कितहि अलसात । करत कितही विलंब भामिन वृथा ओसर जात ॥ ॥ २ ॥ लाल मरकतमनि छबीलो तू जो कंचन गात । बनी 'हित हितवंस' जोरी उभै गुनगान गात ॥ ३ ॥ ❀ ५५३ ❀

❀ भोग सरे ❀ राग वसंत ❀ आई ऋतु चहूँदिस फूले द्रुम कानन कोकिला समूह मिलि गावत वसंत हि। मधुप गुञ्जारत मिलत सप्तसुर भयो है हुलास तन मन सब जंतहि ॥ १ ॥ मुदित रसिक जन उमगि भरे हैं नहिं पावत मन्मथ सुख अंतहि। 'कुंभनदास' स्वामिनी वेगि चलि यह समें मिलि गिरिधर नव कंतहि ॥ २ ॥ ❀ ५५४ ❀ सेन दर्शन ❀ राग वसंत ❀ ऐसो पत्र पठायो नृप वसंत। तुम तजहु मान मानिनी तुरंत ॥ १ ॥ कागद नवदल अंबपात। द्वात कमल मसि भमरगात ॥ २ ॥ लेखनी काम के वान चाप। लिखि अनंग ससि दई है छाप ॥ ३ ॥ मलयानिल पठयो करि विचार। वांचें सुक पिक तुम सुनो नार ॥ ४ ॥ 'सूरदास' यों वदत वान। तू हरि भजि गोपी तजि सथान ॥ ५ ॥ ❀ ५५५ ❀ राग वसंत ❀ गोवर्धन की सिखर चारु पर फूली नव माधुरी जाय। मुकुलित फलदल सघन मंजरी सुमन सुसोभित वहुत भाय ॥ १ ॥ कुसुमित कुंज पुञ्ज द्रुम वेली निर्झर झरत अनेक ठांय। 'छीतस्वामी' व्रजयुवतीयूथ मे विहरत है गोकुल के राय ॥ २ ॥ ❀ ५५६ ❀

❀माघ सुदी ६❀मंगला दर्शन❀ राग वसंत❀ खेलत वसंत निस पिय संग जागी। सखी वृंद गोकुल की सोभा गिरिधर पिय पदरज अनुरागी ॥ १ ॥ नवल-कुञ्ज मे गूंजत मधुप पिक विविध सुगन्ध छींट तन लागी। 'कृष्णदास' स्वामिनी युवती यूथचूड़ामनि रिझवत प्रानपति राधा वड़भागी ॥ २ ॥ ❀ ५५७ ❀ शृंगार समय ❀ राग वसंत ❀ देखियत लाल लाल दृग डोरे। काके संग खेले वसंत करि निहोरे ॥ १ ॥ सजलताई प्रगट मानो कुमकुम रसवोरे। अरुनताई भई गुलाल वंदन सित छोरे। अञ्जन छवि लागत मानो चोवा छवि चोरे। वरुनी मानो नूतन पल्लव अधर भये सिधोरे॥३॥ कवहू रसमत नाचत दोऊ कटाच्छन कोरे। गान सूरति भई मानो विविध तान तोरे ॥ ४ देखियत अति सिथिलताई मांझ झकझोरे। काहे कूं

कहत कछू जाने मन मोरे ॥ ५ ॥ सन्मुख व्है कबहू मुख फेरि जात लजोरे । 'रसिक' प्रीतम मेरे तुम आये काके भोरे ॥ ६ ॥ ❀ ५५८ ❀ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग वसंत ❀ स्याम सुभग तन सोभित छींटें नीकी लागी चंदन की। मंडित सुरङ्ग अबीर कुमकुमा अरु सुदेस रज वंदन की ॥१॥ गिरिधर लाल रची विधि मानो युवतीजन मन फंदन की । 'कुंभनदास' मदन तन-धन बलिहार कियो नंदनंदन की ॥ २ ॥ ❀ ५५६ ❀ गोपीवल्लभ सरे ❀ राग वसंत ❀ जसुदा नहिं बरजे अपनो बाल । अपनो वाल रसिया गोपाल ॥१॥ स्नान करन गई जमुना तीर । कर कंकन आभरन धरे चीर ॥ २ ॥ मेरी जल प्रवाह तनु गई दीठ । पाछे ते कान मेगी मलत पीठ ॥ ३ ॥ यह अन्न न खाय मुख पीवे न खीर । यह केतिक बार गयो जमुना तीर ॥४॥ हों वारी री ग्वालिन तेरो ज्ञान । यह पलना झूले मेरो बारो कान ॥५॥ वृन्दावन देखे मैं तरुन कान । घर आइकै कैसे होत अयान ॥ ६ ॥ उठि चली री ग्वालि जिय उपजी लाज । 'सूरदास' ये प्रभु के काज ॥ ७ ॥ ❀ ५६० ❀ राजभोग आये ❀ राग वसंत ❀ रिंगन करत कान आंगन में कर लिये नवनीत । सोभित नील जलद तन सुन्दर पहरे झगुली पीत ॥ १ ॥ रुनझुन-रुनझुन नूपुर बाजे त्यों पग ठुमकि धरे । कटि किंकनी कलराव मनोहर सुनि किलकार करे ॥ २ ॥ दुलरी कंठ कुंडल दोउ कानन दियो है कपोल दिठौना । भाल विसाल तिलक गोरोचन अलकावली अलि छोना ॥ ३ ॥ लटकन लटकि रह्यो भुव ऊपर कुलह सुरंग बनी । सिंहपौरि ते उझकि-उझकि के छबि निरखत है सजनी ॥ ४ ॥ नंदनंदन उन तन चितवत ही प्रेम मगन मन आई । कंचनथार साजि घर-घर ते बहु विधि भोजन लाई ॥ ५ ॥ मनिमंदिर मूढा पै सुन्दरी आछे वसन बिछावें । बालकृष्ण कों जो रुचि उपजें अपुने हाथ जिमावें ॥ ६ ॥ जल अचवाय वदन पोंछत और बीरी देत सुधारी । हिये लगाय बदन चुंबन करि सर्वसु डारत वारी

॥ ७ ॥ नैनन अञ्जन दै लालन के मृगमद खोर करे। सुरङ्ग गुलाल लगाय कपोलन चिबुक अबीर भरे ॥ ८ ॥ चोवा चंदन छिरकि अबीर गुलालन फैंट भराई। तनक-तनक सी मोहन कों भरि देत कनक पिचकाई ॥ ९ ॥ आपुस मांझ परस्पर छिरकत लालन पै छिरकावै। नैंनी नैनी मुठी भराय रंगन सों सैनन नैन भरावै ॥१०॥ निरखि-निरखि फूलत नंदरानी तन मन मोद भरी। नित प्रति तुम मेरे घर आओ मानौं सुफल घरी ॥ ११ ॥ देत असीस सकल ब्रजवनिता जसुमति भाग तिहारो। कोटि वरस चिर· जीयो यह 'ब्रज' जीवन प्रान हमारो ॥ १२ ॥ ❀ ५६१ ❀ राग वसंत ❀ अद्भुत सोभा वृन्दावन की देखो नंदकुमार। कंत वसन्त जानि आवत बन बेलो कियो सिंगार ॥ १ ॥ पल्लव वरन वरन पहिरे तन बरन बरन फूले फूल। ये तो अधिक सुहायो लागत मनि अभरन समतूल ॥ २ ॥ नंद-नंदन विहंग अनङ्ग भरी बाजत मनहुँ बधाई। मङ्गल गीत गायवे कों मानो कोकिल वधू बुलाई ॥ ३ ॥ वहत मलय मारुत परचारग सबके मन संतोसे। द्विज भोजन सोहत आलिंगन मधु मकरन्द परोसे ॥ ४ ॥ सुनि सखी वचन 'गदाधर प्रभु' के चलो सखी तहाँ जैये। नवल निकुंज महल मंडप में हिलि-मिल पंचम गैये ॥ ५ ॥ ❀ ५६२ ❀भोग सरे❀ राग वसंत ❀ एक बोल वोलो नँदनंदन तो खेलौं तुम संग। परसौं जिनि काहू कों प्यारे आन अंगना अङ्ग ॥ १ ॥ वरजति हौं वीरी काहू की जसुमतिसुत जिनि लेहु। आलिंगन परिरंभन चुंवन नैन सैन जिनि देहु ॥२॥ मेरे खेल वीच कोऊ भामिनी आय लाल कों भरि है। प्राननाथ हौं कहे देत हौं मोपै सही न परि है ॥ ३ ॥ प्रभु मोहि भरो भरौं हौं प्रभु कों खेलो कुंज विहारी। 'अग्र स्वामी' सों कहति स्वामिनी रंग उपजैगो भारी ॥ ४ ॥ ❀ ५६३ ❀

ग्वाल के दर्शन में डोल तक ये पद गावनो

❀ राग वसंत ❀ अति सुन्दर मनिजटित पालनो झूलत लाल विहारी।

खेलत फाग सखा संग लीने नाचत दै कर तारी ॥ १ ॥ घर घर ते आई बनि-बनि के पहिरे नौतन सारी। तनक गुलाल अबीरन ले कै छिरकत राधा प्यारी ॥ २ ॥ गावत हैं गारी आंगन में प्रमुदित मनो सुकुमारी। चोवा चन्दन अगर कुमकुमा देत सीस ते ढारी ॥ ३ ॥ लपटि रहै तन बसन रंग में लागत हैं सुखकारी। विवस भई देखत मनमोहन भरि लीने अङ्कवारी ॥ ४ ॥ मिस ही मिस ढिंग आय पालनो झुलवत ब्रज की नारी। अबीर गुलाल कपोलन हँसत दे दे कर तारी ॥ ५ ॥ तन मन मिली प्रानप्यारे सों नोतन सोभा बाढ़ी। सिथिल वसन मुकुलित कबरी मानों प्रेमसिंधु तें काढी ॥ ६ ॥ यह सुख ऋतु वसन्त लीला मे बालिकेलि सुखकारी। सरवसु देत वारि प्यारे पै 'जन गोविंद' बलिहारी ॥७॥❀५६४❀

फागुन वदी ६ तक मंगला मे वसंत के ये कीर्तन गवैं।

❀ राग वसंत ❀ आज कछु देखियत और ही बानक प्यारी तिलक आधे मोती मरगजी मंग। रसिक कुंवर संग अखारे जागी सजनी अधरसुख निस बजावत उपंग ॥१॥ नव निकुंज रंगमंडप में नृत्यभूमि साजि सेज सुरंग। तापर विविध कल कूजित सखी सुनत श्रवन वन थकित कुरंग ॥ २ ॥ 'कृष्णदास' प्रभु नटवर नागर रचत नयन रतिपति व्रत भंग। मोहनलाल गोवर्धनधारी मोहि मिलन चलि नृत्य अनंग ॥ ३ ॥ ❀ ५६५ राग वसंत❀ कोयल बोली सब बन फूले मधुप गुंजारन लागे। मिलि भयो सोर रोर वृन्दावन मदन महीपति जागे ॥ १ ॥ तिन दीने दूने अंकुर पल्लव जे पहले दव दागे। मानो रतिपति रीझि जाचकन बरन-बरन दिये बागे ॥ २ ॥ नई प्रीति नई लता पहुंप नये-नये-नये रस पागे। नयो नेह नव नागर हरखत सुर सुरंग अनुरागे ॥ ३ ॥ ❀ ५६६ ❀राग वसंत❀ तेरे नैन उनीदे तीन पहर जागे काहे कों सोवत अब पाछली निसा। कछू अलसात बीच श्रम लागत श्रीपति न जाय अधिक रिसा ॥१॥ गिरिधर

पिय को वदन सुधा रस पान करत नहिं जात तृसा। एते कहत होय जिनि प्रगटित रतिरस-रिपु रवि इन्द्र-दिसा ॥ २ ॥ तुव मुख-जोति निरखत उडुपति मगन होत निरखि जलद खिसा। 'कृष्णदास' बलि-बलि वैभव की नव निकुंज गृह मिलत निसा ॥ ३ ॥ ❀ ५६७ ❀

वसंत सूं रोपणी तक क्रीट धरैं तब सिंगार समय

❀ राग वसंत ❀ बंदों पदपंकज विट्ठलेस। श्रीवल्लभ-कुल दीपक सुवेस ॥ १ ॥ जिनकी महिमा जे कहैं उदार। अति जस प्रगट कियो संसार ॥ २ ॥ अनुसरत नीच जे तजि विकार। तिनैं भव-निधि तरत न लगत वार ॥ ३ करि सार अर्थ भागवत प्रमान। कीने खंडन पाखंड आन ॥४॥ बांधी मर्यादा सब वेद मान। जन-दीन उद्धरन सुख निधान ॥ ५ ॥ तिहीं वंस आनन्द देन। श्रीपुरुषोत्तम सब सुख के ऐन ॥ ६ ॥ ❀ ५६८ ❀

❀ राग वसंत ❀ गोपीजन-वल्लभ जैं मुकुंद। मुख मुरलीनाद आनन्द कंद ॥ १ ॥ जैं रास-रसिक रवनी अवेस। सिखिन सिखंड विराजे केस ॥ २ ॥ गुंजा वनधातु विचित्र देह। दरसन मन हरन बढावैं नेह ॥ ३ ॥ जैं सुंदर मन्दिर धरन-धीर। वृन्दावन विहरत गोप-बीर ॥ ४ ॥ वनिता सत यूथ हैं परमधाम। लावन्य कलेवर कोटि काम ॥ ५ ॥ जैं-जैं वैजयन्ती वनी माल। जैं कमल अरुन लोचन विसाल ॥ ६ ॥ कुंडल मंडित भुज दंड मूल। नृत्य करत कालिंदी कूल ॥ ७ ॥ जैं जैं पुलकित खग मराल। सुर नर मुनि ध्यानी ध्यान टाल ॥ ८ ॥ सार पिक मूर्छित सु तान। मुनि देखि थकित भये सुर विमान ॥ ९ ॥ जैं जैं श्रीकृष्ण कला निधान। करुनामय यदुकुल-जलज भान ॥ १० ॥ भगवंत अनन्त चरित्र तार। कहे 'माधोदास' मन मगन मार ॥ ११ ॥ ❀ ५६९ ❀ शृंगार दर्शन ❀

❀ राग वसंत ❀ वन्दो पदपंकज नंदलाल। जे भव तारन पूरन कृपाल ॥ १ ॥ चित चिंतित हो बुद्धी विसाल। कृपा करन अरु दीनदयाल ॥२॥

सदा बसो मेरे हृदय मांय । कुंवर माधुरी चितहि धाय ।। ३ ।। तिमिर हरन सुखकरानंद । मुनि वंदन आनंद कंद ।। ४ ।। स्याम मुकुटमनि कमल नैन। छबि समूह पर लजित मैन ।। ५ ।। गोकुलपति गुन नाहिन पार। श्रीनंद सुवन सुमिरो उदार ।। ६ ।। निगमागम सब ओघ सार । सोई वृन्दावन प्रगट्यो विहार ।। ७ ।। ऋतु वसंत पहली समाज । तहां मुदित युवती जन सजे साज ।। ८ ।। मुदित चली जहां 'सूरस्याम' । वसंत बधावन नंदधाम ।। ९ ।। ❀ ५७० ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग वसंत ❀ नंदनंदन श्रीवृषभान-नृपनन्दिनी सरस ऋतुराज विहरत वसंते । इत सखा सङ्ग सोभित श्रीगिरि-वरधरन ऊत युवती जन मध्य राधा लसंते ।। १ ।। सूरजा तट सुभग परम रमनीय वन सुखद मारुत मलय मृदु वहंते । प्रफुल्लित मल्लिका मालती माधवी कुहुकुहू सब्द कोकिल हसंते ।। २ ।। विविध सुर तान गावत सुघर नागरी ताल कठताल बाजत मृदंगे । वेनु बीना अमृतकुंडली किन्नरी झांझ बहो भांति आवज उपंगे ।। ३ ।। चंदन सु वंदन अबीर नव अरगजा मेद गोरा साख बहु घसंते । छिरकत परस्पर सु दंपती रस भरे करत बहु केलि मुसकनि हसंते ।। ४ ।। देखि सोभा सुभग मोहे सिव विधि तहां थकित अमरेस लज्जित अनंगे । 'गोविंद प्रभु' पिय हरिदासवर्यधर घोख-पति युवतीजन मान भंगे ।। ५ ।। ❀ ५७२ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग वसंत ❀ राजा अनंग मंत्री गोपाल । कियो मुजरा करि छाड़ भाल ।। ध्रु० ।। प्रथम पठाई नीति जाई । पुनि सिंहासन बैठे आई ।। कर जोरे रहे सीस नाई । विनती करि मांगत राजा राई ।। १ ।। फूले चहुं दिस तरुवर अनेक । बोलत कपोल सुक हंस भेक ।। अति आमोद भरि छांडे न टेक । तहां लेत रास अलि करि विवेक ।। २ ।। तब कियो तिलक रति-राज आनि । तब लावत भेट जिय डरहि मानि ।। मानो हरित बिछोना रह्यो ठानि । तरुवर दलांकित ताल जानि ।। ३ ।। नायक मन भायो काम राज । छांडी

सबनते दुहू लाज। अपुने अपुने मिलि समाज। डोलत रससागर चढि जहाज ॥ ४ ॥ अति चतुर राजमंत्री हि देखि। तब दियो राज अपुनो विसेख। तब अपुनो 'गोपाल दास' लेख। छांडो कबहू जिनि पल निमेख ॥ ५ ॥ ❀ ५७२ ❀ संध्या समय ❀ राग वसंत ❀ हरिजू के आवन की वलिहारी। वासर गति देखति हैं ठाड़ी प्रेम मुदित व्रजनारी ॥ १ ॥ ऋतु वसंत कुसुमित वन देखियत मधुप वृंद यस गावैं। जे मुनि आय रहत वृंदावन स्याममनोहर भावैं ॥ २ ॥ नीको भेख बन्यो मनमोहन राजति मनि उर हार। मोरपच्छ सिर मुकट विराजत नंदकुमार उदार ॥ ३ ॥ घोख प्रवेस कियो है संग मिलि गौरज मंडित देह। 'परमानंद स्वामी' हित कारन जसुमति नंद सनेह ॥४॥ ❀५७३❀ सैंन भोग आये❀राग वसंत ❀ आयो ऋतुराज साज पंचमी बसंत आज मौरे द्रुम अति अनूप अंब रहे फूली। बेली पट पीत माल सेत पीत कुसुम लाल उडवत सब स्याम भाम भमर रहे भूली ॥ १ ॥ रजनी अति भई स्वच्छ सरिता सब विमलपच्छ उडुगनपति अति अकास बरखत रसमूली। जती सती सिद्ध साधु जिततित उठिभागे समाज विमन जटी तपसी भये मुनि मन गति भूली ॥ जुवती जूथ करत केलि स्याम सुखद सिंधु झेलि लाज लीक दई पेलि परसि पगन भूली। वाजत आवज उपंग बांसुरी मृदंग चंग यह सुख सब 'छीत' निरखि इच्छा अनुकूली ॥ ३ ॥ ❀ ५७४ ❀ ❀ राग वसंत ❀ ऋतु वसंत वृंदावन विहरत व्रजराज काज साजे द्रुम नव पल्लव प्रफुलित पोहोपन सुवास। कलापी कपोत कीर कोकिल कमनीय कंठ कूजत श्रवनन सुनत होत है हो हिय हुलास ॥ १ ॥ तैसोई त्रिविध पवन वहत तैसोई सीतल सुगंध मंद रंग उपजत है हो अति उल्लास। 'प्रभु कल्यान' गिरिधर उत युवतीयूथ मधि राधा केसर छिरकत अवीर गुलाल उडावत आवत है हो करैं रंग रास ॥ २ ॥ ❀ ५७५ ❀ राग वसंत ❀ ऋतु वसंत तरु लसंत मन हसंत कामिनी भामिनी सब अंग-अंग रमत फागरी।

चर्चरी अति विकट ताल लागत संगीत रसाल उरप-तिरप लास्य तांडव लेत लागरी ॥ १ ॥ बंदन बूका गुलाल छिरकत तकि नैन भाल लाल गाल मृगज लेप अधर दागरी । गिरिवरधर रसिकराय मेचक मुदरी लगाय कंचुकी पर छाप दीनी चकित नागरी ॥ २ ॥ वाजत रसना मंजीर कूजत पिक मोर कीर पवन भीर यमुना तीर महल बागरी । 'विष्णुदास' प्रभु प्यारी भेटत हँसि देत तारी काम कला निपट निपुन प्रेम आगरी ॥३॥ ❀५७६❀ राग बसंत ❀ ऋतु बसंत वृंदावन फूले द्रुम भांति-भांति सोभा कछु कहि न जाति बोलत पिक मोर कीर । खेलत गिरिधरनधीर संग ग्वाल वृन्द भीर विहरत मिलि यमुना तीर बाढ़ी तन मदन पीर ॥ १ ॥ आई ब्रज नवल नारी संग राधिका कुमारी कीने नवसत सिंगार साजे नव वसन चीर । वदनकमल नैन भाल छिरकत केसर गुलाल बूका चोवा रसाल सोंधो मृगमद अबीर ॥ २ ॥ बाजत बीना मृदंग बाँसुरी उपंग चंग मदन-भेरि डफ झांझ झालरी मंजीर । निरखत लीला अपार भूली सुधि-बुधि संभार बलिहारी 'कृष्णदास' देखत ब्रजचंद धीर ॥ ३ ॥ ❀ ५७७ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग बसंत ❀ देखो वृंदवान की भूमी को भाग । जहाँ राधा-माधो खेलैं फाग ॥ ध्रु० ॥ जाको सेस सहस्र मुख लहै न अंत । गुन गावैं नारदसे अनंत ॥ जाकों अगम निगम कहै तेजपुंज । सो तो हो हो हो करि फिरत कुंज ॥ १ ॥ जाके कोटिक ब्रह्मा कोटि इन्द्र । जाके कोटिक सूरज कोटि चन्द्र ॥ जाको ध्यान धरत मुनि रहे हैं हार । ताकों सकल गोपी मिलि देत गार ॥ २ ॥ सो है मोरमुकुट सिर तिलक भाल । ललित लोल कुंडल विसाल ॥ जाके मुसकनि बोलनि चलनि चाल । लखि मोहि रही सब ब्रज की बाल ॥ ३ ॥ जाके बाजे बाजत तरल ताल । सुर महुवरि धुन अतिही रसाल ॥ बीना मृदंग मुरली उपंग । बाजे राय गिरगिरी और चंग ॥ ४ ॥ जाकों वेद कहत हैं नेत नेत । तापै हँसि-हँसि ग्वालिन फगुवा

लेत ॥ राधाजू को वल्लभ उर को हार । 'हित मुरलीदास' करो नित विहार ॥ ५ ॥ ❁ ५७८ ❁ सेहरा धरे तब ❁ शृंगार दर्शन ❁ राग वसन्त ❁ आओरी आओ सब मिलि गाओ री वसंत राग वधावो री कलस लै सब भाम । मौर बाँधि दूल्हेराज बैठ्यो धर सिंहासन प्रफुलित भये तब रूप लाल सुन्दरस्याम ॥ १ ॥ छिरक्योरी नवललाल चोवा मृगमद गुलाल सोंधो लै परसोंरी मुदित भयो काम । बजाओरी अनेक बाजे सुरमंडल बीन नाद 'मदनमोहन' वृन्दावन व्रजधाम ॥ २ ॥ ❁ ५७९ ❁ राजभोग दर्शन ❁ ❁ राग वसन्त ❁ देखो राधा माधो सरस जोर । खेलत बसंत पिय नव किसोर ॥ ध्रु० ॥ इत हलधर संग समस्त वाल । मधि नायक सोहै नंद-लाल ॥ उत युवतीयूथ अद्भुत सरूप । मधि नायक सोहैं स्यामा अनूप ॥१॥ बहुरि निकसि चले यमुना तीर । मानों रतिनायक जात धीर ॥ देखत रति नायक बने जाय । संग ऋतु वसंत लै परत पाय ॥ २ ॥ बाजत ताल मृदंग तूर । पुनि भेरि निसान रवाव भूर ॥ डफ सहनाई झांझ ढोल । हसत परस्पर करत बोल ॥ ३ ॥ चोवा चंदन मथि कपूर । साख जवाद अरगजा चूर ॥ जाई जूई चंपक रायवेलि । रसिक सखन मे करत केलि ॥४॥ व्रज बाढ्यो कौतुक अनंत । सुन्दरी सब मिलि कियो मंत ॥ तुम नंदनंदन कों पकरि लेहु । सखि संकर्षण कों मार देहु ॥ ५ ॥ तब नवलवधू कीनो उपाय । चहुँदिस ते सब चली धाय ॥ श्रीराधा स्याम कों पकरि लाय । सखि संकर्षण जिनि भाज जाय ॥६॥ अहो संकर्षणजू सुनो बात । नंदलाल छांड़ि तुम कहाँ जात ॥ दै गारी बहुविधि अनेक । तब हलधर पकरे सखी एक ॥७॥ अंजन हल-धर नैन दीन । कुमकुम मुखमर्दन जु कीन ॥ हलधर जू फगुवा आनि देहु । तुम कमल नैन कों छुड़ाय लेहु ॥ ८ ॥ जो मांग्यो सो फ़गुवा दीन । नवललाल संग केलि कीन ॥ हँसत खेलत चले अपुने धाम । व्रजयुवती भई पूरनकाम ॥ ९ ॥ नंदरानी ठाडी पौरि द्वार । नोछावरि करि देत वारि । वृषभानसुता

संग रसिक राय। 'जन मानिकचंद' बलिहारी जाय ॥ १० ॥ ❀ ५८० ❀ ❀ राग वसंत ❀ और राग सब भये बराती दूल्हे राग वसंत। मदन महोत्सव आज सखीरी बिदा भयो हेमंत ॥ १ ॥ सहचरी गान करत ऊंचेस्वर कोकिला बोल हसन्त। गावत नारी पञ्चम सुर ऊंचे जेसोई पिय गुनवंत ॥ २ ॥ कर धरि लई कनक पिचकाई मनोहर चाल चलन्त। 'कृष्णदास' गिरिधर प्यारी कों मिल्यो है भावतो कंत ॥ ३ ॥ ❀ ५८१ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग वसंत ❀ खेलत वसंत बलभद्रदेव। लीला अनंत कोऊ लहे न भेव ॥ ध्रु० ॥ सनकादि आदि सुख रचे ग्वार। प्रगट करन ब्रजरज विहार। सुखनिधि गिरिवरधरनधीर। लियो बांटि-बांटि भोलिन अबीर ॥ १ ॥ अर्जुन तोक सुबल सीदाम। सखा सिरोमनि करत काम। मधुमंगल आदि समस्त ग्वाल। बने सब के सिरोमनि नंदलाल ॥ २ ॥ रचि पचि बहु अंबर बनाय। बागे बहु केसर रंगाय। रही पाग लसि सिर सुरङ्ग। कुंवर रसिकमनि श्रीत्रिभंग ॥ ३ ॥ सुनत चपल सब उठी हैं बाल। भरि भाजन लीने गुलाल। हुलसि उठी तजि लोक लाज। लई बोलि सब सखी समाज ॥ ४ ॥ काहू की कोऊ न बदत कानि। भरत हितुन कों जानि जानि। ब्रजराजकुंवर वर निकट आय। नैनन रिराय निरखे अघाय ॥ ५ ॥ चतुर सखी एक हास कीन। दुरिमुरि बचाय दृग गांठि दीन। पाछे तें तारी वजाय। ब्याह गीत सब उठी गाय ॥ ६ ॥ तब बोले स्यामघन अपने मेल। खेंच्यो चीर तब लख्यो खेल। लगी लाज चितवै न और। सखा कहैं आओ गांठि तोर ॥ ७ ॥ सुनत बाल सब चली धाय। बलभद्र वीर कों गह्यो जाय। कटि पटुका पट पीत लीन। भलीभांति रंग समर दीन ॥ ८ ॥ परम पुरुष कोऊ लहे न पार। ब्रजवासिन हित सहत गार। 'सूरस्याम' हँसि कहत बैन। बदत बैन सुख बहोत दैन ॥ ९ ॥ ❀ ५८२ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग वसंत ❀ बहुविध कला वन खेलो सघन द्रुम दूल्हे

नंदकुमार । गोपी ग्वाल सवन मिलि महुवरि वजवत गावत फाग धमार ॥ १ ॥ इत फूली सकल व्रजसुन्दरी मधि दुलही राधा सुकुमार । 'चतुर' सुजान दोऊ रस विलसत डारत प्रान लाल पर वार ॥ २ ॥ ❀ ५८३ ❀ ❀ सेन भोग आये ❀ वसंत पंचमी वसंत बधावो मोहन ठाड़े द्वार । भरि के कलस केसर गुलाल लै खिलाओ गोप कुंवार ॥ १ ॥ अति तरङ्ग नीली घोड़ी पर सजिके सकल सिंगार । वागो पाग केसरी सोहत झलकत कुंडल हार ॥ २ ॥ मरवट मुखहि तंवोल अंजन दै चंदन तिलक लिलार । मौर वांधि आयो व्रज दूल्हे दुलहिन राधा नार ॥ ३ ॥ गावत गीत सकल व्रज-वनिता चली राय दरवार । वाजे वजत घुरे निसान सखि सुरन परी झन-कार ॥ ४ ॥ देव विमानन आय पहुँप बरखावत वारंवार । या सोभा कों को कवि वरने कहत न आवे पार ॥ ५ ॥ जुग-जुग राज करो यह जोरी मोहन नंदकुमार । 'मदनमोहन' की या छबि ऊपर जैये वलि वलिहार ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ५८४ ❀ राग वसंत ❀ वनि-ठनि खेलन आयो री वसंत । वृन्दावन धाम अद्भुत कोकिला किल्कंत ॥ सेहरो सिर स्याम के सोभित दुलहिनी हुलसंत । मृगमद मलय कपूर कुमकुमा छिरकत राधाकंत ॥ २ ॥ मालती जाती जुही निवारी पवन वहत हेमंत । मंद सुगंध सीतल जमुना-जल लता वेलि लिपटंत ॥ ३ ॥ राधा गिरिधर विहरत दोऊ भये रस मे मंत । काम कला विलस रसभरे ऐसे ही विलसंत ॥ ४ ॥ ❀ ५८५ ❀ सेन दर्शन ❀ राग वसंत ❀ खेलत वसंत दूल्हे हो गिरिधर दुलहिन राधा गोरी । वागो पाग केसरी सोहै राज जटित सिर मोरी ॥ १ ॥ मृगमद खोर करो मोहन के कुमकुम आड किसोरी । 'मदनमोहन' गिरिधर चिरजीयो स्यामा नागर जोरी ॥ २ ॥ ❀५८६❀ टिपारा धरें तब ❀ राजभोग दर्शन ❀राग वसंत ❀ उड़त वंदन नव अवीर वहु कुमकुमा खेलत वसंत वन लाल गिरिवरधरन । मंडित सुअंग सोभा स्याम सोभित ललन मानो मन्मथ वान साजि आयो

लरन ॥ १ ॥ तरनि-तनयातीर ठौर रमनीक वन द्रुम लता कुसुम मुकुलित सु नाना वरन । मधुर सुर मधुप गुंजार करैं पिक सब्द रस लुब्ध लागे दसो दिस कुलाहल करन ॥ २ ॥ आई बनि-बनि सकल घोख की सुन्दरी पहिर तन कनक नव चीर पट आभरन । मधुर सुर गीत गावैं सुघर नागरी चारु निर्तत मुदित क्वणित नूपुर चरन ॥ ३ ॥ वदन पंकज अधर बिंब सोभित चारु झलकत कपोल अति चपल कुंडल करन । 'दास कुंभन' निनाथ हरिदासवर्यधर नंदनंदन कुंवर युवतीजन मन हरन ॥ ४ ॥

❀ ५८७ ❀ राग वसंत ❀ नृत्यत गावत बजावत सासा गग मध-मध नीध-मध ओडव सुर राग हिंडोल । पंचम सुर लै अलाप उठत है सप्त मान थेई तथेई ताथेई थेई कहत बोल ॥ १ ॥ कनक बरन टिपारो कमल बरन काछनी छिरकत राधा करत कलोल । 'कृष्णदास' वृंदावन नटवर गिरिधर पिय सुरवनिता वारत हार अमोल ॥ २ ॥ ❀ ५८८ ❀ भोग के दर्शन ❀

❀ राग वसंत ❀ आज ऋतुराज सब साज सोभा छई निरखि नव कुंज घन विपुल वृंदे । नवलजु तमाल नव तरुन पिय प्यारी मानो खेल खेलत राग रस छंदे ॥ १ ॥ केकी कल हंस कूजत मानो बाजे बाजत बढ़ो घोर रस मंदे । चलत मधुपावली धाय सिर नाय मानो लिये गावत गुनी विकट अरविंदे ॥ २ ॥ केतकी कनक पिचकाई चाहन हरखि छिरकत ठौरठौर मकरंदे । उडत वंदन धूर पहोपन पराग मानो कंप मिस भरत भुज पिवत मकरंदे ॥ ३ ॥ नूतन पल्लव अरुन नलिन विमान चढि सोर चहुँओर सुर संघ चित कंदे । देखि मन फूल भमर मूल ते उड़िरहे मानो विहरैं नवल दंपती वृंदे ॥ ४ ॥ चलो भामिनी बेग दूर करि मान कों रंग रस हिलमिलो मेटि दुख द्वंदे । 'रसिक' पिय नवरंग लाल गिरिवरधरन जोहत पथ गोकुलानंदकंदे ॥ ५ ॥ ❀ ५८९ ❀ सेनभोग आये ❀ राग वसंत ❀ देखरी देख ऋतुराज आगम सखी सकल वन फूल आनंद छायो । ताल कदली धुजा

उमगि अति फरहरे संग सब आपुनी फोज लायो ॥ १ ॥ कोकिला कीर गुन गान आगे करत भृंग भेरी लिये संग आयो । घुरत निसान घनघोर मोरन कियो करत पिक सब्द गति अति सुहायो ॥ २ ॥ फिरत हैं हंस पदचर चकोरन बहू सैल रति चमक चढि धमक धायो । उड़त वारूद नव कुमकुमा अरगजा तियन के कुचन तकि तमकरायो ॥ ३ ॥ पांच लै बान चहुँ ओर छोड़े प्रथम चाप लै आपु हाथन चलायो । दौर कर घाय धप लरत अति वीर लों घोर चहुंओर गढ़ मान ढायो ॥ ४ ॥ परी खलबली सब नारी उर मदन की मिलन मन स्याम अंचल फिरायो। जाति सब सुभट 'कृष्णदास' वृन्दाविपिन आये गिरिधरन कों सीस नायो ॥५॥ ❀ ५६० ❀ सेन दर्शन❀ ❀ राग वसंत ❀ वृन्दावन विहसि धाम विहरत री स्यामा-स्याम मल्लकाछ फैंट बांधि खेलत वसंत । जटित टिपारो सीस नृत्य करत अनेक रंग उपजा-वत सप्तमान कोकिला हसंत ॥ १ ॥ बाजत मृदंग ताल सहनाई ढोल ढमक गावत हिंडोल राग भये रस मे मंत । 'मदनमोहन' गिरिवरधर राधा जू लै गुलाल बरखावत गगन-सघन गयो सूर छिपंत ॥२॥ ❀५६१❀ ❀ माघ सुदी १४ ❀ शृंगार समय ❀ राग वसंत ❀ चली हैं भरन गिरिधरन लाल कों बनि बनि अनगन गोपी । उबटी हैं उबटन नवल चपल तन मानो दामिनी ओपी ॥ पहरे वसन विविध रंग भूषन करन कनक पिचकाई । चंचल चपल बडे री अंखियां मानो अरघ लगाई ॥ २ ॥ छिरकत चली गली गोकुल की कही न परत छवि भारी । उडि-उडि केसर बूका वंदन अटि गये अटा अटारी ॥ ३ ॥ सखन सहित सजि सांवरे सुंदर सुनत ही सन्मुख आये । मनो अंबुज वनवास विवस ह्वै अलि लंपट उठि धाये ॥४॥ हरि-कर निरखि त्रिया पिचकाई नैना छवि सों ठहराई । खंजन से मानो उडि ऽव चले ह्वैं ढरकि मीन है जाई ॥ ५ ॥ पहले कान कुंवर पिचकाई भरि-भरि त्रियन कों मेली । मानो सोम सुधाकर सींचत नवल प्रेम की वेलि

॥ ६ ॥ पिय के अङ्ग त्रियन के लोचन लपटे हैं छबि की ओभा । मानो हरि कमलन करि पूजे बनी है अनूपम सोभा ॥ ७ ॥ दुरि-मुरि भरन बचावन छबि सों आवनि उलटनि सोहे । घुमड्यो अबीर गुलाल गगन मे जो देखे सो मोहे ॥ ८ ॥ बिच-बिच छूटत कटाक्ष कुटिल सर उचटि हूलको लागी । मुरझि परयो लखि मैन महाभट रति भुज भरिलै भागी ॥ ९ ॥ कहां लों कहों कहत नहीं आवे छबि बाढी तिहिं काला । 'नंददास' प्रभु तुम चिरजीवो बाल नंद के लाला ॥ १० ॥ ❀ ५९२ ❀ राग वसंत ❀ मोहन वदन विलोकत अलियन उपजत है अनुराग । तरनि तप्त तलफत चकोर ससि पीवत पीयूष पराग ॥ १ ॥ लोचन नलिन नये राजत रति पूरे मधुकर भाग । मानो अलि आनंद मिले मकरंद पीवत रस फाग ॥ २ ॥ भमरी भाग भ्रकुटी पर चंदन वंदन बिंदु विभाग । ता तकि सोम संक्यो घन-घन मे निरखत ज्यों वैराग ॥ ३ ॥ कुंचित केस मयूर चंद्रिका मंडित कुसुम सु भाग । मानो मदन धनुष सर लीने बरखत है बन बाग ॥ ४ ॥ अधर-बिंब तें अरुन मनोहर मोहन मुरली राग । मानो सुधा-पयोध घोर-वर ब्रज पर बरखन लाग ॥ ५ ॥ कुंडल मकर कपोलन झलकत श्रमसीकर के दाग । मानो मीन कमल वर लोचन सोभित सरद तडाग ॥ ६ ॥ नासा तिल प्रसून पदवी तर चिबुक चारु चित खाग । डारयो दसन मन्द मुसिकावनि मोहत सुर नर नाग ॥ ७ ॥ श्रीगोपाल रस रूप भरे ये 'सूर' सनेह सुहाग । मानो सोभा सिंधु बढ्यो अति इन अखियन के भाग ॥८॥❀५९३❀ ❀शृंगार दर्शन❀ राग वसत ❀ चटकीली चोली पहरे तन बिच-बिच चोवा लपटानी । परम प्रिय लागत प्यारी कों अपुने प्रीतम की बानी ॥ १ ॥ देखत सोभा अंग-अंग की मनसिज मन हि लजानो । 'सुघरराय' प्रभु प्यारी की छबि निरखि मोह्यो गोवर्धनरानो ॥ २ ॥ ❀ ५९४ ❀ माघ सुदी १५ ❀ ❀ साँझ कू होरी रुपे तो ❀ शृंगार समय ❀ राग वसंत ❀ आज सुगभ दिन वसंत

पंचमी जसुमति करत वधाई । विविध सुगन्ध उवटि के लाल कों ताते नीर न्हवाई ॥१॥ बाँधी पाग वनाय श्वेत रंग आभूषन पहराई । तनक सीस पर मोर चंद्रिका दिस दाहिनी ढरकाई ॥२॥ गृह गृह ते व्रज-सुन्दरी सब मिलि नंदपौरि पे आई । अंब मौर कै पुष्प मंजरी कनक कलस बनाई ॥३॥ चोवा चन्दन अगर कुमकुमा केसर रंग मिलाई । प्रमुदित छिरकत प्रान पिया कों अबीर गुलाल उड़ाई ॥४॥ वाजत ताल मृदंग झाँझ डफ गावत गीत सुहाई । तन मन धन नोछावरि कीनो आनन्द उर न समाई ॥५॥ श्री गिरिवरधर तुम चिरजीवो भक्तन के सुखदाई । श्री वल्लभ पद रज प्रतापते "हरिदास' बलिजाई ॥६॥ ❀ ५९५ ❀

❀ राग वसंत ❀ आज वसंत सबै मिलि सजनी पूजो मोहन मीत । हरद दूब दधि अच्छत लेकै गावो सौभग गीत ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा पहोप श्वेत अरु पीत । घर घर ते वानिक वनि आये आपु आपुनी रीत ॥२॥ मोहन को मुख निरखि के हो करिहो व्रज की जीत । खेलत हँसत परम सुख उपज्यो गयो है द्योस निस वीत ॥३॥ खेल परस्पर वढ्यो अति रंग सों रीझे मोहन मीत । 'कृष्णजीवन' प्रभु सुखसागर में छाँड़ो नांहि पसीत ॥४॥ ❀ ५९६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ आज वसंत वधावो है श्रीवल्लभ राज के द्वार । विट्ठलनाथ कियो है रचि रचि नव वसंत को सिंगार ॥१॥ वल्लभी सृष्टि समाज संग सब वोलत जय जयकार । पुष्टिभाव सों सेवा करत अति वाढ्यो है रंग अपार ॥२॥ प्रेम भक्ति को दान करत श्रीवल्लभ परम उदार । कृपा दृष्टि अवलोकि दास कों देत हैं पान उगार ॥३॥ श्रीवल्लभ राजकुमार लाल व्रजराज कुँवर अनुहार । ऐसो अद्भुत रूप अनूपम 'रसिक' जात वलिहार ॥४॥ ❀ ५९७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग वसंत ❀ देखत वन व्रजनाथ आज अति उपजत है अनुराग । मानो मदन वसंत मिले दोऊ खेलत डोलत फाग ॥ १ ॥ द्रुमगन मध्य पलास मंजरी उठत अगिन की

नाई। अपने अपने मेल मनोहर होरी हरखि लगाई ॥२॥ केकी कीर कपोत और खग करत कुलाहल भारी। जनपद लज्जा तजी परस्पर देत दिवावत गारी ॥३॥ झील झाँझ निर्झर निसान डफ भेरी भमर गुंजार। मानो मदन मंडली रचि पुर वीथिन विपिन विहार ॥४॥ नवदल सुमन अनेक वरन वर विटपन भेख धरे। जनो राजत ऋतुराज सभा में हँसि बहु रंगन भरे ॥ कुंज-कुंज कोकिल कल कूजत बानी विमल बढ़ी। जानो कुल बधू निलज भई है गावत अटन चढ़ी ॥६॥ कुसुमित लता जहाँ देखत अलि तहीं तहीं चली जात। मानो विटप सबन अवलोकत परसत गनिका गात ॥७॥ लीने पुष्प पराग पवन कर फिरत चहूँदिस धाये। तिहीं ओर संयोगिनी विरहिनी छाँड़त करि मन भाये ॥ और कहाँ लों कहों कृपानिधि वृंदाविपिन समाज। 'सूरदास' प्रभु सब सुख क्रीडत कृष्ण तुमारे राज ॥६॥

❀ ५६८ ❀ सेन भोग आये होरी रोपवे जॉय तब ❀ धमार ❀

❀ राग गौरी ❀ ऋतु वसंत सुख खेलिये हो आयो फागुन मास। होरी डांडो रोपियो सब व्रजजन मन हुलास, गोकुल के राजा ॥१॥ रजनी मुख व्रज आइयो हो गोधन खिरक मझार। सखा नाम सब बोलि के घर घर ते देत डबगार ॥२॥ बड़े गोप वृखभान के हो आये सब मिलि पौरि। श्रवन सुनत प्यारी राधिका चढ़ी चित्रसारी दौरि ॥३॥ उझकि झरोखा झांकियो हो दोउन मन आनन्द। ऐसी छबि तब लागियो मानो निकस्यो घटा ते चन्द ॥४॥ बासर खेल मचाइयो हो नियरे आयो फाग। झूमक चेतव गावहीं मन मोहन गौरी राग ॥५॥ नरनारी एकत्र भये हो घोषराय दरबार। चहुँ-दिसते सब दौरियो भूषनवसन सिंगार ॥६॥ अगनित बाजे बाजहीं हो रुंज मुरज निसान। डफ दुंदुभी और झालरी कछुअन सुनियत कान ॥७॥ पिचकाई कर कनक की हो अरगजा कुमकुम घोर। प्रानपिया कों छिरकहीं तकि तकि नवलकिसोर ॥८॥ बहुरि सखा सब दौरियो हो आगे दे बलबीर।

युवतीजन पर बरखही नवल गुलाल अबीर ॥९॥ ललिता विसाखा मतो मत्यो हो लीनो सुबल बुलाय। चेरी तेरे बाप की नेकु मोहन कों पकराय ॥१०॥ तबे सुबल कौतुक रच्यो हो सुनो सखा एक बात। इनही भीतर जान देहु बोलत जसोदा मात ॥११॥ हरे हरे सब रेंगि चली हों नियरे निकसी आय। सेन सबै दै दोरियो पकरे बलि मोहन जाय ॥१२॥ प्यारी को अंचल लियो हो और पिय को पट पीत। सकत ही गठजोरो कियो भले बने दोऊ मीत ॥१३॥ फगुवामे मुरली लई हो और कंठ को हार। श्री राधा पहराइयो हँसत दै दै कर तार ॥१४॥ मेवा मोल मँगाइयो हो फगुवा दियो निवेर। मनभायो करि छांड़ियो हँसत वदन तन हेर ॥१५॥ यह विधि होरी खेल हीं व्रजवासिन संग लगाय। युगल कुंवर के रूप पै जन 'गोविंद' बलि बलि जाय ॥१६॥ ❀ ५९९ ❀ सैन दर्शन ❀ राग गौरी ❀

खेलत फाग गोवर्धनधारी हो हो होरी बोलत व्रजबालक संगे। आई बनि नवल-नवल व्रजसुंदरी सुभग संवार खुठ सेंदुर मंगे ॥१॥ बाजत ताल मृदङ्ग अधोटी आवज डफ सुर बीन उपंगे। अधरबिंब कूजे वेनु मधुर ध्वनि मिलत सप्त स्वर तान तरंगे ॥२॥ उड़त अबीर कुमकुमा वंदन विविध भाँति रंग मंडित अंगे। 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन नवल रूप छवि कोटि अनंगे ॥३॥ ❀ ६०० ❀

माघ सुदी १५ सवेरे होरी रुपे तो मंगलभोग आये होरी रोपवे जांय तब ❀ धमार ❀

❀ राग बिलावल ❀ घोष नृपति सुत गाइये जाके बसिये गाम। लाल बलि झूमका हो। बहोरयो सुहागिन गाइये जाको श्री राधा नाम। लाल बलि झूमका हो ॥१॥ चली हैं सकल व्रजसुन्दरी नव सत साज सिंगार। गावत खेलत तहां गई जहाँ घोपराय दरबार ॥२॥ जाय नैन भरि देखियो सुन्दर नंदकुमार। नील पीत पट मंडित औ उर गजमोतिन हार ॥३॥ सखा संग अति रसभरे पहरे विविध रंग चीर। गीत विचित्र कोलाहला और

व्रजवासिन भीर ॥४॥ डिमडिम दुंदुभी झालरी रुंज मुरज डफ ताल। मदनभेरि राय गिडगिडी बिच-बिच बेनु रसाल ॥५॥ अति रसभरी व्रज-सुन्दरी देत परस्पर गारि। अंचल पट मुख दै हँसी मोहन वदन निहारि ॥६॥ पहलो झूमक ताहि को जाको श्रीमोहन पूत। देखि परे सिर मोहनी युवती जन मन धूत ॥७॥ दूसरो झूमक ताहि को जाकी श्री राधा नारि। पिय प्यारी रोके गहे मन में चौंकि विचार ॥८॥ युवती कदंब सिरोमनी श्रीराधावर सुकुमारी। उत व्रज सिसुगन नायक बलि और गिरिवरधारी ॥९॥ एकन कर बूका लिये एक गुलाल अबीर। प्रमदागन पर बरख हीं कूकैं देत अहीर ॥१०॥ रतन खचित पिचकाइयाँ नव कुंमकुम जल सों घोरि। पिय सनमुख ह्वै छिरकहीं तकि-तकि नवलकिसोर ॥११॥ स्याम सुगम तन सोहहीं नव केसर के बिंदु। ज्यों जलधर में देखिये मानो उदित बहु इंदु ॥१२॥ युवतीयूथ मिलि धाइयो पकरे बल मोहन जाय। नव केसर मुख माँडिकै छाँड़े आँख अंजाय ॥१३॥ यह विधि होरी खेल ही जाति-बंधु संग लाय। पूरन ससि निस डहडही पून्यो होरी लगाय ॥१४॥ परिवा सकल घोषजन भानुसुता चले न्हान। अरगजा अङ्ग चढ़ाइयो विमल वसन परिधान ॥१५॥ द्वितीया वंदन बाँधियो सिंहासन युवराज। छत्र चंवर 'गोविन्द' गहे श्रीवल्लभकुल सिरताज ॥१६॥ ❀ ६०१ ❀ मङ्गला दर्शन ❀ राग वसंत ❀ साँची कहो मनमोहन मोसों तौ खेलों तुम संग होरी। आजु की रेनु कहाँ रहे मोहन कहां करी बरजोरी ॥१॥ मुख पर पीक पीठि पर कंकन हिये हार बिन डोरी। जिय मे और ऊपर कछु औरैं चाल चलत कछु औरी ॥२॥ मोहि बनावत मोहन नागर कहा मोहि जानत भोरी। भोर भये आये हो मोहन बात कहत कछु जोरी ॥३॥ 'सूरदास' प्रभु ऐसी न कीजे आय मिलो कहा चोरी। मन माने त्यों करहु नन्दसुत अब आई है होरी ॥४॥ ❀ ६०२ ❀ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग टोडी ❀ हो हो होरी खेले नंद को नवरंगी लाल।

अबीर भरि-भरि झोरी हाथन पिचकाई रंगन बोरी तेसीय रंगीली ब्रज की बाल ॥ १ ॥ मूरति धरे अनंग गावत तान तरंग ताल मृदंग मिलि बजावैं बीना वेनु रसाल । 'नन्ददास' प्रभु प्यारी के खेलत रंग रह्यो छबि बाढी छूटी है अलक टूटी है माल ॥ २ ॥ ❀ ६०३ ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ रिझवत रसिक किसोर कों खेलत री प्यारी राधा फाग । पहरे नव रंग चूनरी अंगिया री आछे अंग लाग ॥ १ ॥ कनक खचित खुभिया बनी दुलरी मोतिन बिच लाल । किंकिनी नूपुर मेखला लोचन री सुभ सुखद विसाल ॥ २ ॥ गोर गात की कहा कहूं वेसर री रही कच उरझाय । सब सुंदरी मिल गाव ही देखत री मनमथ हि लजाय ॥ ३ ॥ मृदु मुसकनि मुख पट दयो पिचकाई री कर लई है दुराय । वंदन बूका अंजुली नागरि री लैं दई है उडाय ॥ ४ ॥ मीडत लोचन नागरी पकरयो री पीतांबर धाय । सबै सखी जुरि आय गई घेरे री मोहन बलि आय ॥ ५ ॥ मुरलि छीनि चुंवन दियो कीनो री अधरामृत पान । कमल कोस ज्यों भृंग कों छांडत नहीं बिन भये विहान ॥ ६ ॥ मनो बहु-रंग विकसित कमल मधुकर री मनमोहन लाल । नैनन स्वाद सबै गहे पीवत री मकरंद रसाल ॥ ७ ४ ऋतु वसन्त वन गहगह्यो कूजत री सुक पिक अलि मोर । तान मान गति भेद सों गावत री गिरिधर पिय जोर ॥ ८ ॥ वेनु झांझ डफ झालरी गो मुख ताल मुरज मुखचंग । युवती यूथ बजाव हीं निर्तत री मधि सामल अङ्ग ॥ ९ ॥ त्रिगुन समीर तहां व्है सुंदर री कालिंदी कूल । सुर सुरपति सुर-अङ्गना डारत री जय-जय कहि फूल ॥ १० ॥ निरखि-निरखि सचुपावहीं हम न भये खग मृग ब्रजवास । श्रीवल्लभ पद रज प्रताप बलि गावत 'विष्णुदास' रसरास ॥ ११ ॥ ❀ ६०४ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग विलावल ❀ नंद सुवन ब्रज-भामते फाग संग मिलि खेलो जू । आज तुमे हम जानिये जो युवती यूथ दल पेलो जू ॥ १ ॥

रसिक सिरोमनि सांवरे श्रवन सुनत उठि धाये जू । बल समेत सब टेर के घर-घर ते सखा बुलाये जू ॥ २ ॥ बाजे बहु विधि बाजहीं ताल मृदंग उपंगा जू । डिमि-डिमि दुंदुभी झालरी आवज कर मुख चंगा जू ॥ ३ ॥ उतते नवसत साजि के निकसी सकल ब्रजनारी जू । झुंडन आई झूमि के कल गावत मीठी गारी जू ॥ ४ ॥ केसर कुमकुम घोरि के भाजन भरि-भरि लाई जू । छूटी सन्मुख स्याम के करन-कनक पिचकाई जू ॥ ५ ॥ उतहि समाज गोपाल सों भरे महारस खेलें जू । चोवा मृगमद सानि के युवती यूथ पर मेलें जू ॥ ६ ॥ सोभित बालक वृन्द मे हरि हलधर की जोरी जू । उतहि चतुर चंद्रावलि सब गुन निधि राधा गोरी जू ॥ ७ ॥ सोंह वदे ललिता कहे कोऊ पग न पिछोडे डारे जू । इत नायक उत नायका को जीते को हारे जू । टिके परस्पर देखि के खेल मच्यो अति भारी जू । इत उत ओट न मानहीं चोंकि परे नरनारी जू ॥ ९ ॥ युवती यूथ दल पेलि के छेकि सुबल गहि लीने जू । कंठ उपरना मेलि के खेंचि आपु बस कीने जू ॥ १० ॥ सुनो सुबल सांची कहों तो भले छूटन पाओ जू । छल बल बानिक बानि के नेक हलधर कों पकराओ जू ॥११॥ बहुरि सिमटि ब्रजसुन्दरी संकर्षन गहि घेरे जू । फेंट गही चंद्रावली तब उलटि सखन तनु हेरे जू । ॥ १२ ॥ सोंधो नावें सीस ते एक काजर लें के आई जू । मोहन हंसि मुरि यों कह्यो देखो दाऊ जू आंख अंजाई जू ॥ १३ ॥ फिर प्यारी नागरी राधिका तके स्याम जहां ठाडे जू । और सखिन की ओट ह्वै गहे ओंचका गाढे जू ॥ १४ ॥ देखि सखी चहुं ओर ते दोरि आय लपटानी जू । अंग-अंग बहु रंग सों रंग करत बात मनमानी जू ॥१५॥ केसर सों पट बोर के श्रीमुख मांड्यो रोरी जू । तारी हाथ बजाय के बोलत हो-हो होरी जू ॥ १६ ॥ मगन भई ब्रज सुंदरी नव-रस भींज्यो हीयो जू । इत अग्रज उत स्याम पै दुहुदिस फगुवा लीयो जू ॥ १६ ॥ परसि परम

सुख ऊपज्यो भयो त्रियन मनभायो जू। सादर चारु चकोर ज्यों मानों विधु प्रीतम पायो जू ॥ १८ ॥ नागरी अति अनुराग सों मुदित वदन तन हेरे जू। सर्वसु वारें वारने एक अंचल हरि पर फेरे जू ॥ १९ ॥ 'चत्रुभुज' प्रभु संग खेल ही यह विधि घोषकुमारी जू। सव व्रज छायो प्रेम सों सुखसागर गिरिधारी जू ॥ २० ॥ ❀ ६०५ ❀ सेंनभोग आये ❀ राग गौरी ❀ ढोटा दोऊ राय के खेलत डोलत फाग हो। लाले जो देखे सो मोहियो और प्रतिछिन नव अनुराग हो ॥ १ ॥ सखा संग सव वोलि के घर-घर ते दे तव गारि। सुनत कुंवर कोलाहला निकसी घोषकुमारि ॥ २ ॥ भूषन वसन जो साजियो उर गजमोतिन हार। झूमक चेतव गावहीं घोप-राय दरवार ॥ ३ ॥ बाजे वहुत बजावहीं डफ दुंदुभी कठताल। वल मोहन मधि नायका चहुँदिस नाचत ग्वाल ॥ ४ ॥ पिचकाई कर कनक की अरगजा कुमकुम घोर। बलराम कृष्ण कों छिरकही हँसि ऽव चलीं मुख मोर ॥५॥ कोलाहल सुन आइयो वल्लभकुल के राजा। सिंहद्वार पैं वैठियो वडरे गोप समाजा ॥ ६ ॥ व्रजरानी तहाँ आइयो जहाँ वैठे नंद उपनंदा। सोंधे डाढी लीपियो आंजत आंख सुछंदा ॥ ७ ॥ यह विधि होरी खेलहीं अरगजा पंक सुगंधा। विधि सों होरी लगाइयो पून्यो पूरन चंदा ॥८॥ परिवा वसन जु पलटियो न्हाय धोय आनन्दा। 'गोविंद' वलि वंदन करे जय-जय गोकुल के चन्दा ॥ ९ ॥ ❀ ६०६ ❀

श्री व्रजभूषण जी को जन्मदिन [फागुन वदी २]

❀ राजभोग आये ❀ धमार ❀ राग धनाश्री ❀ गोरे अंग ग्वालनि गोकुल गाम की ॥ ध्रु० ॥ लहर-लहर जोवन करे वाको थहर-थहर करे देह। धुकुर-पुकुर छतियाँ करे वाको वड़े रसिकसों नेह ॥ १ ॥ ठुमकि चले मुरि-मुरि हँसे हो पग-पग ठाड़ी होय। घायल सी घूमत फिरे वाको मरम न जाने कोय ॥ २ ॥ कुअटा को पानी भरे हो नई-नई लेज जु लेय। घूंघट

चांपैं दांत सों गोरी गर्व न ऊतर देय ॥ ३ ॥ पहिरे नवरंग चूनरी लावनि लई संकोर। अरग-थरग सिर गागरी वह हँसत वदन तन मोर ॥ ४ ॥ तिलक खुल्यो अंगिया बनी हो पग नूपुर झनकार। वड़े वगर ते निकसी नंदलाल खड़े दरवार ॥ ५ ॥ चाल चले गजराज की हो ऊंची नीची दीठ। अंचल के मिस उलटि के गोरी हरिही दिखावति पीठ॥ ६ ॥ गहरो काजर घुरि रह्यो बैंदी जगमग जोत। हिये हार बहुमोल को गोरी कंठ बिराजत पोत ॥ ७ ॥ अतलस को लंहगा बन्यो गोरी पहिरें सुरंग पट झीन। अतरोटा अङ्ग राजहीं गोरी सुन्दर कटि है क्षीन ॥ ८ ॥ स्यामसुन्दर कों सैंन दे गोरी चली गृह कों जाय। पाछें लागे हरि चले री 'जन त्रिलोक' बलि जाय ॥ ६ ॥ ❀ ६०७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग विलावल ❀ श्री लछमन कुल गाइये श्री वल्लभ-सुवन सुजान। लाल मनमोहना हो ॥ ध्रु० ॥ सोम-वंस सुख देन कों प्रगटे द्विजकुल भान। लाल०। गुननिधि गोपीनाथ जू निर्गुन तेज निधान ॥ लाल ॥ १ ॥ पुरुषोत्तम आनंद मे श्री विट्ठल ब्रजके भूप। कोटि मदन विधु वारने मुख सोभा सुखरूप ॥ २ ॥ भूतल द्विजवपु धारके श्रुतिपथ कियो प्रचंड। मारग पुष्टि प्रकासि के मायामत कियो खंड। ॥ ३ ॥ श्री गिरिधर गुन आगरे पूरन परमानंद। राजसिरोमनि लाड़िले करुनामय गोविंद ॥ ४ ॥ बालकृष्ण मुख चंद्रमा पंकज नैन विसाल। श्री वल्लभ गोकुलनाथ जू प्रिय-नवनीत दयाल ॥ ५ ॥ श्रीपति श्री रघुनाथ जू जगजीवन अभिराम। रूपरासी यदुनाथजू कमला पूरन काम ॥ ६ ॥ नवकिसोर घनस्यामजू अंग-अंग सुखदाइ। बालक सब ब्रह्मजानि के वेद विमल जस गाइ ॥ ७ ॥ वृंदाविपिन सुहावनो ब्रजलीला सुखसार। 'मानिकचन्द' प्रभु सर्वदा श्री गोकुल करत विहार ॥ ८ ॥ ❀ ६०८ ❀ ❀ भोग तथा संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ प्रथम सीस चरनन धरि वंदों श्रीविट्ठल-नाथ। दसधा भक्ति और चारि पदारथ जाके हाथ ॥१॥ भूतल द्विज वपु

धारचो त्रिभुवन पति जगदीस । उपमा कौं कोऊ नहिं जय गोकुल के ईस ॥ २ ॥ कलि के जीव उधारे निजजन किये सनाथ । भव सागर तें बूडत राखे अपने हाथ ॥ ३ ॥ नाम देय सिर पर सकल कर टारे पाप । सेवा रीति बताई सेवक ह्वै के आप ॥ ४ ॥ सैया भूषन वसन सिंगार रचे हैं बनाय । नंदनंदन अपने मुख भोजन करत हैं आय ॥ ५ ॥ मायावाद निवारे थापे पूरन ब्रह्म । मारग पुष्टि प्रकासे और राखे सब कर्म ॥ ६ ॥ श्रीगिरिधर गुन सागर महिमा कही न जाय । श्रीगोविंद करुना निधि क्रीडत अपुने भाय ॥ ७ ॥ वालकृष्ण अति सुंदर सोभा को नहि पार । जग वंदन गोकुल पति निजजन के उर हार ॥ ८ ॥ श्रीपति श्रीरघुनाथ जू देत अभय वरदान । महाराज यदुनाथ जू करत मधुर स्वर गान ॥ ९ ॥ श्री घनस्याम सदा सुखदायक करों प्रणाम । सब मिल खेलत हरखत व्रज-जन मन अभिराम ॥ १० ॥ वृन्दावन अति सोभित यमुना पुलिन तरंग । हसत परस्पर केसर कुमकुम छिरकत अंग ॥ ११ ॥ श्रीगिरिधर संग खेलत उर आनन्द न समाय । बाजत ताल पखावज युवती मंगल गाय ॥ १२ ॥ सुर कुसुमन वरखा करें बोलत जयजयकार । 'मानिकचंद' प्रभु यह विधि गोकुल करो विहार ॥ १३ ॥ ❀ ६०९ ❀ सेनभोग आये ❀ राग गोरी ❀

श्री वल्लभ-कुल मंडन प्रगटे श्रीविट्ठलनाथ । जे जन चरन न सेवत तिनके जन्म अकाथ ॥ १ ॥ भक्ति भागवत सेवा निसदिन करत आनंद । मोहन लीला सागर नागर आनंद कंद ॥ २ ॥ सदा समीप विराजें श्री गिरिधर गोविंद । मानिनी मोद वढावें निजजन के रवि चंद ॥३॥ वालकृष्ण मनरंजन खंजन अंबुज-नैन । मानिनी मान छुडावे वंक कटाच्छन सैन ॥ ४ ॥ श्रीवल्लभ जग-वल्लभ करुनानिधि रघुनाथ । और कहां लगि वरनों जग वंदन यदुनाथ ॥५॥ श्रीघनस्याम लाल वलि अविचल केलि कलोल । कुंचित केस कमल मुख जानों मधुपन के टोल ॥ ६ ॥ जो यह चरित वखाने श्रवन

सुने मन लाय। तिनके भक्ति जु बाढे आनंद द्योस विहाय ॥ ७ ॥ श्रवन सुनत सुख उपजत गावत परम हुलास। चरन कमल रज पावन बलिहारी 'कृष्णदास' ॥ ८ ॥ ❀ ६१० ❀ सेन दर्शन ❀ राल उडे तब ❀ राग कल्याण ❀ गिरिधर लाल रसाल खेलत रंग रह्यो। एक छिरकत एक जु रही झुक एकन अरगजा उर लह्यो। ।१॥ सब मिल अबीर उडावें जो परस्पर नैनन नेह नयो। पिचकाई भरि-भरि जु चलावत 'बल्लभदास' प्रभु रस ठयो ॥२॥❀६११❀

उत्सव श्रीगिरिधरलाल जी को [फागुन वदी ४]

❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ होरी खेले मोहना रंग भीने लाल। रसिक मुकुटमनि राधिका अङ्ग-अङ्ग ब्रजबाल ॥ १ ॥ कपूर कुमकुमा घोरि के सुगंध समारी। कियो अरगजा रंग को बिच मृगमद डारी ॥ २ ॥ रतन खचित कर मे लई कंचन पिचकारी। छिरकत कुंवर किसोर कों चंद्रावली नारी ॥ ३ ॥ भरति गुपाल भामिनी झकझोरा-झकझोरी । कोऊ कर ते मुरली लई कोऊ पीत पिछोरी ॥ ४ ॥ ललिता ललित वचन कहे फगुवा देहु प्यारे। कै राधे के पांय परो नैनन के तारे ॥ ५ फगुवा मे मुरली लई रस बस पिय प्यारी। नवल युगल के रूप पै 'जन विचित्र' बलिहारी ॥६॥ ❀ ६१२ ❀ सेनभोग आये ❀ राग गोरी ❀ गोकुल गाम सुहावनो सब मिलि खेलें फाग। मोहन मुरली बजावैं गावें गोरी राग ॥ १ ॥ नरनारी एकत्र व्है आये नंद दरबार। साजे झालर किन्नरी आवज डफ कठतार ॥ २ ॥ चोवा चन्दन अरगजा और कस्तूरी मिलाय। बाल गोविंद कों छिरकत सोभा बरनी न जाय ॥ ३ ॥ बूका बंदन कुमकुमा ग्वालन लिये अनेक। युवती यूथ पर डारही अपने-अपने टेक ॥ ४ ॥ सुर कौतुक जो थकित भये थकि रहे सूरज चन्द। 'कृष्णदास' प्रभु विहरत गिरिधर आनंद कंद ॥५॥ ❀ ६१३ ❀ भोग सरे ❀ राग गोरी ❀ ललना खेले फाग बन्यो ब्रज सखा लिये नंदनंदना। बंसी धरे कहत हो-हो होरी युवती जन-मन फंदना ॥१॥

घर-घर ते सुंदरी चली देखन आनंद-कंदना । वाजे ताल मृदंग झांझ डफ गावत गीत सु छंदना ॥ २ ॥ ठांइ-ठांइ अगर अबीर लिये कर ठांइ-ठांइ बूका बंदना । हाथन धरे कनक पिचकाई छिरकत चोवा चंदना ॥३॥ क्रीडा रस-वस भये मगन मन मात न आनन्दना । 'दासचत्रुभुज' प्रभु सब सुखनिधि गिरिधर विरह निकन्दना ॥ ४ ॥ ❀ ६१४ ❀

❀ सेन दर्शन ❀ राग गौरी ❀ स्याम सुंदर मन भामते मन मोहना । नव दूल्हे श्री गोपाल, लाल मनमोहना ॥ १ ॥ नौतन दुलहिन राधिका मन मोहना । वृषभान नृपति की वाल, लाल मन मोहना ॥ २ ॥ चलो सखी जहाँ जाइये मन० । निरखि होत आनन्द लाल० ॥ ३ ॥ इत स्याम सुंदर सुहावने मन० । उत राधा पूरनचन्द लाल० ॥ ४ ॥ बागो पीत चमेली को मन० । सीस पाग मन मोहे लाल० ॥ ५ ॥ सूथन सोनजुही कली मन० । पटुका गुलाब सुहाय लाल० ॥ ६ ॥ नवरंग फूलन सेहरो मन० । निरखि मति गई भूलि लाल० ॥ ७ ॥ सीसफूल गुलदावदी मन० । गुलतुर्रा रहे झूमि लाल० ॥ ८ ॥ लर सिरपेच कलंगिये मन० । लरी निवारे लूमि लाल० ॥ ९ ॥ श्रवन कुंडल जु सुगंधरा मन० । गरे मोतिया की माल लाल० ॥ १० ॥ बाजूवंद जाही जुही मन० । गुलेबाँस की जाल लाल० ॥ ११ ॥ कमलनेत्र सोभा वनी मन० । अली पीवत मकरंद लाल० ॥ ॥१२॥ रायबेल चोटी गुही मन० । विच-विच कोयल फूल लाल० ॥१३॥ गुल गोटी अरु मालती मन० । झावा लटकत झूल लाल० ॥ १४ ॥ नरगिस वेला सेवती मन० । मौलिसरी विच्च फूल लाल० ॥ १५ ॥ पहोंची कड़ा नख मुद्रिका मन० । चंपा मोगरा कुंद लाल० ॥ १६ ॥ गुल सब्बो गुल चाँदनी मन० । सदा गुलाब रसाल लाल० ॥ १७ ॥ अभरन सोहत फूल के मन० । चरन कमल दोऊ लाल लाल० ॥ १८ ॥ दिन दूल्है नंद-लाडिलो मन० । दुलहिन रूप अनूप लाल० ॥ १९ ॥ दोऊ

दिसि सोभा घनी मन० । मनमथ मोह्यो रूप लाल० ॥ २० ॥ अबीर गुलाल अरु कुमकुमा मन० । लिये सकल सुखरासि लाल० ॥ २१ ॥ गठ बंधन ललिता कियो मन० । हँसत दोऊ मुख मोरि लाल० ॥ २२ ॥ मुख मांडत गहि लाडिली मन० । पुनि मुख मांडत स्याम लाल० ॥२३॥ खेल मच्यो अति गहगह्यो मन० । दोऊ मन अति हरखात लाल० ॥२४॥ अंस भुजा दोऊ मेलिकैं मन० । चले कुंज की ओर लाल० ॥ २५ ॥ कनकलता गहि स्यामने मन० । मिलि गये चंद चकोर लाल० ॥ २६ ॥ लोचन निरखि सुफल भये मन० । उर आनंद न समाय लाल० ॥ २७ ॥ तन मन धन कियो वारने मन मोहना । 'कृष्णदास' बलि जाय लाल मन मोहना ॥ २८ ॥ ❀ ६१५ ❀

श्रीनाथ जी को पाटोत्सव [फागुन वदी ७]

❀ जगायवे मे ❀ राग बिभास ❀ खिलावन आवेंगी ब्रजनारी । जागो लाल चिरैया बोली कहे जसुमति महतारी । ओटयो दूध पान करि मोहन बेग करो स्नान गोपाल । करि सिंगार नवल बानिक बनि फेंटनि भरो गुलाल ॥ २ ॥ बलदाऊ लै संग सखी सब खेलो अपुने द्वार । कुमकुम चंदन चोवा छिरको घसि मृगमद घनसार ॥ ३ ॥ लै कनेर सुनो मेरे मोहन गावत आवैं गारी । 'ब्रजपति' तबहि चौंकि उठि बैंठे कित मेरी पिचकारी ॥ ४ ॥ ❀ ६१६ ❀ मङ्गला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ आज भोर ही नंद-पौर ब्रजनारिन रोर मचाई जू । पकरि पानि गहि मारि पौरिया जसुमति पकरि नचाई जू ॥ १ ॥ हरि भागे हलधर हू भागे नंद महर हूं हेरे जू । तब ही मोहन निकसि द्वार ह्वै सखा नाम लै टेरे जू ॥ २ ॥ द्वार पुकार सुनत नहिं कोऊ तब हरि चढ़े अटारी जू । आओ रे आओ संगी सब घर घेरयो ब्रजनारी जू ॥ ३ ॥ सुनत टेर संगी सब दौरे अपुने अपुने धाम जू । अर्जुन तोक कृष्ण मधुमंगल सुबल सुबाहू श्रीदाम जू ॥ ४ ॥ ग्वालिन

दौरि पौरि जब रोकी आन न पाये नेरे जू। चंद्रावली ललितादि आदि दै स्याम मनोहर घेरे जू ॥ ५ ॥ कित जैहो वस परे हमारे भजि न सको नंदलाला जू। फगुवा में मुरली हम लैहैं पीतांवर वनमाला जू ॥ ६ ॥ केसर डारि सीस तैं मुख पर रोरी मींडत राधे जू। 'विष्णुदास' प्रभु भुज भरि गाढे मन वांछित फल साधे जू ॥ ७ ॥ ❀ ६१७ ❀ शृंगार समय ❀ ❀ राग विलावल ❀ खेलिये सुन्दर लाल होरी। चंचल नैन विसाल होरी ॥ तुम व्रजजन के प्रतिपाल। तुम लाला नट गोपाल ॥ गहि ठाडी जसुमति कहै तुम संग लेहु व्रजवाल ॥ ध्रु० ॥ विविध सुगन्धन उवटनो सब अंग वैठि उवटाऊं। चंदन अंग लगाइ के फिर ताते नीर न्हवाऊं ॥ १ ॥ अंग अंगोछौं प्रीति सों घसि मृगमद तिलक वनाऊं। अंजन नैनन आंजिके अरु मसि बिंदुका भुव लाऊं ॥ २ ॥ अलकावली अति सोहनी मोतिन लर सरस गुथाऊं। मधि लटकन लटकाय के हों देखत अति सुख पाऊं ॥ ३ ॥ पगिया पेच बनाय के खिरकिन की सीस धराऊं। मोर चंद्रिका तनकसी हों दिस दाहिनी ढराऊं ॥ ४ ॥ झीनी झगुली अति वनी सो तो स्याम अंग पहिराऊं। अति सुगन्ध पहोपन वस्यो वर फुलेल चुपराऊं ॥ ५ ॥ सूथन गाढे अंग की लाल चरन पहराऊं। फेंटा कटि तट वांध के अरु सुरंग गुलाल भराऊं ॥ ६ ॥ आभूषन वहु भाति के पहिराऊं तिहि-तिहि ठाऊं। फूलन की माला गरें धरि देखत नैन सिराऊं ॥ ७ ॥ घर-घर ते सब गोप के लरिकन कों पठै वुलाऊं। केसर के मटुका भरी पिचकाई हाथ धराऊं ॥ ८ ॥ सिंहद्वार ठाड़े रहो तुम संग देहुँ वलदाऊ। आगे ह्वै मेरे लाडिले ललना सवहिन कों छिरकाऊं ॥ ९ ॥ वडडे गोप वुलाय के रखवारे संग रखाऊं। मनमाने तहां खेलिये सब व्रजजन संग नचाऊं ॥ १० ॥ विविध भाँति व्रजराज सों कहि वाजे वजवाऊं। फगुवा देवे कों अवे वहु भूषन वसन मंगाऊं ॥११॥ सब व्रजयुवतिन को अवै घर-घर पठै वुलाऊं।

मेरे लाल के चाह सों फगुवा के गीत गवाऊं ॥ १२ ॥ रगमगे बागे देखि के अपने दृगन सिराऊं । मुक्ताफल थारी भरि हों ले आरती उतराऊं ॥१३॥ आंको भरि लै गोद में घर भीतर ले जाऊं । ब्रजयुवतिन में बैठ के नेक फूली अंग न समाऊं ॥ १४ ॥ माय मनोरथ यों करे जाको है जसुमति नाऊं । दिजे यह फल 'रसिक' कों हों श्रीवल्लभ गुन गाऊं ॥१५॥ ❀६१८❀ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ जिनडारो जिनडारो आँखिन में अबीरा । रतन जटित पिचकाई कर लिये अहो भरि केसर नीरा ॥ १ ॥ ललित प्रीतम को मुख मांड्यो चरच्यो स्याम सरीरा । 'सूरदास'प्रभु रसबस कर लीनो इन हलधर के वीरा ॥ २ ॥ ❀ ६१६ ❀ गोपीवल्लभ सरे ❀ भीतर खेल होय तब ❀ राग जेतश्री ❀ खेलत बल मनमोहन ऋतु वसंत सुख होरी हो । सखा मंडली सङ्ग लिये बलराम कृष्ण की जोरी हो ॥ १ ॥ भेरी मृदंग डफ झालरी बाजत कर कठताला हो । सब तन मदन प्रगट भयो नाचत ग्वालिनी ग्वाला हो ॥ २ ॥ ब्रजजन सब एकत्र भये घोखराय दरबारा हो । इत बनी नवल कुमारिका उत बने नवल कुमारा हो ॥ ३ ॥ युवतीयूथ चंद्रावली अपने यूथ श्री राधा हो । झूमक चेतव गावही बाढ्यो रङ्ग अगाधा हो ॥ ॥ ४ ॥ बल मोहन एकत्र भये सुबल तोक एक कोदा हो । दुहुँदिस खेल मचाइयो बाढ्यो है मनसिज मोदा हो ॥ ५ ॥ चमकि चली चन्द्रावली सुबल तोक पर आई हो । उतहि कोपि प्यारी राधिका बलराम कृष्ण पर धाई हो ॥ ६ ॥ कमलन मार मचाइयो जुरे हैं दोऊन के टोला हो । मधुमङ्गल पकरि कढेरियो बांधि गुदी मे ढोला हो ॥ ७ ॥ बहोत हँसे मनमोहना हँसे सकल ब्रजवासी हो । छोरे हू छूटे नहीं परि गई गाढी पासी हो ॥८॥ हँसत हँसत सव आइयो गावति गारी सुहाई हो । सेना-बेनी करि सबै बल मोहन पकरे धाई हो ॥ ९ ॥ बल जू की आंख जु आंजियो पियकी मुरली छीनी हो । मनमान्यो फगुवा लियो पाछें जाय वह दीनी हो ॥ १० ॥

यह विधि होरी खेलही व्रजवासिन सुख पायो हो। भक्तन मन आनंद भयो 'गोविंद' यह यस गायो हो ॥ ११ ॥ ❀ ६२० ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ सुरंगी होरी खेले सांवरो व्रज - वृन्दावन माँझ सुरंगी । ध्रु०। सरस वसंत सुहावनो ऋतु आई सुख देन। माते मधुपा मधुपनी कोकिल-कुल कल वेन । सुरंगी ॥१॥ फूले कमल कलिंदजा केसू कुसुम सुरङ्ग। चंपक वकुल गुलाब के सोंधों सिंधु तरंग ॥२॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा पठये सखा पढाय । वाजे साजे नवरंगी लीने मोल मढाय ॥३॥ झांझ मुरज डफ बांसुरी भेरिन की भरपूर। फूंकन फेरी फेरिके ऊंची गई श्रुति दूरि ॥४॥ व्रज को प्रेम कहा कहों केसर सों घट पूर । कञ्चन की पिचकाइयां मारत हैं तकि दूर ॥५॥ आंधी अधिक अबीर की चोवा की मची कीच । फैली रेल फुलेल की चंदन वंदन बीच । व्रज की नवल जू नागरी सुंदर सूर उदार । खेलन आई सबै जुरी श्रीराधा के दरवार ॥७॥ फूलडंडा गहि हाथ सों मारत बांह उठाय । चंचल अंचल फरहरे पैने नैन चलाय ॥८॥ श्रीराधा की प्रिय सखी ललिता लोल सुभाय । छल करि छैल हि छिरकि के हँस भाजी डहकाय ॥६॥ नारी को भेख वनाय के पठयो सखा सिखाय । अति ही अधिक कहावती ललिता भेटी जाय ॥१०॥ गैंदुक कीनी फूल की दीनी श्रीराधा हाथ। आय अचानक औचका तकि मारी व्रजनाथ ॥११॥ व्रजकी वीथिन सांकरी उत यमुना को घाट । वलदाऊ कों वोलि के दीने गाढे कपाट ॥१२॥ हलधर हैं जु महावली सांचे हैं वलराम । वल को वल जु कहा भयो गहि वाँधे भुज पास ॥ १३ ॥ नैनन अंजन आँजिके सोंधो ऊपर डार । पांय परी द्वारे पट दीने रस की रास विचार ॥ १४ ॥ फिर भाजी सब दै दगा आन न दीने और । मदनगोपाल बुलाय के गहि लाई वरजोर ॥ १५ ॥ गिरिधारयो कर वाम सों खर मारयो गहि पाय । तिन को भार कहा भयो ललिता लेत उठाय ॥ १६ ॥

घर में घेर सबै चलीं श्री राधा कों सङ्ग लेत । दोऊ जन ऐंचि मिलाय के नैनन कों सुख देत ॥ १७ ॥ तब ललिता हँसि यों कह्यो श्री राधाकों सिर नाय । नीलांबर सों ढांपि के मुख मूंद्यो मुसिकाय ॥ १८ ॥ उत श्रीदामा अचगरो इत ललिता अति लोल । बीच बिसाखा साखि दैं मुरली माँगत ओल ॥ १९ ॥ ब्रजवासी वृषभान को मदन सखा वाको नाम । स्याम मते को मिलनिया बस कीनो सब गाम ॥ २० ॥ पठयो मदन वसीठ ही ढीठ महामद लोल । छिन औरै छिन और ह्वै छाक्यौ छैल दुछोल ॥ २१ ॥ मदना मदनगोपाल को हलधर कों लै आय । श्रीराधा की दिस जाय के चांपत हैं हँसि पाँय ॥ २२ ॥ श्रीदामा हँसि यों कह्यो मेवा देहों मंगाय । नैंक हमारे स्याम कों आनन को मधु प्याय ॥ २३ ॥ भाग सुहाग सबै बढ्यो खेलत फाग विनोद । राधा माधो बैठारे ब्रजरानी की गोद ॥२४॥ भूषन देत जसोमती पहोंची पान पछेल । टीको टीकी टीकावली हीरा हार हमेल ॥ २५ ॥ श्रीविट्ठल पदपद्म की पावन रेनु प्रताप । 'छीतस्वामी' गिरिधर मिले मेटे तन के ताप ॥ २६ ॥ ❀ ६२१ ❀

❀ भोग सरे तिलक होय तब ❀ राग सोरठ ❀ गहि पाये हो मोहन, अब मुख, मांडोंगी । लिये गुलाल फिरत हों कबकी तक न वनी कछु गोहन ॥१॥ काजर देहों बनाय लाल के यों लागेगो सोहन । अब अपनो मनभायो करिहों कहा नचावत भोंहन ॥२॥ सुधि कीजे पहली बातन कों लगे ठगे से जोहन । 'उदैराज' प्रभु या अवसर हों नैक न करों बिछोहन॥३॥❀६२२❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ धनि-धनि नंद-जसोमती हो धनि श्रीगोकुल गाम । धन्य कुंवर दोऊ लाडिले बल मोहन जाको नाम ॥१॥ छबीले हो ललना । श्रीवल्लभ राजकुमार छबीले हो ललना ॥ श्रीगिरिवर धारी लाल छबीले हो ललना । तुम या गोकुल के चंद छबीले हो ललना ॥ ध्रु० ॥ सखा नाम ले बोलियो सुबल तोक श्रीदाम । श्रवन सुनत सब

धाइयो वोलत सुंदर स्याम ॥२॥ भेख विचित्र वनाइयो भूषन वसन सिंगार। मंदिर ते सव सजि चले वालक बल वनवारि ॥३॥ गिरिवरधर अति रस भरे मुरली मधुर वजाये। श्रवन सुनत सब व्रजवधू जहां-तहां ते चलि धाये ॥४॥ रुंज मुरज डफ झालरी बाजे बहु विधि साजि। बिच-बिच भेरी जु वाज ही रह्यो घोष सव गाजि ॥५॥ पिचकाई कर कनक की अरगजा कुमकुम घोर। प्रानपिया कों छिरक हीं तकि तकि नवलकिसोर ॥६॥ एक ओर युवती भई एक ओर बलवीर । कमलन मार मचाइयो रुपे सुभट रनधीर ॥७॥ उलटि आई ठाडी भई अपने-अपने टोल। झूमक चेतव गावहीं बिच-बिच मीठे बोल ॥८॥ हँसत-हँसत सब आइयो लीनो सुबल बुलाय। हा-हा काहू भाँति सों नैंक मोहन कों पकराय ॥९॥ वहुरि सिमिट सव धाइयो मोहन लीने घेरि। नैनन अंजन आंजिके हँसत वदन तन हेरि ॥१०॥ यह विधि होरी खेल हीं सकल घोख संग,लाय। गोवर्धनधर रूप पै 'गोविंद'बलि-बलि जाय ॥११॥ ❀६२३❀ राजभोग आरती समय ❀ राग धनाश्री ❀ रंगीले री छवीले नैना रस भरे नैना नाचत मुदित अनेरे हो। खंजरीट मानो म्हामत्त दोऊ कैसे हू घिरत न घेरे हो ॥१॥ स्याम स्वेत राते रंग रंजित मानो चितये चितेरे हो। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर स्याम सुभग तन हेरे हो ॥२॥ ❀ ६२४ ❀ भोग-संध्या समय ❀ राग काफी ❀ निकस कुंवर खेलन चले रंग हो हो होरी। मोहन नंद के लाल रंगन रंग हो हो होरी॥ संग लीनें रंगभीने ग्वाल रंग हो हो होरी। वे गुन रूप रसाल रंगन रंग हो हो होरी ॥१॥ कंचन माट भराय रङ्ग०। सोंधे भरी है कमोरी रङ्गन०॥रतन जटित पिचकाई करन रङ्ग०। अवीर भरे भरि झोरी रङ्गन० ॥२॥ सुर-मंडल डफ झांझ ताल रङ्ग०। वाजत मधुर मृदङ्ग रङ्गन० ॥ तिनमे परम सुहावनी रङ्ग०। महुवरी वांसुरी चंग रंगन० ॥३॥ खेलत खेल जव रङ्गीलो लाल रङ्ग० । गये वृपभान की पौरि रङ्गन०॥ जे हुती नवलकिसोरी भोरी रङ्ग०। ते आई

आगे दौरि रङ्गन० ॥४॥ सुनि निकसीं नव लाडिली रङ्ग० । श्रीराधा राज-किसोरी रङ्गन०। ओलिन पहोंप पराग भरे रङ्ग०। रूप अनूपम गोरी रङ्गन० ॥५॥ संग अली रंगरली सोहैं रङ्ग०। करन कनक पिचकारी रंगन० ॥मोहन मनकी मोहिनी रङ्ग ०। देति रंगीली गारी रङ्गन० ॥६॥ तिनकों छिरकत छबीलो लाल रङ्ग०। राजत रूप गहेली रङ्गन० ॥ मानो चंद सींचत सुधा रङ्ग०। अपने प्रेम की बेली रङ्गन० ॥७॥ नवल बधुन के रंगीले बदन रङ्ग०। अबीर घुमड में डोले रङ्गन० ॥छूटहि निसंक अरुन घन में रङ्ग०। हिमकर निकर कलोले रङ्ग० ॥८॥इतने मांझ छिपि छबीली कुंवरी रङ्ग०। पकरे हैं मोहन आन रङ्गन०। छबिसों परस्पर झकझोरत रङ्ग०। कापे परति बखान रङ्गन० ॥६॥ गुप्त प्रीत प्रगटित भई रङ्ग०। लाज तनकसी तोरी रङ्गन०। ज्यों मदमाते चोर भोंर रङ्ग०। झलकत निकसी चोरी रङ्गन० ॥१० ॥ सखियन सुख देखन के काज रङ्ग०। गांठ दुहुन की जोरी रङ्गन० ॥ निरखि बलैयां लै सबै रङ्ग०। छबि न बढ़ी कछु थोरी रङ्गन० ॥११॥ कोऊ छैल छबीलेलाल रङ्ग०। छिरकत रंग अमोल रङ्गन०। कोऊ कमल करलै पराग रंग०। परसत रुचिर कपोल रङ्गन० ॥१२॥बने हैं पिया के कमल लोचन रंग०। जब गहि आंजे अञ्जन रंगन० ॥ जनो अकुलात कमल मंडल में हो हो होरी। फंदन फंदे युग खंजन रंगन० ॥ १३ ॥ देखि विवस वृषभान-घरनि रंग०। हंसत हंसत ,तहाँ आई रंगन० ॥ बरजी आन नवल वधू रंग०। भुज भरि लिये कन्हाई रंगन० ॥ १४ ॥ पोंछत मुख अपने अञ्चल रंग०। पुनि पुनि लेत बलाय रंगन० मुसकि मुसकि छोरत सु गाँठ रंग०। छबि बरनी नहिं जाय रंगन०॥१५॥ छोरन न देहीं नवल वधू रंग०। मांगें कुंवर पै फाग रंगन० ॥ जो पै फगुवा दियो न जाय रंग०। प्यारी राधा के पांय लाग रंगन० ॥ १६ ॥ और कहांलगि बरनिये रंग०। बढ्यो सुखसिंधु अपार रंगन० ॥ प्रेम कलोल हलोलन मे रंग०। किन हू रही न संभार रंगन० ॥ १७ ॥ रंग रंगीले

व्रजवधू रंग० । रंगीले गिरिधर पीय रंगन० ॥ यह रंग भीने नित बसो रंग० । 'नंददास' के हीय रंगन० ॥ १८ ॥ ❀ ६२५ ❀ सेन भोग आये ❀ ❀ राग रायसा ❀ सकल कुंवर गोकुल के निकसे खेलन फाग । हरि हलधर मधिनायक अन्तर अति अनुराग ॥ १ ॥ आलिन बूका वंदन रोरी हरद गुलाल । वाजत मधुरे महुवर मुरली और डफ ताल ॥ २ ॥ कनक कलस केसर भरे कावर किंकर कंध । और कहाँ लगि कहिये भाजन भरे न सुगंध ॥ ३ ॥ हँसत हँसावत गावत छिरकत फिरत अवीर । भींज लगे तन सोभित रङ्ग-रङ्ग रंजित चीर ॥ ४ ॥ फूलन की कर गेंदुक करत परस्पर मार । छूटत फेंट लटपटी विखरि परत घनसार ॥ ५ ॥ कोलाहल ग्वालन को सुनि गोपिका अपार । टोलन टोलन निकसी करि सोलहै सिंगार ॥६॥ रूप माधुरी जिनकी कवि पै वरनी न जाय । तिन्हें सची रति रंभा पग ह्वै परत लजाय ॥ ७ ॥ अति सरस सुर गावत कोऊ झील कोऊ घोर । तिन्हैं सुन्यो नहिं भावत बीना नाद कठोर ॥ ८ ॥ ललित गली गोकुल की होत विविध विधि केलि । अगर सहित कुमकुम की चली धरनि पर रेलि ॥६॥ गयों है गुलाल गगन चढ़ि भये सुरसदन सुरंग । मानो खुर-खेह उडी है सेना सजी अनंग ॥ १० ॥ बन्यो वनिता वदन पर कृष्णागर को पंक । परिपूरन चन्दन ते मानो च्वै चल्यो कलङ्क ॥११॥ छिरकत हरि नाना रंग भींजत गोपिन गात । मानो उमग्यो अंतर ते अंचल प्रेम चुचात ॥१२॥ वोले ग्वाल वराती हमारे हरि को व्याह । दुलहिन गोप-किसोरी मोहन सब को नाह ॥१३॥ यह सुनि गोपी कोपी हलधर पकरे जाय । अंजन दे दृग छाँड मृगमद मुख लपटाय ॥१४॥ वहुरि सिमिट सब सुन्दरी घेरे मदन गोपाल । कनक कदली मंडल में सोभित स्याम तमाल ॥१५॥ तब वृषभान किसोरी हरि भरि लीन्हें अङ्क । कहि न जात ता सुख की मानो निधि पाई रङ्क ॥१६॥ वरनि सके को हरि के अगनित चरित्र विचित्र ।

जिहि तिहि भांति 'गदाधर' रसना करों पवित्र ॥ १७ ॥ ❀ ६२६ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ बीडी अरोगें तब तक ❀ राग कल्यान ❀ श्रीगोवर्धनराय लाला। अहो प्यारे लाल तिहारे चंचल नैन विसाला ॥ तिहारे उर सोहे वनमाला। याते मोही सकल ब्रजबाला ॥ ध्रु० ॥ खेलत-खेलत तहां गये जहां पनि-हारिन की बाट । गागर ढोरे सीस ते कोऊ भरन न पावत घाट ॥ १ ॥ नंदराय के लाडिले बलि एसो खेल निवार। मन में आनन्द भरि रह्यो मुख जोवत सकल ब्रजनार ॥ २ ॥ अरगजा कुमकुम घोरि के प्यारी लीनो कर लपटाय। अचका-अचका आय के भाजी गिरिधर गाल लगाय ॥३॥ यह विधि होरी खेल ही ब्रजबासिन संग लाय । गोवर्धनधर रूप पै 'जन गोविंद' बलि-बलि जाय ॥ ४ ॥ ❀ ६२७ ❀

श्रीनाथजी के पाटोत्सव पीछे प्रथम मुकुट धरे तब

❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ कुंज कुटीर मिल यमुना तीर खेलत होरी रस भरे अहीर। एक ओर बलबीर धीर हरि एक ओर युवतिन की भीर ॥ १ ॥ केकी कीर कल गुन गंभीर पिक डफ मृदंग धुनि करत मंजीर। पग मंजीर कर अबीर केसर के नीर छिरकत है चीर ॥ २ ॥ भये अधीर रतिपथ के तीर आनंद समीर परसत सरीर। 'नन्ददास' प्रभु पहिरे हीर नग मिटत पीर गह्यो सुख को सीर ॥ ३ ॥ ❀ ३२८ ❀ शृंगार समय ❀ ❀ राग विलावल ❀ खेलत गिरिधर राधा नव निकुंज मधि होरी। जुरि आई ब्रजबनिता अद्भुत रूप किसोरी ॥ १ ॥ इतते हलधर आदि भये बालक करि जोरी। अबीर गुलाल लिये संग केसर भरी कमोरी ॥ २ ॥ बाजत बीन मृदंग चंग मुरली धुनि थोरी। कोऊ पकरि कुमकुमा कोऊ डारत रोरी ॥ ३ ॥ कोऊ गहि पंकरुहन मार करी बरजोरी। गावत विवस भये सब कुल मर्यादा छोरी ॥ ४ ॥ यह पट देत परस्पर नाचत रंग रह्यो री। घेरि-घेरि सब नारिन भाजत बांह गह्यो री ॥ ५ ॥ उडत गुलाल अरुन रंग

अंवर सकल भयो री । गगन चक्र चूडामनि लखियत नांहि छिप्यो री ॥६॥ तवै मदनमोहन पिय दृष्टि सवन की चोरी । दोरि आय छल सों एक अव लै है भकझोरी ॥ ७ ॥ वहै उलटि फगुवा मिस पीतांवर पकरयो री । हरि परिरंभन दयो और चाह्यो सो करयो री ॥ ८ ॥ श्रीविट्ठल पदपदम् प्रताप तेज वल सों री । यह गुनगान 'ज्ञान' सों जो पायो सो कह्यो री ॥ ९ ॥

❀ ६२६ ❀ राग देवगंधार ❀ रविजा तट कुंजन मे गिरिधर खेलत फाग सुरंग । गोपवाल गोकुल के सव ही लये जोर सव संग ॥ श्रीवृषभान सुता सों प्रमुदित चले करन हित जंग । सोभा अद्भुत वनी सवन की निरखि सज्यो अनंग ॥ १ ॥ नवसत साज सिंगार राधिका सन्मुख आई दौरी । प्रेम सहित नैनन अवलोकत साथ सखी सव जोरी ॥ पिचकाई भरि लई कनक की केसर रस सों घोरी । छिरकत चोंप परस्पर वाढी हंसत मृदुल मुख मोरी ॥ २ ॥ चोवा मेद फुलेल अरगजा लीनो सुभग वनाय । भरि भरि वेला सव छिरकत है उर आनंद न समाय ॥ सरस सुगन्ध उड्यो अति वूका दिनक्षनि लख्यो न जाय । चहूं ओर रस सागर उमड्यो श्रुति पथ गयो वहाय ॥ ३ ॥ वचन विवेक न वोलत तिहि छिन सुधि भूली सव चेत । सोर करत सव ही धावत है हो-हो सव्द समेत ॥ राधा लाल गुलाल मुठी भरि डारत अति सुख हेत । वाहिर उर अनुराग दुहुंन को प्रगट दिखाई देत ॥ ४ ॥ पटह झांझ झालरि डफ आवज वीना सुर कल मंद । ताल पखावज मुरली महुवरि वाजत मुरज सुछंद ॥ गारी व्रजललना मिलि गावत मन मे अति आनन्द । फगुवा मन भायो सव मांगत पकरे आनंद कंद ॥ ५ ॥ उलटि सखन तन चितए मोहन वाढ्यो रंग अपार । भयो मूढ मन सेप कहन कों राधाकृष्ण विहार ॥ सिव समाधि भूल्यो विधि मन मे पछितायो वहु वार । जो मांग्यो फगुवा सो हंसि के दीनो नंदकुमार ॥ ६ ॥ कुसुमित विपिन सुवल वहु विधि सों दरस करन कों

आयौ । ऋतु वसंत केकी सुक पिक मिलि मधुपन बोल सुनायो । थके देव किन्नर सुर-वनिता अति मन में सुख पायो । 'गोकुलचंद' स्वरूप सुखद को गुन संभ्रम सों गायो ॥७॥ ❀ ६३० ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग जैतश्री ❀ रसिक फागखेलै नवल नागरी सों सर्वस्व ऋतुराज की ऋतु आई । पवनमन्द अरविंद औौर कुंद बिकसे विसद चन्द पिय नन्द सुत सुखदाई ॥१॥ मधुप टोल मधु लाल संग-संग डोले पिकन-बोल निर्मोल श्रुति चारु गाई । रचित रास सविलास यमुनापुलिन में सघन वृन्दाविपिन रही फूलि जाई ॥२॥ कनकअंग बरनी सुकरिनी विराजे गिरिधरन युवराज गजराज राई । युवती हँसगामी मिले'छीतस्वामी'क्वणित वेनु पदरेनु बड़भागी पाई ॥३॥ ❀६३१❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ ललना तुम मेरे मन अति बसो सुन्दर चतुर सुजान । ललना । कर गहि मोहन मुरलिका नीके सुनावो तान ललना ॥१॥ मोरमुकुट सोभा बनी सुन्दर तिलक सुभाल । मुख पर अलकावली बिथुरी मनहुं कमल अलि माल ॥२॥ अधर दसन वर नासिका ग्रीवा चिबुक कपोल । पीतांबर चुद्रघंटिका लाल काछनी डोल ॥३॥ नखसिख अंग बरनो कहा अंग-अंग रूप अतोल । पटतर कों कोऊ नहीं अति मीठे मृदु बोल ॥४॥ एक दिना सेनन मिले नवल कुंवर ब्रजराज । गृहते आवन ना बन्यो भई सबै कुललाज ॥५॥ गृहते गोरस मिस चली लाज छांड़ि कुल एन । वो मुसकनि हिरदे बसी अति अनियारे नैन ॥६॥ कहा जाने तुम कहा कियो गृह-अंगना न सुहाय । बिन देखे नागर प्यारो युग समान पल जाय ॥७॥ सकल लोक मोहि बरजहीं पचिहारे समुझाय । नहिं भावे मोहि कुल कथा मोहि तिहारी चाय ॥८॥ ग्वालिन पर गिरिधर रीझे लीला कही न जाय । 'गोपालदास' प्रभु लाल रंगीलो हँसि लीनी उर लाय ॥९॥ ❀ ६३२ ❀ राग सारंग ❀ माधो चाचर खेल ही खेलत री जमुना के तीर । ध्रु० । बीच-बीच गोपी बनी बिच-बिच री वे बने हैं

मुरारि । मरकत मनि कंचन मनी माला री जानो गुही सँवारि ॥ १ ॥ कुमकुम वरनी गोपिका केसौं री घनस्याम सरीर । नील पीत पट मंडिता नाचत री वे प्रेम गंभीर ॥२॥ करतल ताल वजावहीं गावे री वे गीत रसाल । मदन महोदय मन हरयो लीला सागर गिरिधरलाल ॥३॥ किंकिनी नूपुर वाजहीं सब्द वानरी कोलाहल केलि । क्वनित वेनु मधिनायका लटकत लाल भुजा गल मेलि ॥४॥ एक जु पान खवावहीं एक जु मांगे देहु उगार । एक जु मुख चुंवन करे एक जु वीने टूटे हार ॥५॥ चंद भूलि कौतुक रह्यो हरिना री वे मोहे नाद । थाक्यो रथ कैसे चले व्रजयुवतिन री वहलायो वाद ॥६॥ चढि विमान सव देवता वरखन री वे लागे फूल । जय जय जय जदुनंदना रास रच्यो रतिनायक मूल ॥ ७ ॥ जो प्रसाद उनकों भयो हरि परिरंभन वाहु पसारि । 'परमानंद' प्रभु श्रीपति री पुन्य पुंज कृत गोकुल नारि ॥ ८ ॥ ❀ ६३३ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग काफी ❀ एरी सखी निकसे मोहनलाल खेलन व्रज में फाग री । रंग हो हो हो हो होरियां । एरी सखी घुमड्यो है अवीर गुलाल मानो उनयो अनुराग री । रंग हो हो हो हो होरियां ॥१॥ सोभित मदन गोपाल कटि वांधे पट सोहनो । काछनी काछे लाल लाल निचोय रंगी मनो ॥२॥ मोर मुकुट छवि देत वंक दृगन हंसि देखनो । सवही को मन हरि लेत एनमेन मानो प्रेखनो ॥३॥ पट आवज सुर वीन अनाघात गहि गांज हीं । ताल मृदंग उपंग रुंज मुरज डफ वाजहीं ॥४॥ घिरि आईं व्रजनारी मृगनैनी गजगामिनी । रोके है सांवरे लाल घन घेरयो मानो दामिनी ॥५॥ छिरकत पिय नंदनंद तिय पट ओट वचावहीं । मानो घन पूरनचंद दुरि निकसे पुनि आवहीं ॥६॥ वने हैं तियन के अंग छिरकि छींट छवि छैल की । मानो फूली रंग रंग ललित लता जनु प्रेम की ॥ ७ ॥ वढ्यो परस्पर रंग उमगि उमगि रस भरन में । निरखि भई मति पंग पीतांवर फरहरन में ॥८॥ जव गहि रंगन भरे मोहन मूरति

साँवरे। हर हर हर हँसि परे मुनि-मन ह्वै गये बावरे ॥ ६ ॥ भई सरस्वती मति बौर और खेल कहांलों कहैं। रस भरे सांवल गौर 'नंददास' के हिये रहै ॥१०॥❀६३४❀ राग सारंग ❀ छांड़ो छांडो हमारी बाट, लंगर सांवरे। जिनि फोरो ढोरो मेरी गागर भरन देहु यह घाट ॥ १ ॥ जिनि पकरो झगरो मेरो अँचरा देख बिचारो ठौर। तुम होरी के राते माते बोलत और की और॥२॥ लैहों घेरि निवेरि सबन पै करिहों न काहू की कान। 'श्रीविट्ठल गिरधरन लाल' तुम जीते हो मुसिकान ॥३॥ ❀६३५❀ भोग दर्शन ❀ राग नट ❀ बहुरि डफ बाजन लागे हेली ॥ ध्रु० ॥ खेलत मोहन सांवरो हो किहिं मिस देखन जांय। सास ननद बैरिन भई अब कीजे कोन उपाय ॥ १ ॥ ओजत गागर डारिये हो यमुनाजल के काज। यह मिस बाहिर निकसिके हम जांय मिलैं तजि लाज ॥२॥ आओ बछरा मेलिये हो बनकों दैंहि बिडार। वे दैंहैं हम हीं पठैं हम रहिहैं घरी द्वै चार ॥३॥ हा हा री हौं जाति हों मोपै नाहिन परत रह्यो। तू तो सोचत ही रही तैं मान्यो न मेरो कह्यो ॥४॥ राग रंग गहगड मच्यो हो नंदराय दरबार। गाय खेलि हंसि लीजिये हो फाग बडो त्यौहार ॥५॥ तिन मे मोहन अति बने हो नांचत सबै गुवाल। बाजे बहु विधि बाजहीं हो रुंज मुरज डफ ताल ॥ ६ ॥ मुरली मुकुट बिराजही हो कटि पट बांधे पीत। नृत्यत आवत 'ताज' के प्रभु गावत होरी गीत ॥७॥ ❀६३६❀ संध्या समय ❀ राग काफी ❀ होरी खेले लाल डफ बाजे ताल मानो झनन झनन। झूमक खेलन निकसी नवल तिय हाथी छूटे मानो घनन घनन ॥१॥ चोबा चंदन और अरगजा पिचकाई छूटे मानो सनन सनन। 'नंददास' प्रभु मंडल नृत्यत गत लेत भाव मोहे मनन मनन ॥२॥ ❀६३७❀ सेंन भोग आये ❀ राग कल्यान ❀ गिरिधर यमुनातट कुंजन में खेलत फाग सुहावनो। ग्वाल मंडली बल संग लीने आनंद प्रेम बढावनो ॥१॥ परम रुचिर उज्वल वसनन लें अंगअंग भेख बनावनो। अगर सहित मृगमद गोरासों अरगजा

घोरि लगावनो ॥२॥ अति सुगंध केसर के रससों हाटक घट भरि लावनो। रतनजटित पिचकाई भरि लै ब्रजवधू वन वर धावनो ॥ ३ ॥ नवसत साज सिंगारि राधिका रूप अनूप दिखावनो। ब्रजनारी सब जोरि साथ लै सन्मुख गुलाल उडावनो ॥४॥ सौरभ अधिक अबीर सेत सों भरिभरि मुठी चलावनो। होहो होहो बोल सखिन संग लाल गुलाल उडावनो ॥५॥ पटह झांझ झालर आवज डफ ताल मृदंग बजावनो। राग कल्यान जमाय सप्त स्वर तान मान सों गावनो ॥ ६ ॥ मधुमंगल बोल्यो हलधर सों अब कछु मतो उपावनो। ब्रजवनितन की सेना आगे कैसेकै होय बचावनो ॥७॥ तब बलदाऊ मतो रच्यो मन ललिता नेक बुलावनो। बदिये चतुर जो दाव विचारे चित को यह सिखावनो ॥८॥ सुनि मधुमंगल ललिता टेरी नेक यहां लों आवनो। मैं जियमांझ उपाय बनायो करिये तुम मनभावनो ॥ ९ ॥ तब हरखित हिय बोली हँसिके यह निश्चय ठहरावनो। तुम सब दूर रहो ठाड़े व्है हमहि स्याम पकरावनो ॥१०॥ छलबल करि पकरे जु अचानक कीनो सकल खिलावनो। सुबल श्रीदामा आदि सखा सब याही कों जो मिलावनो ॥११॥ मनमोहन संभ्रम सन्मुख व्है बोलत बोल सुहावनो। सखा यूथ में देखी ललिता ठाडी करत खिजावनो ॥१२॥ प्रीतम कों पकरन दौरी राधा गह्यो स्याम सुख छावनो। नैनन नैन मिलत मुसिकानी रहत न नेह दुरावनो ॥१३॥ युवती झुंडन सब मिलि गावत गारी द्वंद मचावनो। सुरललना सब देखि थकित भई कौन पुन्य ब्रज पावनो ॥१४॥ प्रमुदित मनसो अष्टयाम जुरि राधापतिहि लडावनो। यह रस तजि जे औरै चाहैं सो तो जन्म गमावनो ॥१५॥ को कवि बरनि सकैं या सुख कों देखत दुख बिसरावनो। सुक पिक मोर मधुपगन बोलत ऋतु बसंत हुलसावनो ॥१६॥ सुन बिनती सुत नंदराय के फगुवा बहुत मंगावनो। यह जोरी अविचल चिरजीयो ब्रज नित होहु वधावनो ॥ १७ ॥ राधा कृष्ण अमृत रग सागर क्यों घट होय

समावनो ।'गोकुलचंद' चरन पंकज रज।निसदिन तन लिपटावनो ॥ १८ ॥
❀६३८❀ राग अडावनो ❀ गावत धमार आईं ब्रज की सुकुमार नार । चित्र अंकित डफ संवार तृन टकोर अंगुरी ढार बजवत रिझवार ग्वार ॥१॥ सुनि निकसे सुघरराय अभंक लीने बुलाय शंख शृंग चंग उपंग महुवर वंसी सहनार । घुंघरू घंटा घडियाल कंसताल कठताल दुंदुभी मृदंग राग रंग होत नंदद्वार ॥२॥ चोवा मृगमद गुलाल मुख मंडित किये गुपालकेसर केसु तन पुंज कंचन कर सीस वार । पिचकाई करन लाई धारी छूटत सुहाई सहचरी समीप आय छिरकि रही हार हार ॥ ३ ॥ अति विचित्र बाल मित्र विहरत मिलि युवतीयूथ गावत है सुर संयुत होरी के गीत गार । 'मुरारीदास' प्रभु गुपाल फगुवा दीनों संभार दै असीस उलटि चली रूप माधुरी निहार ॥४॥ ❀ ६३९ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ खेलत फाग राग रंग बाजे मृदंग धाधिलांग और आन आन बाजे । कंचन की पिचकाई सु केसर भरि करन लाई बरनबरन वसन साजे ॥१॥ सुनि सुनि ब्रजवनिता बाहिर निकसि निकसि आय ठाडीभई लाल भरिवे कों तिनसों बचन कहति लाजे । काहू कों पटपीत गहावत काहूकों निरखि मन मनावत वृंदावन चंद ब्रज बिराजे ॥२॥ ❀६४०❀ पाटोत्सव पीछे सेहरा धरे तब—

❀ मंगला दर्शन ❀ राग पंचम ❀ होहो होरी खेलन जैये । आज भलो दिन हों बलिहारी नितही सुहाग बढैये ॥१॥ सोवत जाय जगाय सुंदरी करि उबटनो सीस न्हवैये । सादा चूरी खुभी नकबेसर राधाकुंवरि बनैये ॥२॥ चोवा चंदन और अरगजा अबीर गुलाल उडैये । नव मटुकी भरि केसर घोरी प्रथम कुंज छिरकैये॥३॥धावत सब इतते ब्रजनारी कमलन मार मचैये । ताल मृदंग ढोल डफ महुवर झांझन झमक मिलैये ॥४॥ इत राधा उत मोहन प्यारो मुरली को सब्द सुनैये । कुंज ओट ललिता हरिदासी राग 'दामोदर' गैये ॥ ५ ॥
❀६४१❀ शृङ्गार समय ❀ राग बिलावल ❀ रस सरस बसो बरसानो जू । राजत

रमनीकर बानो जू ॥ मनिमय मंदिर तहां सोहे जू । रवि ससि उपमाकों को है जू ॥१॥ वृषभान गोप तहां राजे जू । ताकी कीरति जग में गाजे जू ॥ नित परम कुलाहल भारी जू । गावत गारी ब्रजनारी जू ॥ २ ॥ जब दिन होरी को आयो जू । न्योतो नंदगाम पठायो जू ॥ सुनिके मन मोहन धाये जू । सब सखा संग लै आये जू ॥ ३ ॥ तब जसुमति न्योति बुलाई जू । समधिन समध्याने आई जू ॥ कीरति आदर करि लीनी जू । मनुहार बहुत विधि कीनी जु ॥४॥ अति कृपा अनुग्रह कीने जू । हम तो अपने करि लीने जू ॥ गुन गिनि न परैं कछु गाथा जू । कीनो ब्रज सकल सनाथा जू ॥५॥ तुम तो सब की सुखरासी जू । ये सुफल किये ब्रजवासी जू ॥ आओ 'निज भवन बिराजो जू । बरसानो सकल निवाजो जू ॥६॥ तुम तो सब की सुख-दाई जू । मुख कीजे कौन बडाई जू ॥ तुम तो यह निज व्रत लीनो जू । जिन जो जाच्यो सो दीनो जू ॥७॥ यह यस तुमरो जग जाने जू । मुख पर कहि कोन बखाने जू ॥ तब कर गहि ढिंग वैठारी ;जू । गावत मंगल ब्रज-नारी जू ॥८॥ तुमसों पूछैं इक बाता जू । तुम सांची कहो सब गाथा जू ॥ जब गर्ग तिहारे आये जू । बहु नाम कृष्ण के गाये जू ॥९॥ मुनि वासुदेव करि लेखे जू । वसुदेव कहां तुम देखे जू ॥ यह सुनि सुनि वात तिहारीजू । अचरज उपजे जिय भारी जू ॥ १० ॥ और संका जिय आवे जू । ये भेद कोऊ नहिं पावे जू ॥ पति साधु परम तुम पायो जू । यह पूत कहांते जायो जू ॥११॥ याके गुन रूप नियारे जु । यह मिले न कुलहि तिहारे जु ॥ कछु कह्यो हमारो कीजे जु । वसिके सवकों सुख दीजे जु ॥१२॥ रहिये कछु दिवस हमारे जु । हम तो हैं सकल तिहारे जु ॥ यह दोऊ एक करि जानो जु । नंदगाम सोई वरसानो जु ॥१३॥ जानत ज्यों नंद तिहारे जु । तेसेई वृषभान हमारे जु ॥ ये दोऊ परमसनेही जु । ये एक प्रान द्वै देही जु ॥१४॥ सुनि सुनि जसुमति मुसिकानी जु । वोली मधुरी एक वानी जु । वसिये कछु

दिवस तिहारे जू । कीरति चलि बसौ हमारे जू ॥ १५ ॥ तब हंसी सकल ब्रजनारी जू । जसुमति की ओर निहारी जू ॥ ब्रज भयो कुलाहल भारी जू । नाचत दै दै कर तारी जू ॥१६॥ यह रस बरसे बरसाने जू । बिन कुंवरी कृपा को जाने जू ॥ कीरति जसुमति जस गायो जू । ब्रज-बास 'माधुरी' पायो जू ॥ १७ ॥ ❀ ६४२ ❀ राग धनाश्री ❀ हो मेरी आली भानुसुता के तीर अबीर उडावहीं। मिल गोपी गोपकुमार मधुर सुर गावहीं ॥ १ ॥ बाजत मधुर मृदंग बेनु सुहावनी । आवज सरस उपंग चंग मन भावनी ॥ २ ॥ नाचत गोपी ग्वाल ताल बजावहीं । मधुर भामती गारी सब मिलि गावहीं ॥ ३ ॥ भाल सुभग मधि विसाल गुलाल बिराजहीं। चिबुक चारु अबीर अधिक छबि छाजहीं ॥ ४ ॥ कृष्णागर को पंक बदन लिपटावहीं । सुरंग गुलाल उड़ाय गगन सब छावहीं ॥५॥ केसर भरि पिचकाई परस्पर मारहीं । केसू कुसुम निचोय सीस पर ढारहीं ॥ ६ ॥ पिय के सीस सेहरो सब मिलि बांधहीं। चपल नैन की चोट मैंनसर साधहीं ॥ ७ ॥ प्यारी कों उबटि न्हवाय बसन पहिरावहीं । मधुर ब्याह के गीत सबै मिलि गावहीं ॥ ८ ॥ करत ब्याह को खेल सकल मिलि भामिनी। विविध सुगंध उड़ाय कियो दिन यामिनी ॥ ९ ॥ दूल्है दुलहिन जोट बनी मन भावनी। राजत मंडल मांझ परम सुहावनी ॥ १० ॥ यह विधि नित व्रत मांझ परम सुख बरखहीं। ब्रजयुवतिन मुख निरखि अधिक मन हरखहीं ॥ ११ ॥ ❀ ६४३ ❀ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग काफी ❀ तुम आओ री तुम आओ। मोहन जू कों गारी सुनाओ ॥ एरी रस रंग बढाओ ॥ १ ॥ हरि कारो री हरि कारो। यह द्वै बापन बिच बारो ॥ एरी० ॥ २ ॥ हरि नटवा री हरि नटवा । राधा ज के आगे लटुवा ॥एरी० ॥ ३॥ हरि मधुकर री हरि मधु-कर । रस चाखत डोलत घर घर ॥एरी० ॥ ४ ॥ हरि खंजन री हरि

खंजन । राधा जू को मन रंजन ॥एरी० ॥५॥ हरि रंजन री हरि रंजन। ललिता लै आई अंजन ॥ एरी० ॥६॥ हरि नागर री हरि नागर । जाको बावा नंद उजागर ॥एरी० ॥ ७॥ हम जाने री हम जाने । राधा गहि मोहन आने ॥एरी० ॥८॥ मुख मांडो री मुख मांडो । हरि हा हा खाय तो छांडो ॥एरी० ॥ ९ ॥ हम भरि है री हम भरि है । काहू ते नेक न डरि है ॥एरी०॥१०॥ हरि होरी हो हरि होरी । स्यामा जू केसर ढोरी । एरी० ॥ ११ ॥ हरि भावे री हरि भावे । राधा मन मोद वढावे । एरी० ॥ १२ ॥ रंगभीनो री रंगभीनो । राधा मोहन वस कीनो ॥एरी० ॥१३॥ हरि प्यारो री हरि प्यारो । राधा नैनन को तारो ॥एरी० ॥१४॥ हम लैहैं री हम लैहैं । फगुवा लै गारी दै हैं ॥एरी० ॥१५ ॥ यह जस 'परमानंद' गावे । कछु रहसि बधाई पावे ॥एरी रस रङ्ग वढावें ॥ १६ ॥ ❀ ६४४ ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग विलावल ❀ मोहन वृपभान के आये जू । तहां अति रस न्योति जिमाये जू ॥ १ ॥ वृषभानपुरा की गारी । श्री राधा कृष्ण पियारी ॥ २ ॥ चढि दूल्हे व्याहन आये । सिंहासन दै वैठाये ॥२॥ नाना विधि भई रसोई । तहां जेंवत अति सुख होई ॥ ४ ॥ तहां मिलि युवती वड़भागी । गावैं कृष्णचरित अनुरागी ॥ ५ ॥ तहां वोली एक व्रजनारी । आओ दैहैं गारी ॥ ६ ॥ इने गारी कहा कहि दीजे । औगुन सरस लहीजे ॥ ७ ॥ द्वै वाप सवै कोऊ जाने । जिन वेद पुरान पुरान वखाने ॥ ८ ॥ वसुदेव के सुत जु कहाये । तुम नंद गोप के आये ॥९॥ तेरी मैया आन आन जाती । वे हिलि मिलि वैठे पाती ॥ १० ॥ तेरी फूफी पंचभरतारी । जाको जस पावनकारी ॥ ११ ॥ पति पांडु सवै जग जाने । सुत आन आन के आने ॥ १२ ॥ तेरी द्रुपदसुता सी भाभी । वह पंच पुरुष मिलि लाभी ॥ १३ ॥ जाकी जग वदत वड़ाई । सोतो भक्तसिरोमनि गाई ॥ १४ ॥ तेरी वहिन सुभद्रा कुमारी । सोतो अर्जुन

संग सिधारी ॥ १५ ॥ श्रीकृष्ण तेरी महतारी । वह पहिरे तन सुख सारी ॥ १६ ॥ रानी रातो लंहगा सोहे । तेरी चितवन में जग मोहे ॥ १७ ॥ तुम कहियत हो ब्रह्मचारी । जाके सोलहसहस्र ब्रजनारी ॥ १८ ॥ तुम कहियत हो दधिदानी । जिन कुब्जा सों रति मानी ॥ १९ ॥ श्रीकृष्ण तेरो बलवीरा । जिन करष्यो कालिंदी नीरा ॥ २० ॥ अहो तुम वन-वन धेनु चराई । भई घोख सकल सुखदाई ॥ ११ ॥ वृंदावन बेनु बजायो । ब्रजसुन्दरी रास खिलायो ॥ २२ ॥ सूने भवन पराये । चोरी करि माखन खाये ॥ २३ ॥ गारी गावे हरिजू की सारी । वे हंसि-हंसि दे हैं तारी ॥ २४ ॥ गारी गावे हरिजू की सासू । वे ढरत प्रेम के आंसू ॥ २५ ॥ गाओ गाओ सब मिलि गारी । तुम सुन हो लाल बिहारी ॥२६॥ तुम करि-करि अपनो भायो । अपनो जस जगत सुनायो ॥ २७ ॥ वे हंसि-हंसि गावें गोरी । पट ओट हंसी मुख मोरी ॥२८॥ छांड़े दुर्योधन से राजा । तेरे कुलहि न आये लाजा॥२९॥ ललिता यह मङ्गल गायो । सुनि 'सूरस्याम' सचुपायो॥३०॥

❀ ६४५ ❀ राग बिलावल ❀ सुंदर स्याम सुजान सिरोमनि देहुं कहा कहि गारी जु । बड़े लोग के औगुन बरनत सकुच होत जिय भारी जु ॥ १ ॥ को करि सके पिता को निर्णय जाति-पांति को जाने । जिन के जियं जैसी बनि आवे तैसी भांति बखाने ॥२॥ माया कुटिल नटी तन चितयो कोन वडाई पाई । उन चंचल सब जगत बिगोयो जहां तहां भई हँसाई ॥ ३ ॥ तुम पुनि प्रकट होय बारे ते कोन भलाई कीनी । मुक्तिवधू उत्तम जन लायक ले अधमन कों दीनी ॥ ४ ॥ बसि दस मास गर्भ माता के उन आसा करि जाये । सो घर छांडि जीभ के लालच ह्वै गये पूत पराये ॥५॥ बारे ही ते गोकुल गोपिन के सूने गृह तुम डाटे । ह्वै निसंक तहाँ पैठि रंकलों दधि के भाजन चाटे ॥ ६ ॥ आपु कहाय बड़े के बेटा भात कृपन-लों मांग्यो । मानभंग पर दूजे जाचत नेक संकोच न लाग्यो ॥ ७ ॥ लरि-

काई ते गोपिन के तुम सूने भवन ढिंढोरे। यमुना न्हात गोप-कन्यन के निपट निलज पट चोरे ॥ ८ ॥ वेनु वजाय विलास कियो वन वोली पराई नारी। वे बाते मुनि राजसभा मे ह्वै निसंक विस्तारी ॥ ९ ॥ सव कोऊ कहत नंदवाबा को घर भरयो रतन अमोले। गरे गुंजा सिर मोरपखौवा गायन के संग डाले ॥ १० ॥ राजसभा को बैठनहारो कोन त्रियन संग नाचे। अग्रज सहित राजमारग मे कुवजा देखत राचे ॥ ११ ॥ अपुनी सहोदरा आपुही छल करि अर्जुन संग भजाई। भोजन करि दासीसुत के घर जादो जात लजाई ॥ १२ ॥ लै लै भजे राजन की कन्या यहिधों कोन भलाई। सत्यभामा जु गोत मे व्याही उलटी चाल चलाई ॥ १३ ॥ वहिन पिता की सास कहाई नेक हु लाज न आई। एते पर दीनी जु विधाता अखिल लोक ठकुराई ॥ १४ ॥ मोहन वसीकरन चट चेटक यंत्र मंत्र सव जाने। ताते भले भलें करि जाने भले भले जग माने ॥ १५ ॥ वरनों कहा यथा मति मेरी वेद हू पार न पावे। 'दास गदाधर' प्रभु की महिमा गावत ही उर आवे ॥ १६ ॥ ❀ ६४६ ❀ भोग सरे ❀ राग सारग ❀

नंदमहर को कुंवर कन्हैया होरी खेल न जाने हो। रस में विरस करे अरबीलौ लघु दीरघ न पहिचाने हो ॥१॥ अंगुरी गहत गहे कर पहोंचो भुज मूलन लगि आवे। देखि विराने श्रीफल ऊपर लालची मन ललचावे ॥ ॥ २ ॥ आंज्यो चाहे और के नैना अपने नैन दुरावे। पकरयो चाहे सुधानिधि हाथन अधरसुधा क्यों पावे ॥३॥ तेल फुलैल उडेले सिर ते ग्रंथि दुकूलन जोरी। वहुत गुलाल डारि आंखिन में हँसि लंगर झकझोरी॥४॥ कमल पत्रिका रचे कपोलनि मरवट मुखहि वनावे। दुलहिनी सी करि पठवत उतते दूलहे आप कहावे ॥ ५ ॥ जो हम रूठि जाय घर वैठें तो सखी हमहि मनावे। सकत सनेह करे युवतिन सों सैनन अर्थ जनावे ॥६॥ राजा मित्र सुन्यो नहिं देख्यो भयो वखानो साँचो। 'मुरारीदास' प्रभु सों

जिनि बोलो कोटिक नाच किन नाचो ॥ ७ ॥ ❀ ६४७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग बिलावल ❀ नंदगाम को पांडे ब्रज बरसाने आयो। अति उदार वृषभान जानि सनमान करायो ॥ १ ॥ पांडे जु के पाँयन कों हँसि सीस नँवायो। पाँय धुवाय न्हवाय प्रथम भोजन करवायो ॥ २ ॥ घिरि आई ब्रजनारी जिन यह सूधो पायो। भान-भवन भई भीर फाग को खेल मचायो ॥ ३ ॥ सीसी सरस फुलेल लै सिर ऊपर नायो। हनूमान की प्रतिमा मानो तेल चढायो ॥ ४ ॥ काजर सों मुख मांडि वदन बिंदा जु बनायो। कारे कलस श्रवत मानो चपरा चिपकायो ॥ ५ ॥ गजगामिनी गोंछन सों तुकमैया लपटायो। देह धरे मानों फागुन खेलन ब्रज में आयो ॥ ६ ॥ कहुँ चंदन कहुँ वंदन कहुं चोवा चरचायो। ऋतु वसंत जानो केसू को द्रुम फूलन छायो ॥७॥ काहू गूलरी माला काहू झगला पहिरायो। मानो गज घंटन बिच बिच गजगाह बनायो ॥ ८ ॥ रंग रह्यो जो चोंटियन अंग रातो ह्वै आयो। गुंजन को गहनो मानो लली प्रोहित पहिरायो ॥ ९ ॥ माथे ते मोहिनी ने छाछ को माट ढुरायो। मानो काचे दूध स्याम गिरिवर जो न्हवायो ॥ १० ॥ सोर बोर भई खोर लांगते जल दर्रायो। महादेव की जटा जूट चरनोदक आयो ॥ ११ ॥ लगत दंत सों दंत गिडगिडा अंग लगायो। मानो सुघर संगीत ताल कठताल बजायो ॥ १२ ॥ गयो जनेऊ टूट छूट पाँयन लपटायो। मानहु चतुर चंदान राहु पग फंदा लायो ॥१३॥ चंचल चंद्रमुखी चहुंदिसि ते लै गुलचायो। लियो है लुगाईन घेरि तरे ना ना कहि आयो ॥ १४ ॥ श्रीराधा राधा कहि अपनो बोल सुनायो। अरी भान की कुंवरी सरन हों तेरी आयो ॥ १५ ॥ सुनिके प्रेम बचन जु गरो राधा भरि आयो। बाबाजु को दगला लली प्रोहित पहिरायो ॥१६॥ कीरतिजु पाँय लागि-लागि तातो पय प्यायो। तोलों खेलत होरी ब्रज में दूलहै आयो ॥ १७ ॥ सांचे स्वांगन सजि के सबै समूह सुहायो। तपा व्यास

को पूत धूत सुकदेव बनायो ॥ १८ ॥ सनकादिक चारों दिस ज्यों संन्यास सुहायो । घूमत आयो इन्द्र स्वांग उन्मत्त नचायो ॥ १९ ॥ ब्रज की विथिन बीच कीच में लोटपुटायो । चार वदन को स्वांग चतुर चतुरानन लायो ॥ ॥२०॥ पञ्चानन पाँचो मुखसों संगीत बजायो । हरि को ह्वै जु बावरो नारद नाचत आयो ॥ २१ ॥ देखि नंद के लाल जंत्र धरि गाल बजायो । महादेव पटतार देत यह पट प्रभु भायो ॥ २२ ॥ हो-हो हो-हो ह्वै रह्यो हरि हाँसीन हँसायो । माया निपुन भई सो नारद हल हुलरायो ॥ २३ ॥ काम कामिनी भयो सबन को चित्त चुरायो । ललिता जोरी गांठि लाल को व्याह रचायो ॥ २४ ॥ गठजोरो वृषभानकुंवरि सों जाय जुरायो । नवल अंब के मौर की मौरी मौर बनायो ॥ २५ ॥ पीत पिछोरी तानि छबीलो मंडप छायो । फागुन की गारिन को साखाचार पढायो ॥२६॥ होरी की अग्यारी करि दूलहै परनायो । होरी को पकवान सो भरि भरि झोरिन खायो॥२७॥ फूली फाग की फाग फूल्यो जिन यह यस गायो । 'जन हरिया घनस्याम' बास बरसाने पायो ॥ २८ ॥ ❀ ६४८ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग गोरी ❀ श्री गोकुल राजकुमार कमलदल लोचना । ठाडे सिंहदुवार कमलदल लोचना ॥ नखसिख भेख बनाय । सुन्दरता अति सार ॥ १ ॥ रस भरे नंदकिसोर । निकसे खेलन फाग ॥ मधुर वेनु कर धरे । गावत गोरी राग ॥ २ ॥ आये ब्रज के चोहटे । लिये सखा सब संग ॥ नव भूपन नव वसन । सोभित सामल अंग ॥ ३ ॥ उपमा कही न जाय । सुंदर मुख आनंद ॥ बालवृन्द नक्षत्र । प्रगटे पूरनचंद ॥४॥ बाजत ताल मृदंग । आवज डफ मुखचंग ॥ मदनभेरी सुर बीन । गिडगिडी झांझ उपंग ॥५॥ श्रवन सुनत चली दौरि । गृह-गृह ते ब्रजनारी ॥ तिन में परम सुदेस । राधा अति सुकुमारी ॥ ६ ॥ बने चीर आभरन । सब तन विविध सिंगार ॥ कंकन कर कटि किंकिनी । उर गजमोतिन हार ॥ ७ ॥ नकबेसर तार्टक । कंठसरी अनुभांति ॥ चोकी

बनी जराय। दूर करत रविकांति ॥ ८ ॥ सेंदुर तिलक तंबोल। खुटिला बने विसेख॥ सोभित केसर आड। कुमकुम कज्जल रेख॥ ९ ॥ प्रफुलित अति आनंद। चितवत हरि मुख ओर॥ मानो विधु प्रीतम मिले। सादर चारु चकोर ॥ १० ॥ रूप नैन रस भरे। बारंबार निहारि ॥ गावें झूमक चेत। बीच सुहाई गारि ॥ ११ ॥ चोवा चंदन अरगजा। सोंधे सजे अनेक। पिचकाई कर लिये। धाय एक ते एक ॥१२॥ अति भरि बांधे फेंट। सुरंग अबीर गुलाल ॥ दुहुँदिसि माच्यो खेल। इत गोपी उत ग्वाल ॥१३॥ नर-नारी परी चोंक। छिरकत तकि-तकि जेह ॥ भरत भई अति भीर। मानों बरखत मेह ॥ १४ ॥ बरन बरन भये वसन। अंगन रहे लपटाय ॥ क्रीड़ा रस बस मगन। आनंद उर न समाय ॥ १५ ॥ व्रज युवतिन मतो मत्यो। मुख न जतावत बेन॥ पकरि लेहु घनस्याम। मिलवत इत उत सेन ॥ १६ ॥ युवतीयूथ तब पेलि। दीने सखा भजाय ॥ कहत कहा मतो करैं। अब तो कछू न सुहाय ॥१७॥ कहत न बांचे कछू। बचन गारि और गीत ॥ झुंडन जुरि चहुंओर। जाय गह्यो पट पीत ॥१८॥ नवल कुंवर जानिये। अब जो मुरली लेहु ॥ राधे करहु जुहार। के हमारो फगुवा देहु ॥१९॥ फगुवा देहु न देहु। छांड़हु और उपाय ॥ हमारो भायो करहु। के छूटो सिरनाय ॥२०॥ प्यारी पिय सों कहै। अति मीठे मृदु बोल। काजर आंजे नैन। रोरी हरद कपोल ॥२१॥ मुख मांड़े छबि भई। कोटि मदन सिरताज ॥ त्रिभुवन सौभग लिये। मनो व्याहन आयो आज ॥२२॥ क्रीड़त अविचल रहो। युग-युग यह व्रजवास॥ गिरिधर को यसगान। नित करहु 'चत्रुभुजदास'॥२३॥❀६४६❀

❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ होरी हो होरी हो गोविंदजी होरी रे ॥ध्रु० ॥ आओ सखी सहेलरी याको मुख मांडो रोरी रे। बीच-बीच सिंदूर के बेंदा तेल चढ़ाओ गाओ होरी रे ॥ १ ॥ याको पट राधा की चूनरी पकरि करो गठ जोरी रे। घन दामिनी मानों व्याह होत है पिय सांवरे यह गोरी रे।

॥ २ ॥ चाचर जोरि फिरो सत भांमरि मिटें दुहुन की चोरी रे। मानहु न घबराय तनकसी खेलत गोकुल खोरी रे ॥ ३ ॥ दूल्है दुलहिन के हाथन सों बांधो डोरना डोरी रे। खेलत हारे नवल लाडिले जीती नवल किसोरी रे ॥ ४ ॥ यह जोरी चिरजियो विधाता सुख वाढ्यो दोऊ ओरी रे। 'जन गोविंद' बल वीर वधाई पाई भक्ति भरि झोरी रे ॥ ५ ॥ ❀ ६५० ❀

❀ भोग सरे ❀ राग अडानो ❀ आवे रावल की ग्वार नार गोकुल ते खेल। सिथिल अंग लज्जित मनमोहन रङ्ग-रङ्ग नैन पीक-लीक अरचि अरु किये रति केल ॥ १ ॥ अंसन अवलंब पांति प्रफुलित लपटात जात हँसनि दसनि कांति जुही जोन्ह रही फैल। पुलकित इत रोम पांति सोंधे सब सग-बगात केसर के रंग सिंधु प्रेम लहरि झेल ॥ २ ॥ सब वेग नवल किसोरी मन्मथ की मटक मोरी प्रीतम अनुराग फाग बाढी रंग रेल। 'व्रजपति' रिझवार पाय अचयो रस मन अघाय भौंन गौंन काज राजहंसन गति पेल ॥ ३ ॥ ❀ ६५१ ❀

सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ नवरंगी लाल विहारी हो तेरे द्वै बाप द्वै महतारी। नवरंगीले नवल विहारी हम दैंहि कहा कहि गारी ॥ १ ॥ द्वै बाप सबै जग जाने। सो तो वेद पुरान बखाने ॥ वसुदेव देवकी जाये। सो तो नंद महर के आये ॥ २ ॥ हम बरसाने की नारी। तुम्हैं दै हैं हँसि-हँसि गारी। तेरी भूआ कुंती रानी ॥ सो तो सूरज देखि लुभानी ॥ ३ ॥ तेरी वहन सुभद्रा क्वारी। सो तो अर्जुन संग सिधारी ॥ तेरी द्रुपदसुता सी भाभी। सो तो पांच पुरुष मिलि लाभी ॥ ४ ॥ हम जाने जू हम जानैं। तुम ऊखल हाथ बँधाने ॥ हम जानी बात पहिचानी। तुम कब ते भये दधि दानी ॥ ५ ॥ तेरी माया ने सब जग ढूंढ्यो। कोई छोड्यो न वारो बूढ्यो ॥ 'जन कृष्णा' गारी गावे। तब हाथ थार कों लावे ॥६॥ ❀६५२❀

पाटोत्सव पीछे टिपारा धरे तब

❀भोग के दर्शन ❀ राग मारू ❀ आज वनि ठनि खेलन फाग निकस्यो है

नंददुलारो । फब्यो है ललित भाल लालके जटित लाल टिपारो ॥ १ ॥ बडरे बंक विसाल नैन छबि भरे इतराई । बन्यो मंजुल मोर चंद चलत देखत छांई ॥ २ ॥ उत बनी ब्रज नवकिसोरी गोरी रूपहि भोरी । बोरी प्रेम रंग में मानो एक ही डार की तोरी ॥ ३ ॥ ब्रज की बाल लै गुलाल मोहन लाल छाये । मानो नील घन के ऊपर अरुन अंबर आये ॥ ४ ॥ ताहि धूंधर मदमत्त भ्रमर भ्रमत ऐसे । बनी है छबि विसाल प्रेम जाल गोलक जसे ॥ ५ ॥ बन्यो है जलजंत्र खेल छूटी रंग की धारें । जानो धनुर्धर सरन लरत धार सों धार मारें ॥ ६ ॥ और कहांलगि कहिये खेल परम रस की मूली । गावत सुक सारद नारद सिव समाधि भूली ॥ ७ ॥ जहिं जहिं हरि चरित्र अमृत सिंधु सों रति मानी । 'नंददास' ताकों मुक्ति लोन कोसो पानी ॥ ८ ॥ ❀ ६५३ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ खेलत फाग फिरत रस फूले । स्यामा स्याम प्रेम बस नाचत गावत सुरत हिंडोरे भूले ॥ १ ॥ वृंदावन की जीवन दोऊ नटनागर बंसीबट कूले । 'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत नैन कुरंग फिरत रसमूले ॥ २ ॥ ❀ ६५४ ❀ ❀ सेन भोग आये ❀ राग विहाग ❀ जब हरि हो हो होरी गावे । तरुनी यूथ तरनि-तनयातट आरज पथ तजि आवे ॥ १ ॥ निरखि नैन मनमोहन पिय के अपने नैन सिरावे । विविध कुसुम की दाम स्याम कों रचि जाय पहि-रावे ॥ २ ॥ अति कमनीय सों कमल बरन की कटि काछिनी कछावे । मंजुल मोरमुकुट मकराकृति मरवट मुखहि बनावे ॥ ३ ॥ ताल मृदङ्ग मुरज डफ महुवर नाना जंत्र सजावे । नव नागर नट भेष धरे मधि ठाड़े बेनु बजावे ॥ ४ ॥ कोऊ झील कोऊ मंद घोर सुर तानन गाय रिझावे । ललित त्रिभङ्गी नव रंगीली अंग सुधंग नचावे ॥५॥ हाव भाव सों निपुन नागरी नाना भाँति हँसावे । रीझि-रीझि तृन तोर सोर कर युग कपोल परसावे ॥ ६ ॥ कोऊ एक सन्मुख बैठि लाल के अंचल अवनि बिछावे । ताहि

आपुनो पीतांबर मन मोहन हँसि उढावे ॥ ७ ॥ कोऊ एक केसर कुसुम वार घसि घोर कलस भरि लावे । रतन जटित पिचकाई भरि-भरि पिय कों छिरकि छिरकावे ॥८॥ चोवा मेद जवाद साख गोरा घनसार मिलावे । आपुन मांझ मतो मिलि कर ले मोहन मुख लपटावे ॥६॥ एक पिया को वेस पलटि सिर फेंटा ऐंठ बंधावे । वर्हापिच्छ धरि नूतन मंजरी दच्छिन दिस थिरकावे ॥ १० ॥ कनक पट कटी फेंट बाँधि के कटितट वेनु धरावे । सेली वेंत अंस धरि ताको मन्मथ मंत्र पढावे ॥११॥ कोऊ एक मेन महामद माती आलिंगन दे आवे । निर्लज भई परिरंभन दै दै अधरसुधारस प्यावे ॥ १२ ॥ तव ललिता ले मोहन जू कों नारी को भेख वनावे । नवसत द्वादस साज लाड़िली नवलपिया पै पठावे ॥ १३ ॥ अति सुकुमार सलोनी स्यामा रति गुन ग्राम दृढ़ावे । निरखि हरखि पुलकित तन दंपती अतुलित प्रेम वढ़ावे ॥ १४ ॥ अद्भुत एक विचित्र माधुरी सों पिय कों समुझावे । हसन लसन चितवन मिलवन मे सहज उरझि सुरझावे ॥१५॥ एक सखी ले वूका वंदन भरि-भरि मुठी चलावे । सुरंग गुलाल उडाय अधिक सो लोचन लाज नसावे ॥ १६ ॥ नवल कुसुम की लै नवलासी कमलन मार मचावे । प्रेमछकी डोले मन खोले हो हो हो करि धावे ॥ १७ ॥ मगन भई आनंद सिंधु मे तन मन सुधि विसरावे । 'व्रजजन' मीन भये रस सागर अपनी तृसा वुझावे ॥ १८ ॥ ❀ ६५५ ❀

फागुन वदी १३ ❀ सिंगार समय ❀ राग टोडी ❀ अरी मेरे नैन लगे व्रजपाल सों । वोलत वचन रसाल सों ॥१॥ मोरचंद्रिका सोहे सीस । संग सखा दस वीस ॥ २ ॥ मृगमद तिलक वनाये भाल । गति मोहे गजराज मराल ॥ ३ ॥ भोंह नचावे गावे गीत । सोहे अंवर ओढे पीत ॥ ४ ॥ कानन कुंडल दुलरी कंठ । मधुर-मधुर वाजे परिमंठ ॥ ५ ॥ अरुन कमलदल नैन विसाल । उर सोहे वैजन्ती माल ॥ ६ ॥ रतनजटित पहोंची

अति बनी। निरखि थकी सरद ससिवदनी ॥ ७ ॥ नासा को मुक्ता अति चारु। सब ऊपर गुञ्जा को हार ॥ ८ ॥ कटि किंकिनी मोहें रति मेन। गोपिन रिझवत दै-दै सेन ॥ ९ ॥ रुनझुन नूपुर बाजे पाय। जनो पंकज अलिकुल किलकाय ॥ १० ॥ भूषन विविध सजे सब अंग। देखि भयो रवि को रथ पंग ॥ ११ ॥ बन-बन फिरें चरावें धेनु। यमुना के कूल बजावे बेनु ॥ १२ ॥ हाथ लकुटिया नाचे सुदेस। गोरजमंडित सोहे केस ॥१३॥ गृह-गृह ते दौरी सब अली। फूली सरद सरोज सी कली ॥ १४ ॥ अंचल पट मुख दै जु हँसी। सब हरि के उर बीच बसी ॥ १५॥ जब मोहन दुरि के चितयो। ताछिन मो मन चोर लियो ॥ १६ ॥ सोचि संभारि संकेत चली। भूलि गई नवकुंज गली ॥ १७ ॥ तहाँ औचका मो भुज गही। बिन बोले मुख देखि रही ॥ १८ ॥ मुख सों खात खवावत पान। करत मधुर अधरामृत पान ॥ १९ ॥ तब उर लागि करी रति केलि। पल-पल बढी परम सुख बेलि ॥२०॥ यह सुख निरखि सुर नर रहे भूल। आनंद बरखे नौतन फूल ॥ २१ ॥ पुनि विपरीत सुरति मति करी। राग रंग आनंद भरी ॥ २२ ॥ त्रिविध सुखद मलयानिल चल्यो। सब निकुंज फूलि लहल्यो ॥ २३ ॥ तिहि औसर पलटे पट चीर। देखि बलैया लै रघुवीर ॥ २४ ॥ ❀ ६५६ ॥ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ लालन तैं प्यारी चित हरि लियो तो बिन कछु न सुहाय। तलफे जल बिन मीन ज्यों चंद चकोर दिखाय ॥ १ ॥ फिर-फिर बात वही बूझ बूझि बूझि पछिताय। कोकिल इंदु तपत करे लग्यो मदन सर जाय ॥ २ ॥ देखे ही सब जानिये बेन न कछू सुहाय। यह सुनि स्याम कुंज चले ठाडे पाछे आय ॥ ३ ॥ सखन सहित प्यारो जहाँ सेन सबै समुझाय। जुगल हस्त अँखियाँ मूंदी पुनि मुरली मुख लाय ॥४॥ जब ते कह्यो ये को है जुगल चत्रभुज-राय। यों करि रिझ लाडिली सन्मुख हिय हरखाय ॥५॥ छिरकत चोवा

चंदना अबीर गुलाल उड़ाय। प्रफुलित मुख वातें करे उर आनंद न समाय ॥ ६ ॥ रीझि हार ललिता दियो प्यारी कछु मुसकाय। चरन कमल वंदन करे 'द्वारकेस' वलि जाय ॥७॥ ❀ ६५७ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ स्यामा नकवेसरि अति वनी छवि कवि पै बरनी न जाय। सोने सरस सुनार गढी है हीरा लाल लगाय ॥ १ ॥ आधे अधर विराजत मोती लाल रहे लल-चाय। ताकी सोभा अति बाढ़ी है भयो गुंज को सुभाय। तनसुख सारी राती लँहगा क्यों न स्याम मन भाय। सोभा 'हित हरिवंस' सांवरे चिते चली मुसिकाय ॥३॥ ❀ ६५८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ अरे कारे प्यारे रतनारे भौंरा वदन कमल के लोभी। फिरत पराग हेत तव ही ते उपजत कलिका गोभी ॥ १ ॥ फूलि रहे द्रुम डार-डार झुकि भार कुसुम मकरंद। ताहि छांड़ि पियो चाहत तुम सुधाकिरन मुखचंद ॥ २ ॥ जो तू होय तृसा आतुर तो रहि व अलक लर लाग। पुनि विश्राम कियो चाहे तो चिवुक गाड खग खाग ॥३॥ जो उनमत ह्वै गान करे तो श्रुतिपथ लगि गुंजार। क्यों भटके 'ब्रज' वनवन वीथिन यह निश्चय उर धार ॥४॥ ❀ ६५९ ❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ वाघंवर ओढैं साँवरो हो जोगी कौ कुंवर कौन। एक समें उपजी मन-मोहन करि तपसी कौ भेख। मथुरा गोकुल व्रज-मंडल में आनि जगायो अलेख ॥ १ ॥ संख सब्द धुनि सुनि जित तित तें फिरि आईं व्रजनारि। वदन विलोकि कुंवरि राधे कौ वैठ्यौ हे आसन मारि ॥ २ ॥ हँसि बूझति वृखभाननंदिनी रावल ऊतरु देहु। कारन कौन रूप तपसी कौ वन तजि डोलत गेहु ॥ ३ ॥ कौन देस तें आयो रे जोगी कहां तेरी मनसा जाइ। आपुन साधि मौन ह्वै वैठे उत्तर देस वताइ ॥४॥ सृंगीपत्र विभूतन वटुवा सिर चंदन की खौरि। मेरे जिय ऐसी आवत है कंथ विसारयौ है गौरि ॥५॥ चंचल चपल चतुर देखियत हो मुख मधुरी मुसिकान। जोगी नहीं तुम वड़े विभोगी भोगी भँवर निधान ॥६॥ चुकटी

भभूत दई राधे कों चले हैं बाघंबर झारि । चितवत चोरि लियो मनमोहन गोहन लागी है कुंवारि ॥ ७ ॥ नगर-नगर प्रति बगर-बगर प्रति निसि दिन फिरति उदास । नैन चकोर भए राधे के हरि दरसन की प्यास ॥ ८ ॥ अतन जतन करि मन मोह्यो है निरखि नैन की कोर । 'जगन्नाथ' जीवन धन माधौ प्रीति लगी दुहुँओर ॥ ९ ॥ ❀६६०❀संध्या समय ❀राग काफी ❀ औरन सों खेले धमार मोसों मुख हू न बोले । नंदमहर को लाड़िलो मोसो ऐंड्यो ई डोले ॥ १ ॥ राधा जू पनिया निकसी वाको घूंघट खोले । 'सूरदास' प्रभु सांवरो हियरा बिच डोले ॥२॥ ❀ ६६१ ❀ सेन भोग आये❀ ❀ राग गोरी ❀ खेलत हैं हरि हो हो होरी । ब्रज-तरुनी रससिंधु झकोरी ॥ ॥ १ ॥ बाल वयस्य और नव तरुनी । जोबन भरी चपल दृग हरिनी॥२॥ नवसत सजि गृह-गृह ते निकसी । मानों कमल कली सी विकसी ॥ ३ ॥ पिक-बचनी तन चंपक बरनी । उपमा कों नहीं मनसिज घरनी ॥४॥ बरन-बरन कंचुकी और सारी । मानो काम रची फुलवारी ॥५॥ द्वादस अभरन सजि कंचन तन । मुख ससि आभूखन तारागन ॥ ६ ॥ मानो मनोभव मन ते कीनी । और त्रिभुवन की सोभा लीनी ॥ ७ ॥ देखत दृष्टि छिन न ठहराई । ज्यों जल झलमलात जलझांई ॥ ८ ॥ ताल मृदंग उपंग बजावत । डफ आवज स्वर एक मिलावत ॥ ९ ॥ मधु ऋतु कुसुमित बन नव नव री । गावत फाग राग रति गोरी ॥ १० ॥ आई सकल नंदजू के द्वारे । अगनित सकल सुगंध सँवारे ॥ ११ ॥ झूमि-झूमि झूमक सब गावे । नमत भेद दुहुँदिस ते आवे ॥ १२ ॥ रससागर उमड्यो न समाई । मानो लहर चहूंदिस धाई ॥ १३ ॥ खोर खिरक गिरि जहां हि पावें । धाय जाय ताहि गाहि लावें ॥ १४ ॥ करि छांडत आपनो मन भायो । उड़त गुलाल सकल नभ छायो ॥ १५ ॥ घर में ते मनमोहन झांके । दूर भये तब युवतिन ताके ॥१६॥ एकहि देर सबै जुरि धाई । पौरि तोरि रावर में आई ॥१७॥

मोहन गहत-गहत छुटि भागे। पीतांवर तजि तन भये नागे ॥ १८ ॥ दौरि अटा चढ़ि दए हैं दिखाई। उतते स्याम घटा जानो आई ॥ १९ ॥ सुंदर स्याम मनिगन तन राजे। गिरा गंभीर मेघ ज्यों गाजे ॥ २० ॥ टेरि-टेरि पीतांवर मांगे। गोपी कहत आय लेहु आगे ॥ २१ ॥ पीतांवर राधिका उढायो। हरिजू निरखि परम सुख पायो ॥ २२ ॥ पीतांवर तहां सोभा पाई। घन तजि दामिनि खेलन आई ॥ २३ ॥ तवही अरगजा स्याम मँगायो। अपने कर वर घोर बनायो ॥ २४ ॥ ऊंचे चढि घन ज्यों वरखायो। धारा धरि जानो बहे आयो ॥२५॥ तव इन जसुमति ठाडी पाई। सोंधे गागर सिर ते नाई ॥ २६ ॥ उतते निरखि रोहिनी आई। वीच छांडि ह्वै महरि वचाई ॥ २७ ॥ आँगन भीर भई अति भारी। जसुमति देत दिवावत गारी ॥ २८ ॥ गोपिन नंद दुरे गहि काढे। कंचन गिरि से आगे ठाढे ॥ २९ ॥ जनो युवती एरावत लाई। पूजत हस्ति गौर की नाई ॥ ३० ॥ नंद जसोदा गोरा गोरी। छिरकत चंदन वंदन रोरी ॥३१॥ पूजि-पूजि वर मांगत मोहन। विन पाये छांडत नाहिं गोहन ॥ ३२ ॥ एक कहै मोहन हि वताओ। तो तुम हम ते छूटन पाओ ॥ ३३ ॥ एक सिखावत एक वतावत। तारी दै-दै एक नचावत ॥ ३४ ॥ एक गहे इक फगुवा मांगे। एक नैन काजर दै भागे॥ ३५ ॥ वसन आभूखन नंद मंगाये। दये वसन जेसे जाहि भाये॥ ३६ ॥ देत असीस सकल व्रजवाला। युग-युग राज करो नंदलाला ॥ ३७ ॥ मदनमोहन पिय के गुन गावे। 'सूरदास' चरनन रज पावे ॥३८॥ ❀६६२❀ सेन दर्शन ❀ राग ईमन ❀ लिये सकल सौंजि होरी की नवलकिसोरी जू नैनन में। स्वेत अवीर स्यामता गरसुत नेह फुलेल सन्यों नैनन में ॥ १ ॥ कुटिल कटाक्ष छूटत पिचकाई प्रीति रंग भरि-भरि नैनन में। लाल गुलाल अरुन अरुनाई मिलवत ललित सखी नैनन में ॥ २ ॥ विहसन फगुवा देत लेत है सहचरी हूं न

लखें नैनन में । रसभीजे रीझे पिय प्यारी 'जगन्नाथ' पूरन नैनन में ॥ ३ ॥
❀६६३ ❀फागुन सुदी १ ❀ मंगला दर्शन ❀राग रामकली❀चलो सखी मिल देखन
जैये नंद के लाल मचाई होरी । अबीर गुलाल कुमकुमा केसर पिचकारिन
भरि भरि लै दौरी ॥१॥ एक जु पिय की चोरा चोरी हमें लखे नहीं कोरी ।
'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु कों भरि हैं राधा गोरी ॥ २ ॥ ❀६६४❀
❀ सिंगार समय ❀ राग बिलावल ❀ परिवा प्रथम कुंवर अति विहरत गोपिन
संगा । मुरज घोर बहु बाजे और आनक मुखचंगा ॥१॥ ढोल भेरी ढोलक
छबि बेनु मृदंग उपंगा । रुंज मुरज और दुंदुभी झालरी तरुल तरंगा ॥२॥
विविध पखावज आवज झांझ बीना डफ जोरी । बिच-बिच गोमुख सुनि-
यत बिच मुरली की घोरी ॥ ३ ॥ ग्वाल परस्पर राजे मनिमय जेरी हाथा ।
बूका कनक पिचकाई भरि-भरि छिरकत गाता ॥ ४ ॥ चलो सखी देखन
जैये विहरत सिंहदुवारा । सुनि मन हरखि सकल तिय लागी करन सिंगारा
॥ ५ ॥ नील वसन तन सारी लंहगा लाल सुरंगा । कंचुकी ललित कुचन
पर मानो लजित अनंगा ॥ ६ ॥ सोंधे सीस सरस करि बेनी सरस संभारी ।
मानो कनक खंभ लगि झूमत पन्नग नारी ॥ ७ ॥ सीसफूल रचि तिलक
भृकुटि बिच चंदन रोप्यो । मनो सरासन साजि बान मन्मथ मन कोप्यो ॥
८ ॥ वंदन मांगन मधि अति राजत कच सुढारे । मानो सेस सीस पर ठाडो
अच्छत डारे ॥ ९ ॥ नैन कुरंग श्रवन युग चारु चक्र बिराजे । मानहु ससि
अवनी पर देखियत रवि रथ साजे ॥ १० ॥नखसिख लों युवती बनि गई
सब सिंह दुवारा । हमारो फगुवा देहुमोहन नंदकुमारा ॥११॥ काहे मोहनराय
भाजो काहे ओले लेहो । कुमुदबंधु ज्यों निकसत नेक दिखाई देहो ॥१२॥
फगुवा को मिस झूटो हरि दरसन की आसा । देखन कों जिय तरसत लोचन
मरत पियासा ॥ १३ ॥ सुनि मन हरखि यसोमति उनकों आसन दीनों ।
कुमकुम जलसों घोरि सवन मुख मंजन कीनो ॥ १४ ॥ बरन-बरन पट दिये

गोदन भरी जु मिठाई। यह विधि नंदघरनि ब्रज की तरुनी पहिराई ॥१५॥ गान करत मन हरत मुदित मन देत असीसा। तुमरो कुंवर यसोमति जीवो कोटि बरीसा ॥१६॥ जिन देखे नैन सिराय अघात न पीवत प्यासा। तिनके चरनकमल रज पावे 'माधोदासा' ॥१७॥ ❀६६५❀ सिंगार दर्शन ❀ ❀ राग टोडी ❀ मन मेरे की इच्छा पूजी आयो मास फागुन को नीको। लाज सकुच तजि सास ननद की दौरी गहूँ करसों कर पिय को ॥ १ ॥ अब मेरो कोऊ कहा करेगो यह तो औसर है होरी को। नैनभरी मूरति 'ब्रजपति'की देखत दुःख मिटेगो जी को ॥२॥ ❀ ६६६ ❀ राजभोग आये ❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ चलरी सिंहपौरि चाचर मची जहाँ खेलत ढोटा दोय। जो न पत्याय सुने किन श्रवनन हो हो हो हो होय ॥ १ ॥ अपने नैन निरखि हों आई कहत न बात वनाय। तोसों मोहन सेना देखि के मन धीरज धरयो न जाय ॥ २ ॥ एकन किये वनाय तिलोना एक अरगजा भीने। एकन करी खोर चंदन की चोवा बेंदी दीने ॥ ३ ॥ तहाँ वाजत वीन रवाव किन्नरी अमृतमंडली जंत्र। अधरसुधायुत बाँसुरी हरि करत मोहिनी मंत्र ॥ ४ ॥ सुरमंडल पिनाक महुवर जलतरङ्ग मन मोहे। मदन भेरी रायगिडगिडी सहनाई सुर सोहे ॥ ५ ॥ कठतार कर तारी दै दै वजत चुटकिन चुटकारे। झांझ झनक खंजरी बजे भई झालर की झनकारे ॥ ६ ॥ एक शृङ्ग सङ्ख धुनि पूरि रही अधर धरे मुखचंग। कर ले डफ हि वजावहीं एक डिम डिम ढोल मृदङ्ग ॥ ७ ॥ तहाँ घुरे निसान नगारे की धुनि रह्यो घोख सब गाज। दुंदुभी देव बजावहीं सव व्योम विमानन साज ॥ ८ ॥ तहाँ वहु विधि भरे रंग सोंधे केसर कुमकुमनीर। मृगमद मेद लयो वेला भरि अरगजा अर्क उसीर ॥ ९ ॥ रतन जटित पिचकारिन भरि-भरि छिरकत सुंदरस्याम। ग्वालिन सुरंग अवीर गुलाल मुठी भरि-भरि डारत वलराम ॥१०॥ एक बूका वंदन कुमकुम जल घोरि कलस भरि लावे। अचका आय पीठ

पाछे ते मोहन के सिर नावे ॥ ११ ॥ फिर सुमन सुगंध फुलेल अरगजा लयो करन लपटाय । नेक मोहन सों बतराय भजी बलदाऊ बदन लगाय ॥ १२ ॥ सब होरी के रङ्ग राते माते डोलत करत कलोले । रङ्ग रंगीली गारी दै दैं हो हो होरी बोलें ॥१३॥ सुख समूह कछु कहत न आवे निरखि नैन सचुपैये । पूजे मन अभिलास तबै 'ब्रजपति' सों खेलन जैये ॥ १४ ॥

❀ ६६७ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ अरी सुन डफ बाजे साजे गाजे मानो होरी आई रंगीली । मृगमद अरगजा कुमकुम छिरकत पिय कों छैलछबीली ॥१॥ गावत गहत पीतपट झटकत पगन परत कोऊ ढीली । अबीर गुलाल ताकि अधिकेरी केसू कुसुम मिलेली ॥ २ ॥ गजरा पहिर नैन काजर दैं मनो चहि रही है हठीली । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरनलालसों अपने रङ्ग रंगीली ॥ ३ ॥

❀ ६६८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ गोपी हो नंदराय घर मांगन फगुवा आई । प्रमुदित करहि कुलाहल गावत गारी सुहाई ॥ १ ॥ अबला एक अगमनी आगे दई हैं पठाई । जसुमति अति आदर सों भीतर भवन बुलाई ॥ २ ॥ तिनमें मुख्य राधिका लागत परम सुहाई । खेलो हंसो निसंक संक मानो जिनि काई ॥ ३ ॥ बहुमोली मनिमाला सबन देहुँ पहिराई । मनिमाला लैं कहा करैं मोहन देहु दिखाई । बिनु देखे सुन्दर मुख नाहिन परत रहाई । मात पिता पति सुत गृह लागत री विष माई ॥ ५ ॥ सुनिके प्रेम वचन दामोदर दई है दिखाई । घर में ते घनस्याम भुजा भरि भामिनी लाई ॥ ६ ॥ नखसिख सुंदर सीमा रूप लावनि अधिकाई । रही ब्रजवधू निहारि रंक मानो निधि पाई ॥ ७ ॥ अरगजा चंदन वंदन चहुँदिस ते ले धाई । भरति भांवते लाले करन कनक पिचकाई ॥ ८ ॥ दरसपरस पिय अतिसय सुंदरी सब लपटाई । कुच भुज बीच कीच मची अति श्रम की झपटाई ॥ ९ ॥ मंडित करहिं कपोल एक काजर लै आई । आलिंगन चुंबन रस नहिं सुरझत मुरझाई ॥ १० ॥ अंचलसों पट जोरे रीझि सकुच

सिर नाई। दंपती सौभग संपति कोऊ पावत न अघाई ॥ ११ ॥ यह लीला अति ललित सो तो नंदरानी भाई। हरखित उदित मुदित सवहिन की करत बडाई ॥१२॥ पट दुकूल आभूषन चोली दिव्य मंगाई। जसुमति अति प्रफुलित मन सुंदरी सव पहिराई ॥१३॥ यह मेरे आँगन गृह आओ री नित माई। नैन श्रवन सुख भयो लालजू की कीरति गाई॥१४॥ निकसी देत असीस जियो तेरो मोहनराई। यह व्रज 'माधोदास' रहोनित नंद दुहाई ॥१५॥

❀६६९❀ आरती समय ❀ राग धनाश्री ❀ होरी के रंगीले लाल गिरिधर रंग मचायो। केसर सुरंग गुलाल अरगजा मदन वसंत जनायो ॥ १ ॥ ताल मृदंग झांझ डफ वीना होरी राग जगायो। सुनि निकसी गृह गृह ते सुंदरी हाव भाव फल पायो ॥ २ ॥ आवत भावत गारिन गावत रसभरी लाल खिलायो। 'श्रीविट्ठल' गिरिधर युवतिन सों होरी त्यौहार मनायो ॥ ३ ॥

❀६७०❀ भोग के दर्शन ❀ राग गोरी ❀ परवा प्रथम कुंवर देखन चली व्रज-नारी। अंग-अंग छवि निरखत लियो लाल मनुहारी ॥ १ ॥ दूज दाम कुसुमन की पहिरे श्री गोपीनाथा। रचि पचि गूंथि संवारी श्रीराधा जू अपने हाथा ॥ २ ॥ तीज तरुनी तन तरलित उर गजमोतिन हार। कुच पर कच लर विलुलित पिय संग करत विहार ॥ ३ ॥ चौथ चतुर चित चंदन चर्चित साँवल अंग। विविध भाँति रुचि पहिरे नाना वसन सुरंग ॥ ॥ ४ ॥ पाँचे प्रमदा प्रमुदित सव मिलि गावें गीत। हाव भाव करि रिझवत रसिक श्रीदामा मीत ॥ ५ ॥ छठ कों छैल छवीलो छिरकत छींट अनूप। सोभा वरनी न जाय जैं-जैं गोकुल के भूप ॥६॥ सातें सकल सखा सव घर-घर देत व गारि। सुनत कुंवर कोलाहल निकसी घोखकुमारि॥७॥ आठे अति आतुर अवलनि लीनें पिय घेर। मुरली पीतपट झटकत हँसत वदन तनु हेर ॥ ८ ॥ नौमी नवल नागरी कुमकुम जल सों घोर। पिय पिचकाइन छिरकत तकि-तकि नवलकिसोर ॥९॥ दसमी दसोंदिस दिखियत

बिच नवल निवार ॥ १ ॥ तुव पथ बैठि निहार हीं कुंजकुटी के द्वार। लोचन भरिभरि लेत है सुंदर व्रजराज कुमार ॥२॥ अपने कर नव गूंथहीं विविध कुसम की चोली। तेरे उर पहिरावहीं चलो बेग उठि बोली ॥३॥ कबहुंक नैनन मूंदि के करत वदन तुव ध्यान। तन पुलकित भुज भेटहीं करत अधर रस पान ॥ ४ ॥ चंद देखि आनंद हीं तुव मुख की अनुहार। यह छबि वाहि न पूज ही निरखि कलंक बिचार ॥ ५ ॥ यदपि सकल व्रजसुंदरी कबहू न मन अरुझाय। चातक जलधर बूंद ज्यों भुवजल तृसा न जाय ॥ ॥ ६ ॥ पिय को प्रेम सखी मुख सुन्यो तबहि चली उठि धाय। 'गोविंद' प्रभु पिय सों मिली रहसि कंठ लपटाय ॥ ७ ॥ ❀६७६❀राग सारंग❀ अहो पिय लाल लडैती को झूमका। सरस सुर गावत मिलि व्रजबाल। अहो कल कोकिल कंठ रसाल। लाल बलि झूमका हो ॥ध्रु०॥ नव जोबनी सरदससि बदनी युवती यूथ जुरि आई। नवसत साज सिंगार सुभग तन करन कनक पिच-काई॥ एकन सुवन यूथ नवलासी दामिनी सी दरसाई। एक सुगंध सम्हार अरगजा भरन नवल कों आई॥ १ ॥ पहिरे वसन विविध रंगरङ्गन अङ्ग महा रस भीनी। अतरोटा अंगिया अमोल तनसुत सारी अति झीनी ॥गज-गति मंद मराल चाल झलकत किंकिनी कटि छीनी। चौकी चमक उरोज युगलवर आन अधिक छबि दीनी ॥ २ ॥ मृगमद आड ललाट श्रवन ताटंक तरनि द्यु ति आरी। खंजन मान हरिन अँखियाँ अञ्जन रञ्जित अनि-यारी ॥ यह वानिक बनि सङ्ग सखी लीनी वृषभान दुलारी। एकटक दृष्टि चकोर चन्द ज्यों चितये लाल बिहारी ॥ ३ ॥ रुरकत हार सुढार जलजमनि पोत पुंज अति सोहे। कंठसरी दुलरी दमकनि चोकी चमकन मन मोहे ॥ वेसर थरहरात गजमोती रति भूली गति जोहे। सीसफूल श्रीमंतजटित नग वरन करन कवि कोहे ॥ ४ ॥ नवल निकुंज महल रसपुंज भरे प्यारी पिय खेलें। केसर और गुलाल कुसुम जल वोर परस्पर मेलें। मधुकरयूथ निकट

आवत झुकि अति सुगंध की रेलें। प्रीतम श्रमित जानि प्यारी तव लाल भुजा भरि झेलें ॥ ५ ॥ वहु विधि भोगविलास रास रस रसिक विहारिन रानी। नृपति निकुंज विहारी संग सुरत रति मानी। युगलकिसोर भोर नहिं जानत यह सुख रेन विहानी। प्रीतम प्रानपिया दोऊ विलसत'ललितादिक' गुन गानी ॥ ६ ॥ ❀ ६७७ ❀ राग सारंग ❀ आज हरि कुंजन खेलत होरी। गृह-गृह ते आई युवतीजन नवल विहँसि वनी गोरी ॥ १ ॥ अपने संग के व्रज के वालक टोलन ले वनि आये। कोऊ द्रुम डारन गहि झूमत कोऊ परसत धाये ॥ वन ही वन उद्यम कों मानों वनचर जूथनि छाये। कोऊ गावत होरी गीतन वाजे ले मनभाये ॥ २ ॥ ताल मृदंग उपंग वाँसुरी वाजत महुवरि भारी। डफ दुंदुभी गजक सहनाई और लखियत करतारी ॥ कवहुंक भाजत प्रमदागन पर वरखत मुख ते गारी। भले-भले कहि सखियन तिन कों हलधर गिरवर धारी ॥ ३ ॥ चोवा मृगमद केसू घोरत ले सीसन पर नावे। एक रहत संजम करि झूठो चलि-चलि ताहि मनावे ॥ नाचत उन्मद भये परस्पर हस्तक भेद वनावे। फगुवा के मिस कर गहि रहिये सेनन आँख भरावे ॥ ४ ॥ कवहुंक ले निज कंठ वीच की विविध कुसुम की माला। पहिरावत उरमध्य सवन कों देखत दृष्टि रसाला ॥ कोऊ मानत अति उर अंतर महामोद तिहि काला। निरखि-निरखि हँसि-हँसि किलकत है आगे दे नंदलाला ॥ ॥ ५ ॥ वाढ्यो मन्मथ तन सुधि विसरी डोलत फूले फूले। कान न काहू की मन आनत डोलत भूले भूले ॥ अवीर गुलाल उडावत कोऊ ठाड़े ह्वै और भूले। कोऊ मदगज चाल चलत हैं कालिंदी के कूले ॥ ६ ॥ कवहुंक एक तकत वैठत मिलि चहुँदिस अवलन लीने। करत सिंगार वसन भूषन सजि पिय प्यारी रस भीने ॥ नाना भांति कपोलन चित्रित नैनन अंजन दीने। रीझि-रीझि मुसिकाय दंपती कवहुंक होत अधीने ॥७॥ विवस भये

इतते वे उतते रतनखचित पिचकाई। छोरत कुमकुम रस सों भरि भरि मानो बरखा आई ॥ सोभा बढ़ी अपार दुहूंदिस कहा कहूँ अधिकाई। मदनमोहन पिय की छबि ऊपर 'ब्रजजन' बलि-बलि जाई ॥ ८ ॥ यह लीला गोपीपति रति की बानी जो मनमानी। अति अद्भुत अनंग कौतुक की गाई जो जिय जानी ॥ 'श्रीमद्वल्लभ' पद पंकज करुना बल कर ठानी। निकट विकट लखि मकरध्वज वी प्रकटित करी निसानी ॥९॥ ❀६७८❀ राजभोग दर्शन❀ ❀ राग देवगंधार ❀ मदनगोपाल झूलत डोल। वाम भाग राधिका बिराजत पहिरे नील निचोल ॥ १ ॥ गोरी राग अलापत गावत कहति झांमते बोल। नंदनंदन को भलो मनावत जासों प्रीति अतोल ॥ २ ॥ नीको वेष बन्यो मनमोहन आज लई हम मोल। बलिहारी मनमोहन मूरति जगत देहु सब ओल ॥ ३ ॥ अद्भुत रंग परस्पर बाढ्यो आनंद हृदय कलोल। 'परमानंददास' तिहि औसर उडत होलिका झोल ॥ ४ ॥ ❀ ६७९ ❀ ❀राग देवगंधार ❀ झूलत दोऊ नवलकिसोर। रजनी जनित रंग रस सूचित अंग अंग उठि भोर ॥ १ ॥ अति अनुराग भरे मिलि गावत सुर मंडल कल घोर। बीच-बीच प्रीतम चित चोरत प्रिया नैन की कोर ॥२॥ अबला अति सुकुमार डरपति कर हिंडोल झकोर। पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत दे नव उरज अंकोर ॥ ३ ॥ उरझी विमल माल कंकन सों कुंडल सों कचडोर। वे पथ युत क्यों बने विवेचित आनंद बढ्यो न थोर ॥ ४ ॥ निरखि निरखि फूलत ललितादिक बिंब मुखचंद चकोर। दे असीस 'हरिवंस' प्रसंसित कर अंचल की छोर ॥ ५ ॥ ❀ ६८० ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत हंससुता के कूल। सघन निकुञ्ज पुञ्ज मधुपन के अद्भुत फूले फूल ॥ १ ॥ ललित लता लिपटी ललितादिक बरसत आनंद मूल। घन दामिनी ज्यों राजत मोहन निरखि गई मति भूल ॥ २ ॥ रमा आदि सुर नारी सहचरी नाहिं कोई समतूल। 'विष्णुदास' गिरिधरन छबीलो सर्वसु

तहाँ अनुकूल ॥ ३ ॥ ❀ ६८१ ❀ राग देवगंधार ❀ अद्भुत डोल वनी मन मोहन अद्भुत डोल वनी । तुम झूलो हों हरखि झुलाऊं वृन्दावनचंद धनी ॥ ॥ १ ॥ परम विचित्र रच्यो विस्वकर्मा हीरा लाल मनी । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधरनलाल छवि कापे जाति गनी ॥ २ ॥ ❀६८२❀ राग पंचम ❀ आज ललना लाल फाग खेलत वने मिलि झूलत सखी नवरंग डोल । झोटका देत व्रजनारी आनंद भरी छिरकत कुमकुमादि सौरभ अमोल ॥ १ ॥ दिव्य आभरन चीर चारु अमोल छवि अंगराग राजत चित्र कुखुम कलोल । सुरत तांडव लास्य भुव नृत्य मदन गन उपहसत लोचन विलोल ॥ २ ॥ वेनु वीना मृदंग झाँझ डफ किन्नरी तान वंधान नव नागरी ढोल । ततथेई थुंगना नचत सब्दावली होरी हो होरी हो होरी हो वोल ॥ ३ ॥ रसिकवर गिरिधरन रसिकनी राधिका रसमसे चूमत रसमय कपोल । वलि'कृष्नदास' वैभव निरखि मधुमास चल मलय पवन रससिंधु झकझोल ॥४॥ ❀६८३❀ ❀ राग जेतश्री ❀ सोभा सकल सिरोमनी हो दंपती झूले डोल । मोहनराय झूलहीं । कनक खंभ मरकत मनी हो हीरा खचित अमोल ॥ मोहनराय झूलहीं ॥ १ ॥ चोकी पन्ना पाँच पिरोजा रची रतनन की पांत । मुक्तामाल सुहावनी हो कहा वरनों वहुभाँत ॥ २ ॥ झूले दुलहिनी राधिका हो दूलहै नंदकुमार । रति रस केलि विराजहीं हो वाढ्यो रंग अपार ॥ ३ ॥ ताल पखावज आवज हो झाँझ झनक सहनाई । वेनु रवाव किन्नरी हो मधि मुरली की भाई ॥ ४ ॥ सखा मंडली सोभित हो गावत फाग धमार । इत सोभित व्रजसुंदरी हो गावत मीठी गार ॥ ४ ॥ झकझोरे पिचका चले हो कहा वरनों यह वान । चोवा चंदन छिरकहीं हो गोपी गोप सुजान ॥ ॥ ६ ॥ जस कर्दम उर मंडिता हो उड़त गुलाल अवीर । करत विनोद कौतूहला हो राजत अतिसय भीर ॥ ७ ॥ खेलत वल्लव वल्लवी हो प्रतिछिन नव अनुराग । कमलखंड केसर मधुपगन गूंजत पीत पराग ॥८॥ मिथिल

वसन कटिमेखला हो रही अलक लर छूट। एक-एक मिलि धावहीं हो गई मोतिन लर टूट ॥ ९ ॥ चिरजीयो सुंदर वर प्यारो सकल घोख सिरताज। नंद जसोदा को सुकृत फल प्रगट भयो है आज ॥ १० ॥ सुर कुसुमन बरखा करैं हो लीला देखें आय। 'आसकरन' प्रभु मोहन को यस रह्यो सकल जग छाय ॥ ११ ॥ ❀ ६८४ ❀ राग धनाश्री ❀ झूलत युग कमनीय किसोर सखी चहुंओर झुलावत डोल। ऊँची ध्वनि सुनि चकृत होत मन- सब मिलि गावत राग हिंडोल ॥ १ ॥ एक वेष एक वयस एक सम नव तरुनी हरिनी दृग लोल। भांति-भांति कंचुकी कसे तन बरन-बरन पहिरे बलि चोल ॥ २ ॥ बन उपवन द्रुम बेलि प्रफुल्लित अंबमौर पिक निकर कलोल। तैसेई ही स्वर गावत ब्रजवनिता झूमक देत लेत मन मोल ॥३॥ सकल सुगंध समार अरगजा आई अपने-अपने टोल। एक तकि पिचकाइन छिरकत एक भरे भरि कनक कचोल ॥ ४ ॥ कवहुं स्याम पिय उतरि डोल ते कौतुक हेत देत झकझोल। तब प्रिया डर भरि स्वास कंप तन विरमि-विरमि बोलत मृदु बोल ॥ ५ ॥ गिरत तरोना गह्यो स्याम कर श्रवन देन मिस छुवत कपोल। तब पिय ईषद मुसकि मंद हँसि वक्र चिते करि भोंह सलोल ॥६॥ भेरी झाँझ दुंदुभी पखावज अरु डफ आवज बाजत ढोल। आये सकल सखा समूह जुरि हो हो होरी बोलत बोल ॥७॥ रतन जटित आभूषन दीने और दीने मुक्ताहार अमोल। 'सूरदास' मदनमोहन प्यारे फगुवा दे राख्यो मन ओल ॥ ८ ॥❀ ६८५ ❀ रंग उडे तब ❀ राग सारङ्ग ❀ डोल झूलत हैं पिय प्यारी। नंदनंदन वृषभान दुलारी ॥१॥ कमलनैन पर केसर डारी। अबीर गुलाल करी अँधियारी ॥ २ ॥ झूले स्याम झुलावत नारी। हँसि-हँसि देत परस्पर गारी ॥ ३ ॥ गावत गीत दे दे कर तारी। बाजत बेनु परम रुचिकारी ॥ ४ ॥ भीजि लगी तन तनसुख सारी। खेल मच्यो वृंदावन भारी ॥ ५ ॥ रसिक सिरोमनि कुंजबिहारी। 'कृष्नदास'

प्रभु गिरिवरधारी ॥ ६ ॥ ❀६८६❀ राग सारंग ❀ डोल झुलावत लाल विहारी नाम ले ले वोले लालन प्यारी है दुलहा दुलहिनी दुलारी सुंदरवर सुकुमारी। नखसिख सुंदर सिंगारी केसू कुसुम सुहस्त समारी स्याम कंचुकी सुरंग सारी चाल चले छवि न्यारी ॥ १ ॥ वार-वार वदन निहारी अलक झलक झलमलारी रीझि-रीझि लाल ले वलिहारी पुलकित भरत अँक-वारी । कोक-कला निपुन नारी कंठ सरस सुर भारी सुयस गावत लाल विहारी विहारिन की वलिहारी ॥ २ ॥ ❀ ६८७ ❀राग सारंग ❀ डोल झूलत हैं प्यारो लाल विहारी विहारिन पहोंप वृष्टि हो हो होति। सुरपुर पुरगंधर्व और पुर तिनकी नारी देखति वारति लर मोति ॥ ॥ १ ॥ घेरा करति परस्पर सव मिलि कहुँ देखी न युवती ऐसी जोति। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज विहारी सादा चूरी सुभी पोति ॥ २ ॥ ❀ ६८८ ❀ राग सारंग ❀ हरि को डोल देखि व्रजवासी फूले । गोपी झुलावें गोविंद झूले ॥ १ ॥ नंदचंद गोकुल में सोहें। मुरली मनोहर मन्मथ मोहें ॥ २ ॥ कमलनैन कों लाड लड़ावें। प्रमुदित गीत मनोहर गावें ॥३॥ रसिकसिरोमनि आनन्दसागर । 'रामदास' प्रभु मोहन नागर ॥४॥❀६८६❀ ❀ संध्या आरती पीछे जगमोहन में बैठ के ❀ राग कान्हरा ❀ कुंज महल में ललना रसभरे खेलत हैं पिय प्यारी। तेसोई तरनितनया तीर तेसोई सीतल सुगंध मंद वहत पवन तेसीय सघन फूली जूही निवारी ॥ १ ॥ प्रफुल्लित वनरा-जीव तेसेई अलि गूंज श्रवनन कों अति सुखकारी। 'गोविंद' वलि-वलि जोरी सदाई विराजो गावत तान तरंग सुघर भारी ॥ २ ॥ ❀ ६६० ❀ ❀ सेन भोग आये ❀ ओपटा ❀ राग गोरी ❀ नवल कन्हाई हो प्यारे। ऐसो झगरो निवार। दान काहे को हो लागे। चले जाहु अपने ही मग ॥ध्रु०॥ आवत जात सदा रही कवहू सुन्यो नहिं कान। अव कछु नई ये चलाई है दूध दही को दान॥१॥ सदा-सदा हम दान लियो सुनि हो नवलकुमारि। और

गेल ह्वै तुम गईं दान हमारो मारि ॥२॥ ठाले ठूले फिरत हौं चलो हमें घर काम। इनकी कछु न चलाये ग्वाली सुन्दरस्याम॥३॥स्याम सखन सों यों कह्यो घेरो सबन कों जाय। ढीठ बहुत ये ग्वालिनी मटुकी लेहु छिनाय ॥ ४ ॥ गोचारन मिस विपिन में लूटत हौ परनारि। कहैंगी जाय ब्रजराज सों ऐसो झगरो निवारि ॥ ५ ॥ मधुमङ्गल कह्यो कृष्णसों दान लेहु कछु छांड। इनसों दिन-दिन काम है मति ब लेहु कछु आड ॥ ६ ॥ साँची कहत कैं हँसत हो हम कों होत अबार। सब सखियन सेनाबेनी करि गहन देहो मोती हार ॥ ७ ॥ मदनमोहन पिय हरखियो लियो हस्त कर हार। अपने कंठ ले पहरियो गजमोतिन अतिचार ॥८॥ सब सखियन मिलि मतो मत्यो कीजे कहा उपाय। राधा गहन दीजिये और नहीं कछु दाय ॥ ९ ॥ ललिता विसाखा भाजियो राधा तजी है अकेलि। 'गोविंद' प्रभु नव कुंज में पिय प्यारी की केलि ॥ १० ॥ ❀ ६९१ ❀ राग गोरी ❀ मनमोहना रसमत्त पियारे छांड़ सकल कुल लाज। यस अपयस कोऊ कहो मोहि नांहि काहू सों काज ॥ १ ॥ खिरक दुहावन हौं गई मिले ब्रजराज किसोर। गहि बैयाँ मोहि लै चले आई तहाँ ते भोर ॥ २ ॥ कुंजमहल क्रीड़ा करी कुसुमन सेज बिछाय। सुरत सिथिल अति दंपती ते रहे हैं कंठ लपटाय ॥ ३ ॥ विविध कुसुममाला गुही सुन्दर करकमल संवार। प्यारी राधा कों दे घालियो पहिरे घोख मंझार ॥ ४ ॥ कुंजमहल बनिठनि चले प्यारी राधा कों दै सेन। चतुराई बरनी ना परे सकल रूप गुन एन ॥ ५ ॥ नंदराय के लाड़िले धेनु चरावन जाय। प्यारी राधा बिन ज्यों ना रहे छिन-छिन कल्प बिहाय ॥६॥ सब गोकुल के लाड़िले जसुमति प्रान अधार। राधा के तुम चाड़िले जय-जय नंदकुमार ॥ ७ ॥ मदनमोहन पिय बस किये अपने गुन रूप सुहाग। चिते परस्पर दंपती प्रतिछिन नव अनुराग ॥ ८ ॥ इत मनमोहन राजहीं हो सखा सकल लिये संग। उतते आई ब्रजवधू मस्त आपने रङ्ग ॥ ९ ॥

मोहन पकरे भेदसों दई परस्पर सेन । प्यारी कर काजर लियो आंजे पिय के नैन ॥१०॥ यह विधि होरी खेलहीं जातिबंधु संग लाय । 'गोविंद'वलि वंदन करे जै जैं गोकुल के राय ॥११॥ ❀ ६९२ ❀ सेन दर्शन ❀ राग हमीर कल्यान ❀ डोल झूलत हैं गिरिधरन झुलावत वाला । निरखि निरखि फूलत ललितादिक श्री राधावर नंदलाला ॥१॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनी उडत अवीर गुलाला । कमलनैन कों पान खवावत पहिरावत उर माला ॥ ॥२॥ वाजत ताल मृदंग अधोटी कूजत वेनु रसाला । 'नंददास' युवती मिलि गावत रिझवत श्रीगोपाला ॥३॥ ❀ ६९३ ❀ राग हमीर कल्यान ❀ डोल चंदन को झूलत हलधरवीर । श्रीवृंदावन में कालिंदी के तीर ॥१॥ गोपी रही अरगजा छिरकत उड़त गुलाल अवीर । सुर नर मुनि जन कौतुक भूले व्योम विमानन भीर ॥२॥ वामभाग राधिका विराजत पहरे कसूंभी चीर। 'परमानंद' स्वामी संग झूलत वाढ्यो रंग सरीर ॥३॥ ❀६९४❀ ❀ राग हमीर कल्यान ❀ डोल झूलत है प्यारो लाल विहारी विहारिन अव एहो राग रमि रह्यो । काहू के हाथ अधोटी काहू के वीन काहू के मृदंग कोऊ गहे तार काहू के अरगजा हो छिरकत रंग रह्यो ॥१॥ डांडी वछदे खेल वढ्यो जु परस्पर नाहिं जानियत पग क्यों रह्यो । 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज विहारी को खेल खेलियत काहू ना लह्यो ॥२॥ ❀६९५❀

आरती भये पीछे भीतर सूं गुलाल दै तब मुख पर लगाय के ये गाय के नाचनो—

सखि अपनो वलम मोय माँग्यो दे फागुन के दिन चार रहे । मेरे पिछवाड़े के वड़ो घटे वढ़े तो तू ले रे । हाथी ले या घोड़ा ले । अपनो वलम मोय माँग्यो दे । गहनो ले या कपड़ा ले ॥ अपनो वलम० ॥ पेड़ा ले या वरफी ले ॥ अपनो वलम० ॥ ❀ ६९६ ❀ फागुन सुदी १२ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभासा ❀ लरकवा काल जायगी होरी । गोरी सी भोरी थोरे दिनन की सिर धर गागर फोरी, अरी मेरी छतियाँ मसकि मरोरी ॥१॥

हम जमना जल भरन जात ही मेरी बैंयाँ पकरि झकझोरी । 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे प्रेमरंग में बोरी ॥२॥ ❀६९७❀ सिंगार समय ❀ राग विलावल ❀ बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आई । कियो है जुहार नंदजू सों भीतर भवन बुलाई ॥१॥ एक नाचत एक गावत एक बजावत तारी । काहे मोहनराय दुरि रहे मैयाए दिवागत गारी ॥२॥ आदर देत ब्रजरानी अब निज भाग्य हमारे । प्रीतम सजन कुलबधू पाये दरस तिहारे ॥३॥ सुनि कुंवरी मेरी राधे अबही जिनि मुख मांडो । जेंवत स्याम सखन संग जिनि पिचकाई छांडो ॥४॥ केसर बहोत अरगजा कित मोहन पर डारो । सीत लगे कोमल तन तुमहीं चित्त बिचारो ॥५॥ अंचल ऊपर दै रही दोऊ मैया तृन तोरी । बरजति भरति कुमकुमा निर्भय नवलकिसोरी ॥६॥ कहत रोहिनी जसोदा ओली ओडति आगे । जाय भरो ब्रजराजे मोहन दीजे मांगे ॥७॥ मोहन मांगे पैये तो दिन दस हमहीं देहो । गोपकुंवर के पलटे जो चाहो सो लेहो ॥८॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा सुनत अचानक आये । कंचन माँट भरे दधि ले गोपिन सिर नाये ॥९॥ ग्वाल गुपाल सखा सब हँसत करत किलकारी । दूध लियो भीतर ते छिरकी सब ब्रजनारी ॥१०॥ जो सुख सोभा बाढ़ी कहत कहा कहि आवे । ललिता कुंवरि कुंवर को अंचल गहि गहि लावे ॥११॥ भये निरंतर अंतर तजि वल्लव ब्रजबाला । गिरि गिरि परत गलिन में हार तोरि मनिमाला ॥१२॥ प्रभु मुकुंद ब्रजवासी अटक कोनकी माने । कहत भैया 'माधो जन' चलो भरो वृषभाने॥ ॥१३॥ इतनो मांग्यो पाऊं देहु वृन्दावन वासा । कुंवर कुंवरि तहां विहरत चरनकमल की आसा ॥१४॥ ❀ ६९८ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग सुघराई ❀ फगुवाके मिस छल बल लाल कों रंगन रगमगो कीजे । यह औसर होरी को गोरी सुख ले सुख किन दीजे ॥१॥ करत सैंत को संकोच सकुच ज कहिधों कहा कीजे । घर कों छांडि धाय 'गिरिधर' पिय

को निधरक ०है रस पीजे॥२॥ ❀६९९❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ खेले चाचर नर नारि, माई होरी रंग सुहावनो। बाजत ताल मृदंग मुरज डफ बीना और सहनाई माई० ॥१॥ उत खिलवार रसिक गिरिधर पिय इत राधिका खिलार। उन संग ग्वालबाल सब राजत इन संग गोपकुमारि ॥ ॥२॥ उनन लई भरि फेंट गुलालन इनन लई पिचकारी। अति अनुराग भरे मिलि खेलत अंतर भाव उघारी ॥३॥ उत लै नाम पढ़त होले मुख इतहि देत ये गारी। एक जु युवती धाय गहि लाई भरि पिय कों अंकबारी ॥४॥ एकन लई झटकि कर मुरली एक लिये हार उतारी। एक मुख मांड आंज दोऊ नैना एक हंसत दै तारी ॥५॥ एक आलिंगन देत लेत एक रही जो वदन निहार। एक अधर रस पान करत एक सर्वस्व डारत वार ॥६॥ एक मगन रस भुज प्रीतम की लेत आपु उर धारी। धनि व्रजयुवती भाग्यन पूरन यह रस विलसनहारी ॥७॥ मच रह्यो गहगड सिंहद्वार पै सकत न कछू समारी। भींजे खेलरेलपेलन में 'श्रीविट्ठल' गिरिधारी ॥८॥ ❀ ७०० ❀ राग सारंग ❀ होरी खेलें नंदलाल। प्यारो नंदमहर की पौरि ठाडो संग लिये व्रज-बाल ॥१॥ वेनु वजावे मधुरे गावे और उघटावे ताल। हरे-हरे युवतिन मे धसिके चुंवन दै भजे गाल ॥२॥ वदन उघारे बिंदुली निहारे तिलक वनावे भाल। कवहुक आलिंगन दे भाजे आय मिले ततकाल ॥३॥ कवहुक ढिंग व्है अचरा खेंचे छुवावे नीरज नाल। कबहुक आय वलैया लैलै पहिरावे वनमाल ॥४॥ कवहुक नाचे भाव दिखावे कबहू वजावे ताल। कवहू अबीर अरगजा लेके और उडावे गुलाल ॥५॥ कवहुक हाथाजोरी नाचे मंडल मधि प्रतिपाल। श्रीवल्लभपद-कमलकृपा ते गावे 'रसिक' रसाल॥६॥❀७०१❀ भोग संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ सब दिन तुम व्रज में रहो हरि होरी है। कवहू न मथुरा जाओ अहो हरि होरी है। परव करो घर आपुने हरि होरी है। कुसल केलि निवाहो अहो

हरि होरी है ॥१॥ परवा पिय चलिये नहीं सब सुख को फल फाग । प्रगट करो अब आपनो अन्तर को अनुराग ॥२॥ मानों द्वैज दिन सोध के भूपति कीनो काम । ससि रेखा सिर तिलक दे सब कोउ करे प्रनाम ॥ ३ ॥ कनक सिंहासन बैठि के युवतिन के उर आन । अलक चमर अंचल ध्वजा घूंघट आतपत्रान ॥ ४ ॥ फागुन मदन महीपति इहि विधि करिहैं राज । पंद्रह तिथि भरि बरनहूँ सादर क्रिया समाज ॥ ५ ॥ तीज तिहूंपुर प्रगटियो अपनी आन नरेस । सुनि मग-मग डफ दुंदुभी सोई करिये सब देस ॥६॥ चौथ चहूँदिस चालिये यह अपनी इक रीति । मेरे गुन कहे निर्लज ह्वै छांडि सकुच कुलनीति ॥ ७ ॥ पांचे परमित परहरो चलहु सकल इक चाल । नारि पुरुष एकत्र करो वचन प्रीति प्रतिपाल ॥ ८ ॥ छठि छै राग छै रागिनी ताल तान बंधान । चटुल चरित्र रतिनाथ के सिखवो अति अभि-धान ॥ ९ ॥ सातें सुनि सब सजि चले राजा की रुचि जान । करत क्रिया तेसी सबै आयुष माथे मान ॥ १० ॥ आठें डर उन मान के सबन मतो मत्यो एक । नृपजु कहे सोई कीजिये क्यों राखिये विवेक ॥ ११ ॥ नवमी नवसत साजिके कर सुगंध उपहार । मानों चले मिल मेर के मनसिज भवन जुहार ॥ १२ ॥ दसें दसो दिन सोंधि के बोले राजा राय । जग जीत्यो बल आपने ज्ञान वैराग्य छुड़ाय ॥१३॥ सुनि आई एकादसी बोले सब सिर नाँय । ढोल भेर डफ बाँसुरी पटह निसान बजाय ॥१४॥ देखि भले भट आपने द्वादसी घोस बिचार । काज करो रुचि आपने ह्वै निसंक नर नार ॥१५॥ रथ रावक पावक सजे खरन भये असवार । धूर धातु घट रंग भरे करन यंत्र हथियार ॥ १६ ॥ जहाँ तहाँ सेना चली मुक्त कच्छ सिर केस । आप-आप सूझे नहीं राजा रंक आवेस ॥१७॥ जहाँ सुनत तप संयमी धर्म धीर आचार । छिरके जाय निसंक ह्वै तोरे पकरे किवार ॥ १८ ॥ जे कबहू देखी नहीं कबहू सुनी नहिं कान । तिन कुल बधू नारीन के लागे पुरुष परान ॥१९॥

धाय धरे वल कुलवधू पर पुरुष नहीं पहिचान । मात-पिता पति वंधु की छूटि गई सब कान ॥ २० ॥ भस्म भरे अंजन करे छिरकत चंदन वारि । मर्यादा राखे नहीं कटिपट लेहिं उतारि ॥ २१ ॥ तेरस चौदस मास मे जग जीत्यो डर-डार । सठ पंडित वेस्या वधू सवे भये एक सार ॥ २२ ॥ पून्यो प्रगट प्रताप ते दुरे मिले पाँलाग । जहाँ तहाँ होरी लगी मानों मवासिन आग ॥ २३ ॥ सव नाचे गावे सवै सबहिं उड़ावे छार । साधु असाधु न पेखहीं वोले बचन विकार ॥ २४ ॥ अति अनीत मति देख के परवा प्रगटी आन । विमल वसन ज्यों स्याम को मर्यादा की कान ॥ २५ ॥ आवत हीं विनती करी उठ जोंरे हँसि हाथ । वरन धर्म सव राखिये कृपा करहु रति नाथ ॥ २६ ॥ आज्ञा दई रतिनाथ ने नृप समझो मन मांह । जाय धर्म आपुन चलो बसो हमारी बांह ॥ २७ ॥ 'सूर' कहाँ लगि वरनिये मनसिज के गुन ग्राम । सुनो स्याम यह मास में कियो जु कारन काम ॥२८॥ कान्ह कृपा करि घर रहे वरजे मथुरा जात । सरस रसिकमनि राधिका कही कृष्ण सों वात ॥ २९ ॥ ❀७०२❀

बगीचा (फागुन सुदी १३)

❀ सिंगार दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ हो हो हो कहि वोले, गूजरि जोवन मदमाती । नैनन सैनन वेनन गारी बतियाँ गढ़ि-गढ़ि छोले ॥ १ ॥ यह लँगवार लाल गिरधर की गोहन लागी डोले । गठजोरे की गाँठ 'गोविंद' प्रभु भरुवा होय सो खोले ॥ २॥ ❀ ७०३ ❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ रहसि घर समधिन आई । ये सव जन के मन भाई ॥ ध्रु० ॥ समधिन सों समधोरो कीजे कीरति यह मन आई । नंदगाम ते महरि जसोदा समधिन न्योति वुलाई ॥ १ ॥ समधिन आई सव मन भाई निस समधी संग खेली । खोलि हुलास आय ढिंग बैठी मोहोर न कीसी थेली ॥ २ ॥ अति सुरंग सारी समधिन की लहँगा अति ही सुढ़ार । फाटि रही सगरी समधिन

की चोली जोबन भार ॥ ३ ॥ समधिनकों हाथी को भावे आछो नीको पूरो । रंगरंगीलो ओ चटकीलो हाथ भरे को चूरो ॥ ४ ॥ समधिन तो दियोई चाहे खोलि नारे की गांठ । अपने समधी के नेगन कों हीरा पन्ना बांट ॥ ५ ॥ समधिन की है गली सांकरी समधी आवन जोग । आधो भीतर आधो बाहर बहोत बराती लोग ॥ ६ ॥ समधिन के मेल्योई चाहे गल फूलन को हार । काढन कहे समधिन समधी सों डोला के जु कहार ॥ ७ ॥ यह लीला सुर नर मुनि गाई देखत रहे लुभाय । चिरजीवो दुल्हे और दुलहिन 'सूरदास' बलि जाय ॥ ८ ॥ ❀७०४❀ भोग सरे ❀ राग सारङ्ग ❀ नंदकिसोर किसोरी की जोरी होहोहो कहि खेलत होरी । ग्वाल बजावत डफ मृदंग मोहन मुरली धुनि थोरी ॥ १ ॥ इत ब्रजनारी गारी देत परस्पर रङ्ग बढ्यो दुहूं ओरी । गिरिधर दौरि आय बदन लगावत चंदन वंदन रोरी ॥ २ ॥ बचन बांधिके छल करि लाई गांठ स्याम सों जोरी । तेल चढावत गीत व्याह के सबै सयानी भोरी ॥ ३ ॥ मोरमुकुट को मौर बनायो दई है चंद्रिका मौरी । दूल्हे 'पर्वतसेन' को प्रभु दुलहिनी राधा गोरी ॥४॥

❀ ७०५ ❀ बगीचा में भोग आये

❀ राग सारङ्ग ❀ हरि खेलत ब्रजमें फाग अति रसरंग बढ्यो । ब्रजयुवतिन मन अनुराग प्रबल अनंग चढ्यो ॥ ध्रु० ॥ उतते आई सकल साज सिंगार हार वर । गेंदुक हाथ उछारत लेत परस्पर । निडर भई डोले सबै हो राखत कछू न समार । मानो मद गज विपिन में हो मातो करत विहार ॥१॥ इत गिरिवरधर संग लिये गोपन कों आये । तेसोई बन्यो भेख भये हलधर मनभाये । कसे फेंट निकसे सबै हो लेत गुलाल अबीर । हिचकी हैं वे नायका हो देखत उनकी भीर ॥२॥ तब बोली मुरि तरकि करकि चंद्रावली तिनमें । हमें कछू वे कहे नाहिं ऐसो कोऊ उनमें । कुसुमन की डांडी गहे हो चलो क्यों न मिलि धाय । एक एक को पकरिके हो राखो बांध बंधाय ॥ ३ ॥ यह

निरधार विचार परखि मोहन वोले हँसि । यह जानत तन मांझ रह्यो वल हमही में बसि । कान्ह कहा करिहै अवेहो वोलत गालन मारि । पिचकारिन की मारसों हो देहों पिछोरी फारि ॥ ४ ॥ श्रीमुखवानी सुनत सखा टूटे दै तारी । चहुँदिस ते जुरि घेरि लई गोकुल की नारी । कोऊ हाथ पकरि कहैहो केसो तन में जोर । मनमानी अव जो करैं तो करैं सांझ को भोर ॥ ५ ॥ तेसी नवल वधू जो कोन वोल्यो हिय राख्यो । ऐंठि श्रवन वैठाय दयो तव ऐसे भाख्यो । अव मनमान्यो कित गयो हो भले वने रनधीर । भोर सांझ सव मेटिके हो छिनक उतारो नीर ॥ ६ ॥ वहोरि सिमिट मति पलटि उलटि घेरे गोकुलपति । कटितटपट झकझोर कहत अव कहो कहा गति । दान जो दीने ही वने हो ऐसे कही तव आय । तेसेई फगुवा भले हो दीये रहत मिलाय ॥७॥ तुमै कहत सव ईस सो तो हम कछू न जानी । तनतन दृग भरि चाय रहत वोलत नहीं वानी । और और सों है कहा हो वड़े लिये को काज । रससों मनहि मनाय के हो भलें करो व्रजराज ॥८॥ यह विधि खेले नवल लाल कालिंदी के तट । फगुवा दियो मंगाय वसन भूखन अमोल पट । सुर नर मुनि विसरे जहां हो देखि फागको रंग । कहा कहै कवि वचनसों हो होत जुगत को भंग ॥ ९ ॥ श्रीविट्ठलनाथ प्रताप 'ज्ञान' ते नेक गाइयत । वही कृपा वल राखि सीस पर कछू पाइयत । ब्रह्मा नारद सेस सवैं हो रहे विचार-विचार । मदनमोहन पिय की सदा हो जैये वलि वलिहार ॥ १० ॥ ❀७०६❀ संध्या आरती पीछे निज मंदिर में पधारें तव ❀ ❀राग कान्हरा❀ संग सखन कों ले जु विपिन मधि खेलत है हरि फाग । तेसीय चलत करन पिचकाई कुमकुम रसभरी तेसोई दुहूंदिस को रुकत माग ॥ १ ॥ तेसोई सहज हासते री प्रगट करत मानो अपनो सुहाग । तेसोई 'गिरिधर' निरखि जुवती सुख पावत नाहिने देखत दृगन अथाग ॥ २ ॥ ❀ ७०७ ❀ सेन दर्शन ❀ राग रायसो ❀ झूलत डोल दोऊ मिल राधानवल

किसोर । रगमगे मोहन दूलहे नवदुलहिन की जोर ॥ १ ॥ फूलन सोहे सेहरो फूलन सजे है सिंगार। यह सुख देखे ही बने कहत न आवे पार ॥२॥ हरखे सखा बराती व्याहन चढे है किसोर । नवपल्लव द्रुम फूले पुष्प अंब के मौर ॥ ३ ॥ आगम ब्याह को जानि सबहिन कियो है सिंगार । लता बेलि फल फूले केसू कुसुम अपार ॥ ४ ॥ जान बरात सबै सजे फागुन भांड को भेख । गारिन के घोड़ा चले गावे गोपीभेख ॥ ५ ॥ उन्मद के हाथी पै जोबन जोर को अंक । इन मस्ती आगे वे घोड़ा हाथी रंक ॥६॥ होहो होरी व्है रही आगे नकीब पुकार। हांसी तारी गारी ये सब प्यादेद्वार ॥ ७ ॥ अबीर गुलाल उड़े मानो छांगी चमर ढुराय । पिचकारिन के छूटे तिरछे तीर लगाय ॥ ८ सखी सखा सजि आये गाल गुलाल लगाय । मदनमोहन हरि दूलहे देखत सबहि लुभाय ॥ ९ ॥ नर नारी सब फूले, भूले कुल की लाज । उन्मद महीना होरी खेल मच्यो है आज ॥ १० ॥ यह सुख कों को बरने केलि करे ब्रज मांय । द्वारकेस पद वंदों 'दास' रहें सिर नाँय ॥ ११ ॥ ❀ ७०८ ❀ फागुन सुदी १४ ❀ मंगला दर्शन ❀ चौंकि परी गोरी होरी में स्याम अचानक बांह गहीरी। समर छुड़ाय रिसाय चढ़ी भुव अनख अधर कछु बात कहीरी ॥ १ ॥ चितेचिते हँसिके बसिके कसिकें भुजमें रसरासि लहीरी। 'हित हरिवंश' बाल जाल छबि ख्याल रसाल हि देखि रहीरी ॥ २ ॥ ❀७०९❀ सिंगार समय ❀ राग असावरी ❀ बरसाने ते राधिका हो खेलन निकसी फाग। संग सखी सब बयस की हो जाको परम सुहाग । छबीली रस भरी। जाको है बड़भाग जाको गिरिधर सों अनुराग। छबीली रस भरी ॥ १ ॥ सखीयूथ में यों लसें हो ज्यों उडुगन में चंद । मानो हेम लता किधों हो कनक कदली वृंद ॥ २ ॥ सब बनिता बनिबनि चली हो जहां खेलत बलवीर । नखसिख आभरन साजिके हो पहिरे नौतन चीर ॥ ३ ॥ सारी लहँगा और अंगिया हो भांति भांति बहुरंग । मधिनायक प्यारी

बनी हो नवसत साजे सु अंग ॥ ४ ॥ सारी स्वेत सुहावनी हो कंचनसो तन पाय । मनो दामिनिसी देह पर हो ज्होन रही लपटाय ॥ ५॥ अँगिया स्याम बिराजही हो कुच वामें न समात । मनो चकवा पींजरनते हो निकसन कों अकुलात ॥ ६ ॥ पाँय धरत लाली फिरे हो इत उत नहिं ठहेराय । मनहु करोती काचकी हो तामे जावक रंग बनाय ॥ ७॥ पाँयन नूपुर गूजरी हो पायल हेम जराय । नख नग कंचन वीछिया हो राजे विविध बनाय ॥८॥ चाल चले लटकनी हो मानो हँस गयंद । निरखि लग्यो मन लाल को हो सो परयो प्रेम के फंद ॥ ९ ॥ जंघ कदली करि-सूंड सम हो राजत यह आकार । प्रथु नितंब कटि पातरी हो लचकत लँहगा भार ॥ १० ॥ क्षुद्र-घंटिका बाजही हो चोकी हार हमेल । चूरी कंकन पहोंचिया हो मुंदरी अंगुरिन झेल ॥ ११ ॥ कुचजुग सोहें बाल के हो तापर मोतिनहार । मानहु कनकपहारते हो चली गंग द्वै धार ॥ १२ ॥ कंबुग्रीव कंठी सुभग हो मोतिसरी और पोत । किधों त्रिवेनी संग व्है किधों दीपमालिका जोत ॥१३॥ चिबुक डिठोना सोहही हो वसीकरन को गेह । रसहि लुब्ध मधुकर मानो हो परयो कमल के नेह ॥ १४ ॥ अधर अरुन विद्रुम सरस हो बिंब बंधुक सुरंग । सुंदरमुख बीरी लिये लखि लाल भयो रंगरंग ॥१५॥ दंतावलि यों लसति है हो कुंदकली ज्यों अनार । अरुनघनमे किधों दामिनी हो दमकत बारंबार ॥ १६॥ मोती नथमें जो जड़ी हो वामें मनिया लाल । मानो सुक्र द्वै झूलही हो गोद भूमि को बाल ॥ १७ ॥ अनियारे नैना बड़े हो वामे पुतरी स्याम । अही कारो मुरझाय के हो परयो सुधारसधाम ॥ १८ ॥ भोंह बंक चितवन चपल हो अञ्जन दीने नैन । मानो विपसर साधिके हो धनुस चढायो मैन ॥ १९ ॥ मृगमद चंदन कुमकुमा हो तिलक कियो जु बनाय । मानहु रवि ससि एकहि व्है के चढ़े राहु पर धाय ॥ २० ॥ श्रुति ताटंक जराय की हो फिरते मोती पोय । रवि पाछे उडुगन लगे हो यह अचरज

मन होय ॥ २१ ॥ वंदन माँग समारके हो मोतिनलर तहाँ लाय । मानो सेसके मूड पै हो परे अनार बनाय ॥ २२ ॥ सीसफूल नग जटित है हो बेनी सुमन सुदेस । मनहु सुधाकर साँचही हो हेमखंभ पर सेस ॥ २३ ॥ यह सिंगार सब अङ्ग करि हो मनमें मोद अपार । प्यारी लेखत आपुने हो गावत गारी सुढ़ार ॥ २४ ॥ बाजत बीना बांसुरी हो ताल मृदंग उपंग । दुंदुभी भेदन भेरी सहनाई डफ रवाव मुखचंग ॥२५ ॥ चंदन वंदन कुमकुमा हो उडत गुलाल अबीर । चोवा मेद जवाद साख हो कलसन केसर नीर ॥ २६ ॥ उत मोहन बनठन चले हो कीने सकल सिंगार । सखा संग सब भामते हो गावत करत बिहार ॥ २७ ॥ पिचकाई सब रंगकी हो मृगमद केसर घोरि । एकबेर उमड़े सबै हो छिरकी नवलकिसोरि ॥ २८ ॥ तब सखियन मिल धायके हो बहुत कपूर उड़ाय । मानहु चपला दमकही हो नवघन ऊपर आय ॥ २९ ॥ तब गिरिधर पिय धायके हो भुजभरि भेटी वाम । रोरी पियामुख लायके हो पूरे मनके काम ॥ ३० ॥ तबही गोपी कोपिके हो दई कमलनकी मार । सखा गये सब भाजिके हो पकरे नंदकुमार ॥ ३१ ॥ गरे लाय मुख चूमिके हो आँजेहैं नैन विसाल । मुख जो मांड अबीरसों हो बेंदी दीनी लाल ॥ ३२ ॥ नारी को भेख बनायके हो त्रन तोरत बलिजाय । एक निहारत कमलबदनकों एकटक देखत आय ॥३३॥ स्याम भुजान पसारिके हो हरि भरि लीने अंक । यह सुख कहो कहा कहों हो निधिपाई मनो रंक ॥ ३४ ॥ यह उपमा कहा बरनिहों हो रसना नहिं लखे कोर । प्रेमनदी रससिंधु कों हो मिली मरजादा तोर ॥ ३५ ॥ रति रसकेलि विलास करि हो सुख पायो व्रजबाल । फगुवा बहोत मंगायके हो दीनो गिरिधरलाल ॥३६ ॥ यह लीला रससिंधुको हो क्योंकरि लइहैं थाह । सुन अगाध मति हीनहै हो रहिये चरनन छाँह ॥ ३७ ॥ यह विधि खेलत नागरी हो नागर सों है प्रीत । व्रजभूसन मन भावती हो रससागर रस

रीत ॥ ३८ ॥ व्योम विमानन छाइयो हो सुर कुसुमन वरखात। यह जोरी मो मन वसी हो गौर सामरे गात ॥ ३९ ॥ वल्लभ चरन प्रताप ते हो सरस धमारे गाय। ब्रजभूसन जिय में वसे हो 'दास' निरखि वलि जाय ॥४०॥

❀ ७१० ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ जहाँ रहत नहीं कछू कान, ऐसो खेल होरी को। जहाँ कहियत परम वखान, ऐसो खेल होरी को। जहाँ मिलवेकी अकुलान। जहाँ वोलत जान अजान। जहाँ खेलत में न अघान। जहाँ परत नहीं पहिचान। जहाँ रूप भेस उलटान। जहाँ परम निलजता। वान। जहाँ खेलन की रहठान। जहाँ अति आनंद बढान। जहाँ रहत सबै ऋतु मान। जहाँ खेल लराई ठान। जहाँ तन मन धन विसरान ॥ध्रु०॥ करि सिंगार घरनतें निकसी द्वारे ठाडी आय। खेलन कों नंदलाल सों ब्रज-युवती सहज सुभाय ॥ १ ॥ गावत गीत सुहावने ऊंचे स्वर पिय हि सुनाय। सुनत स्रवन लै सखन कों आये ब्रजभूसन धाय ॥ २ ॥ मोहन-मन-वस करनकों ब्रजयुवतिन रच्यो उपाय। नाचत गावत रसभरी अरु वाजे विविध बजाय ॥ ३ ॥ वदन विलोक्यो लाल को हँसि घूंघट पट सरकाय। उर आनंद अतिही वढ्यो मन-भावन यह विधि पाय ॥ ४॥ मोहन के सिंगार कों सव लीनो साज मँगाय। चोवा चंदन अरगजा अरु सुगंध गुलाल भराय ॥ ५ ॥ लये सैन दै वात के मिस मोहन निकट वुलाय। परसि कपोलन प्रेमसों पिय लीने अंग लगाय ॥ ६ ॥ वसन नये लै आपुने प्रीतमकों सव पहिराय। आभूसन वहु भाँति के पहिराये देखि वताय ॥७॥ प्रथम कपोलनि छिरकिकै लै चंदन विंदु वनाय। सुरंग गुलाल अवीर सों करि चित्र रहत मुसिकाय ॥ ८ ॥ पगिया पेचन छिरकिकै वागो इजार छिरकाय। सोभा चित्र विचित्र की नैनन ही परत लखाय ॥ ९ ॥ अधिक गुलाल उडाय कै सवहिन की दृष्टि वचाय। मन भायो पियसों करै प्रति अंगन अंग मिलाय ॥ १० ॥ मंडल मधि पिय राखिकै मिलि नाचत अति सरसाय। गावत

अति आनंद सों पिय छिन-छिन हृदै अघाय ॥ ११ ॥ खेल रच्यो ब्रज-लाड़िले ब्रजयुवतिन पाय सहाय। दूर भये गुन गावहीं सब गोप सब्द उघटाय ॥ १२ ॥ रस-रसिकन मन अति बढ्यो हो तिहूं लोक रह्यो छाय। श्रीवल्लभ पद कमल की 'जन रसिक' सदा बलि जाय ॥ १३ ॥ ❀७११❀

❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ अहो खेलत वसंत पिय प्यारी। लाल सोंधें भरी पिचकारी ॥ ध्रु० ॥ पचरंग लिये गुलाल लाड़िली राधा ऊपर डारी। केसर साख जवाद कुमकुमा भींजि रही रंग सारी ॥ १ ॥ गावत खेलत मिलत परस्पर देत दिवावत गारी। छीन लई मुरली पीतांबर रंग रह्यो अति भारी ॥ २ ॥ देत नहीं डहकावत सुंदरी हँसि-हँसि जात सुकुमारी। फगुवा लेहु देहु पीतांबर कहत कुंवर हा हा री ॥ ३ ॥ बरनों कहा कहत नहिं आवे सोभा सिंधु अपारी। 'हित हरिवंस' लेहु बलि मुरली तुम जीते हम हारी ॥ ४ ॥ ❀ ७१२ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ समधाने तें बामन आयो भर होरी के बीच भरुवा। घेर लियो घर मांझ लुगाइन मूंड लगाई कीच भरुवा ॥ १ ॥ काहू लई खिसकाय परदनी काहू कियो कजरारो। पिसी पीठी गोंछन लपटाई बामन को कहा चारो ॥ २ ॥ काहू गुदी झगुला पहिरायो काहू गूलरी माला। तारी दै-दै महिगन गावैं हँसि-हँसि ब्रज की बाला ॥३॥ जसुमति लियो बचाय बापुरो निर्मल नीर न्हवायो। नये वसन पहिराय गुदी तें झगुला आनि छिडायो ॥ ४ ॥ तब बामन निधरक ह्वै बैठ्यो पहरि ऊजरे कपरा। एक ग्वालिन ने आनि उडेल्यो सरी कीच को खपरा ॥५॥ देख विमल गह्यो चतुरंग ने भले-भले करि गावे। अति खिलवार मोधुवा पांडे खेले ही सुख पावे ॥६॥ पैंज बांधि जो सुरपति नाचे तो ऐसी फाग न माचे। पेट फुलाय बदन टेढो करि बिफरयो बामन नाचे ॥ ७ ॥ गहने जोइ भाई दे पांडे हम तो फगुवा चाहैं। एकन कान पकरि गुलचायो काहू ऐंठी बांहें ॥ ८ ॥ जानि सासरे

को यह बामन मोहन कछु व न कहहीं। 'कृष्नजीवन लछिराम' के प्रभु हरि सकुच-सकुच जिय रहहीं ॥ ६ ॥ ❀७१३❀ संध्या समय ❀ राग काफी ❀ भरो रे न भरो रे न भरो रे लँगरवा। हा-हा मोहि जिनि भरो रे लँगरवा ॥ध्रु०॥ सब सखियन मिल केसर घोरयो भरि-भरि लाये करवा। भरि पिचकारी मेरे मुख पर डारी मेरी अंगिया भींजत बस करो रे लँगरवा ॥ १ ॥ वरजि रहीं वरज्यो नहिं मानत तोरयो उर को हरवा। उलटो मो पै फगुवा मांगे ह्वै रह्यो होरी को भरुवा ॥ २ ॥ सुनि ये नाहक नाह लरैंगो और कुटुम को डरवा। 'कृष्नजीवन लछिराम' के प्रभु प्यारे लेहुँगी वलैया पाँय परवा ॥३॥ ❀७१४❀

होरी (फागुन सुदी १५)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ आज माइ मोहन खेलत होरी। नौतन वेस काछि ठाड़े भये संग राधिका गोरी ॥ १ ॥ अपने भामते आई देखन कों जुरि-जुरि नवल किसोरी। चोवा चंदन और कुमकुमा मुख मांडत लै रोरी ॥ २ ॥ छूटी लाज तव तन न सम्हारत अति विचित्र वनी जोरी। मच्यो खेल रंग भयो भारी या उपमा कों कोरी ॥३॥ देत असीस सकल व्रजवनिता अंग-अंग सव भोरी। 'परमानंद' प्रभु प्यारी की छवि पर गिरिधर देत अंकोरी ॥४॥ ❀७१५❀ सेन दर्शन❀ फगुवा नाचे पीछे सान्निध्य में ❀ ❀ राग कल्यान ❀ कोऊ भलो वुरो जिनि मानो अवै रंग होरी है। मनमोहन के मन मोहन कों श्री वृषभानकिसोरी है ॥ १ ॥ होरी में कहा-कहा नहिं कहियत यामें कहा कछु चोरी है। 'कृष्नजीवन लछिराम' के प्रभु सों जो कहिये सो थोरी है ॥ २ ॥ ❀७१६❀

उत्सव डोल को (चैत्र वदी १)

❀ पहिले दर्शन खुलें पाछे भोग आये ❀ राग देवगंधार ❀ डोल माई झूलत हैं व्रजनाथ। संग सोभित वृषभान नंदिनी ललिता विसाखा साथ ॥ १ ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ रुंज मुरज वहु भाँत। अति अनुराग भरे

मिलि गावत अति आनंद किलकात ॥ २ ॥ चोवा चंदन बूका बंदन उड़त गुलाल अबीर । 'परमानंददास' बलिहारी राजत हैं बलबीर ॥ ३ ॥ ❀७१७❀ राग देवगंधार ❀ झूलत डोल दोऊ अनुरागे । केसर और गुलाल सों भींजे चोवा लपटे बागे ॥ १ ॥ ललितादिक मिलि झुलवत गावत एक एक तें आगे । बाजत ताल पखावज आवज मुरली संग सुहागे ॥२॥ देत असीस चलीं ब्रजसुंदरी फिर खेलैंगे फागे । 'कृष्नदास' प्रभु की छबि निरखत रोम-रोम रस पागे ॥ ३ ॥ ❀७१८❀ राग देवगंधार ❀ झूलत फूल भई अति भारी । निर्मित वर हिंडोल विटप तर वृन्दाविपिनबिहारी ॥ १ ॥ सखी सकल अति मुदित भईं हैं पहिरे विविध रंग सारी । भृकुटी भंग लावन्य अंग प्रति कोटि मदन छबि टारी ॥ २ ॥ बरनन करिये कहा प्रेम को रुचिदायक तहाँ गारी । 'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत प्रान संपदा वारी ॥ ३ ॥ ❀७१९❀ राग देवगंधार ❀ मोहन झूलत बढ्यो आनंद । एक ओर वृषभान नंदिनी एक ओर ब्रजचंद ॥ १ ॥ ललिता विसाखा झुलवत ठाडी कर गहि कंचन डोल । निरखि-निरखि प्रीतम अरु प्यारी विहँसि कहत मृदु बोल ॥ २ ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा बंदन परसत चारु कपोल । छिरकत तरुनी मदनगोपाले आनंद हृदै कलोल ॥ ३ ॥ कहा कहौं रस बढ्यो परस्पर त्रिभुवन बरन्यो न जाय । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर की बानिक अधिक सुहाय ॥४॥ ❀७२०❀ दूसरे दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ डोल माई झूलत हैं नंदलाल । संग राजत वृषभान नंदिनी जोरी परम रसाल ॥ १ ॥ गोवर्धन की सुभग सिखर पर रच्यो जो डोल विसाल । कदली करन केतकी कुंजो बकुल मालती जाल ॥२॥ नूतन चूत-प्रवाल रहे लसि माधुरी सों उरझाय । कमल प्रसून पराग पुञ्ज भरि बहत समीर सुहाय ॥ ॥ ३ ॥ मधुप कीर कल कोकिल कूजत रस मकरंद लुभाय । सुनि-सुनि स्रवन पुलकि पिय-प्यारी रहत कंठ लपटाय ॥ ४ ॥ निर्झर झरत सुगंध

सुवासित रंग-रंग जल लोल । उभय कूल कलहंस मंडली कूजत करत कलोल ॥ ५ ॥ युवतीजन समूह मिलि गावत प्रमुदित लोचन लोल । वाजत ताल मृदंग होत रंग विलसत तारु कपोल ॥६॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनी अवलोकत रसभाय। विट्ठलनाथ आरती उतारत 'दास' निरखि वलि जाय ॥ ७ ॥ ❀७२१❀ भोग आये ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत डोल नंदकिसोर वाम भाग वृषभाननंदिनी पहिरे पीत पटोर ॥ १ ॥ बाजत ताल पखावज आवज झालर मुरली घोर। उड़त गुलाल अवीर अरगजा कुमकुम जल चहुं-ओर ॥ २ ॥ वृन्दावन फूली वन वेली कूजित कोकिल मोर । झूलत स्याम झुलावत गोपी आनंद वढ्यो न थोर ॥३॥ अति अनुराग भरी सव सुंदरी करि अंचल की छोर । कमलनैन मुख सरद चंद्र युवतीजन नैन चकोर ॥ ४ ॥ सुर विमान सव कौतुक भूले वरखे कुसुमन जोर । 'सूरदास' प्रभु आनन्द सागर गिरिवरधर सिरमोर ॥ ५ ॥ ❀ ७२२ ❀ राग देवगधार ❀ झूलत सुंदर युगलकिसोर । नंदनंदन वृपभाननंदिनी पीवत सुधा चकोर ॥ १ ॥ भृकुटी भंग धनुस सी सोभित तिलक सु सायक जोर । मंद-मंद मुसिकात स्यामघन करत कटाच्छ इन ओर ॥ २ ॥ अंजन दीपति रंजन लागे रजक दसन तंवोल । मृगमद आड वनी कर कंकन हार सिंगारन डोर ॥ ३ ॥ गयो सरकि सु पटोल मनोहर उघरे कुच कलस कठोर । 'सूर' सु निरखत भये प्रेमवस तव पिय करत निहोर ॥ ४ ॥ ❀ ७२३ ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत डोल जुगलकिसोर । पिय प्यारी छवि निरखि परस्पर अरुन दृगन की कोर ॥१॥ जाति कुंद और वृंद माधुरी विविध कुसुम की जोर । केकी कोकिल कूजत प्रमुदित अलि गूंजत चहुंओर ॥ २ ॥ चंद्रभागा चंद्रावली ललिता झुलवत करसों जोर । गावत झुलवत स्याम मीत कों आनंदसिंधु झकोर ॥३॥ ताल पखावज आवज दुंदुभी वीच मुरलि कल घोर । उडत गुलाल अवीर कुसुमजल कुमकुम रंग निचोर ॥ ४ ॥ ग्वालवाल सव करत मगन मन दै

कर तारी सोर । सोभित पवन संग चलत अति पीत वसन के छोर ॥५॥ वर मंदार पहोंप बरखत अति वृंदावन की खोर । कोटि मदनमोहन गिरिवरधर 'रसिकराय' सिर मोर ॥६॥❀७२४ ❀ चौथे दर्शन में ❀ राग नट ❀ खेलि फाग फूलि बैठे झूलत डोल डहडहे नागर नैन कमल । बहुत दिनन के भये हैं श्रमित सुख सखिन संग लीने राधा कृष्ण रस रास जवल ॥ १ ॥ गावत राग रागिनी सों मिलि कंठ सरस कोकिला हू ते अमल । 'कल्याण' के प्रभु गिरधर रीझि झोट देत हिये हरखि गोरे गात छूटे छबिसों धवल ॥२ ॥ ❀ ७२५ ❀ राग नट ❀ हँसि मुसिकाय परस्पर, डोल झूलत हैं । सुरंग गुलाल लई मुट्ठी भरि कटितट में राखी छिपाय धरि चाहत बव्यो दृगंचल ॥ १ ॥ देखो कहत अनेक कुसुम पर कैसे दौरत हैं हो अलिवर मानों चले पंचसर के सर । तब जिय की जानी मुख ऊपर तबै दई तारी सुंदर कर बिथके सब नारी नर ॥ २ ॥ यह विधि झूलत हैं री गिरिधर परसत पानि कपोल मनोहर रीझि देत कबहू उर सों उर । 'मदनमोहन' पिय परम रसिकवर कहा कहों यह सुख को सागर बलिहारी बानिक पर ॥ ३ ॥ ❀७२६❀ राग नट ❀ डोल झूलत हैं व्रजयुवतिन के संग । अङ्ग अङ्ग सोभा निरखत प्रतिछिन लज्जित होत अनंग ॥ १ ॥ बाजे बाजत विविध सब्द सों बीना बेनु उपंग । कोऊ कर कठताल बजावत महुवरि सरस मृदंग ॥२॥ कबहू भरि पिचकारिन छिरकत केसू कुसुम सुरंग । नाचत गावत हँसत परस्पर कबहुक लेत उछंग ॥ ३ ॥ मच्यो कुलाहल तन सुध विसरी खसित सीस ते मंग । प्रमदागन 'गिरिधर' मुख ऊपर छबि की उठत तरंग ॥४॥ ❀ ७२७❀ राग हमीर कल्याण ❀ डोल झूलत हैं गिरिधरन नवल नंदलाला व्रजपुरवनिता निरखि वारत हैं कंचन की मनिमाला ॥१ ॥ सकल सिंगार अनूपम बाजत कूजत बेनु रसाला । 'माधोदास' निरख गोपीजन प्रमुदित श्रीगोपाला ॥२ ॥ ❀ ७२८ ❀ भोग के दर्शन ❀ तमूरा सों ❀ राग नट ❀ तैं री

मोहन कौ मन हरि लीनो । नैक चिते इन चपलनैनन ना जानों कहा कीनो ॥१॥ वैठे री कुंज के द्वार तुव मग जोवत भरि-भरि लेत हियो । 'गोविन्द' प्रभु को प्रेम कहांलों वरनों सखी तो विन जाय न जीयो ॥२॥ ❀ ७२९ ❀

❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ मिसहि मिस आवे घर नंद महर के गोकुल की नार । सुंदर वदन विनु देखे कल न परत भूल्यो धाम काम आछो वदन निहार ॥ १ ॥ दीपक लै चली वाहिर वाट में वड़ो करि डार फिर आय छवि सौं बयार कों देति गार । 'नंददास' नंदलाल सों लगे हैं नैन पलक की ओट मानो वीते युग चार ॥ २ ॥ ❀७३०❀ सेन दर्शन ❀राग अडानो❀ कुंज महल मे ललना रस भरे वैठे हैं संग प्यारी । रुरत रुचिर वनमाल वदन पर मृगमद तिलक सँवारी ॥ १ ॥ घनचय चिकुर कुसुम नानाविध ग्रथित मृदुल कर चंपक वकुल गुलाव निवारी । 'गोविद' प्रभु रसवस कीने वृपभाननंदिनी तैं मदनमोहन गिरिधारी ॥ २ ॥ ❀ ७३१ ❀

द्वितीया पाट (चैत्र वदी २)

❀ जागवे में ❀ राग विभास ❀ भोर भये जसोदाजू वोलें जागो मेरे गिरिधरलाल । रतन जटित सिंहासन वैठो देखन कों आई व्रजवाल ॥ १ ॥ नियरैं आय सुपेती खैंचत वहुरयो ढांपत हरि वदन रसाल । दूध दही माखन वहु मेवा भामिनी भरि-भरि लाई थाल ॥ २ ॥ तव हरखित उठि गादी वैठे करत कलेऊ तिलक दै भाल । दै वीरा आरती उतारत 'चत्रभुज' गावें गीत रसाल ॥ ३ ॥ ❀ ७३२ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभास ❀ मंगल करन हरन मन-आरति वारति मंगल आरती वाला । रजनी रस जागे अनुरागे प्रात अलसात सिथिल वसन अरु मरगजी माला ॥ १ ॥ वैठे कुंज महल सिंहासन श्रीवृपभानकुंवरी नंदलाला । 'व्रजजन' मुदित ओट ह्वै निरखत निमिप न लागत लता द्रुम जाला ॥२॥ ❀७३३❀ राग विलावल❀ रसिक-सिरोमनि रंग भीने हो । लाडिली आई नवल वाल रंग भीने हो

॥ १ ॥ जावक लाग्यो सिथिल पाग, रंग भीने हो। भले मनाई भरि फाग, रंग भीने हो ॥ २ ॥ अलक निकसि रही सोभा देत। काम केलि के भुके ॥ ३ ॥ रूप छके लोचन जृंभात। बाहुदंड गह्यो करनफूल ॥४॥ दियो है उसीसा सुख को। मन्मथ डगमगी चाल ॥५॥उरसि मरगजी माल। महकि रही मिलि तन सुवास ॥ ६ ॥ गावत कीरति सुख की रास। ताही सों मिलि सुने खचे ॥ ७ ॥ सहि न सके यह गूढ़ सेन।'रामराय' प्रभु सुनत हँसे ॥ ८ ॥ ❀ ७३४ ❀ राग बिलावल ❀ चार पहर रस रंग किये, रंग भीने हो। भली कीनी भले आये भोर, लाल रंग भीने हो ॥ १ ॥ अरुन नैन अति रसमसे। कछु जृंभात अलसात ॥ २ ॥ कसूंभी पाग अति लपटात। उरसि मरगजी माल ॥ ३ ॥ अधर रंग लागत फीको। मिटि गयो तिलक लिलार ॥ ४ ॥ 'गोविंद' प्रभु छबि देखिके। बिवस भई ब्रजबाल ॥ ५ ॥ ❀ ७३५ ❀ राग बिलावल ❀ जागत सब निस गत भई, रङ्ग भीने हो। रति रस केलि विलास, लाल रङ्ग भीने हो ॥ १ ॥ भली कीनी भले आये प्रात, लाल रङ्ग भीने हो। बोलत बोल प्रतीत के। सुंदर साँवल गात रंग ॥२॥ प्रिया अधररस पान मत्त। कहत कहूं की कहूं बात ॥ ३ ॥ अति लोहित दृग रगमगे। मनहु भोरज लजात ॥४॥ चाल सिथिल भुव सिथिल भाल। ससिमुख सिथिल जंभात ॥ ५ ॥ केस सिथिल वर वेस सिथिल। वयक्रम सिथिल सिरात ॥६॥ 'गोविंद' प्रभु नंदसुत किसोर। बहुनायक विख्यात ॥७॥ ❀ ७३६ ❀ राग बिलावल ❀ राधा के रस बस भये, रंग भीने हो। कोटि काम लजात नये रङ्ग भीने हो ॥ १ ॥ पाग सिथिल जावक लग्यो। भाल तिलक रस में पग्यो ॥ २ ॥ लपटि रही मानो कनकबेलि। नव दुलहिन संग करत केलि ॥३॥ मरकतमनि कंचनमनी। अंग-अंग सोभा घनी ॥४॥ रीझि देत पिय कों तंबोल। पीक छांह सोभित कपोल ॥ ५ ॥ उमगि सिंधु सरिता बढ़ी। श्रमजलकन के रङ्ग चढी॥ ६॥ यह सुख सोभा कही न जाय।

निरखि–निरखि लोचन सिराय ॥ ७ ॥ श्री विट्ठल पदरज प्रताप । 'निजदासन' के हरत ताप ॥ ८॥ ❀७३७❀ सिंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ आज और काल और प्रति दिन और और देखिये रसिक श्रीगिरिराजधरन । नित प्रति नव छवि वरने सु कोन कवि नित ही सिंगार वागे वरन-वरन ॥ १ ॥ सोभा सिंधु अंग-अंग मोहित कोटि अनंग छवि की उठत तरङ्ग विस्व को मन हरन । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर को रूपरस पान कीजे जीजे रहिये सदा ही सरन ॥ २ ॥ ❀ ७३८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ लाल नेक देखिये भवन हमारो । द्वितीया पाट सिंहासन वैठे अविचल राज तिहारो ॥ १ ॥ सास हमारी खिरक सिधारी पिय वन गयो सवारो । आस पास घर कोऊ नाहीं यह एकांत चौबारो ॥ २ ॥ ओटयो दूध सद्य धोरी को लेहु स्यामघन पीजे । 'परमानंददास' को ठाकुर कछु कह्यो हमारो कीजे ॥ ३ ॥ ❀ ७३९ ❀ राग सारंग ❀ चक्र के धरनहार गरुड़ के असवार नंद के कुमार मेरो संकट निवारो । यमला अर्जुन तारे गज ग्राह तैं उवारे नाग के नाथनहारे मेरो तू सहारो ॥ १ ॥ गिरिवर कर पै धारयो इंद्र हू को गर्व गारयो व्रज के रच्छनहार विरद विचारो । द्रुपदसुता की वेर नेक न कीनी अवेर अव क्यों अवेर 'सूर' सेवक तिहारो ॥ २ ॥ ❀ ७४० ❀ राग सारंग ❀ फूलन की मंडली मनोहर वैठे मदनमोहन पिय राजत । प्रसरित कुसुम सुवासित चहुँदिस लुब्ध मधुप गुंजारत गाजत ॥ १॥ पहिरे विविध भाँति आभूषन पीतांवर वैजयंती छाजत । देखि मुखारविंद की सोभा रति-पति आतुर भयो अति भ्राजत ॥ २ ॥ एक रूप वहु रूप परस्पर वरनों कहा मन लाजत।'रसिक'चरनसरोज आसरो करिवे कोटि यतन जिय साजत ॥३॥ ❀७४१❀ भोग के दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ देखो सखी राजत हैं नंदलाल । सीस क्रीट स्रवनन मनि कुंडल उर राजत वनमाल ॥ १ ॥ वागो सरस जरकसी सोहे फैंटा छोर रसाल । सुरत केलि रस मुरली वजावत चंचलनैंन

विसाल ॥२॥ आस पास सब सखा मंडली मधिनायक गोपाल । 'सूरदास' प्रभु यह सुख बाढ्यो बड़े गोप के बाल ॥ ३ ॥ ❀७४२❀ संध्या समय ❀ ❀ राग गोरी ❀ बेनु माई बाजत री बंसीवट । सदा बसंत रहत वृन्दावन पुलिन पवित्र सुभग जमुना-तट ॥ १ ॥ जटित क्रीट मकराकृति कुंडल मुख अरविंद भमर मानो लट । दसन कुंद कली छबि राजत साजत मानो कनक पीत पट ॥ २ ॥ मुनि मन ध्यान धरत नहिं पावत करत विनोद संग बालक भट । दास अनन्य भजन रस कारन 'हित हरिवंस' प्रगट लीला नट ॥ ३ ॥ ❀७४३❀ डोल पीछे मुकुट धरे तब—

❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभास ❀ श्री वृन्दावन नव निकुंज ठाड़े उठि भोर । बांह जोरि बदन मोरि हँसत सुरति रति सकुचत पुनि कछू लजात नैन कोर ॥ १ ॥ कबहु करत बेनु-नाद पायो सुधा-स्वाद पंछीजन प्रेम मुदित बोलत चहुं ओर । 'रसिक' प्रीतम छबि निहारि प्रगट्यो रवि जिय बिचारि बार-बार उमगि तहाँ नाचत हैं मोर ॥२॥ ❀७४४❀ सिंगार समय ❀ राग खट ❀ बने आज नंदलाल सखी प्रेम मादक पिये संग ललना लिये यमुना-तीरे । फूली केसर कमल मालती सघन वन मंद सुगंध सीतल समीरे ॥ ॥१॥ नील मनि वरन तन कनक मंडित वसन परम सुंदर चरन परस माला । मधुर मृदु हास परकास दसनावली छबि भरे इतरात दृग विसाला ॥ ॥२॥ किये चंदन खौर वदन अरविंद मकरंद लुब्ध भ्रमर कुटिल अलकें । चलत जब स्यामघन हलत कुंडल ललित मनिन की कांति कल गंडन झलकें ॥ ॥३॥ एक चंपक तनी कृष्न रस में सनी मल्हवे राग पंचम संग लागी सो है । एक हरि मुख निरखि धरि रही ध्यान मन चित्र सम भई हरि हियो मो है ॥ ॥ ४ ॥ एक दामिनि सी भुजहि ग्रीवा मेलि बात कहन मिस मुख मुख सों मिलायो । एक नव कुंज में ऐंचि रही कटिबंद आपनो लाल चित चोर पायो ॥५॥ एक स्यामहि हेरि सुभग लोचन फेरि विहँसि बोली भले कान्ह

कपटी। एक सोंधे भरी छूटे वारन खरी एक बिन कंचुकी रीझि लपटी ॥ ॥ ६ ॥ एक स्यामा कनककंज वदनी प्रेम मकरंद भरी हिये हरखि विकसी। ताके रस लुब्ध रहे लंपट सांवरो भ्रमर प्रानप्यारी भुजन वीच जु लसी ॥७॥ रसिकमनि रंग भरे विहरत वृन्दाविपिन संग सखी-मंडली प्रेम पागी। कहत 'भगवान हित रामराय' प्रभु सोई जाने जाहि लगन लागी ॥ ८ ॥

❀७४५❀ राग खट ❀ नवल ब्रजराज को लाल ठाडो सखी ललित संकेत वट निकट सोहे। देख री देखि अनिमेख या भेख कों मुकुट की लटक त्रिभुवनजु मोहे ॥१॥ स्वेदकन झलक कछू झुकी सी रहत पलक प्रेम की ललक रस रास कीने। धन्य बड़भाग वृषभाननृप-नंदिनी राधिका-अंस पर बाहु दीने ॥ २ ॥ मनि जटित भूमि पर नव लता रही झूमि कुञ्ज छवि पुंज बरनी न जाई। नंदनंदन चरन परसि हित जानि यह मुनिन के मनन मिलि पांत लाई ॥ ३ ॥ परम अद्भुत रूप सकल सुख भूप यह मदनमोहन विना कछु न भावे। धन्य हरि-भक्त जिनकी कृपा ते सदा कृष्न गुन 'गदाधर मिश्र' गावे ॥ ४ ॥

❀७४६❀ सिंगार दर्शन ❀ राग खट ❀ देख री देखि नव कुंज घन सघन तर ठाड़े गिरिवरधरन रंग भीने। मुकुट सिर लाल कटि काछनी वेनु कर राधिका संग भुज अंस दीने ॥ १ ॥ मकर कुंडल स्रवन झलक अंग परि रही मानो चंदन सी तन खोर कीने। निरखि 'गोविंद' छवि सघन नंद-नंद की वारि तन मन दोऊ प्रेम रस भीने ॥ २ ॥

७४७❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी लतान तर यमुना पुलिन में मधुर बाजे बाँसुरी। जब ते धुनि सुनी कान मानो लागे मदन बान प्रान हू की कहा कहौं पीर होत पांसुरी ॥ १ ॥ व्याप्यो जो अनंग ताते अंग सुधि भूलि गई कोउ निंदो कोउ वंदो करो उपहासु री। ऐसे 'ब्रजाधीस' जू सों प्रीत नई रीत बाढ़ी जाके हृदै गड़ि रही प्रेम पुंज

गांसुरी ॥२॥❀७४८❀ अथवा ❀ राग सारंग ❀ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी द्रुम भँमर गुंज नित विहार प्रिया प्रीतम देखवोई कीजे । गौर स्याम नव किसोर सुंदर अति चित के चोर रूप सुधा निरखि-निरखि नैनन भरि पीजे ॥ १ ॥ सखी संग करत गान सप्त सुरन लेत तान मंद-मंद मधुर-मधुर धुनि सुनि सुख लीजे । बाढ्यो अति ही हुलास दंपती सब सुखद वास तन मन धन 'रसिक' पर वारने कीजे ॥ २ ॥ ❀७४९❀ अथवा ❀ राग सारंग ❀ मुकुट की छांह मनोहर किये । सघन कुंज तैं निकसि सांवरो संग राधिका लिये ॥१॥ फूलन के हार सिंगार फूलन खौर चंदन किये । 'परमानंददास' को ठाकुर ग्वालबाल संग लिये ॥२॥❀७५०❀ संध्या समय ❀राग गोरी ❀ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे । स्रवन लसत मकराकृति कुंडल रतिपति मन जु हरे ॥१॥ अधर अरुन अरु चिबुक चारु बने दुलरी मोतिन माल पीतांबर धरे । अति सुगंध चंदन की खौर किये पहोंचनि पहुँची मोतिन की लरे ॥ २ ॥ कर मुरली कटि लाल काछनी किंकिनी नूपुर सब्द हरे । गुन निधान 'कृष्न' प्रभु रूप-निधि राधे प्यारी निरखि-निरखि नैनन ते न टरे ॥३॥❀७५१❀ ❀ अथवा ❀ राग गोरी ❀ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे । स्रवन लसत मकराकृति कुंडल काछनी कटि वरन बनमाल गरे ॥१॥ चंचल नैन विसाल सुभग भाल तिलक दिये सुंदर मुखचंद चारु रूप सुधा झरे । 'विचित्र बिहारी' प्यारो वेनु वजावत बंसीवट ते व्रजजन मन जु हरे॥२॥❀७५२❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अड़ानो ❀ ऐरी चटकीलो पट लपटानो कटि बंसीवट यमुना तट ठाड़ो नागर नट । मुकुट लटक अरु भृकुटी विकट तामें कुंडल की मटक सों अटक्यो है चित करन लपेटे आछी कनक लकुट ॥ १ ॥ चटकीली बनमाल कर टेकें द्रुमडार टेढे ठाडे नंदलाल छबि छाई घट-घट । 'नंददास'गोपी-ग्वाल टारे न टरत ताते निपट निकट आये सोंधे की लपट॥२॥ ❀७५३❀ अथवा ❀ राग अडानो ❀ए हो आज रीझी हौं तिहारी बानिक पर रूप

चटक ते अटकी। कही न जात सोभा पीत पट की कुंडल की चटक मुकुट की लटक पलट की ॥१॥ कहा री कहौं कछू कहत न आवे सोभा नागर नट की। 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कों सुधि भूली घट पट की ॥२॥ ❀ ७५४ ❀ अथवा ❀ राग केदारो ❀ चलो क्यों न देखें री खरे दोऊ कुंजन की परछाँहि। एक भुजा गहि डार कदम की दूजी भुजा गलबाँहि ॥१॥ छबि सों छबीली लपटि लटकि जात कंचन वेलि तरु तमाल उरझाँहि। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज विहारी रीझे प्रेम रंगमाँहि ॥२॥❀७५५❀ ❀ पोढ़वे में ❀ राग विहाग ❀ री तू अंग अंगरानी अति ही सयानी पिय मनमानी। सोलह कला समानी बोलत मधुरी बानी। तेरो मुख देखि चंद जोति हू लजानी ॥१॥ कटि केहरि कदली जंघ नासिका कीर वारों फल उरोज पर अधिक सयानी। 'हरिनारायन स्यामदास'के प्रभु सों तेरो नेह रहो जौं लौं गंग जमुन पानी॥२॥❀७५६❀टिपारा धरें तब ❀राग सारङ्ग❀श्रीगोकुल राजकुमार सों मेरो मन लागि रह्यो। घूंघरवारे केस साँवरौ अमल कमल दल नैंना। जटित टिपारौ लाल काछनी अरु पियरौ उपरैंना॥ कुंडल अलक झलक गंडन पर हँसि बोलत मृदु बैना। कमल फिरावत कर बन माला नूपुर बजत नगैना॥ १ ॥ काल्ह दुपैरी बिरियाँ ए सखी इन कदमन की ओर। मोहन मंडली संग लीने हेली खेलत हे चकडोर॥ हौं जु हुती सखियन में ठाढ़ी निरखि हँसे मुख मोर। सब की दृष्टि बचाय आली मोपें डारी नंदकिसोर ॥२॥ आज भोर गई भवन नंद के मैं जु कछुक मिस कीनो। सोय उठे राजतसिज्जा पै नंदलाल रंग भीनो॥ लटपटी पाग रस मसे नैना मोहि देखि हँसि दीनो। पुनि अंगराय दिखाय वदन-छवि चितवत चित हरि लीनो ॥३॥ जाकी गति मति रति लागी जासों ता विन क्यों हू न सरही। जैसे मीन रहै जल बाहिर तलपि-तलपि जिय मरही॥ कोउ निंदो कोऊ वंदो त्रासौ एकौ जीय न धर ही। कहे 'भगवान हित रामराय' प्रभु

नेंकु हियेते न टरही ॥४॥❁७५७❁सैन दर्शन ❁ राग अडाना ❁टेढ़ी टेढ़ीपगिया मन मोहे छूटे बंद सोंधेसों लपटे । कंचन चोलना यह छबि निरखत काम बापुरो कोहै ॥१॥ लाल इजार गरे बनमाल गुंजमाल दुति कुण्डल सोहे । 'रसिक' रसाल गुपाललाल गढो कीमत कीमत जोहै ॥ २ ॥ ❁ ७५८ ❁

* चैत्र वदी १० छप्पनभोग को उत्सव *

❁ सिंगार समय ❁ राग देवगंधार ❁ श्रीगोकुल घर घर अति आनंद । पौष कृष्ण नौमी तिथि प्रगटे पूरन परमानंद ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल उदय भयो है अद्भुत पूरन चंद । भक्तन काज धरी नर देही सुन्दर आनन्दकन्द ॥२॥ जहाँ तहाँ नाचत नरनारी गावत गीत सुछंद ।'यादो'श्रीविट्ठलनाथ भैया हो दूर किये दुख द्वन्द ॥३॥ ❁ ७५९ ❁ सिंगार दर्शन ❁ राग बिलावल ❁ महा महोत्सव श्री गोकुल गाम । प्रेम मुदित युवती जस गावत स्यामसुन्दर को लै लै नाम ॥ १ ॥ जहाँ तहाँ लीला अवगाहत खिरक खोर दधिमंथन ठाम । करत कुलाहल निस अरु वासर आनंद में बीतत सब याम ॥२॥ नंदगोप सुत सब सुखदायक मोहन मूरति पूरन काम ।'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर आनंद निधि सखी स्वरूप सोभा अभिराम ॥ ३ ॥ ❁ ७६० ❁ राजभोग आये ❁ ❁ राग आसावरी ❁ बैठी गोप-कुंवर की पांति । ललित तिबारी पटा रतन के झारी-जल कंचन की कांति ॥१॥ मानिक थाल बिसाल धरे बहु, बेला-बेली नाना भांति । खटरस व्यंजन धरे तिनके मधि देखत जिनके नैंन सिराति ॥२॥ पायस करत रोहिनी फिरि-फिरि अति आनंद मांझ सिहात । लपटत झपटत सकल संग मिल देखि जसोदा मन मुसकात ॥३॥ अष्ट सिद्धि नव निधि दासी तहाँ उठावत जूठन इतरात । देखत यह सुख सुरपुर-वासी भये न व्रजजन आँख चुचात॥४॥जेसी सुख-संपति व्रजजन की पल-पल छिनु-छिनु गिनत न जात । 'गोवर्द्धनेस' गिरिधर प्रसाद कों ब्रह्मा हू की मति ललचात ॥ ५ ॥ ❁ ७६१ ❁ भोग के दर्शन में ❁ राग नट ❁ जोपे श्रीवल्लभ प्रगट न होते । भूतल भूपन विष्णुस्वामी-पथ सिंगार-सास्त्र सब रोते ॥ १ ॥ प्रेम

स्वरूप प्रगट पुरुषोत्तम विनु पाये कैसे जोते । सेवा-काज लाल गिरिधर की कुसुम-दाम कैसे पोते ॥ २ ॥ करि आसरो रहे जे निजजन ते भवपार क्यों होते । 'सगुनदास' सिद्धांत बिना यह उर-कपाट क्यों खोते ॥३॥ ❀७६२❀

संवत्सर (चैत्र सुदी १)

❀ सिंगार समय❀ राग देवगंधार❀ प्रात समै उठि यसोमति जननी,गिरिधर सुत कों उबटि न्हवावे । करत सिंगार वसन भूपन ले फूलन रचि-रचि पाग बनावे ॥१॥ छूटे वंद वागो अति सोहत विच विच अगरजा चावा लावे । सूथन लाल फोंदना फबि रह्यो यह छवि निरखि-निरखि सचुपावे ॥२॥ विविध कुसुम की माल कण्ठ धरि श्रीकरमें ले वेनु गहावे । लै दरपन सुत को मुख निरखत 'गोविंद' तहाँ चरन–रज पावे ॥३॥ ❀ ७६३ ❀

❀ सिंगार दर्शन ❀ राग विलावल ❀ आज को सिंगार सुभग साँवरे गोपाल जु को कहत न बनि आवें देखेही बनि आवें। भूपन वसन भाँति-भाँति अंग-अंग छवि कही न जात लटपटी सुदेस पाग चित्तकों चुरावें ॥१॥ मकर कुंडल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विसाल कोटिकाम लजावें । कंठसरी वनमाल फेंटा कटि-छोरन छवि निरखत त्रिभुवन-तिया धीर न मन लावें ॥ २ ॥ मेरे संग चलि निहारि ठाड़े हरि कुँजद्वार हितकी चित वात कहूँ जो तेरे जिय भावें। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर नख-सिख सुंदर सुजान वड़भागिनि ताहि गिनों सु जात हो लपटावें ॥ ३ ॥ ❀ ७६४ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ वैठे हरि कुंज नवरङ्ग राधे संग पहरि छूटे वंद अंग वागो लाल । लटपटी पाग सिर सुरंग मजलीन कुल्हे रतन सिरपेच कच ढरक रही अर्धभाल ॥ १ ॥ प्यारी-तन कंचुकी सारी छापेदार पहरी सोंधे भरी महेंक रही अंग वाल । लाल गिरिधरन छवि निरखि गति विवस भई वरवस नई सरस दई रीझ ललिता माल ॥ २ ॥ ❀७६५❀

❀ राग सारंग ❀ चैत्रमास संवत्सर परिवा वरस प्रवेस भयो है आज । कुंज

महल बैठे पिय-प्यारी लालन पहरे नौतन साज ॥ १ ॥ आपुही कुसुम हार गुहि लीने क्रीड़ा करत लाल मन भावत । बीरी देत 'दास परमानंद' हरखि निरखि जस गावत ॥ २॥ ❀ ७६६ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ आज मनमोहन पिय बैठे सिंहद्वार मोहत सब ब्रजजन-मन । तेसीय मोहन सिर पाग बनी तेसीय कुल्हे सुरंग तेसीय उर माल वन ॥ १ ॥ तेसीय कंठ-मनी तेसोई मोतिनहार तेसीय पीत बरुनी खुली है स्याम तन । 'गोविंद' प्रभु के जु अंग-अंग पर वारों कोटि मदन ॥ २ ॥ ❀ ७६७ ❀ संध्या आरती ❀ ❀ राग गोरी ❀ अंग-अंग स्याम सुभग तन झांई । उमगि चली पीत बरुनि मे ते ताहू में है अति अंगराग सोभा कही न जाई ॥ १ ॥ लाल पाग चौकरी बिराजत कुलह सुरंग ढरकाई । स्निग्ध अलक बीच-बीच राखी चंपकली अरुझाई ॥ २ ॥ देखत रूप ठगोरी लागी नैन रहे अरुझाई । 'गोविंद' प्रभु सब अंग-अंग सुँदर मनिराई ॥ ३॥ ❀७६८❀ शयन दर्शन❀ राग ईमन ❀ कहि न परे लाडिले लाल की वंदसि । कुल्हे चंपक भरी अति सुँदर और लटपटी पाग रही आधे सिर धसि ॥ १ ॥ बरुनी पीत पहरें छूटे बंद अरगजा मोजें सोभा स्याम उरसि । 'गोविंद' प्रभु सुरति सिथिल दंपति प्रेम गलित बैठेऽब कुँज महल तें निकसि ॥२॥ ❀ ७६९❀

गनगौर (चैत्र सुदी ३)

❀ जागवे में ❀ राग विभास ❀ जगावन आवेंगी ब्रजनारी अति रस रंग भरी । अति ही रूप उजागरि नागरि सहज सिंगार करी ॥ १ ॥ अति ही मधुर स्वर गावति मोहनलाल को चित्त हरें । 'मुरारीदास' प्रभु तुरत उठि बैठे लीनी लाय गरें ॥२॥ ❀७७० ❀ मंगला में ❀ राग बिलावल ❀ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे । सोभित भूखन अंग-अंग आलस भरे रैन उनीदे जागे ॥१ ॥ लटपटी सिर पेच पाग छूटे बंदन बागे । 'सूर स्याम' रसिकरोय रस बस कीने सुभाय जागे जहाँ सोई तिया बडभागे ॥ २ ॥

❀ ७७१ ❀ राग खट ❀ ठाडे कुंज-द्वार पिय-प्यारी करत परस्पर हँसि-हँसि बतियाँ। रंगीली तीज गनगौर भोर सजि आई घर-घर तें सब सखियाँ ॥ १ ॥ करत आरती अतिरस माती गावति गीत निरखि मुख अँखियाँ। 'कृष्णदास' प्रभु चतुर नागरी कहा बरनों नाहीं मेरी गतियाँ ॥२॥ ❀७७२❀ ❀ सिंगार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ राधा माधौ कुंज बुलावे। सुनु सुंदरी मुरलिका द्वारा तेरो नाम लै लै गावे ॥१॥ कौन सुकृत फल तेरो प्यारी वदन सुधाकर भावे। कमला को पति पावन लीला लोचन प्रगट दिखावे ॥ २॥ अब चलि मुग्ध बिलंब न कीजे चरन कमल रस लीजे। ऐसी प्रीति करे जो भामिनी ताकों सरवसु दीजे ॥ ३ ॥ सरद निसा-ससि पूरन चंदा खेल बनेगो माई। या सुख की परमिति 'परमानन्द' मोपे कही न जाई ॥४॥ ❀ ७७३❀ ❀राग मालकोस ❀ बोलत स्याम मनोहर बैठे कदंब-खंड कदंब की छैयाँ। कुसुमित द्रुम अलि-कुल गुंजत सखी कोकिला-कल कूजत तहियाँ ॥ १ ॥ सुनत दूतिका के बचन माधुरी भयो है हुलास जाके मन महियाँ। 'कुंभनदास' ब्रज-कुंवरि मिलन चली रसिककुँवर गिरिधरन पैयाँ ॥ २ ॥ ❀ ७७४ ❀ ❀राग बिलावल ❀ आज तन राधा सजत सिंगार। नीरज सुत-वाहन को भच्छन अरुन स्याम रंग कोन विचार ॥ १ ॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरही बनावत हार। सारंगसुत-पति बस करिवे कों अच्छत लै पूजत रिपुमार ॥२॥ पारथ पितु आसन सुत सोभित स्याम घटा बगपांति विचार। 'सूरदास' प्रभु हंससुता-तट विहरत राधा नंदकुमार ॥ ३ ॥ ❀ ७७५ ❀ ❀ राग सारंग ❀ कहत जसोदा सब सखियनसों आवो बैठो मंगल गावो। है गनगौर की तीज रंगीली कान्ह कुँवर कों लाड लडावो ॥ १ ॥ ललिता चन्द्रभगा चंद्रावली बेगि जाय राधा लै आवो। स्यामा चतुरा रसिका भामा तुम पिय को सिंगार बनावो ॥ २ ॥ कमला चंपा कुमुदा सुमना पहोंपमाल लै उर पहिरावो। ध्याया दुर्गा हरखा बहूला लै दरपन कर बेनु गहावो ॥३॥

कृष्णा यमुना वृंदा नैनां चरन परसि करि नैन लगावो। तारा रंगा हंसा विमला जमुनाजल झारी पधरावो। नवला अबला नीला सीला गूँजा पूवा लै भोग धरावो। हीरा रत्ना मैना मोहा लै बीना तुम तान सुनावो॥४॥ घूमर खेलो मन रस झेलो नेह-मेह बरखा बरखावो। 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर को सुख निरखि-निरखि दोऊ दृगन सिरावो॥ ५॥ ❀ ७७६ ❀ ❀राग बिलावल ❀ अरवीलो गरवीलो रंगीलो छबीलो कान्ह करि के सिंगार ठाढौ देखो सखी कुँजद्वार। वाम भाग राधा प्यारी ओढे चुनरी की सारी कंचुकी उतंग गाढी ठाडी बहियाँ गरे डार॥ १॥ चूनरी चटकदार पाग सीस नंदलाल सूथन चूनरी बागौ बन्यो अंग घेरदार॥ २॥ फूल-छरी बेनु धरी बजत है रस भरी सुनत स्रवन धाय आये सब नर नगरा। निरखि मुखारविंद फूले मानो अरविंद करत गुँजार तहां 'कृष्णदास' भमरा॥ ३॥ ❀ ७७७ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग मालकोस❀ आज कोमल अंगते ब्रज सुँदरि रसिक गोपाल लालें भाई। सकल सिंगार सजि मृग-नयनी अवसर जानि आपु चलि आई॥१॥ लहँगा लाल झूमक की सारी कसुँभी पीत वरुनी पिय अतिहि रंगाई। 'कुँभनदास' प्रभु गोवर्धनधर अपुनी जानि हँसि कंठ लगाई॥२॥ ❀७७८❀राग बिलावल ❀ भोर निकुंज भवन पिय प्यारी करत परस्पर हँसि-हँसि बतियाँ। बाजत बीन पखावज अधोटी गावति चतुर ताल दै सखियाँ॥ ॥१॥ तुम पहरो बागो आभूषन सीस बांधि अलबेली पगियाँ। तोरा झोरा लूम कलंगी ढरकावो मोरन की पखियाँ॥२॥ स्याम कंचुकी कसि तन गाढ़ी मैं ओढों सिर सुरंग चुनरियाँ। कर कंकन बाजूबंद पहोंची कंठ पोत दुलरी तिमनियाँ॥ ३॥ अलकावलि भाल टीकी नथ पायल नूपुर अनवट बिछियाँ। यह विधि करि सिंगार दोऊ ठाड़े लै दर्पन मुख निरखि हरखियाँ॥ ४॥ मृगमद तिलक अलक घुंघरारी देखि चकित भई मद भरी अंखियाँ। 'कृष्नदास' प्रभु चतुर बिहारी लई लगाय स्यामा कों छतियाँ॥

॥५॥ ❀७७९❀ राजभोग आये ❀ राग नूर सारंग ❀ रंगीली तीज गनगौर आज चलो भामिनी कुंज छाक लै जैये । विविध भांति नई सोंज अरपि सब अपने जिय की तृपत बुझैये ॥ १ ॥ ले कर वीन वजाय गाय पिय-प्यारी जेंमत रुचि उपजैये । 'कृष्नदास' वृखभानसुता संग घूमर दै नंदनंद रिझैये ॥२॥ ❀७८०❀ नूर सारंग ❀ नवल निकुंज महेल मंदिर मे जेंवन वैठे कुंवर कन्हाई । भरि-भरि डला सीस धरि अपने व्रजवधू तहाँ छाक लै आई ॥१॥ हरखित वदन निरखि दंपति को सुंदरि मंद-मंद मुसकाई । गूँजा-पूआ धरि भोग प्रभु कों 'कृष्नदास' गनगौर मनाई ॥२॥ ❀७८१❀ नूर सारंग ❀ मुदित व्रजनागरी पहरि नये-नये वसन आई सव कुंज लै असन मोहन काज । खाटे खारे मधुर तिक्त व्यंजन विविध वहोत पकवान फल-फूल डलियन मांझ ॥ १ ॥ धरे आगे लाय-लाय जिय सचुपाय-पाय करत गुन-गान कर मांझ ले ले साज । 'कृष्नदासनिनाथ' जेंवत राधा साथ चैत्र सुद तीज गनगौर मानी आज ॥ २ ॥ ❀७८२❀ नूर सारंग ❀ तीज गनगौर त्यौहार को जानि दिन करत भोजन लाल-लाड़िली पिय साथ । चतुर चंद्रावली वैठि गिरिधरन संग देति नई-नई सोंज ले-ले अपने हाथ ॥ १ ॥ छवि वरनी न जात दोऊ रुचि सों खात करत हसि-हँसि वात उमगि-भरि-भरि वाथ । उपजी अंतर प्रीति मदनमोहन कुंज जीत पीवत पय सद्य प्रभु 'कृष्णदासनिनाथ' ॥ २ ॥ ❀ ७८३ ❀ राग सारंग ❀ नंद घरुनि वृखभान-घरुनि मिलि कहति भवन गनगौर मनाओ । नये वसन आभूषन पहरो मंगल गीत मनोहर गाओ ॥ १ ॥ करि टीको नीको कुमकुम को आँगन मोतिन चौक पुराओ । चित्र-विचित्र वसन पल्लव के तोरन वंदनवार बँधाओ ॥ २ ॥ घूमर खेलो नवरस झेलो राधा गिरिधर लाड़ लड़ावो । विविध भांति पकवान मिठाई गूँजा पूआ वहु भोग धराओ ॥ ३ ॥ जल अचवाय पोंछि मुख वस्तर माला धरि दोऊ पान खवावो । 'कृष्नदास'

पिय प्यारी को आनन निरखि नैन मन मोद बढ़ावो ॥ ४ ॥ ❀ ७८४ ❀ ❀ नूर सारंग ❀ सजि-सजि आईं सकल व्रजनारी। कसि कंचुकी बेंदी अंजन दृग ओढ़ि विविध रंग सारी ॥१॥ बाजूबंद बेरखी चूरी कर कंकन फोंदना री। पहोंची गूजरी बाँह बिजोटी मूंदरी अँगुरियन न्यारी ॥२॥ करनफूल अवतंस फूल नथ ढलकत मनि मुक्तारी। अलकावली दामिनी-फूलनि बेनी गूंथि सँवारी ॥ ३ ॥ हँसुली पोत तिमनियाँ दुलरी हिये हार सिंगारी। गुँज माल बैजंती माल बिच लटकत बहु झोंरा री ॥४॥ कटि किंकिनी पग नूपुर अनवट बाजत चलत सुढारी। गज-गमनी अवनी मृगनैनी गावत है करतारी ॥ ५ ॥ मुखहि तंबोल अधर पर लाली कहा कहें रूप छटा री। हँसन-रेख झलकत दसनन बिच मानो चमक चपला री ॥ ६ ॥ बनी रंगीली गनगौर श्री राधा बिलसन कुंजबिहारी। भेटी जाय धाय गिरिधर सों श्री वृषभान-दुलारी ॥ ७ ॥ धन्य सुहाग भाग तेरो भामिनि कहा बरनों रसना री। 'कृष्नदास' प्यारे की प्यारी तोपे सर्वस्व वारी ॥८॥ ❀७८५❀ नूर सारंग ❀ सहेली मेरे आज तो रंगीली गनगौर। नख-सिख अंग आभूखन पहेरों ओढ़ों पीत पटोर ॥ १ ॥ नाचों गावों भाव बताऊं जाय नंद की पौर। बाँधों बंदनवार मनोहर चीतों सुकपीक मोर ॥ २ ॥ विविध भांति नई सोंज अपने कर अरपों नंदकिसोर। करि अचवन जल बीरी दै मुख भेटों दोऊ कर जोर ॥ ३ ॥ सेज कुसुम रचि-पचि पोढाऊँ राखों नैन की कोर। मदन केलि रस-बेलि बढ़ाऊँ मंद हँसनि चितचोर ॥४॥ चांपों चरन निज करन प्रीतम के उलटि-पुलटि दोऊ ओर। बींजना ढोरों श्रमजल पोंछों अपने अंचल छोर ॥ ५ ॥ अधर सुधारस पिऊँ पिआऊँ निरखि वदन मुख मोर। आलिंगन चुंबन परिरंभन दै-दै प्रेम हिलोर ॥ ६ ॥ मनमथ अंग-अंग प्रति उमग्यो राधा नंदकिसोर। 'कृष्नदास' प्रभु रति रस पागे निसि बीती भयो भोर ॥ ७ ॥ ❀ ७८६ ❀

❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ जल अचवाय लाल लाड़िली कों कुंज भवन में पान खवायो । कर लैं बीन वजाय गाय सखी ललिता सारंगराग जमायो ॥१॥ धरि उर कुसुममाल दोऊन कों सहचरि रति-रस रंग वढायो। 'कृष्नदास' गनगौर तीज को पिय-प्यारी त्यौहार मनायो ॥ २ ॥ ❀७८७❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ आजु की वानिक कही न जाय वैठेऽव निकसि कुञ्जद्वार। लटपटी पाग सिर सिथिल अलकावलि खसित वरुहा चंद रस भरे व्रजराजकुमार ॥ १ ॥ श्रमजल बिंदु कपोल विराजत मनहुं ओसकन नील कमल पर। 'गोविंद' प्रभु लाडिलौ ललन वलि कहा कहों अंग-अंग सुंदर वर ॥ २ ॥ ❀ ७८८ ❀ राग सारंग ❀ सघन कुंज भवन आज फूलन की मंडली रचि ता मधि लै संग राधा वैठे गिरिधरनलाल । चूनरी की वांधि पाग अङ्ग वागो चूनरी को उपरेना कंठ हीरा हार मोती माल ॥ १ ॥ स्याम चूरी हरित लहँगा पहरि चूनरि झूमक सारी मानो गनगौर वनी ऐन मेन कीरति–वाल। 'कृष्नदास' पिय प्यारी अपने कर दरपन लै देखत मुख वार-वार हँसि-हँसि भरि अंक जाल ॥ २ ॥ ❀ ७८९ ❀ राग सारंग ❀ राधा नवल लाडिली भोरी । आवत गावत सव मन भावत सव एक वैस किसोरी ॥ १ ॥ सोंधे भीनी झूमक सारी ओढि पहरि तन चोली । विविध भांति आभूपन अंग में हीरा-हार अमोली ॥२॥ कहा कहों अङ्ग-अङ्ग की माधुरी सोभा सिंधु झकोरी । ले गनगौर संग सव आई श्री व्रजराज की पोरी ॥ ३ ॥ ललिता चन्द्रभगा चन्द्रावलि स्याम भामा गौरी । विमला कमला कृष्णा रंगा सुखमा सुमिता वौरी ॥ ४ जमुना तारा कृष्णा हंसा गहि करसों करजोरी । नैनां मैनां प्रेमा जुहि नाचत हँसि मुख मोरी ॥ ५ ॥ दुरगा ध्यावा वहुला रसिका ठाढ़ी हरि ओरी । दुहूं ओर अस्तुति करत तिय झुकि-झुकि सव कर जोरी ॥ ६ राधा गिरिधर चिरजोयो जुग सदा-सर्वदा जोरी । 'कृष्णदास' यह वा

उपर डारत हैं तृन तोरी ॥ ७ ॥ ❀ ७६० ❀ भोग दर्शन में ❀ राग नट ❀ राधा कौन गोर तें पूजी । वृंदावन गोकुल गलियन में सब कोऊ कहत बहूजी ॥ १ ॥ मदनमोहन पिय को मन हर लीनो कहा बात तोहि सूझी 'परमानंददास' को ठाकुर तो सम और न दूजी ॥ २ ॥ ❀ ७९१ ❀ ❀राग सारंग❀ राधा कौन गोर तें पूजी नंदनंदन ब्रजचन्द ललन की तोसी न दुलहिनि दूजी ॥ १ ॥ रमा रती रंभा सावित्री झुकति चरन नित तोरी । उमयापति अज-तनया सुक मुनि धरत ध्यान कर जोरी ॥ २॥ भाग सुहाग अचल तेरो बाढ़ो गाढो पिय सों गोरी । 'कृष्णदास' समता करिवे कों नाहिन त्रिभुवन जोरी ॥ ३ ॥ ❀ ७९२ ❀ संध्या भोग आये ❀ राग सारंग ❀ बन ठन आई रंगीली गनगोर । सजि सिंगार चञ्चल मृगनैनी पहेरें पीत पटोर ॥ १ ॥ सखी सहेली लै संग राधा गावत नंद की पोर । निरखत हरखत अतिरस बरखत मोहे नंद किसोर ॥२॥ उपजी प्रीति परस्पर अन्तर मानो चंद चकोर । 'कृष्णदास' पिय प्यारी की छबि पर डारत हैं तृन तोर ॥३॥ ❀ ७९३ ❀ संध्या समय ❀ राग कल्याण ❀ दुहिवो दुहायवो भूल गयो हो । सेली हाथ बछरूबन मिलवत नूपुर को ठमको जो भयो हो ॥ १ ॥ नयो जोबन नयी चूनरी के बंद दुरि मूरि के चितयो हो । 'धोंधी' के प्रभु रस बस करिलीनो प्यारी प्यारो रिझयो हो ॥ २ ॥ ❀ ७९४ ❀ राग गोरी ❀ तीज गनगोर त्यौहार को जानि दिन ठाडे कुंजद्वार संध्या समै पिय प्यारी । दौरि नर नारि सब आये दरसन करन भई आंगन मधि भीर भारी ॥१॥ बजत बीना मृदंग तानपूरा चंग गान गावत सखा आठों करदे तारी । 'कृष्णदास' निनाथ रानी जसुमति मात करत आरती करन मधि ले थारी ॥ २ ॥ ❀ ७९५ ❀ सयन भोग आये ❀ राग कान्हरो ❀ देखि गनगोर गहि अंगूरी बल मोहन की करन ब्यारू आय बैठे लै संग तात । पूरी पकवान कढ़ी सागं ओदन दार घृत सान दूध भात लाई जसुमति मात ॥१॥ जेंमत

दोऊ भ्रात मुसिकात करि-करि वात छवि न वरनी जात फूले अंग न मात। भरे लाल आलस प्रभु 'कृष्णदासनिनाथ' पीवत पय गाढो लै कनक वेला हाथ ॥२॥ ❀७९६❀ राग कान्हरा ❀ देखि गनगौर पिय प्यारी नवकुंज में आय बैठे व्यारू करन दोऊ मिलि साथ। विविध पकवान व्यंजन वहो भांति के ठाडी भरि थार लै ललिता अपने हाथ ॥१॥ जेंवत आलस भरे देखि चंद्रावलि ढोरत विजना श्रमित जान वल्लभ नाथ। दूध तातो मिष्ट भरि कनकपात्र पियो सचुपाय प्रभु 'कृष्णदास' के हाथ ॥२॥ ❀७९७❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग केदारो ❀ वन-ठन व्रजराजकुंवर वैठे सिंघद्वार आय देख गनगौर आंगन लै संग सव ग्वाल वाल। नखसिख सजि-सजि सिंगार आईं सकल घोखनारि परम सुंदर चतुर सुघर गावत सुर गीत रसाल ॥१॥ मंडल जोरि घूमर लेत अरस-परस चहुँ ओर सखी सहचरी व्रज की वधू उमगि-उमगि दै दै ताल। 'कृष्णदास' प्रभु की वानिक निरखि जुवती विवस भई निकट आय पाँय लागि पहेरावत कंठमाल ॥२॥ ❀७९८❀ ❀ मान ❀ राग विहाग ❀ तोसी तिया नहीं भवन भटूरी। रूपरासि रसरासि रसिकिनी तोय देखि भये नंदलाल लटूरी ॥१॥ सु तन कर दृढ़ गांठ दई जुरि सुरंग चूनरी पीत पटूरी। 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नवल नटूरी ॥२॥ ❀ ७९९ ❀ राग केदारो ❀ धन्य वृंदा विपिन धन्य गोकुल गाम धन्य राधा कोन गौर तैं पूजी। धन्य वडभाग्य सौभाग्य तेरो सुजस रसिक नंदनंदन की तू वहूजी ॥१॥ चक्र चूडामनी रूप गुन आगरी नाहि त्रिभुवन वाम तोसी दूजी। 'कृष्णदासनिनाथ' साथ विलसन सदा तोही सम नाहि नवनारी सूझी ॥२॥ ❀८००❀ पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ कुंज में पोढे रसिक पिय प्यारी। सखी मुदित अति चित्र-विचित्रित कुसुमन सेज समारी ॥१॥ हँसत परस्पर वतरस वरखत आनंद उपज्यो भारी। सुरतरंग के रस में माते 'नंददास' वलिहारी ॥२॥ ❀८०१❀ राग केदारो ❀

नंदनंदन श्रीवृषभाननंदिनी संग मदन रस केलि सुख-सेज ठान्यो। अतर चंदन पान फूल माला सुखद सखी स्वर साध कछु राग गान्यो ॥१॥ मलय घनसार करपूर मृगमद लाय धरत ललिता तहां सनेह सान्यो। 'कृष्णदास-निनाथ' नवल राधा साथ तीज गनगौर त्यौहार मान्यो ॥२॥ ❀८०२❀ ❀ चैत्र सुदी ४ ❀ जागवे में ❀ राग विभास ❀ प्रात समें जागी अनुरागी-सोवत हुतीरी श्यामजू की संगिया। चीर सम्हारत उठीरी दच्छिन कर वाम भुजा फरकी भर अंगिया ॥१॥ भाल में सुहाग भारी छबि उपजत न्यारी पहरे कसुंभी सारी सोंधे रगमगिया। 'अग्रस्वामी' लाड लडाई बहुत कीनी वडाई फूली फूली फिरति अति ही सगमगिया ॥२॥ ❀ ८०३ ❀ मंगला दर्शन ❀ ❀ राग बिलावल ❀ प्यारी के महल तें उठि चले भोर। सखीवृंद अवलोक अग्रस्थित ढकत नील कंचुकी पीत पट छोर ॥१॥ राधा चरित विलोकि परस्पर तें जु हास इत-उत मुख मोर। 'गोविंद' प्रभु लौ चले दगा दै नागर नवल सभा चित्त चोर ॥२॥ ❀ ८०४ ❀ शृंगार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ तें गोपाल हेत नील कंचुकी रंगाय लई भली करी सुफल भई आज निस सुहावनी। रोम-रोम फूली चाय चपल नैन भृकुटी भाय अभरन चाल अंग मराल डगमगी सुहावनी ॥१॥ सुभग सारी झूमक तन स्याम पाट कुसुम नीवी तान सुख पचरंग छींट ओढ़नी सुहावनी। सोहत अलक बिथरे बदन मोहन लावन्य-सदन 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर केलि अति सुहावनी ॥२॥ ❀ ८०५ ❀ राग बिलावल ❀ मैं तेरी अधिक चतुराई जानी तैं न कंचुकी सँवारी। आनंदरस-बस देह-सुधि भूलि गई मिलत गोवर्धन-धारी ॥१॥ कहा कहों गुनरासि अङ्ग-अङ्ग चलत मधुर गति भारी। 'कृष्णदास' प्रभु रसिक लाल के तू अति मान-पियारी ॥ २ ॥ ❀८०६❀ ❀ राग बिलावल ❀ कंचुकी के बंद तरक तरक टूटे देखत मोहन स्यामे। काहे कों दुराव करत है मोसों उमगत उरज न दुरत हो कित यामें ॥१॥

कमल वदन पर अलकावलि छवि मानों मधुप लज्जित विश्रामे। 'कृष्ण-दास' प्रभु गिरिधर नागर यह विधि सुमुखि लजावत कामे ॥२॥❀८०७❀

रामनवमी तथा उत्सव श्री ब्रजभूषणजी को (चैत्र सुदी ६)

❀ पंचामृत समय ❀ राग देवगंधार ❀ नौमी चैत की उजियारी। दसरथ के गृह जनम लियौ है मुदित अयोध्या-नारी ॥१॥राम लच्छमन भरत सत्रुहन भूतल प्रगटे चारी। ललित विसाल कमलदल लोचन मोचन दुःख सुख-कारी ॥२॥ मन्मथ मथन अमित छवि जलरुह नील वसन तन सारी। पीत वसन दामिनी द्युति विलसत दसन लसत सित भारी ॥३॥ कठुला कंठ रत्न मनि वघना धनु भृकुटी गति न्यारी। घुटुरुन चलत हरत मन सबको 'तुलसीदास' वलिहारी ॥४॥ ❀ ८०८ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग विलावल ❀ कौसल्या रघुनाथ कों लिये गोद खिलावे। सुंदर वदन निहारकें हँसि कंठ लगावे ॥१॥ पीत झगुलिया तन लसे पग नूपुर वाजे। चलन सिखावे रामकों कोटिक छवि लाजे॥२॥ सीस सुभग कुलही वनी माथे बिंदु विराजे। नील कंठ नख केहरी कर कंकन वाजे ॥३॥ वाल लीला रघुनाथ की यह सुने और गावे। 'तुलसीदास कों यह कृपा नित्य दरसन पावे ॥४॥❀८०९❀ ❀ राग विलावल ❀ सुभग सेज सोभित कौसल्या रुचिर राम सिसु गोद लिये। वाललीला गावत हुलरावत पुलकित प्रेम पीयूप पिये ॥१॥ कवहू पोढि पय पान करावत कवहूं राखत लाय हिये। वार-वार विधु वदन विलोकत लोचन चारु चकोर पिये॥२॥ सिव विरंचि मुनि सव सिहात हैं चितवत अंवुज ओट दिये। 'तुलसीदास' यह सुख रघुपति को पायो तो काहू न विये ॥३॥❀८१०❀ ❀ राग विलावल ❀ गावत राम-जनम की गाथा। दसरथ के गृह प्रगट भये प्रभु पूरन ब्रह्म सनाथा ॥ १ ॥ आज प्रार्थना सुफल भई यह अव काज-देव सव सरिहैं। दुष्ट दलन संतन सुखदायक भुव को भार उतरिहैं ॥ २ ॥ भवन चतुर्दस करत प्रसंसा भूरि भाग्य रघुकुल को आहि। नेति-नेति

निगमादिक गावें सोई सुत कौसल्या जाहिं ॥ ३ ॥ देत असीस सूत मागध-जन पुर-वासी नर नारी। कौसल्यानंदन के ऊपर तन-मन डारत वारी ॥ ॥ ४ ॥ ❀८११❀ राग देवगंधार ❀ राम जनम मानत नंदराय। प्रथम फुलेल उबटनो सोंधो यह बिधि लाल न्हवाय ॥ १ ॥ रंग केसरी बागो कुल ही आभूखन पहेराय। सबकों ब्रत यह लरिका ताते बेगे लियो जिमाय ॥ २ ॥ जन्म समे पंचामृत विधि सों देव न्हवावत गाय। चरचत पीतांबर उढाय कें फूलमाल पहेराय ॥ ३ ॥ भोग लगाय आरती वारत बाजन बहोत बजाय। दोउ कर जोरि बलैया लै पुनि 'द्वारकेस' बलि जाय ॥४॥ ❀८१२❀ ❀ राग बिलावल ❀ सब सुख चाह रही है राम की, देख रूप की रास। ज्यों मसि के अच्छर कागद पर टारे टरत नहीं ॥ १ ॥ अधर कपोल सुभग नासा पर कनक कली सी सही। जहिं-जहिं मन अटक्यो जाको रहि गयो तहिं ही तहीं ॥२॥ बैठे जनक भुवन में रघुबर संग सीता दुलही। 'तुलसी' मन हुलसी पुर नारिन विविध असीस दई ॥३॥ ❀८१३❀ राग बिलावल ❀ श्री रघुनाथ पालने झूले कौसल्या गुन गावे हो। बलि अवतार देव मुनि बंदित राजिवलोचन भावे हो ॥१॥ राजा दसरथ पलना गढायो नव चंदन को साज। हीरा जटित पाट की डोरी रत्न जराये बाज ॥२॥ एते चरन कमल कर राते नील जलद तन सोहे। मृगमद तिलक अलक घुँघरारी मृदुल हास मन मोहे ॥ ३ ॥ घर घर उत्सव चारु अयोध्या राघव जनम निवास। गावत सुनत लोक त्रैपावन बलि 'परमानन्ददास' ॥ ४ ॥ ❀ ८१४ ❀ ❀ राग आसावरी ❀ कनक रत्न मनि पालनो रच्यो अमर सुभढार। विविध खिलौना किंकिनी लागे मंजुल मुक्ता हार ॥ रघुकुल मंडन रामलला ॥१॥ जननी उबटि न्हवाय के मनि भूखन सज लिये गोद। पोढाये प्रभु पालने सिसु निरखि बदन मन मोद ॥ दसरथनंदन रामलला ॥ २ ॥ सीस मोर की चंद्रिका झलकत रतन मनि जोत। नील कमल मानों जलद से उपमा

कों लघुमति होत ॥ मात-सुकृत फल रामलला ॥ ३ ॥ लघु-लघु लोहित ललित है पद पान अधर एक रंग । के विरियाँ छवि कहि न सके नख-सिख सुंदर सब अंग ॥ गुनिजन रंजन रामलला ॥ ४ ॥ लोयन नीर सरोज से भ्रु व पर मसि विंदु विराज । मानो विधु मुख छवि अमी अंकुर छवि राखी रसराज ॥ पुरंजन रंजन रामलला ॥ ५ ॥ घूंघरवारी अलका-वलि से लटक ललित लिलार । मानो उडुगन विधु मिलन कों चले तिमिर विडार ॥ सहज सुहावनो रामलला ॥ ६ ॥ पग नूपुर कटि किंकिनी कर कंकन पहोंची मंजुल । केहरी नख अद्भुत वने मानो मनसिज मनि गज गंजुल ॥ सोभा सागर रामलला ॥ ७ ॥ देख खिलौना किलकहीं पद पान विलोचन लोल । विचित्र विहंग अलि ज्यों सुखसागर करत कलोल ॥ भक्त कल्पतरु रामलला ॥ ८ ॥ मोती जायो सीप में अदिती जायो युग भान । रघुपति जायो कौसल्या गुनसागर रूप निधान ॥ भवन विभूपन रामलला ॥ ९ ॥ राम प्रगट जव ते भये गये सब असंगल मूल । मित्र मुदित अरि रुदित हो नित वीरन के चित सूल ॥ भव-भय भंजन राम-लला ॥ १० ॥ वाल वोलि विनु अर्थ के सुन देत पदारथ चारि । मानो इन वचन तें भये सुरतरु तल्प त्रिपुरारि ॥ नाम कामधुक रामलला ॥ ११ ॥ सखी सुमित्रा वार हीं मनि भूखन वसन विभाग । मधुर-मधुर मिलि भुला-वहीं गावें उमगि अनुराग ॥ है जू मंगल रामलला ॥ १२ ॥ अनुज सखा सब संग लिये खेलन जैहैं चोगान । लंका खलभल पर गई सुर-पुर वाजे निसान ॥ रिपु दल गंजन रामलला ॥ १३ ॥ राम अहेडे चढ़ गये गजरथ वाजे समार । दसकंधर उर धुकधुकी अव जिनि आये द्वार ॥ अरि करि केहरि रामलला ॥ १४ ॥ गीत सुमित्रा सखियन के सुर सुनी मन अनु-कूल । दे असीस जैं-जैं कहे सो हरखे वरखे फूल ॥ सुर सुखदायक राम-लला ॥ १५ ॥ वाल चरित्र भान चंद्रमा यह सोडस कला निधान । चित्त

निगमादिक गावें सोई सुत कौसल्या जाहिं ॥ ३ ॥ देत असीस सूत मागध-जन पुर-वासी नर नारी। कौसल्यानंदन के ऊपर तन-मन डारत वारी ॥ ॥ ४ ॥ ❀८११❀ राग देवगंधार ❀ राम जनम मानत नंदराय । प्रथम फुलेल उबटनो सोंधो यह बिधि लाल न्हवाय ॥ १ ॥ रंग केसरी बागो कुल ही आभूखन पहेराय ! सबकों व्रत यह लरिका ताते बेगे लियो जिमाय ॥ २ ॥ जन्म समे पंचामृत विधि सों देव न्हवावत गाय। चरचत पीतांबर उढाय कैं फूलमाल पहेराय ॥ ३ ॥ भोग लगाय आरती वारत बाजन बहोत बजाय । दोउ कर जोरि बलैया लै पुनि 'द्वारकेस' बलि जाय ॥४॥❀८१२❀ ❀ राग बिलावल ❀ सब सुख चाह रही है राम की, देख रूप की रास। ज्यों मसि के अच्छर कागद पर टारे टरत नहीं ॥ १ ॥ अधर कपोल सुभग नासा पर कनक कली सी सही। जहिं-जहिं मन अटक्यो जाको रहि गयो तहिं ही तहीं ॥२॥ बैठे जनक भुवन में रघुबर संग सीता दुलही। 'तुलसी' मन हुलसी पुर नारिन विविध असीस दई ॥३॥ ❀८१३❀ राग बिलावल ❀ श्री रघुनाथ पालने झूले कौसल्या गुन गावे हो। बलि अवतार देव मुनि बंदित राजिवलोचन भावे हो ॥१॥ राजा दसरथ पलना गढायो नव चंदन को साज । हीरा जटित पाट की डोरी रत्न जराये बाज ॥२॥ एते चरन कमल कर राते नील जलद तन सोहे। मृगमद तिलक अलक घुँघरारी मृदुल हास मन मोहे ॥ ३ ॥ घर घर उत्सव चारु अयोध्या राघव जनम निवास। गावत सुनत लोक त्रैपावन बलि 'परमानन्ददास' ॥ ४ ॥ ❀ ८१४ ❀ ❀ राग आसावरी ❀ कनक रत्न मनि पालनो रच्यो अमर सुभद्वार । विविध खिलौना किंकिनी लागे मंजुल मुक्ता हार ॥ रघुकुल मंडन रामलला ॥१॥ जननी उबटि न्हवाय के मनि भूखन सज लिये गोद। पोढाये प्रभु पालने सिसु निरखि बदन मन मोद ॥ दसरथनंदन रामलला ॥ २ ॥ सीस मोर की चंद्रिका झलकत रतन मनि जोत। नील कमल मानों जलद से उपमा

प्रगट भये रघुराई ॥१॥ जात कर्म दसरथ नृप कीनो अगनित धेनु दिवाय। गज तुरंग कंचन मनिभूखन पावस ऋतु मानो वरषाय ॥ २ ॥ देत असीस सकल नर नारी चिरजियो सतभाय। 'तुलसीदास' आस पूरन भई रघुकुल प्रगटे आय ॥ ३ ॥ ❀ ८१६ ❀ राग विलावल❀आज महा मंगल कोसलपुर सुन नृपके सुत चार भये। सदन-सदन सोहिलो सुहायो नभ और नगर निसान हये ॥ १ ॥ अतिसुख वेग वोल सुरगुरु मुनि भूपति भीतर भवन गये। जात-कर्म कर कनक बसन मनि भूषन सुरभी समूह दये ॥ २ ॥ दधि अच्छत फल फूल दूव नव युवतिन भरि-भरि थार लये। गावत चली भीर भई वीथन वंदन मांग सिंदूर दये ॥ ३ ॥ कनक कलस और ध्वजा पताका विच-विच वंदनवार नये। उडत गुलाल अरगजा छिरकत सकल लोक इक रंग रये ॥४॥ सज-सज साज अमर किन्नर मुनि जान समागम गगन ठये। नृत्यत देव अप्सरा मुदित मन पुनि-पुनि वरखत कुसुम चये ॥ ५ ॥ अति आनंद-मगन पुरवासी देत सवन मंदिर रितये। 'तुलसीदास' पुनि भरेहि देखियत राम कृपा चितवन चितये ॥ ६ ॥ ❀८२०❀ राग सारंग❀ आज सखी रघुनंदन जाये। सुंदर रूप नयन भरि देखों गावत मंगलचार वधाये ॥१॥ परम कौतूहल नगर अयोध्या घर-घर मोतिन चोक पुराये। द्वार-द्वार मारग गरियारे तोरन कंचन कलस धराये ॥ २ ॥ पूरन सकल सनातन कहियत जे हरि वेद-पुरानन गाये। महा भाग्य राजा दसरथ को जिहिं घर रघुपति जनम ही आये ॥ ३ ॥ ब्रह्म घोप मिलि करत वेद ध्वनि जय-जय दुंदुभी देव वजाये। गुनि गंधर्व चारन यस वोले भुवन चतुर्दस आनंद पाये ॥ ४ ॥ पान फूल फल चोवा चंदन वहु उपहार लोक ले आये। 'परमानन्द' प्रभु मन मोहन कों कौसल्या जननी गोद खिलाये ॥५॥❀८२१❀ राग सारंग ❀ आज अयोध्या प्रगटे राम। दसरथ वंस उदे कुल दीपक सिव विरञ्च मुनि भयो विश्राम ॥१॥ घर-घर तोरन वंदनमाला मोतिन चोक पुरे निज धाम।

चकोर 'तुलसी' कियो पियो अमीरस पान ॥ तुलसी की जीवन रामलला ॥ ❀८१५❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ भोजन लावरी तू मैया। हम कब के तोकूं टेरत हैं भूखे चारों भैया ॥ १ ॥ सुनत बचन कौसल्या आई लिये हाथ मलैया। पूरी लै ताती और बूरो दोरि सुमित्रा आई ॥ २ ॥ कैकई दधि ओदन ले आई मीठे बचन सुनैया। हम जानी तुम राज सभा में बैठे हो रघुरैया ॥ ३ ॥ जेंमत राम भरत और लछमन और सत्रुहन भैया। फूंक फूंक सीरो करि-करिके पीवत ताती घैया॥ ४ ॥ जल अचवाय कपूर सुवा-सित लागत परम सुहैया। 'तुलसीदास'प्रभु सुख नैनन निरखत मैया लेत बलैया ॥ ५ ॥ ❀ ८१६ ❀ जन्म पंचामृत समय ❀ राग सारंग ❀ प्रगट भये हैं राम, माई। हत्या तीन गई दसरथ की सुनत मनोहर नाम ॥ १ ॥ बंदीजन सब कौतुक भूलै राघव जनम निधान। हरखे लोग सबै भुवपुर के युवती जन करत हैं गान ॥१॥ जय जय कार भयो वसुधा पर संतन मन अभिराम। 'परमानंददास' बलहारी चरन कमल विश्राम ॥३॥ ❀८१७❀उत्सव भोग आये❀ ❀राग विलावल❀ नौमी के दिन नौबत बाजे कौसल्या सुत जायो। सात घरी दिन उदित भयो है सब सखियन मंगल गायो ॥ १ ॥ कांप्यो सिंधु कंगूरा ढ़रियो लंका आगम जनायो। सब लंका में सोक परयो है राजदेव गृह आयो ॥२॥ दसरथ मन आनंद भयो है वंस हमारे गृह आयो। विप्र बुलाय सोधना कीनी अभय भंडार लुटायो ॥३॥ कंचन के बहु कलस बनाये मोतिन चौक पुराये। घरी एक निगम सोच हिय भाख्यो रामचन्द्र गृह आये ॥४॥ गृह–गृह ते सब सखी बुलाई आनंद मंगल गाए। दसरथराय दोऊ आंगन में आदर कर बैठाये॥५॥ दसरथ उठ बजार पधारे सारी सुरंग बस्यायो। जो जाके जैसो मन भायो तेसो ताहि पहरायो ॥६॥ पाट पटंबर खासा झीनो जैसो जाहि मन भायो। 'परमानंददास' कहां लों बरनों तीन लोक यस छायो ॥७॥ ❀८१८❀राग सारंग❀ कौसलपुर में बजत बधाई। सुंदर सुत जायो कौसल्या

पिता सों वात कुंवर कोमल गात कठिन प्रतिज्ञा कीन तोरन धनुक की। 'नंददास' प्रभु जानि तोरयो है पिनाक तानि वांस की धुनैया जैसे वालक तनक की ॥२॥❀८२४❀ शृंगार ओसारा में ❀ राग विलावल ❀ सुनु सुत एक कथा कहों प्यारी। कमल नयन मन आनंद उपज्यो रसिक सिरोमनि देत हुंकारी ॥१॥ नगर एक रमनीक अजुध्या वड़े महल जहाँ अगम अटारी। वहुत गली वीच विराजत भाँत-भाँत सव हाट वजारी ॥२॥ तहाँ नृपति दसरथ रघुवंसी जाकी नारी तीन सुखकारी। कौसल्या कैकई सुमित्रा तिनके जनम भये सुत चारी ॥ ३ ॥ चार पुत्र राजा के प्रगटे तिनमें एक राम व्रत-धारी। जनक धनुप-पन कियो जानकी त्रिभुवन के सव नृपति हंकारी ॥ ४ ॥ राज-पुत्र दोऊ ऋषि लं आये सुनत जनक-पन तहाँ पग धारी। धनुस तोरि सुख मोरि नृपति को जनक-सुता तिन तव वरी नारी ॥ ५ ॥ पग अँगुठा जव पोर नृपति के तव केकई सुख मेलि निवारी। वचन मांगि नृप सों यह लीनो रघुपति के अभिषेक संमारी ॥ ६ ॥ तात वचन सुनु तज्यो राज जिन भ्राता घरनी सहित वनचारी। उनके जात पिता तन त्याग्यो अति व्याकुल करि जीव विसारी ॥ ७ ॥ चित्रकूट गये भरत मिलन वन पग-पांवरी दे करी कृपा री। जुवती हेत कपट मृग मारयो राजीवलोचन गर्व-प्रहारी ॥ ८ ॥ रावन हरन कियो सीता को सुन करुनामय नींद निवारी। 'सूरस्याम' तव रटत चांप कों लछमन देहो जननी भ्रम भारी ॥ ९ ॥ ❀ ८२५ ❀ ❀ राग विलावल ❀ वात कहूँ एक हित की तोसों। आरि करे जिनि सुन मनमोहन देहु हुँकारी कही-कही मोसों ॥ १ ॥ सूरज वंस भयो नृप दसरथ तिनके पुत्र भये हैं चार। राम भरत लछमन सत्रुहन खेलत गृह आँगन के द्वार ॥ २ ॥ विस्वामित्र-मख रच्छन करिकै अरु तारी गौतम की नारी। मिथिला जाइ सिव धनुस तोरि तव जनकसुता माला उर डारी ॥३॥ करि विवाह घर कों जव आये भरत गये मातुल के धाम। नृप मन सोचि कह्यो

'परमानंददास' तिहिं औसर बंदीजन के पूरत काम ॥ २ ॥ ❀ ८२२ ❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ आज अयोध्या माँझ वधाई। दसरथ सदन चैत सुदि नौमी दिन प्रगटे संतन सुखदाई ॥१॥ बडभागिनी कौसल्या रानी जाकी कूख भये रघुराई। अमरलोक यह लोगन गावत उर आनंद न समाई ॥२॥ सत्यलोक संताप हरन भू भार उतारन आयो माई। मर्यादा पुरुषोत्तम लीला प्रमुदित 'गोकुलचंद' गाई ॥ ३ ॥ ❀ ८२३ ❀ राग जेतश्री ❀ फूले फिरत अयोध्यावासी। सुंदर सुत जायो कौसल्या रामचंद्र सुखरासी ॥ १ ॥ द्वारन बंदनवार साथिये मोतिन चौक पुराये। नाचत गावत देत बधाई मानो घर-घर सुत जाये ॥ २ ॥ गली-गली गज-बाजि जहाँ-तहाँ हकला दिये तबेले। दान बहुत याचक जन थोरे कापें जात संकेले ॥ ३ ॥ दसरथ भूप भंडार मुक्त किये बंदी-अभर भरे। सकटसलिता हि सोहे मालन ठौर-ठौर धरे ॥४॥ संत कमल मुख देखन कारन बिरद उद्योत करयो। मुदित देव दुंदुभी बजावत निसिचर तिमिर हरयो ॥५॥ देत असीस सकल नरनारी चिरजीयो रघुवीर। 'अग्रदास' आनंद अखिल पर मिटी ताप तन पीर ॥ ६ ॥ ❀ ८२४ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ आनंद आज नृपति दसरथ घर। प्रगट भये कौसल्यानंदन श्रवन सुनत सुख सुधा उमगि उर ॥ १ ॥ ज्यों रवि उदै विनासैं तम कों जनम प्रकास असुर त्रासे डर। ऋषि मुख वेद मधुर धुनि उचरत दान विधान करत इहिं औसर ॥ २ ॥ जो जाके मन जेसी इच्छा देत सहज सुत हित अपने कर। परम पवित्र अयोध्या वासी रघुकुल वृन्द सहित निर्मल नर ॥३॥ परम उछाह सबही कहुंके सिव बिरंचि सेस हरखत हर। 'सूरदास' प्रभु संत सहायक अद्भुत रूप धरयो सारंगधर ॥ ४ ॥ ❀ ८२५ ❀ चैत्र सुदी १० ❀ ❀मंगला दर्शन❀ राग विभास ❀ फूलन की माला हाथ फूली फिरें आली साथ ऊझकि झरोखे झाँके नन्दिनीजनक की। पियाजू की देखि सोभा सियाजू को मन लोभा इकटक ठाढ़ी मानो पूतरी कनक की ॥१॥ को कहे

गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई। वदन विलोकि बलैया ले ले देति असीस सुहाई ॥ ५ ॥ मंगल कलस निकट दीपावलि ठांय-ठांय देखि मन भूल्यो। मानों आगम नंद सुवन के सुवन फूल व्रज फूल्यो ॥ ६ ॥ ता पाछें गन गोप्र ओप सों आये अति सै सोहें। परमानंद कंद रस भीने निकर पुरंदर को है ॥ ७ ॥ आनंद घन ज्यों गाजत राजत बाजत दुंदुभी भेरी ॥ राग रागिनी गावत हरखत बरखत सुख की ढेरी ॥८॥ परम धाम जग धाम स्याम अभिराम श्रीगोकुल आये । मिटि गये द्वंद 'नंददासन' के भये मनोरथ भाये ॥९॥ ❀ ८३१ ❀

श्री महाप्रभुजी की वधाई में मुकुट धरै तब—

❀ सिंगार असरा में ❀ चौकड़ा ❀ धनि धनि माधव मास एकादसी। प्रगटे श्रीवल्लभ सुखरासी ॥ श्री गोकुल गोवर्द्धन वासी । यमुना कुंज निवासी ॥ध्रुव०॥ छंद–कुंजन कुंज निवास यमुना पुलिन वेनु वजाइयो। अकुलाय नव व्रज सुंदरी नव सुखद रास वनाइयो॥ सात दिन गिरि धरयो कमल कर गर्व सुरपति हरनजू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ १ ॥ श्री लछमन गृह नव निधि आई। श्रीवल्लभ द्विज रूप कहाई ॥ जायो पूत इलम्मा माई । हरखत फूली अंग न समाई॥ छंद—फूली अंग न समाय जननी करत आनंद वधावने। गोरस कीच भई अजिर में दूध दधि सिर नावने ॥ पहरि भूपन मुदित सहचरी वसन नाना वरनजू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ २ ॥ श्रीलछमन गृह होत वधाई। श्रवन सुनत व्रज-वधू उठि धाई ॥ सहज सिंगार किये मन भाये। वोलत जय-जय सब्द सुनाये ॥ छंद—जय जय सब्द सुनाय वोलत गीत झूमक गाव ही। थार कंचन हाथ लीने जुर-जुर झुंडन आव ही ॥ मुदित दे कर तारि नाचत वाजत नूपुर चरन जू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ ३ ॥ श्री लछमन-गृह नव निधि आई। अद्भुत सोभा वरनी न जाई ॥ कंचन कलस ध्वजा फहराई। दीपदान कर

गुरु आगे वेगहिं राज देहु श्रीराम ॥४॥ कैकेई बचन पिता की आज्ञा चले दंडक तापस अनुहारी। लछमन सहित संग जानकी डोलत बनन चाप कर धारी ॥५॥ पंचवटी बिचरत तिय के संग रावन हरन कियो तिहिकाल। इतनो सुनत 'सूर' के स्वामी चौंक कह्यो दै धनुस उताल ॥६॥ ❀८२६❀

श्रीमहाप्रभु जी के उत्सव की बधाई (चैत्र सुदी ११)

❀ राग देवगंधार ❀ भयो जगती पर जय-जयकार। अधम उद्धारन करुना-सागर प्रगटे अग्नि अवतार ॥ १ ॥ गृह-गृह तें सुंदरि सब आईं मोतिन भरि-भरि थार। निरखि कमल-मुख प्राननाथ को तन मन धन बलिहार ॥२॥ करत वेद ध्वनि सकल महामुनि सुंदर दृष्टि रसाल। विविध दान प्रेम सों दीने श्री लछमन परम उदार ॥ ३ ॥ करुनासिंधु सकल सुख-दायक सकल सृष्टि आधार। अपने जीव कृतारथ कीने दस विधि भक्ति आधार ॥ ४ ॥ परम आनंद बढत त्रिभुवन में मुदित फिरत नर नार। 'हरिजीवन' प्रभु यज्ञ-पुरुष श्री लछमन सुत अवतार ॥ ५ ॥ ❀ ८२७ ❀

❀ राग देवगंधार ❀ जय श्री लछमनराजकुमार। श्री वृंदावन बदन इंदु तें प्रगटित भाव सिंगार ॥ १ ॥ आनंद रूप स्वरूप आनंदमय आनंदनिधि आनंदसार। आनंद दान देत आनंद को आनंद इलंमागार ॥ २ ॥ 'दास गोपाल' कहाँ लों बरनों मनोरथ पूरे नंददुलार। श्रीवल्लभनंदन उभय आनंद कर भक्तन भाव विचार ॥३॥ ❀८३०❀ राग आसावरी ❀ जुरि चली हैं बधावन नंदमहर घर सुंदर ब्रज की बाला। कंचन थार हार चंचल छबि कहि न परत तिहिं काला ॥ १ ॥ डहडहे मुख कुमकुम रंग रंजित राजत रस के ऐना। कंजन पर खेलत मानों खंजन अंजन युत बने नैना ॥ २ ॥ दमकत कंठ पदिक मनि कुंडल नवल प्रेम रंग बोरी। आतुर गति मानों चंद उदै भयो धावत तृषित चकोरी ॥ ३ ॥ खसि-खसि परत सुमन सीसन तें उपमा कहा बखानों। चरन चलनि पर रीझि चिकुर वर बरखत फूलन मानों॥४॥

श्री भागवत सुधानिधि मथिकें वानी निगम भनी। लीला सृष्टि सिंधु सव पूरित दैवी निज अपनी ॥ ३ ॥ श्रीविट्ठल प्रगटित परमानंद भजन प्रचार वनी। श्रीयमुना पुलिन केलि वृंदावन 'गिरिधर' गुनित गुनी ॥४॥❁८३४❁

❁ राजभोग दर्शन ❁ राग सारंग ❁ ऐसी वंसी वाजी वन-घन में व्यापि रही ध्वनि महा मुनिन की समाधि लागी। भयो ब्रह्मनाद उठत अहलाद जहां-तहां व्रज-घोख-रत्न वृंद भये सव त्यागी ॥ १ ॥ रास आदि अनेक लीला रस भाव पूरित मूरति मुखारविंद छवि धरें विरह अनंग जागी। तव वेनु-नाद द्वार अव श्रीलछमनभटभूप-कुमार दैवोद्धार अर्थ त्यागी॥२॥❁८३५❁

❁ भोग दर्शन मे ❁ चौकड़ा ❁ माधव मासे भर वैसाखे, श्रीवल्लभ हरि जनम लिया। श्रीलछमन नंदना, त्रिभुवन वंदना, भक्तिमारग जिन प्रगट किया ॥ ॥ध्रुव०॥ छंद—प्रगटिया जिन भक्तिमारग वंध जीव छुडाइया। संसार ते जे मुक्त कीने सरन जे जन आइया ॥ अभय दान निसान मेल्या चित्त जिन हरिकों दिया। 'गोपालदास' अनंत लीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ १ ॥ दाता मुक्ता और न दूजा, साँचा त्रिभुवनराय वहां। विरह निवारना, भव जल तारना, देखत उपजे चाव उहां ॥ छंद—देखत हरिकों चाव उपजे सकल दुःख निवार ही। जाको नाम सुमिरे जरे पातक करजोर निगम पुकार ही ॥ पतित पावन विरद जाको सील माधौ कर मया। 'गोपालदास' अनंत लीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥२॥ ये व्रजवालियां, गोपगुवालियां, ये गोकुल के लोग वहां। एकन क्रीडा हरिमुख व्रीडा हरिसेवा रस भोग वहां ॥छंद—रस भोग और संजोग मिलियो हिये अंतर रम रह्या। तुव वालचरित अनंत लीला दान दे सव गुन कह्या ॥ तेरी भली मूरति देखि सूरत राधिका अंचल गह्या। 'गोपालदास' अनंत लीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥३॥ पूरन व्रह्म सनातन माधो, कलि केसव अवतार वहां। जिन जैसा देख्या तिन तैसा पेख्या भक्तन प्रान आधार वहां ॥ छंद—भक्तन प्रान आधार श्रीवल्लभ

जुगत बनाई ॥ छंद—बनाई जुगत धरि दीप माला जोत फैली गगन जू। धेनु-धन गृह वसन भूषन देत कंचन नगन जू ॥ मुदित ह्वै नरनारि जुर देत असीस चले घरन जू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ ४ ॥ ❀ ८३२ ❀ चौकड़ा ❀ श्री लछमन- गृह बधाये। श्री वल्लभ भूतल आये ॥ भक्ति प्रकास विलासी। सुंदर वदन मधुर मृदुहासी ॥ध्रुव०॥ छंद—नैन नीके बैन मीठे रूप रंग सुहावनो। बाल चरित विनोद नीके प्रानपति जिय भावनो ॥ श्री वल्लभ रस ही खेले रस ही बोले रस ही रस में हुलस ही। धनि माय सुहाग भागिन गोद लै सुत बिलसही ॥ १ ॥ पूरब दिसा निधि आई। श्रीगोकुल वृंदावन छाई ॥ श्री गोवर्द्धनधारी। ब्रज में प्रगटे रास बिहारी ॥ छंद—बुलाइ भक्त विलास कीनो विविध भाँति बनाय के। नंद घर की सुभग लीला प्रगट जनन दिखाई के ॥ मेटि सब दुख किये सब सुख सरन लीने तानि के। बलि जाय 'चरनदास' दासी भाग्य अपने मानिके ॥२॥ श्रीवल्लभ प्रीतम प्यारे। वल्लभ जग में जगत उज्यारे ॥ दैवी जीवन के हितकारी। प्रेम भक्ति के जय जय कारी ॥ छंद— प्रेम गावें प्रेम भावें प्रेम में अनुदिन रहें। प्रेम स्नेही प्रेम देही प्रेम बानी नित्य कहें ॥ प्रेम सेवा करें करावें नंद सुत हृदै रहें। वल्लभी 'निजदासदासी' सुख समूह कहा कहें ॥ ३ ॥ श्रीवल्लभ के गुनगाऊँ। श्रीवल्लभ चरन हृदय में लाऊं ॥ मूरति हिय में बसाऊं। श्री वल्लभ जू की हौं बलि-बलि जाऊं ॥ छंद—बलि जाऊं वल्लभनाथ प्रभु की सग्न वल्लभ के रहूँ। नैन वल्लभ चैन वल्लभ बैन वल्लभ के कहूं ॥ वल्लभ मुख की माधुरी हों निरखि जिय आनंद लहों बलि जाय 'चरन' निजदास ह्वै के सरन वल्लभ के रहों ॥४॥ ❀८३३❀ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ जय श्रीवल्लभ देव धनी। रास विलास करत गोवर्द्धन मूरति ललित बनी ॥१॥ पुरुषोत्तम मुख कमल विकासित रसिकन मुकुट मनी। बरन निवेदन दै निजजन कों कृपा करी जु घनी ॥२॥

दीनो ॥ १ ॥ मधुर गिरिधरन आदि सस तनु वेनुनाद ससरंभ्रन मधुर रूप लीनो । मधुर फल फलित अति ललित 'पद्मनाभ' प्रभु अलि गावत सरस रंग भीनो ॥२॥ ❀८३६❀ सेहरा धरे तब❀ शृंगार ओसरा में ❀राग बिलावल ❀

मूल पुरुष नारायन यज्ञ । श्रुति अवतार भये सर्वज्ञ ॥ साखा तैत्तरीय गोत्र भारद्वाज । तैलंग कुल उदित द्विजराज ॥ छंद—द्विजराज तें हरि आय प्रगटे सोम-यज्ञ कियो जवें । कुंड तें हरि कही जु वानी जन्म कुल तुम्हरे अवें ॥ चकित ततच्छन भये सब जन ऐसी अब लों न भई कवें । सुनत हि मन हरख कीनो धन्य-धन्य कह्यो सवें ॥ १ ॥ तिनके पुत्र गंगाधर । तिनके गनपति सुत वल्लभ वर ॥ श्री लछमन भट अनुभव देव । सुद्ध सत्व ज्यों श्री वसुदेव ॥ छंद—सत्व गुन विद्या पयोनिधि विसद कीरति प्रगटई । गाम कांकरवार में रही जाति सब हरखित भई ॥ परव पर सह कुटुम्ब लेकें चले प्राग कों साथ लै । स्नानदान दिवाय द्विज कों चले कासी पांत लै ॥ २ ॥ कछुक दिन रहिकें चले सब दच्छन । आनंदित तनु सगुन सुलच्छन ॥ चंपारन्य महीं जब आये । एलम्मागारू गर्भ स्रवित जताये ॥ छंद—स्राव जानि चले तहां ते नगर चोडा मे वसे । जगत में आनंद फैल्यो दसो दिसा मानों हँसे ॥ चैन है सुनि चले कासी फेरि वही वन आवहीं । अग्नि चहुँधा मधि वालक देखि सन्मुख धावहीं ॥ ३ ॥ मारग दियो जानि जिय माता । लिये उछंग मोहि दियो है विधाता ॥ तात सुनत दौरि कंठ लगाये । तिहिं छिन मंगल होत वधाये ॥ छंद—मंगल वधायो होत तिहुंपुर देव दुंदुभी वाजहीं । जोतसी कों लग्न पूछत प्रथम समयो साध ही ॥ धन्य संवत पंद्रश पेंतीस माधव मास है। कृष्ण एकादसी श्रीवल्लभ प्रगट वदन विलास है ॥४॥ श्री वल्लभ कों ले आये कासी । सुंदर रूप नयन सुखरासी ॥ सात वरस उपवीत धराये । तब तें विद्या पढ़न पठाये ॥ छंद—पढें चारों वेद अरु खट सास्त्र महिना चार में ।

हिये अंतर राखिया। रामकृष्ण मुकुंद माधौ सदा जिह्वा भाखिया ॥ गोपीनाथ अनाथ बंधु वेद मैं करुना मया। 'गोपालदास' अनंन्न लीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ ४ ॥ ❀८३६❀ सेनभोग आये ❀राग ❀ श्रीवल्लभ मधुराकृति मेरे। सदा बसौ मन यह जीवन धन सबहिन सों जु कहत हों टेरे ॥ १ ॥ मधुर बचन अरु नयन मधुर जुग मधुर भ्रौंह अलकन की पांत। मधुर माल अरु तिलक मधुर अति मधुर नासिका कहीय न जात ॥ २ ॥ अधर मधुर रस रूप मधुर छबि मधुर-मधुर दोऊ ललित कपोल। श्रवन मधुर कुंडल की झलकन मधुर मकर दोऊ करत कलोल ॥ ३ ॥ मधुर कटाच्छ कृपा रस पूरन मधुर मनोहर बचन विलास। मधुर उगार देत दासन कों मधुर बिराजत मुख मृदु हास ॥ ४ ॥ मधुर कंठ आभूषन भूषित मधुर उर-स्थल रूप समाज। अति विसाल जानु अवलंबित मधुर बाहु परिरंभन काज ॥ ५ ॥ मधुर उदर कटि मधुर जानु जुग मधुर चरन गति सब सुख रास। मधुर चरन की रेनु निरंतर जनम-जनम मांगत 'हरिदास' ॥ ६ ॥ ❀८३७❀ राग बिहाग ❀ प्रगट ह्वै मारग रीति बताई। परमानंद स्वरूप कृपानिधि श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ १ ॥ करि सिंगार गिरिधरनलाल कों जब कर बेनु गहाई। लै दर्पन सन्मुख ठाडे ह्वै निरखि-निरखि मुसिकाई ॥२॥ विविध भांति सामग्री हरि कों करि मनुहार लिवाई। जल अचवाय सुगंध सहित मुख बीरी पान खवाई ॥ ३ ॥ करि आरती अनौसर पट दै बैठे निज गृह आई। भोजन करि विश्राम छिनक ले निज मंडली जु बुलाई ॥ ४ ॥ करत कृपा निज दैवी जीवन पर श्रीमुख बचन सुनाई। बेनु गीत पुनि युगलगीत की रस बरखा बरखाई ॥ ५ ॥ सेवा रीति प्रीति व्रजजन की जनहित जग प्रगटाई। 'दास' सरन 'हरि' वागधीस की चरन रेनु निधि पाई ॥ ६ ॥ ❀८३८❀ शयन दर्शन ❀ राग बिहाग ❀ मधुर ब्रज देस बसि मधुर कीनों। मधुर गोकुल गाम मधुर वल्लभ नाम मधुर विट्ठल भजनदान

संग दमलादिक हते तिन पै कृपा-रस बरखहीं ॥१०॥ एक समै चिंता चित आई। दैवी किहिं विधि जानी जाई॥ आसुरी सों सब मिलित सदाई। भिन्न होय सो कौन उपाई॥ छंद—भिन्न कों जब चित्त धरे तब प्रभु पधारे तिहिं समे। मधुर रूप अनंग मोहित कहत सुध कीने हमें॥ करो अब तें ब्रह्म को संबंध दैवी-सृष्टि सों। पांच दोष न रहे ताके निवेदन करो वृष्टि सों ॥११॥ वचन सुनी हरखे श्रीवल्लभ। यह आज्ञा ते परम अति सुलभ॥ कंठ पवित्रा लै पहराये। मिश्री भोग धरी मन भाये॥ छंद—भयो भायो चित्त कौ तब पुष्टिपंथ कों अनुसरे। सरन जे आवत निरंतर काल भय तें ना डरे॥ प्रगट सब लीला दिखावत नंदनंदन जे करी। अवनि पर पद पद्म राखी परिक्रमा मिष उर धरी॥ १२ ॥ फेर पंढरपुर जब आये। श्री विट्ठलनाथ कही मन भाये॥ करि विवाह बहु रूप दिखावो। मेरो नाम सुवन कों जु धरावो॥ छंद—धरो चित्त में बात यह कासी विवाह जु होयगो। मैं कह्यो द्विज आय बिनती करे चरन समोयगो॥ आय वहाँ ते विवाह कीनो अधिक मंगल तब भयो। नाम धरयो श्री महालक्ष्मी देखि. जोरी दुख गयो॥ १३ ॥ परिक्रमा तीजी चित आई। निकसि चले श्रीवल्लभ राई॥ झारखंड में प्रभु ने जताई। अबके मोहि मिलो मन भाई॥ छंद—मिलैंगे हरिदास पें जहाँ तीन दमन कहावहीं। इंद्रनाग जू देवदमन सो मेरो नाम जतावहीं॥ फेरि के जब ब्रज पधारे पाँच सेवक संग हैं। सद्दु है आन्योर में जहाँ द्वार पे ठाडे रहैं॥ १४ ॥ सद्दु कहे स्वामी कछू खैहैं। मेघन कही सेवक को लेहैं॥ इतने प्रभु गिरि ऊपर बोले। लाइ नरो दूध रहे अनबोले॥ छंद—बोली नरो यह पाहुने आये तिनहीं कों बैठारिये। प्रभु कहत मोहि बेर लागत भली चित्त विचारिये॥ लै गई पय प्याय आई देख श्रीवल्लभ कह्यो। बच्यो होय कछु हमें दीजे बोल पहिलोहि गह्यो ॥१५॥ देखि नरो बोली हौं वारी। नाम दीजिये हो गर्व-प्रहारी॥ नाम दीनो पूछी

तात कों अचरज भयो यह कौन रूप विचार में ॥ नींद आई कह्यो प्रभु संदेह क्यों तुम करत हो। प्रथम बानी भई है सो प्रगट जानो अब भयो ॥५॥ जाग परि कह्यो पत्नी आगे । ये हैं पूरन ब्रह्म अनुरागे ॥ श्री मुख वचन कहे श्री वल्लभ । मायामत खंडन भये सुलभ ॥ छंद—सुलभ तें दच्छिन पधारे ग्यारह बरस को बपु धरे । देख मामा हरख के आदर कियो आवो घरें ॥ विद्यानगर कृष्णदेव राजा बहुत मतही जहाँ मिले । जीत के कनकाभिषेक सों पढे आवत यहाँ पहले ॥ ६ ॥ रामानुज अरु मध्वाचारज । विष्णुस्वामि निमादित्य हरि भज ॥ संकर में अनुसरत और मत । युक्ति बल तें आज सबल अति ॥ छंद—सबल सुन आप ही पधारे द्वार पें पहुँचे जबे । भृत्य दौरी प्रताप बरन्यो राय आवो इहाँ सबे ॥ राय आय प्रनाम कीनो सभा मेंजु पधारिये । सुनहु बिनती कृपासागर दुष्ट मतहि विडारिये ॥७॥ गजगति चाल चले श्री वल्लभ । इनकी कृपा भये सब सुलभ ॥ रवि के उदय किरन ज्योंबाढी । तैसी सभा पांत उठ ठाडी ॥ छंद—ठाढ़े सब स्तुति करें जब, कियो मायामत खंडन । सब्द जै जै होत सब मुख, भक्ति पथ भुव मंडन ॥ स्तुति करें द्विज हाथ जोरें राय मस्तक नाव ही । परम मंगल होत हैं कनकाभिषेक कराव ही ॥ ८ ॥ पाछे जलसों न्हाय बिराजे बिनती करी राये मन साजे । द्रब्य सबै अंगीकृत करिये । प्रभु बोले यह नाहिंन ग्रहिये ॥ छंद—ग्रहिए नाहिन स्नान जलवत बाँट सबकों दीजिये । बांटि दीनो करी बिनती मोहि सरन जू लीजिये ॥ कृपा करिके सरन लीनो थार भरी मोहोरे धरयो । सप्त लेके कह्यो दैवी द्रव्य अंगीकृत करयो ॥९॥ तहाँ तें पंढरपुर जु सिधारे । श्रीविट्ठलनाथ मिलन कों जु पधारे ॥ भीमरथी के पार मिले जब । दोऊ तन में आनंद बढ्यो तब ॥ छंद—बढ्यो आनंद करी बिनती आप कों यह श्रम भयो । कही श्रीविट्ठलनाथ जी ने मित्रता पथ प्रगटियो ॥ फेरि श्री गोकुल पधारे निरख यमुना हरखहीं।

छंद—हेतु निज अभिधान प्रगटे तात आज्ञा मानि के। तिथि कला वुध मधु छठ विमल ज्ञान वखानि के॥ श्रीयदुनाथ प्रगटे रह्यो विरहें श्री घनस्याम स्वरूप के। सह कृष्ण तेरस रविजरिच्छ सत कला श्री विट्ठल भूप के ॥२१॥ भामिनी रानी कमला वखानी। पारवती जानकी महारानी॥ कृष्णावती मिलि सातों कहाये। यह अलौकिक रूप महाये॥ छंद—महा अलौकिक अग्निकुल सब, अलौकिक अष्टछाप हैं। अलौकिक सव भक्तजन जे सरन लीने आप, हैं॥ यथा मति कछु वरनि आई जानियो यह दास है। 'श्रीद्वारकेश' निरोध माँगे यही फल की आस है॥ २२॥ ❀ ८४० ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ नंदरानी सुत जायो महरि के मंदिर वेगि चलौरी। चली आउ वह वाट साँमई जाकी ऊँची पौरी ॥१॥ सोने सींक धरो लै सथिये चंदन सों चरचौरी। वंदनवार द्वार-द्वारन प्रति वीच आम की मौरी॥ २॥ दिये महावर पाँयन चाइन नाइन लै लै दौरी। उठौ सदन ते वसन संभारौ भूषन सवे सजौरी॥ ३॥ आवौ गावौ वैठो सव मिल पूजो संकर गौरी। व्याह वधाये काज पराये विलंव न कीजै वौरी॥ ४॥ नाचत विरध तरुन अरु वालक वीच-वीच लरकौरी। चोवा चंदन वंदन दये दिये केसर खौरी॥ ५॥ सकल उछाह भयो या व्रज में भाजि गयो सव भौ री। जन 'गोविंद' वीर वलभद्र की सवहिन लागी ढौरी॥ ६॥ ❀ ८४१ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ केसर की धोती पहिरें केसरी उपरेंना ओढें तिलक मुद्रा धरि वैठें श्रीलछमन भट धाम। जन्म द्यौस जानि-जानि अद्भुत रुचि मानि-मानि नख सिख की सोभा ऊपर वारों कोटि काम॥ १॥ सुंदरताई निकाई तेज-प्रताप अतुलताई आस पास युवतीजन करत हैं गुन गान।'पद्मनाभ'प्रभु विलोकि गिरिवरधर वागधीस यह अवसर जे हुते ते महा भाग्यवान ॥२॥ ❀ ८४२ ❀ भोग संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी। ध्रु०। हेरी दै किन गाव ही भलो वन्यो है काज। रानी

वे कहाँ हैं। कहि पर्वत पर जाओ तहाँ हैं ॥ छंद–तहाँ देखे प्रानपति तब हुलसि दोऊ तन फूल हीं। उही समै सुख कहि न आवे पंगु गति मति भूलहीं ॥ हँसि कह्यो सह कुटुम्ब आवो निकट रहि सेवा करो। मानि वचन प्रमान कीनो सासरे दिस पग धरयो ॥१६॥ कछु दिन रहि संग लै आये। बसे अडेल में निज हरखाये ॥ संवत पंद्रहसैं सरसठ आयो। आसौ वदी द्वादसी सुभ गायो ॥ छंद–गायो श्री गोपीनाथ जी जब जन्म लीनो आय के। जानि बलको रूप हरखित देत दान बधाय के ॥ फेरि कै चरनाट आये कछुक दिन रहे जानि के। धन्य संवत पंद्रहा बहोतरा सुभ मानि के ॥ १७ ॥ पौष कृष्ण नौमी सुभ आई। घर-घर मंगल होत बधाई ॥ श्री विट्ठलनाथ जनम भयो सुनिके। कहत फिरत आनंद गुन गनि के ॥ छंद–आनंद बाढ्यो चहुँदिसा छबि देखि श्रीवल्लभ हँसे। बेउ कछु मुसिकाय चित में दोऊ हँसनि मेरे मन बसे ॥ तिलक मृगमद छिप्यो हरखित कहाँ लों गुन गाइए। कृपा तें उछलित निज-रस छिपत नाहीं छिपाइए ॥१८॥ श्रीगोकुल में वास सुहायो। श्रीरुक्मिनी पद्मावती पति गायो ॥ श्रीगिरवरधरन छबीलो। श्रीनवनीतप्रिय अरबीलो ॥ छंद–प्रिय श्रीमथुरेस श्रीविट्ठलेस श्रीद्वारिकेस जू। श्री गोवर्द्धनधर श्री गोकुलचंद्रमा श्रीमधुरेस जू ॥ श्री मदनमोहन अष्ट इहि विधि रमन श्रीविट्ठलनाथ के। तात को चित्त जानि सेवा विस्तरी सब साथ के ॥ १६ ॥ पंद्रह सें सत्तानु कारतिक। विमल द्वादसी मंगल नित ढिग ॥ प्रथम पुत्र प्रगटे श्रीगिरिधर। षट् गुन धर्मी धर्म धुरंधर ॥ छंद–धुरंधर ऐश्वर्य श्रीगोविंद पंचदस नन्यानवे। उर्ज सामल अष्टमी सुभ गुरु सुदिन प्रगटे जवे ॥ ऋतु वियत सिंगार आस्विन असित तेरस भ्राजहीं। श्रीबालकृष्नजी महा पराक्रमी, बसु ख सोले राजहीं ॥२०॥ कवि सह सुदि सातें गोकुल पति। यस स्वरूप माला स्थापित रति ॥ सोलह सै ग्यारह कार्तिक सित। अर्क बुध रघुनाथ श्री सहित ॥

छंद–हेतु निज अभिधान प्रगटे तात आज्ञा मानि के। तिथि कला बुध मधु छठ विमल ज्ञान बखानि के॥ श्रीयदुनाथ प्रगटे रह्यो विरहें श्री घनस्याम स्वरूप| के। सह कृष्ण तेरस रविजरिच्छ सत कला श्री विट्ठल भूप के॥२१॥ भामिनी रानी कमला बखानी। पारवती जानकी महारानी॥ कृष्णावती मिलि सातों; कहाये। यह अलौकिक रूप महाये॥ छंद–महा अलौकिक अग्निकुल सब, अलौकिक अष्टछाप हैं। अलौकिक सब भक्तजन जे सरन लीने आप, हैं॥ यथा मति कछु बरनि आई जानियो यह दास है। 'श्रीद्वारकेश' निरोध माँगे यही फल की आस है॥ २२॥ ❀ ८४० ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ नंदरानी सुत जायो महरि के मंदिर वेगि चलौरी। चली आउ वह बाट साँमई जाकी ऊँची पौरी॥१॥ सोने सींक धरौ लै सथिये चंदन सों चरचौरी। वंदनवार द्वार-द्वारन प्रति बीच आम की मौरी॥ २॥ दिये महावर पाँयन चाइन नाइन लै लै दौरी। उठौ सदन ते वसन संभारौ भूषन सवै सजौरी॥ ३॥ आवौ गावौ वैठो सब मिल पूजो संकर गौरी। व्याह बधाये काज पराये विलंब न कीजै वौरी॥ ४॥ नाचत विरध तरुन अरु बालक बीच-बीच लरकौरी। चोवा चंदन वंदन दये दिये केसर खौरी॥ ५॥ सकल उछाह भयो या व्रज में भाजि गयो सब भौ री। जन 'गोविंद' वीर बलभद्र की सबहिन लागी ढौरी॥ ६॥ ❀ ८४१ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ केसर की धोती पहिरें केसरी उपरैंना ओढें तिलक मुद्रा धरि वैठैं श्रीलछमन भट धाम। जन्म द्यौस जानि-जानि अद्भुत रुचि मानि-मानि नख सिख की सोभा ऊपर वारों कोटि काम॥ १॥ सुंदरताई निकाई तेज-प्रताप अतुलताई आस पास युवतीजन करत हैं गुन गान।'पद्मनाभ'प्रभु विलोकि गिरिवरधर वागधीस यह अवसर जे हुते ते महा भाग्यवान॥२॥ ❀ ८४२ ❀ भोग संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी। ध्रु०। हेरी दै किन गाव ही भलो बन्यो है काज। रानी

जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ पट पीरो प्यौसार को रानी जसुमति पहरें ताय। दामिनी के भोरें गयो मो मन धोखो आय ॥२॥ नेति-नेति जासों कहे ध्यान न आवे रूप। सो या बाबा नंद के परचो देखियत सूप ॥ ३ ॥ फूले फिरत गुवालिया विप्रनि बूझत धाइ। कहा कुंवर को नाम है हम सों कहौ सुनाइ ॥ ४ ॥ नामन की गिनती नहीं सबहिन के सिरताज। पहलो तो सुनि लेहु भैया जाको नाम गरीब निवाज ॥ ५ ॥ बूढ़ी बाँझ सबै स्रवे छीर-प्रवाह बढ़ायो। चाटत चरन गोपाल के मानो इनही को जायो ॥ ६ ॥ सब ग्वालन मिलि मतो मत्यो करि मन में आनंद। आवो पकरि नचाइये ब्रजपति बाबा नंद ॥७॥ ऊंचे मनि को चोंतरा तहाँ बैठे सिरदार। देखत भोरो सो लगे वाको चित्त उदार ॥ ८ ॥ लघु भैया पाँयन परे सकुचत हैं ब्रजराज। उठि किन दादा नाचही पूत भयो है आज ॥ ९ ॥ नाचत बाबा नंद जू संग लियें सब ग्वाल। मलकत थोंद हाल ही देखि हँसी ब्रजबाल॥१०॥ एक ओर ब्रज-ग्वारिया एक ओर सब पोंनि। पहरावत मधुमंगले या ब्रजकी महतोंनि ॥११॥ फूलि कह्यो वृखभान जू पूरव पुन्य सगाई। कीरति कन्या होइगी तो दैहों कुँवर कन्हाई ॥१२॥ भैया-भैया कहि टेरियो कहा बड़े कहा छोट। ठकुराई तिहुंलोक की दुरी अहीरनि ओट ॥१३॥ यह पद गायो हेत सों 'गंग ग्वाल' सुख पाय। रोम-रोम रसना करों तो मोपें बरन्यो न जाय ॥ १४ ॥ ❀ ८४३ ❀

❀ शयन भोग आये ❀ राग जैजैवंती ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी रे। ध्रु०। सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज। रानी जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ उपनंद कहे नंद सों मेरे मनकों भाव। उठि किन बाबा नाचहु आज भलो बन्यो है दाव ॥ २ ॥ नाचन कों बाबा उठे संग लिये बडे ग्वाल। मलकत थोंदा हाल ही निरखि हँसी ब्रजबाल ॥ ३ ॥ उपनंद कहे तब नंद सों गैया सकल मंगाय। नांदीमुख पूजा करें सब विप्रन दई

जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ पट पीरो प्यौसार को रानी जसुमति पहरें ताय । दामिनी के भोरें गयो मो मन धोखो आय ॥२॥ नेति-नेति जासों कहे ध्यान न आवे रूप । सो या बाबा नंद के परयो देखियत सूप ॥ ३ ॥ फूले फिरत गुवालिया विप्रनि बूझत धाइ । कहा कुंवर कौ नाम है हम सों कहौ सुनाइ ॥ ४ ॥ नामन की गिनती नहीं सबहिन के सिरताज । पहलो तो सुनि लेहु भैया जाको नाम गरीब निवाज ॥ ५ ॥ बूढ़ी बाँझ सबै स्रवें क्षीर-प्रवाह बढ़ायो । चाटत चरन गोपाल के मानो इनही को जायो ॥ ६ ॥ सब ग्वालन मिलि मतो मत्यो करि मन में आनंद । आवो पकरि नचाइये ब्रजपति बाबा नंद ॥७॥ ऊंचे मनि को चोंतरा तहाँ बैठे सिरदार । देखत भोरो सो लगे वाको चित्त उदार ॥ ८ ॥ लघु भैया पाँयन परे सकुचत हैं ब्रजराज । उठि किन दादा नाचही पूत भयो है आज ॥ ९ ॥ नाचत बाबा नंद जू संग लियें सब ग्वाल । मलकत थोंद हाल ही देखि हँसी ब्रजबाल॥१०॥ एक ओर ब्रज-ग्वारिया एक ओर सब पोंनि । पहरावत मधुमंगले या ब्रजकी महतोंनि ॥११॥ फूलि कह्यो वृखभान जू पूरव पुन्य सगाई । कीरति कन्या होइगी तो देहों कुँवर कन्हाई ॥१२॥ भैया-भैया कहि टेरियो कहा बड़े कहा छोट । ठकुराई तिहुंलोक की दुरी अहीरनि ओट ॥१३॥ यह पद गायो हेत सों 'गंग ग्वाल' सुख पाय । रोम-रोम रसना करों तो मोपै बरन्यो न जाय ॥ १४ ॥ ❀ ८४३ ❀

❀ शयन भोग आये ❀ राग जैजैवंती ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी रे । ध्रु०। सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज । रानी जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ उपनंद कहे नंद सों मेरे मनकों भाव । उठि किन बाबा नाचहु आज भलो बन्यो है दाव ॥ २ ॥ नाचन कों बाबा उठे संग लिये बडे ग्वाल । मलकत थोंदा हाल ही निरखि हँसी ब्रजबाल ॥ ३ ॥ उपनंद

जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ पट पीरो
जसुमति पहरें ताय । दामिनी के भोरें गयो मो मन धो
नेति-नेति जासों कहे ध्यान न आवे रूप । सो या बाव
देखियत सूप ॥ ३ ॥ फूले फिरत गुवालिया विप्रनि बू
कुंवर कौ नाम है हम सों कहौ सुनाइ ॥ ४ ॥ नामन
सबहिन के सिरताज । पहलो तो सुनि लेहु भैया जा
निवाज ॥ ५ ॥ बूढ़ी बाँझ सबै स्रवे चीर-प्रवाह बढ़ायो
गोपाल के मानो इनही को जायो ॥ ६ ॥ सब ग्वालन
करि मन में आनंद । आवो पकरि नचाइये ब्रजपति बाबा
मनि को चोंतरा तहाँ बैठे सिरदार । देखत भोरो सो लगे बा
॥ ८ ॥ लघु भैया पाँयन परे सकुचत हैं ब्रजराज । उठि कि
पूत भयो है आज ॥ ६ ॥ नाचत बाबा नंद जू संग लिये
मलकत थोंद हाल ही देखि हँसी ब्रजबाल ॥१०॥ एक ओर ब्रज
ओर सब पोंनि । पहरावत मधुमंगले या ब्रजकी महतोंनि ॥११
वृखभान जू पूरव पुन्य सगाई । कीरति कन्या होइगी तो देहौं
॥१२॥ भैया-भैया कहि टेरियो कहा बड़े कहा छोट । ठकुराई
दुरी अहीरनि ओट ॥१३॥ यह पद गायो हेत सों 'गंग ग्वाल'
रोम-रोम रसना करों तो मोपै बरन्यो न जाय ॥ १४ ॥ ❀

❀ शयन भोग आये ❀ राग जैजैवंती ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी
सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज । रानी जसुमति ढोटा ज
ब्रज में राज ॥ १ ॥ उपनंद कहे नंद सों मेरे मनकों भाव । उठि
नाचहु आज भलो बन्यो है दाव ॥ २ ॥ नाचन कों बाबा उठे
बडे ग्वाल । मलकत थोंदा हाल ही निरखि हँसी ब्रजबाल ॥ ३ ॥
कहे तब नंद सों गैया सकल मंगाय । नांदीमुख पूजा करें सब

भाट ढुराने ॥टेक॥ निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय। श्रीवल्लभवर पुंडरीक पर 'दासदास' बलिजाय ॥५॥ ❀८४५❀ वैशाख कृष्ण १०❀ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ द्वारे आये गुनीजन ठाढे। प्रगटे पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढे ॥१॥ श्री लछमन भट दान देन कों पट भूषन मनि मानिक काढे। 'सगुनदास' आस सब पूजी मानो बरखत इन्द्र अषाढे ॥ २ ॥ ❀ ८४६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ बाजे-बाजे मंदिलरा सकल ब्रजघोख सुहायो गाजे। हमारे रायघर ऐसो ढोटा जायो जसुमति आज पूरे मन के काजे ॥१॥ सुनि-सुनि चली अली गृह-गृह तें सजि-सजि नवसत साजे। दधिघृत भरि काँवरि कांधे धरि आये गोप समाजे ॥२॥ धरि सिर दूब तिलक करि माथें सथियें धरि दुहुँ बाजे। भीतर जाय वदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाजे ॥३॥ श्री वृखभान देत पट भूषन धेनु देत ब्रजराज। अविचल रहो जमुन-जल ज्यों थिर 'ब्रजजन' के सिर ताज ॥४॥ ❀ ८४७ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ ग्वाल बधाई मांगन आये। गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिर नाये ॥१॥ अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मन के भाये। जहाँ नंद बैठे नांदी मुख जहां गहन कों धाये ॥ २ ॥ बरन-बरन पट पाये ब्रजजन उर आनंद न समाये। 'जन भगवान' जसोदा रानी जिय के जीवन जाये ॥३॥❀८४८❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े। बडी बैस ढोटा जायो है अति आनंदवर बाढ़े ॥१॥ काहू गैया काहू भूषन काहू बसन अनेक। मन में आन करत सुरपति सों गहे आपुनि टेक ॥२॥ फूले फिरत गोप सब बालक गावत परस्पर भाखत। गिरिधर 'दास कल्यान' जुवती जन देवे कों कछुअ न राखत ॥३॥ ❀ ८४९ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद वृखभान के हम भाट। उदै भयो ब्रजवल्लव कुल को मेटि हमारी नाट ॥१॥ इन्द्र कुबेर हमारे भाये ब्रज के गूज़र जाट। इतनौ देहु जो मोल लेहुं हौं मथुरा की सब हाट ॥२॥

माट दुराने ॥टेक॥ निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय। श्रीवल्लभवर पुंडरीक पर'दासदास' बलिजाय ॥५॥❀८४५❀ वैशाख कृष्णा १०❀ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ द्वारे आये गुनीजन ठाढे। प्रगटे पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढे ॥१॥ श्री लछमन भट दान देन कों पट भूषन मनि मानिक काढे। 'सगुनदास' आस सब पूजी मानो बरखत इन्द्र असाढे ॥ २ ॥ ❀ ८४६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ बाजे-बाजे मंदिलरा सकल ब्रजघोख सुहायो गाजे। हमारे रायघर ऐसो ढोटा जायो जसुमति आज पूरे मन के काजे ॥१॥ सुनि-सुनि चली अली गृह-गृह तें सजि-सजि नवसत साजे। दधिघृत भरि काँवरि कांधे धरि आये गोप समाजे ॥२॥ धरि सिर दूब तिलक करि माथें सथियें धरि दुहुँ बाजे। भीतर जाय वदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाजे ॥३॥ श्री वृखभान देत पट भूषन धेनु देत ब्रजराज। अविचल रहो जमुन-जल ज्यों थिर 'ब्रजजन' के सिर ताज ॥४॥ ❀ ८४७ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ ग्वाल बधाई मांगन आये। गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिर नाये ॥१॥ अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मन के भाये। जहाँ नंद बैठे नांदी मुख जहां गहन कों धाये॥ २ ॥ बरन-बरन पट पाये ब्रजजन उर आनंद न समाये। 'जन भगवान' जसोदा रानी जिय के जीवन जाये ॥३॥❀८४८❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े। बडी बैस ढोटा जायो है अति आनंदवर बाढ़े ॥१॥ काहू गैया काहू भूषन काहू बसन अनेक। मन में आन करत सुरपति सों गहे आपुनि टेक ॥२॥ फूले फिरत गोप सब बालक गावत परस्पर भाखत। गिरिधर 'दास कल्यान' जुवती जन देवे कों कछुअ न राखत ॥३॥ ❀ ८४९ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद वृखभान के हम भाट। उदै भयो ब्रजवल्लव कुल को मेटि हमारी नाट ॥१॥ इन्द्र कुबेर हमारे भाये ब्रज के गूज़र जाट। इतनो देहु जो मोल लेहुं हौं मथुरा की सब हाट ॥२॥

माट ढुराने ।।टेक।। निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय। श्रीवल्लभवर पुंडरीक पर 'दासदास' बलिजाय ।।५।। ❀ ८४५ ❀ वैशाख कृष्णा १० ❀ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ द्वारे आये गुनीजन ठाढे। प्रगटे पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढे ।।१।। श्री लछमन भट दान देन कों पट भूषन मनि मानिक काढे। 'सगुनदास' आस सब पूजी मानो बरखत इन्द्र अषाढे ।। २ ।। ❀ ८४६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ बाजे-बाजे मंदिलरा सकल ब्रजघोख सुहायो गाजे। हमारे रायघर ऐसो ढोटा जायो जसुमति आज पूरे मन के काजे ।।१।। सुनि-सुनि चली अली गृह-गृह तें सजि-सजि नवसत साजे। दधिघृत भरि काँवरि कांधे धरि आये गोप समाजे ।।२।। धरि सिर दूब तिलक करि माथें सथिये धरि दुहुँ बाजे। भीतर जाय वदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाजे ।।३।। श्री वृखभान देत पट भूषन धेनु देत ब्रजराज। अविचल रहो जमुन-जल ज्यों थिर 'ब्रजजन' के सिर ताज ।।४।। ❀ ८४७ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ ग्वाल बधाई मांगन आये। गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिर नाये ।।१।। अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मन के भाये। जहाँ नंद बैठे नांदी मुख जहां गहन कों धाये।। २ ।। बरन-बरन पट पाये ब्रजजन उर आनंद न समाये। 'जन भगवान' जसोदा रानी जिय के जीवन जाये ।।३।। ❀ ८४८ ❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े। बडी बैंस ढोटा जायो है अति आनंदवर बाढ़े ।।१।। काहू गैया काहू भूषन काहू बसन अनेक। मन में आन करत सुरपति सों गहे आपुनि टेक ।।२।। फूले फिरत गोप सब बालक गावत परस्पर भाखत। गिरिधर 'दास कल्यान' जुवती जन देवे कों कछु अ न राखत ।।३।। ❀ ८४९ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद वृखभान के हम भाट। उदै भयो ब्रजवल्लव कुल को मेटि हमारी नाट ।।१।। इन्द्र कुबेर हमारे भाये ब्रज के गूजर जाट। इतनौ देहु जो मोल लेहुं हौं मथुरा की सब हाट ।।२।।

भाट दुराने ॥टेक॥ निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय। श्रीवल्लभवर पुंडरीक पर 'दासदास' बलिजाय ॥५॥❀८४५❀ वैशाख कृष्ण १०❀ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ द्वारे आये गुनीजन ठाढे। प्रगटे पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढे ॥१॥ श्री लछमन भट दान देन कों पट भूषन मनि मानिक काढे। 'सगुनदास' आस सब पूजी मानो बरखत इन्द्र अषाढे ॥ २ ॥ ❀ ८४६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ बाजे-बाजे मंदिलरा सकल ब्रजघोख सुहायो गाजे। हमारे रायघर ऐसो ढोटा जायो जसुमति आज पूरे मन के काजे ॥१॥ सुनि-सुनि चली अली गृह-गृह तें सजि-सजि नवसत साजे। दधिघृत भरि काँवरि कांधे धरि आये गोप समाजे ॥२॥ धरि सिर दूब तिलक करि माथें सथियें धरि दुहुँ बाजे। भीतर जाय वदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाजे ॥३॥ श्री वृखभान देत पट भूषन धेनु देत ब्रजराज। अविचल रहो जमुन-जल ज्यों थिर 'ब्रजजन' के सिर ताज ॥४॥ ❀ ८४७ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ ग्वाल बधाई मांगन आये। गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिर नाये ॥१॥ अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मन के भाये। जहाँ नंद बैठे नांदी मुख जहां गहन कों धाये॥ २ ॥ बरन-बरन पट पाये ब्रजजन उर आनंद न समाये। 'जन भगवान' जसोदा रानी जिय के जीवन जाये ॥३॥❀८४८❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े। बडी बैस ढोटा जायो है अति आनंदवर बाढ़े ॥१॥ काहू गैया काहू भूषन काहू बसन अनेक। मन में आन करत सुरपति सों गहे आपुनि टेक ॥२॥ फूले फिरत गोप सब बालक गावत परस्पर भाखत। गिरिधर 'दास कल्यान' जुवती जन देवे कों कछुअ न राखत ॥३॥ ❀ ८४९ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद वृखभान के हम भाट। उदै भयो ब्रजवल्लव कुल को मेटि हमारी नाट ॥१॥ इन्द्र कुबेर हमारे भाये ब्रज के गूज़र जाट। इतनौ देहु जो मोल लेहुं हौं मथुरा की सब हाट ॥२॥

भाट दुराने ॥टेक॥ निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय। श्रीवल्लभवर पुंडरीक पर 'दासदास' बलिजाय ॥५॥❀८४५❀ वैशाख कृष्ण १०❀ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ द्वारे आये गुनीजन ठाढे। प्रगटे, पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढे ॥१॥ श्री लछमन भट दान देन कों पट भूषन मनि मानिक काढे। 'सगुनदास' आस सब पूजी मानो बरखत इन्द्र अषाढे ॥ २ ॥ ❀ ८४६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ बाजे-बाजे मंदिलरा सकल ब्रजघोख सुहायो गाजे। हमारे रायघर ऐसो ढोटा जायो जसुमति आज पूरे मन के काजे ॥१॥ सुनि-सुनि चली अली गृह-गृह तें सजि-सजि नवसत साजे। दधिघृत भरि काँवरि कांधे धरि आये गोप समाजे ॥२॥ धरि सिर दूब तिलक करि माथें सथियें धरि दुहुँ बाजे। भीतर जाय वदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाजे ॥३॥ श्री वृखभान देत पट भूषन धेनु देत ब्रजराज। अविचल रहो जमुन-जल ज्यों थिर 'ब्रजजन' के सिर ताज ॥४॥ ❀ ८४७ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ ग्वाल बधाई मांगन आये। गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिर नाये ॥१॥ अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मन के भाये। जहाँ नंद बैठे नांदी मुख जहां गहन कों धाये ॥ २ ॥ बरन-बरन पट पाये ब्रजजन उर आनंद न समाये। 'जन भगवान' जसोदा रानी जिय के जीवन जाये ॥३॥❀८४८❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े। बडी बैस ढोटा जायो है अति आनंदवर बाढ़े ॥१॥ काहू गैया काहू भूषन काहू बसन अनेक। मन में आन करत सुरपति सों गहे आपुनि टेक ॥२॥ फूले फिरत गोप सब बालक गावत परस्पर भाखत। गिरिधर 'दास कल्यान' जुवती जन देवे कों कछुअ न राखत ॥३॥ ❀ ८४९ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद वृखभान के हम भाट। उदै भयो ब्रजवल्लव कुल को मेटि हमारी नाट ॥१॥ इन्द्र कुबेर हमारे भाये ब्रज के गूजर जाट। इतनौ देहु जो मोल लेहुं हौं मथुरा की सब हाट ॥२॥

माई आज तो मंदिलरा बाजे मंदिर महरके। फूले फिरें गोपी-ग्वाल ठहर-ठहर के। फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अङ्ग-अङ्ग फूले तरुवर मानों आनंद लहर के ॥१॥ फूले बंदी जन द्वारें फूले बांधे बंदनवारें फूले जहां जोई सोई गोकुल सहर के। फूले फिरें जादौंकुल आनंद समूल मूल अंकुरित पुन्य पुंज पाछिले पहर के ॥२॥ उमग्यो जमुना जल प्रफुल्लित कुंज पुंज गरजत कारे भारे जूथ जलधर के। निर्तत मगन फूलि फूलि रति अङ्ग-अङ्ग मन के मनोज फूले हलधर हरके ॥३॥ फूले द्विज संत वेद मिटि गयो कंस-खेद गावत बधाई 'सूर' भीतर महर के। फूली हैं जसोदा रानी सुत जायो सारंगपानी भूपति उदार फूले भार टारयो धर के ॥४॥ ❀८५४❀

❀ राग जैजैवंती ❀ माई आज तो गोकुल गाम कैसो रह्यो फूलि के। गृह फूले दीसें जैसे संपति समूल के ॥१॥ फूली फूली घटा आई घरहर घूमि कें। फूली-फूली बरखा होत झर लायो झूमि कें ॥२॥ फूल्यो-फूल्यो पुत्र देखि लियो उर लूमि कें। फूली है जसोदा माय ढोटा-मुख चूमि कें ॥३॥ देवता अगिन फूले घृत खांड होमिकें। फूल्यो दीसै दधिकादौं उपरसों भूमि कें ॥४॥ मालिन बांधे बंदनमाला घर-घर डोलिकें। पाटंबर पहिराय अधिकें अमोल कें ॥५॥ फूले हैं भंडार सब द्वारे दिये खोलिकें। नंदराय देत फूलें 'नंददास' बोलिकें ॥६॥ ❀ ८५५ ❀ भोग सरे ❀ राग ❀

दान देत श्रीलछमन प्रमुदित मनि मानिक कंचन पट गाय। श्री व्रजराज-कुंवर जसोदा-सुत करुना करि प्रगटे हरि आय ॥१॥ रही न मन अभिलाख कछू अब याचक नाम हतो कोउ जोय। 'विष्णुदास' उमगे अंतरते दै असीस तुमसे नहिं कोय ॥२॥ ❀ ८५६ ❀

उत्सव श्री महाप्रभुजी को (वैशाख कृष्णा ११)

❀ जागवे में ❀ राग भैरव ❀ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ कृपा-निधान अति उदार करुनामय दीन द्वार आयो। कृपा भरि नैन कोर देखिये जु

मेरी ओर जनम-जनम सोधि-सोधि चरन-कमल पायो ॥ १ ॥ कीरति चहुँ दिसि प्रकास दूर करत विरह-ताप संगम गुन गान करत आनंद भरि गाऊँ। विनती यह मान लीजे अपनो 'हरिदास' कीजे चरन-कमल वास दीजे वलि-वलि-वलि जाऊँ ॥२॥ ❀८५७❀ शृङ्गार ओसरा में❀राग देवगंधार❀ आज जगती पर जय-जयकार। प्रगट भये श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम वदन अग्नि अवतार ॥ १ ॥ धन्य दिन माधव मास एकादसी कृष्ण पच्छ रविवार। श्रीमुख वाक्य कलेवर सुंदर धरयो जगमोहन मार ॥ २ ॥ श्री भागवत आतम अंग जिनके प्रगट करन विस्तार। दुंदुभी देव वजावत गावत सुर-वधू मंगल चार ॥ ३ ॥ पुष्टि प्रकास करेंगे भू पर जनहित जग अवतार। आनंद उमग्यो लोक तिहूंपुर 'जन गिरिधर' वलिहार ॥ ४ ॥ ❀ ८५८ ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ धन्य माधव मास कृष्ण एकादसी भट्ट लछमन धाम प्रगट वल्लभ भये। धन्य चंपारन्य धन्य धरनी सकल धन्य घटिका प्रहर धन्य अति पल भये ॥ १ ॥ धन्य यसपुंज पावन करन सृष्टि कों प्रगट करी कृष्णलीला सहित सो किये। धन्य गावत 'रसिकदास'वारं-वार कीजिये सफल पूरन मनोरथ हिये ॥ २ ॥ ❀ ८५९ ❀ राग देवगंधार ❀ वल्लभ भूतल प्रगट भये। माधव मास कृष्ण एकादसी पूरन विधु उदये॥१॥ पुत्र जन्म सुन श्रीलछमन भट वहु विधि दान दिये। मागध सूत वंदीजन वोलत सव दुख दूर गये ॥ २ ॥ पुष्टि प्रकास करन कों आये द्विज स्वरूप धरये। 'विष्नुदास' के सिर विराजत प्रभु आनंदमये ॥ ३ ॥ ❀८६०❀ ❀ राग देवगंधार ❀ जव तें वल्लभ भूतल प्रगट भये। वदन सुधानिधि निर-खत प्रभु कों सव दुख दूर गये ॥ १ ॥ श्री लछमन-वंस उजागर सागर भक्ति-वेद सव फिर जुटये। मायावाद सव खंड-खंडन करि अति आनंद भये ॥ २ ॥ गिरिधर लीला विस्तारन कारन दिन-दिन केलि रये। 'सगुन-दास' सिर हस्त कमल धरि श्रीचरनांवुज गहे ॥३॥ ❀८६१❀ राग सारंग❀

प्रगट भये प्रभु श्रीमद्वल्लभ व्रजवल्लभ द्विज देह। निजजन सब आनंदित गावत बजत बधाई सबहिन् के गेह ॥ १ ॥ भूतल प्रगट्यो भाव श्रुतिन को उपज्यो नंदनंदन-पद-नेह। मिटे ताप निजजन के मन के बरखे प्रेम भक्ति रस मेह ॥ २ ॥ निरखत श्रीमुखचंद सबन के दूर भये सब निगम संदेह। मिटि गये सब कपट कुटिल खल मारग भस्म भये सब आसुर जेह ॥ ३ ॥ करत केलि कुंजन नित गिरिधर सुधि करिवो जो पूरव नेह। कहत 'दास' जोरी चिरजीयो क्यों गुन बरनें नाहिन छेह ॥ ४ ॥ ❀८६२❀ ❀ राग सारंग ❀ फल्यो जन-भाग्य पथ-पुष्टि करन दुष्ट पाखंड मत खंड खंडन किये। सकल सुख घोष को तिमिर हर लोक कौ कृष्नरस पोष कौ पुंज पुंजन दिये ॥ १ ॥ सकल मरजाद मंडन प्रभु अवतरे खलन दंडन करन भक्त निर्मल हिये। प्रकट लछमन सदन देखि हरखित बदन मदन छबि कदन भई पदन नख ना छिये ॥२॥ उदित भयो इंदु वृन्दाविपिन को हरखि बरखि रस वचन सुन श्रवन निजजन पिये। 'कृष्नदासनिनाथ' हाथ गिरिवर धर्यो साथ सब गोप मुख निरखि नैननि जिये ॥ ३ ॥ ❀८६३❀ ❀ राग सारंग ❀ तत्व गुन बान भुवि माधवासित तरनि प्रथम भगवद् दिवस प्रगट लछमन सुवन। धन्य चंपारण्य मन त्रैलोकजन अन्य अवतार होय है न ऐसो भुवन ॥ १ ॥ लग्न वसु कुंभ गति केतु कवि इंदु सुख मीन बुध उच्च रवि वैर नासे। मंद वृष कर्क गुरु भौम युत तम सिंघ योग ध्रुवकरन बव यस प्रकासे ॥२॥ ऋच्छ धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थित विरह वदनानलाकार हरिको। येहि निस्चैं 'द्वारकेस' इनकी सरन और वल्लभाधीस सर को ॥३॥ ❀ ८६४ ❀ राग सारंग ❀ सुखद माधव मास कृष्न एकादसी भट्ट लछमन गेह प्रगट बैठे आइ। ब्रज जुवती गूढ मन इंद्रियाधीस आनंद गृह जानि विधु निगमगति घट पाइ ॥ १ ॥ अज्ञ जन ग्रहन सुत भवन तैसो जानि विमल मति पाइ विधु जात हेरी आइ। दनुज मायिक मत

नम्र कंधर किये लिये ध्वज जानि ध्वज सुक्र है सुखदाई ॥२॥ अवनितल मलिनता दूरि करिवे काज गेह-सुख दैन जामित्र गति सनि जाइ। धर्म पथ भूप गुरु चरन वल्लभ जानि देवगुरु भौम अनुचर भए री आइ ॥३॥ प्रखर मायावाद सत्रु संघात कारन सूररिपु सदन कों छाइ। 'गिरिधरन' कर्म अर्पन विधुतुंद दसम गेह गहि रहत अनुकूल कृति कों पाइ ॥ ४ ॥ ❀ ८६५ ❀ राग सारंग ❀ कांकरवारे तैलंग तिलक द्विज वंदों श्रीमद् लछमननंद। द्वैपथ-राज-सिरोमनि सुंदर भूतल प्रगटे वल्लभ चंद ॥१॥ अवजु गहे विष्णुस्वामी-पथ नवधा भक्ति रतन रस कंद। दरसन ही प्रसन्न होत मन प्रगटे पूरन परमानंद ॥२॥ कीरत विसद कहाँ लों वरनों गावत लीला श्रुति सुर छंद। 'सगुनदास' प्रभु पट्गुन-संपन्न कलिजन उद्धरन आनंद कंद ॥३॥ ❀ ८६६ ❀ राजभोग सरे ❀ पलना ❀ राग ❀ श्री वल्लभलाल पालने झूलें मात एलम्मा झुलावे हो। रतन जटित कंचन पलना पर झूमक मोती सुहावे हो ॥ १ ॥ झालर गज मोतिनि की राजत दच्छिन चीर उढावे हो। तोरन घुंघरू घमक रहे हैं झुंझना झमकि मिलावे हो ॥२॥ चुचकारत चुटकी दै नचावत चुंबन दै हुलरावे हो। किलकि किलकि हँसत मुख प्रमुदित वाललीला जाहि भावे हो ॥३॥ कबहुँक उरज पय पान करावत फिर पलना पोढावे हो। पीठ उठाय मैया सन्मुख ठहै आपुन रीझि रिझावे हो ॥४॥ महाभाग्य हैं तात मात दोऊ आपुन यों विसरावें हो। 'वल्लभदास' आस सव पूजी श्रीवल्लभ दरस दिखावे हो ॥५॥ ❀८६७❀ ❀ ढाढी ❀ राग ❀ ढाढी श्रीलछमन–राजकुमार। तिहारें पुत्र भये पुरुषोत्तम सुफल कियो मेरो काज ॥ १ ॥ तुम्हारे पितर भये जे पहले महा-पुरुष अवतार। तैलंग तिलक द्विज जग्य नारायन कीने जग्य अपार ॥ तिनके पुत्र भये गंगाधर कीने सोम जाग। तिनके गनपति सोम यग्य करि यह वड़ोजु सुहाग ॥ २ ॥ ताके श्रीवल्लभ अग्निहोत्री तुव पिता ही

कृपाल। तिहारे पुत्र आचारज वल्लभ बदन अनल प्रतिपाल ॥ टेक॥ दैवी जीव उद्धारन कारन मायावाद निवार। श्री भागवत स्वरूप दिखायो सेवा पुष्टि प्रकार ॥ ३ ॥ इनके पुत्र होयंगे दोऊ हलधर नंदकुमार। गोपीनाथ श्री विट्ठल पुरुषोत्तम तिहूँ लोक उजियार ॥टेक॥ श्री विट्ठल के सात होंयगे सुत ते सब आपु समान। सुत के सुत नार्ती पंती सब दीपत दीप समान। ॥४॥ नरनारी जे सरन आये हैं ते सब किये सनाथ। नाम सुनाय अभै दैके फिर पकरे दृढ़ करि हाथ ॥ टेक॥ तुव सुत के गुन रूप बखानत सेस न पाये पार। गोकुलपति मुख निरखि निरखि वपु आकृति सीतल सार। ॥५॥ हौं तो ढाढी तिहारे घर को कीरति करों प्रनाम। पोढि रहौ हरि बदन बिलोकों मांगों न भिच्छा आन। तुम हो परम उदार दानेश्वर हौं मागों सो दीजे। ढाढिन मेरी इनकी चेरी मोहि चेरो करि लीजे ॥ टेक॥ निसिदिन भक्ति करों तुव सुत की इतनी पूजवो आस। जनम-जनम नित देखों बलि-बलि 'माधौदास' ॥६॥ ❀ ८६८ ❀ थापादें तब ❀ राग सारङ्ग ❀ आनंद आज भयो हो भयो जगती पर जय जय कार। श्री लछमन गृह प्रगट भये हैं श्री वल्लभ सुकुमार ॥१॥ धन्य धन्य माधव मास एकादसी कृष्णपच्छ रविवार। गुन निधान 'श्री गिरिधर' प्रगटे लीला द्विज तनु धार। ॥२॥ ❀ ८६९ ❀ शयन भोग आये ❀ राग कल्यान ❀ श्री लछमन कुल चंद उदित जग उद्योतकारी। मात इलम्मा विमलराका उडुगन निजजन समाज पोषत पीयूष वचन हरियस उजियारी ॥१॥ करुनामय निष्कलंक मायावाद तिमिर हरन सकल कला पूरन मन द्विजवपुधारी। बलि बलि बलि 'माधो-दास' चरन कमल किये निवास भयो चकोर लोचन छबि निरखत गिरिधारी ॥२॥ ❀ ८७० ❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ प्रभु श्रीलछमन गृह प्रगट भये। हरि लीला रस सिंधु कला निधि बचन किरन सब ताप गये ॥१॥ मायावाद तिमिर जीवन को प्रगटत नास भयो उर अंतर। फूले भक्त

कुमोदिनी चहुँ दिस सोभित भये भक्ति मन सारस ॥ २ ॥ मुदित भये कमल मुख तिनके वृथा वाद आये गनत वल । 'गिरिधर' अन्य भजन तारागन मंद भये भजि गावत चंचल ॥३॥ ❀ ८७१ ❀ सेनभोग सरें ❀ राग विहाग ❀ जप तप तीरथ नेम धरम व्रत मेरे श्री वल्लभप्रभु जी कौ नाम । सुमिरों मन सदा सुखकारी दुरित कटै सुधरे सब काम ॥ १ ॥ हृदै वसैं जसोदा-सुत के पद लीला सहित सकल सुख धाम । 'रसिकन' यह निर्धार कियो है साधन त्यज भज आठौ जाम ॥ २ ॥ ❀ ८७२ ❀

अक्षय तृतीया (वैशाख सुदी ३)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ भोर भये देखौ श्री गिरिधर कौ कमल मुख । मंगल आरती करौ प्रात ही नयन निरखत होत परम सुख ॥ १ ॥ लोचन विसाल छबि संचि हृदय में धरौ कृपा अवलोकिवे कों चारु भृकुटी रुख ॥ 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर आनंदनिधि दूरि करि हो सब रैन को विरह दुःख ॥ २ ॥ ❀ ८७३ ❀ शृंगार ओसारा ❀ राग बिलावल ❀ आजु मोहि आगम अगम जनायो । मृगमद सानि अरगजा केसर आँगन भवन लिपायो ॥१॥ तन सुख पाग पिछौरा झीनो केसर रंग रँगायो । मुक्ता के आभूपन गुहियत पहरावन हुलसायो ॥२॥ पंखा नवल उसीर प्रीतम कों राखोंगी छिरकायो । ग्रीष्म ऋतु सुख देनि नाथ कों यह औसर चलि आयो ॥३॥ आवेंगे महमान आज हरि भाग्य वड़े दिन पायो । 'कुंभनदास' विरहनि व्रजवाला आगम सुजस जनायो ॥४॥ ❀८७४❀ राग बिलावल ❀ आज गोपाल पाहुने आये आनंद मंगल गाऊंगी । जल गुलाव सों घोरि अरगजा आँगन-भवन लिपाऊँगी ॥१॥ सीतल सदन सुखद के साधन कुच-भुज वीच वसाऊंगी । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर कों जो एकांत करि पाऊंगी ॥२॥ ❀ ८७५ ❀ राग देवगंधार ❀ मज्जन करत गोपाल चौकी पर । अति सुगंध फुलेल उबटनो विविध भाँति की सोंज राखी धर ॥१॥-प्रथम

न्हवाय फिर केसर चरचत सोभित अंग-अंग सुंदर वर । व्रज-गोपी सब मिलि गावति हैं अंग उबट करि परसि सीस कर ॥२॥ एक जो अंग वस्त्र लै आई पौंछत हैं मन अति भर । शृंगार करन कों गिरिधर बैठे चौकी साज धरी तर ॥३॥ विविध भाँति सिंगार करत हैं अपनी अपनी रुचि सुघर वर। लै दर्पन श्री मुखहि दिखावत निरखि-निरखि हँसे हर-हर ॥४॥ भाँति-भाँति सामग्री करि-करि लै आई सब घर-घर । 'छीतस्वामी' गिरिधरन अरोगत अति आनँद प्रफुलित कर ॥५॥ ❀ ८७६ ❀ राग बिलावल ❀ भोग-सिंगार मैया सुनि मोकों श्री विट्ठलनाथ के हाथ को भावे । नीके न्हवाय सिंगार करत हैं आछे रुचि सों मोहि पाग बंधावे ॥ १ ॥ तातें सदा हों उहाँ ही रहत हों तू डर माखन दूध छिपावे। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल निरखि नैना त्रै ताप नसावें ॥२॥ ❀ ८७७ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग विभास ❀ धरयो हरि श्वेत पिछोरा ललित। तैंसीय पाग रही अति सोभित दच्छिन सुत सिव वलित॥१॥ मुक्ता भूषन रहे अंग जिन कियो सैल कर कलित। तामें लखे 'सखी' जिय देखियत भयो काम तन गलित ॥२॥ ❀८७८❀ ❀ राजभोग सरे ❀ राग सारग ❀ बैठे लाल कुंजन में जो पाऊं। स्यामा स्याम भाँवती जोरी अपने हाथ जिमाऊं ॥१॥ चंदन चर्चों पोहोप की माला हरखि हरखि पहिराऊं। 'श्रीभट' देत पान की बीरी चरन कमल चित्त लाऊं ॥२॥ ❀ ८७९ ❀ चंदन धरे तब❀ झाँझ पखावज सू ❀ राग सारंग ❀ अच्छय तृतीया अच्छय लीला नवरँग गिरिधर पहिरत चंदन। वाम भाग वृषभान नंदिनी बिच-बिच चित्र किये नव वंदन ॥ १ ॥ तनसुख छींट इजार बनी है पीत उपरना विरह निकंदन। उर उदार बनमाल मल्लिका सुभग पाग जुवतिन मन फंदन ॥२॥ नख-सिख रत्न अलंकृत भूषन श्री वल्लभ मारग मन रंजन। 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर लोचन चपल लजावत खंजन ॥ ३ ॥ ❀ ८८० ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग सारंग ❀ अच्छय तृतीया अच्छय सुभ

दिन पियकों पिया चढावैं चंदन। तब ही पिया सिंगारी नारी अरगजा घोर सुघर नंदनंदन ॥ १ ॥ लें दर्पन निरखे जु परस्पर रीझि-रीझि रही जो वंदन। 'नंददास' प्रभु पिय रस भीजे जुवतिन सुखद विरह दुख कंदन ॥२॥ ❀ ८८१ ❀ राग सारंग ❀ अक्षय तृतीया सुभ दिन नीको चंदन पहिरत नवल किसोर। उज्ज्वल वसन नवीन सो राजत फेंटा के नीके छट छोर॥१॥ केसर तिलक माल फूलन की पहिरें ठाडे रंग भरे। आस-पास जुवती जन सोभित गावत मंगल गीत खरे ॥ २ ॥ मुसकत हैं थोरे थोरे से बोलत रसाल लखीरी। अति अनुराग भरे मोहन कों 'कृष्णदास' तहां देत हैं बीरी ॥ ३ ॥ ❀ ८८२ ❀ राग सारंग ❀ आज वने नंदनंदन री नव चंदन को तन लेप किये। तामें चित्र वने केसर के राजत हैं सखी सुभग हिये ॥१॥ तनसुख को कटि बन्यो है पिछौरा ठाड़े हैं कर कमल लिये। रुचिर बनमाल पीत उपरैना नयन मेंन सरसे देखिये ॥ २ ॥ करनफूल प्रतिविंव कपोलनि मृगमद तिलक ललाट दिये। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल छवि टेढी पाग रही भृकुटि छिये ॥३॥ ❀ ८८३ ❀ राग सारंग ❀ आज वने नंदनंदन री नव चंदन अंग अगरजा लाये। रुरकत हार सुढार जलज मनि गुंजत अलि अलकनि समुदाये ॥१॥ पीत बसन तन वन्यो पिछोरा टेढी पाग टोरा लटकाये। अक्षय तृतीया अक्षय लीला अक्षय 'गंगादास' सुख पाये ॥२॥ ❀ ८८४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ वागो वन्यो वावना चंदन को। चंपकली की पाग वनाई भाल तिलक नव वंदन को। सूथन की छवि कहत न आवे भाँति-भाँति मन फंदन कों। 'परमानंद' आनंदित आनन देखत हैं नँदनंदन को ॥ २ ॥ ❀ ८८५ ❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सारंग ❀ चंदन कौ वागो वन्यो चंदन की खोर किये चंदन के रूख तर ठाडे पिय प्यारी। चंदन की पाग सिर चंदन को फेंटा वन्यो चंदन की चोली तन चंदन की सारी॥१॥ चंदन की आरसी निहारत

हैं दोऊजन चंदन के जल के फुहारे छूटत छबि भारी। 'सूरदास' मदन-मोहन चंदन के महल बैठे गावत सारंग राग रंग रह्यो भारी ॥२॥ ❀८८६❀ ❀ संध्या समय ❀ राग हमीर ❀ पिछोरा खासा कौ कटि बांधे। वे देखो आवत हैं नंदनंदन नयन कुसुम सर सांधे ॥ १ ॥ स्याम सुभग तन गौरज मंडित बांह सखा के कांधे। चलत मंदगति चाल मनोहर मानो नटवा गुन गांधे ॥२॥ यह पद कमल अबहि प्रापत भये बहुत दिनन आराधे। 'परमानंद' स्वामी के कारन सुरमुनि धरत समाधे ॥३॥ ❀ ८८७ ❀ सैन भोग आये ❀ ❀ राग कान्हरो ❀ लाडिली लाल राजत रुचिर कुंज में। अरगजा अंग-अंग रंग बागे बने दोऊ जन प्रेमसों स्नेह रस पुंज में ॥१॥ निर्तत ठाड़ी अली भलिय गति भेद सों रैन पहिली जानि एक अलि पुंज में। परयो परदा धरयो सैन को भोग पय पूरी भर थाल भुज लाल कर कंज में ॥२॥ ❀ ८८८ ❀ राग कान्हरो ❀ सुखद जमुना पुलिन सुखद नव कुंज में सुखद स्यामा स्याम करत ब्यारू सुखद। सुखद चंदन अंग सुखद लेपन करि सुखद भूषन कुसुम पहिर दोऊ तन सुखद ॥१॥ सुखद बिंजना ढुरत मलय चहुँ दिसि सुखद सुखद गावत अली कोकिला ही सुखद। सुखद गिरिधरन हित सुखद पय पात्र भरि सुखद लाई सुखद ललित 'ललिता' सुखद ॥२॥ ❀८८९❀ दूसरे भोग आये ❀ राग बिहाग ❀ हँसि-हँसि दूध पीवत नाथ। मधुर कोमल बचन कहि-कहि प्रान प्यारी साथ ॥१॥ कनक कटोरा भरयो अमृत दियो ललिता हाथ। लाडिली अचवाय पहिलें पाछें आप अघात ॥२॥ चिंतामनि चित बस्यो सजनी नाहिन और सुहात। स्यामा स्याम की नवल छबि पर 'रसिक' बलि बलि जात ॥३॥ ❀८९०❀ शयन दर्शन ❀राग कान्हरो❀ मेरे घर आओ नंदनंदन चंदन कर राखों अति सीतल। अपने ही कर लगाऊं सब अंग भीनो बसन कर दीपत झांई कल॥१॥मेवा मिठाई बहोत सामग्री कपूर सुवास मिश्री सों भल। करहु ब्यार मैं तोय बिंजना लै गले

पहिराऊं माल तुलसीदल ॥२॥ कमल दलन की सेज बिछाऊं बाँह धरों श्री राधा की गल। गिरिधर लाल लाडिलीछवि देखत 'श्रीवल्लभ' सिर पर ॥ ३ ॥ ❀ ८९१ ❀ वैसाख सुदी ४ ❀ शृंगार ओसरा ❀ राग बिलावल ❀ घूमत रतनारे नैन सकल निसि जागे। लटपटी सुदेस पाग अलकनि की झलक बीच पीक छाप जुग कपोल अधरन मसि लागे॥ बिन गुन माल बनी बिच नख रेख ठनी पलटि परे बसन पीठ कंकन के दागे। चक बन्यो चंदन बनमाल लग्यो चंदन सु डगमगात चरन धरत पिया प्रेम पागे ॥२॥ बचन रचन कियो साँझ बेग आये भोर माँझ बलि-बलि या बदन कमल सोभित अनुरागे। जाय बसो वाहि धाम बिलसे जहाँ सकल जाम 'गोविंद प्रभु' बलिहारी कर जोर मांगे ॥३॥ ❀ ८९२ ❀ राग बिलावल ❀ क्यों ऽब दुरत हो प्रगट भये। काहू के नयन उनींदे निकसे मानों सर सजे अरुन नये॥ १ ॥ जावक भाल राग रस लोचन मसि रेखा जिहिं अधर दये। बलय पीठ नितंब चरन मनि बिनु गुन हार जु कंठ चये॥ २ ॥ भुज ताटंक ग्रीव बदन चिह्न कपोल दसन घसये। आलिंगन चुंबन कुच चरचत मानों दोऊ ससी उर उदये ॥३॥चरन सिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल से समर जये। सोभित है सब अंग अरुन अति स्यामा नख सायुज्य दये ॥ ४ ॥ राजत बसन नील अरु राते आतुर मानों पलट लये। 'सूरदास' प्रभु को मन मान्यो सुंदरस्याम जू कुटिल भये॥ ५ ॥ ❀ ८९३ ❀ ❀ शृंङ्गार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ हों वारि डारों री ब्रजईस सीस पर अध-टेडी पगिया पर। तृन तोरत बलि जात जुवति जन जहाँ-तहाँ देखियत चटक मटक कर॥ १ ॥ तन चंदन और स्वेत पिछोरा अरगजा भींजि रह्यो सुंदर वर। 'कल्यान' के प्रभु गिरधारी जू की माधुरी निरखि मदन मन मद हर॥ २ ॥ ❀ ८९४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सावंत सारंग ❀ सखि सुगंध जल घोरि कें चंदन हरि अंग लगावत। बदन कमल अलकें मधुपनि

सी टेढी पाग मन भावत ॥ १ ॥ कोऊ विंजना कुसुमनि के ढोरत कुसुम भूखन लै उर पहिरावत । तरु वेली सी सीयरी सी क्रीडत 'व्रजाधीस' मन भावत ॥ २ ॥ ८६५ ❀ पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ पोढिये लाल निवास अटारी। ललितादिक सहचरी जुरि आई फूलि रही फुलवारी ॥ १ ॥ रत्न जटित हीरा के कटोरा धरे अरगजा सँवारी । अति अनुराग परस्पर दोऊ करत लेपन पिय प्यारी ॥ २॥ वृंदावन की सघन कुंज में कुसुम रावटी सँवारी । 'सूरदास', बलि-बलि जोरी पर तन मन धन सब वारी ॥३॥ ❀८९६❀

नृसिंह जयन्ती (वैशाख सुदी १४)

❀ पंचामृत समय ❀ राग कान्हरो ❀ यह व्रत माधौ प्रथम लियो । जो मेरे भक्तन कों दुखवे ताको फारूं नखन हियो ॥ १ ॥ जो भक्तन सों बैर करत है परमेश्वर सों बैर करे । रखवारी कों चक्र सुदर्सन माथे ऊपर सदा फिरें ॥ २ ॥ पराधीन हों अपने भक्त कों जा कारन अवतार धरयो । यह जु कही हरि मुनिजन आगै अभिमानी को गर्व हरयो ॥ ३ ॥ भज तें भजों त्यजों नहि कबहुं पारथ प्रति श्रीपति यों भाखी । 'परमानंददास' को ठाकुर अखिल भुवन सब साखी ॥४॥ ❀ ८९७ ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग कान्हरो ❀ तोलों हों बैकुंठ न जै हों । सुन प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जोलों तो सिर छत्र न दै हों ॥ १ ॥ मन क्रम वचन मान जिय अपने जहँ-जहँ जाने तहिँ तहि लै हों ॥ २ ॥ निरगुन सगुन हेरि सब देखे तोसों भक्त मैं कबहुं न पै हों । मो देखत मेरो दास दुखित भयो यह कलंक अब ही जु चुकै हों ॥३॥ हृदय कठिन पाषान है मेरो अब ही दीनदयाल कहै हो । गहि तन हिरन्यकसिपु को चीरौं उदर फारि नख रुधिर बहै हों । यह सुनि बात तात अब 'सूरज' यह कृत को फल तुरत चखै हों ॥४॥ ❀८९८❀ राग कान्हरो ❀ कहा पढयो प्रहलाद दुलारे । पूछत वचन तात यों भाषत तुम सों बहोत सकल पचिहारे ॥ १ ॥ जो कछु मोहि पढावै पांडे मोपै पढयो न जाय

पिता रे। मेरे तो हृदैं नाम नरहरि को कोटि करो तोहु टरत न टारे ॥ २ ॥ सुनतहि कोप भयो हिरनाकुस पायक सकल दिये हँकारे। बाँधो पाय याहि त्रास दिखावो कहाँ राम तेरे रखवारे ॥ ३ ॥ बालक दुखी भयो तिहिं औसर श्रीपति श्री रघुनाथ संभारे। 'सूरदास' प्रभु निकस खंभ ते हिरनाकुस नख उदर विदारे ॥ ४ ॥ ❀ ८६६ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ अपनो जन प्रहलाद उबार्यो। खंभ बीच तें प्रगटे नरहरि हिरन्यकसिपु उर नखन बिदार्यो ॥ १ ॥ बरखत कुसुम सब्द ध्वनि जै-जै सुर देखत सदा कौतुक हार्यो। कमला हरिजू के निकट न आवत ऐसो रूप हरि कबहुँ न धार्यो ॥२॥ प्रहलादै चूंबत अरु चाटत भक्त जानि कै क्रोध निवार्यो। 'सूरदास' बलि जाय दरस की भक्त-विरोधी दैत्य निस्तार्यो ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ६०० ❀ राग कान्हरा ❀ हरि राखै ताहि डर काको। महापुरुस समरथ कमलापति नरहरि सो ईस है जाको ॥१॥ अनेक सासना करि-करि देखी निष्फल भई खिसयाय रह्यो। ता बालक को बाल न बाँको हरि की सरन प्रहलाद गयो ॥ २ ॥ हिरन्यकसिपु को उदर विदार्यो अभय राज प्रहलादै दीनो। 'परमानंद' दयाल दयानिधि अपने भक्त को नीको कीनो ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ६०१ ❀ राम कान्हरा ❀ जाकौं तुम अंगीकार कियो। तिनके कोटि विघ्न हरि टारे अभय दान भक्तन कों दियो ॥१॥ बहु सन्मान दियो प्रहलादै सब ही निसंक जियो। निकसे खंभ फारि कें नरहरि आपुन राख लियो ॥ २ ॥ दुर्वासा अंबरीष सतायो सो पुनि सरन गयो। प्रतिज्ञा राखी मनमोहन पिय उनहीं पै पठयो ॥ ३ ॥ मृतक भये हरि सबनि जिवाये दृष्टि हू अमृत पियो। 'परमानंद' भक्त बस केसव उपमा कौन बियो ॥ ४ ॥ ❀६०२❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ श्रीनरसिंह भक्त-भय-भंजन जनरंजन मन सुखकारी। भूत प्रेत पिसाच डाकिनी जंत्र मंत्र भव-भय हारी ॥ १ ॥ सबै मंत्र तें अधिक नाम जन रहत निरंतर उर धारी। निजजन सब्द सुनत

आनंदित गिरि गये गर्भ दनुज-नारी ॥ २ ॥ कोटिक काल दुरासद विघ्ने महाकाल को काल संघारी । श्री नरसिंह चरन पंकज रज 'जन परमानंद' बलि बलिहारी ॥ ३ ॥ ❀६०३❀

गंगा-दशमी (ज्येष्ठ सुदी १०)

❀ मंगला दर्शन ❀ आगें-आगें भाज्यो जात भगीरथ को रथ पाछें-पाछें आवत रंग भरी गंग । झलमलात अति उज्ज्वल जल ज्योति अब निरखत मानों सीस भरी मोतिन मंग ॥ १ ॥ जहाँ परे हैं भूप कबकें भस्म रूप ठौर-ठौर जागि उठे होत सलिल संग । 'नंददास' मानों अग्नि के जंत्र छूटे ऐसे सुरपुर चले धरे दिव्य अंग ॥ २ ॥ ❀ ६०४ ❀ शृंगार ओसरा ❀

❀ अष्टपदी ❀ नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायम् । निजनाथ–मार्ग दायिनी कुमारीकाम पूरिके कुरु भक्तिरायम् ॥ ध्रुव० ॥ मधुपकुलकलित कमलावली व्यपदेशधारित श्रीकृष्णयुत भक्त हृदये । सतत मतिशयित हरिभावना जात तत्सारूप्यगदित निजहृदये ॥ निजकुलभव विविधतरुकुसुमयुतनीरशोभयाविलसदलिवृंदे । स्मारयसि गोपीवृंद पूजितसरसमीशवपुरानंदकंदे ॥ २ ॥ उपरिचलदमलकमलारूणद्युतिरेणु-परिमिलितजलभरेणामुना । व्रजयुवतिकुचकुंमकुमारुण मुरः स्मारयसिमार पितुरधुना ॥ ३ ॥ अधिरजनि हरिविहतिमीक्षितुं कुवलयाभिधसुभगनयना-न्युशतितनुषे । नयनयुगमल्पमिती बहुतराणि च तानिरसिकतानिधितया कुरुषे ॥ ४ ॥ रजनिजागरजनितरागरंजित नयन पंकजैरहनिहरिमीक्षसे । मकरंदभरमिषेणानंद पूरिता सततमिह हर्षाश्रुमुंचसे ॥ ५ ॥ तटगतानेकशुक-सारिका मुनिगण स्तुतविविध गुणसिंधु सागरे । संगता सततमिहभक्तजनता-पद्दतिराजसे रासरससागरे ॥ ६ ॥ रतिभर श्रमजलोदित कमल परिमल व्रजयुवतिजन विहरति मोदे । ताटंकचलन सुनिरस्त संगीतयुत मदमुदित मधुपकृतविनोदे ॥ ७ ॥ निज व्रजजनावनायात्त गोवर्द्धने राधिका हृद्य कर

कमले । रतिमतिशयित रस 'विट्ठल'स्याशुकुरुवेणुनिनादाव्हान सरले ॥ ८ ॥ श्लोक—व्रजपरिवृढवल्लभे कदात्वच्चरण सरोरुहमीक्षणास्पदं मे । तव तटगत वालुकाः कदाहं सकल निजांगतामुदा करिष्ये ॥ १ ॥ वृंदावने चारु वृहद्वने मन्मनोरथं पूरय सूरसूते । दृग्गोचरः कृष्णविहार एवं स्थिति स्त्वदीये तट एव भूयात् ॥ २ ॥ ❀६०५❀ राग विभास ❀ परमेस्वरी देव मुनि वंदित देवी गंगे । पावन चरन कमल नख रंजित सीतल बाहु तरंगे ॥१॥ मज्जन पान करत जे प्रानी त्रिविध ताप दुख भंगे । तीरथराज प्रयाग प्रगट भयो जब यमुना वेनी संगे ॥ २ ॥ भगीरथ कुल सगरो तारन वालमीक जस गायो । तुव प्रताप हरि-भक्ति प्रेमरस जन 'परमानंद' पायो ॥३॥ ❀९०६❀ ❀ राग विलावल ❀ गंगा तैं त्रिभुवन जस छायो । सकल वंस उद्धार करन कों लै भगीरथ आयो ॥१॥ जटा संकरी मात जान्हवी परसत पाप नसायो । महा मलीन पापी अपराधी सो वैकुंठ पठायो ॥ २ ॥ ऋषि प्रवेस भई ब्रह्म कमंडलु वामन चरन छुवायो । तातें तोहि सुर नर मुनि वंदित नाम महातम पायो ॥ ३ ॥ जैजैकार भयो त्रिभुवन में इन्द्र निजान वजायो । 'सूरदास' सुरसरी महिमा निगमहि परत न गायो ॥ ४ ॥ ❀ ९०७ ❀ शृङ्गार दर्शन❀राग आसावरी❀ ग्वालिनि कृष्ण दरस सों अटकी । वार-वार पनघट पर आवत सिर जमुनाजल मटकी ॥१॥ मदनमोहन को रूप सुधानिधि पीवत प्रेमरस गटकी । 'कृष्णदास' धनि-धनि राधिका लोकलाज सव पटकी ॥२॥ ❀६०८❀राजभोग आये❀राग सारंग❀ हरिजूकों ग्वालिनि भोजन लाई । वृंदा विपिन विसद जमुनातट सुनि ज्योंनार वनाई ॥ १॥ सानि-सानि दधि भात लियो है सुखद सखन के हेत । मध्य गोपाल मंडली मोहन छाक विहँसि मुख देत ॥२॥ देवलोक देखत सब कौतुक वालकेलि अनुरागे । गावत सुनत सुखद अति मानों 'सूर' दुरत दुख भागे ॥ ३ ॥ ❀९०९ ❀ राग सारंग ❀ लाल गोपाल हैं आनंदकंद । वैठे हैं कालिंदी के तट वांटत छाक जसोदानंद

॥ १ ॥ हँसि-हँसि भोजन करत परस्पर बाढ्यो रतिरस रंग । 'श्रीविट्ठलनाथ' गोवर्द्धनधारी बैठे जेंवत एकहि संग ॥२॥ ❀ ६१० ❀ राग सारंग ❀ बांटि बांटि सबहिनकों देत । ऐसे ग्वाल हरिहैं जो भावत सेष रहत सोई आपुन लेत ॥ १ ॥ आछो दूध सद्य धोरी कौ औट जमायो अपने हाथ । हँडिया मूंदि जसोदा मैया तुमकों दै पठई ब्रजनाथ ॥ २ ॥ आनंद मग्न फिरत अपने रंग वृंदावन कालिंदी तीर । 'परमानंददास' झूठो लै बांह पसारि दियो बलबीर ॥ ३ ॥ ❀ ६११ ❀ राग सारंग ❀ जमुना तट भोजन करत गोपाल । विविध भांति दै पठयो जसुमति ब्यंजन बहुत रसाल ॥ १ ॥ ग्वाल मंडली मध्य बिराजत हँसत हँसावत बाल । कमल नैन मुसकाय मंद हँसि करत परस्पर ख्याल ॥ २ ॥ कोऊ ब्यार ढुरावत ठाडी कोऊ गावत गीत रसाल । 'नंददास' तहां यह सुख निरखत अखियाँ होत निहाल ॥ ३ ॥ ❀ ६१२ ❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ भोजन कीनौरी गिरिवरधर । कहा बरनों मंडल की सोभा मधुवन ताल कदंबतर ॥१॥ पहले लिये मनोरथ ब्यंजन जे पठये ब्रज घर-घर । पाछे डला दियो श्रीदामा मोहनलाल सुघरवर ॥२॥ हँसत सयानो सुबल सैन दे लाल लियो दोना कर । 'परमानंद' प्रभु मुख अवलोकत सुरभी भीर पार पर ॥३॥ ❀ ६१३ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ मेरो लाल गंगा को सो पान्यो । पाँच बरस को सुद्ध सांवरो तें क्यों विषयी जान्यो ॥ १ ॥ नित उठि आवत हाथ नचावत कौन स है नक बान्यो । चूरी फोरत बांह मरोरत माट दही को भान्यो ॥२॥ ठाडी हँसति नंदजू की रानी ग्वालिनि बचन न मान्यो । 'परमानंद' मुसिक्याय चली जब देख्यो नन्द घरान्यो ॥३॥ ❀ ६१४ ❀ राग सारंग ❀ जमुना तट नवनिकुंज द्रुम नव दल पोहोपपुंज तहां रची नागरवर रावटी उसीर की । कुंकुम घनसार घोरि पंकजदल वोरि-बोरि चरचत चहुँ ओर अवनी पंकज पाटीर की ॥१॥ सोभित तनगौर स्याम सुखद सहज कुंज धाम परसत सीतल सुगंध मंदगति समीर की । 'नंददास'

पिय प्यारी निरखि सखी ललिता ओट श्रवनन धुनि सुनि किंकिनी मंजीर की ॥२॥ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग सोरठ ❀ अंग अनंगनि रंग रस्यो । नंद गृह तें नंदसुत वृषभान-भवन वस्यो ॥ १ ॥ धेनु के संग मिस ही मिस करि विपिन पंथ धस्यो । निरखि के सब ग्वाल सैन नयन फेरि हँस्यो ॥ २ ॥ वहुरि क्यों छूटत तहाँ ते बाहुवंध कस्यो । नेक राधा वदन चितयो हुलस इत विलस्यो ॥ ३ ॥ साँझ सब एकत्र ह्वै कै घोख-पथ परस्यो । 'सूर' ऐसे दरस कारन मन रहत तरस्यो ॥ ४ ॥ ❀ ९१६ ❀ राग सारंग ❀ वैठे घनस्याम सुंदर खेवत हैं नाव । आज सखी मोहन संग खेलवे को दाव ॥१॥ जमुना गंभीर नीर अति तरंग लोलें । गोपिन प्रति कहन लागे मीठे मृदु बोलें । पथिक हम खेवट तुम लीजिये उतराई । वीच धार माँझ रोकी मिस ही मिस डुलाई । डरपति हौं स्यामसुंदर राखिये पद पास । याही मिस मिल्यो चाहें 'परमानंददास' ॥ २ ॥ ❀ ९१७ ❀ संध्या समय ❀ राग सारंग ❀ जमुना जल खेवत हैं हरि नाव । वेगि चलो वृषभानु नंदिनी अव खेलन को दाव ॥ १ ॥ नीर गंभीर देखि कालिंदी पुनि-पुनि सुरत करावे । वारंवार तुव पंथ निहारत नैननि में अकुलावे ॥ २ ॥ सुनि कै वचन राधिका दौरी आय कंठ लपटानी । 'परमानंद' प्रभु छवि अवलोकत विथक्यों सरिता पानी ॥ ३ ॥ ❀ ९१८ ❀ शयन दर्शन ❀ अष्टपदी ❀ रतिसुखसारे गत-मभिसारे मदनमनोहर वेषम् । न कुरु नितंविनि गमन विलंवनमनुसरतं हृदयेशम् ॥ १ ॥ धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली । गोपी पीन पयोधर मर्दन चलित चपल कर शाली ॥ ध्रु० ॥ नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदुवेणुम् । वहुमनुते तनुते तनुसंगत पवन चलितमपि रेणुम् ॥२॥ पतति पतत्रे विचलित पत्रे शंकित 'भवदुपयानम् । रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तव पंथानम् ॥ ३ ॥ मुखरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलि सुलोलम् । चल सखि कुंजं स तिमिर पुंजं शीलय नील निचोलम् ॥ ४ ॥

उरसि मुरारे रूपहितहारे घन इव तरलबलाके। तडिदिव पीते रति विपरीते राजसि सुकृत विपाके ॥ ५ ॥ विगलित वसनं परिहत रसनं घटय जघनमपिधानम्। किसलयशयने पंकज नयने निधिमिव हर्ष निधानम्॥६॥ हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याती विरामम्। कुरु मम वचनं सत्वर रचनं पूरय मधुरिपुकामम् ॥ ७ ॥ 'श्रीजयदेवे' कृत हरि सेवे भणित परम रमणीयम्। प्रमुदित हृदयं हरिमति सदयं नमत सुकृत कमनीयम्॥८॥❀६१९❀ ❀ मान ❀ राग विहाग ❀ बोलत चलि ब्रजराज लाडिले बैठे पिय निकुंज सघन। रसिकराय मदनमोहनलाल पियसों तजि मान मिलि बेगि कुसुम सुकुमार तन ॥ १ ॥ जमुना जल तरंग सुनि सजनीरी सीतल सुगंध बहत पवन। विविध कुसुम मकरंद पान कर गुंजत मत्त मधुप गन ॥२॥ निबिड कोकिला कलरव तेसोई उदित उडुराजवर बरखत सुखद सुधाकन। 'गोविंद' प्रभु रीझि हृदै सों लगाय लई रसिकराय नंदनंदन ॥ ३ ॥ ❀ ६२० ❀ ❀ राग विहाग ❀ नवल किसोर नवल नागरिया। अपनी भुजा स्याम भुज ऊपर स्याम भुजा अपने उर धरिया ॥ १ ॥ करत विहार तरनितनया तट स्यामास्याम उमग रस भरिया। यों लपटाय रहे दोऊ जन मरकत मनि कंचन जैसे जरिया ॥ २ ॥ या उपमा कों रवि ससि नाहीं कंदर्प कोटिक वारने करिया। 'सूरदास' बलि-बलि जोरी पर नंदनंदन वृषभान दुलरिया ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ६२१ ❀ ज्येष्ठ सुदी ११ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभास ❀ जमुना पुलिन सुभग वृंदावन नवल लाल श्रीगोवर्द्धनधारी। नवल निकुंज नवल कुसुमित दल नवल-नवल वृषभानु दुलारी ॥ १ ॥ नवल हास नवल छबि क्रीडत नवल विलास करत सुखकारी। नवल श्रीविट्ठलनाथ कृपाबल 'नंददास' निरखत बलिहारी ॥२॥❀६२२❀ ज्येष्ठ सुदी १४† ❀ मंगला दर्शन ❀ ❀ राग रामकली ❀ प्रानपति विहरत श्रीजमुना कूले। लुब्ध मकरंद के

† आज सूं स्नान यात्रा तक सब समय पनघट के कीर्तन होय।

भ्रमर ज्यों वस भये देखि रवि उदय मानो कमल फूले ॥ १ ॥ करत गुंजार मुरली जू लै सांवरो सुरत ब्रजवधू तन सुधि जु भूले । 'चतुर्भुजदास' जमुने प्रेम सिंधु में लाल गिरिधरन अव हरखि झूले ॥२॥ ❀९२३❀शृंगार ओसरा❀ ❀राग विलावल❀ जमुनाजल घट भरि चली चंद्रावली नारि । मारगमें खेलत मिले घनस्याम मुरारि ॥१॥ नैननि सों नैनां मिले मन रह्यो लुभाय । मोहन मूरति बसि रही पग चल्यो न जाय ॥ २ ॥ तव तें प्रीति अधिक वढी यह पहली भेंट । 'परमानंद' स्वामी मिले जैसे गुड़ चेंट ॥३॥ ❀९२४❀ राग विलावल❀ मोहि जल भरन दै रे कन्हैया ॥ध्रु०॥ और नागरि सव गागरि ले गई मोहि रोकत घर मग जोवै मेरी मैया ॥१ ॥ मेरो कह्यो तू मानि लै हो मोहन सुनि हो कुंवर बलदाऊ जू के भैया । 'कुंवरसेन' के प्रभु आर नहिं कीजे हों तो तिहारी लैहों बलैया ॥ २ ॥ ❀ ९२५ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग आसावरी❀ आवत ही जमुना भर पानी । सांवरे बरन ढोटा कौन को री माई वाकी चितवन मेरी गैल भुलानी ॥१॥ हों सकुची मेरे नैन सकुचे इन नैनन के हाथ विकानी । 'परमानंद' प्रभु प्रेम समुद्र में ज्यों जलधर की बूंद समानी ॥२॥ ❀९२६❀ ❀राजभोग दर्शन❀ राग आसावरी❀ आवत ही जमुना भरि पानी । स्याम रूप काहू को ढोटा वाकी चितवनि मेरी गैल भुलानी ॥ १ ॥ मोहन कह्यो तुम कों या ब्रजमें हमें नाहिं पहचानी । ठगी सी रही चेटक सो लाग्यो तव व्याकुल मुख फुरत न वानी ॥२॥ जा दिन तें चितयोरी मो तन ता दिन तें हरि हाथ विकानी । 'नंददास' प्रभु यों मन मिलियो ज्यों सागर में पानी ॥ ३ ॥ ❀ ९२७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सोरठ ❀ भरि-भरि धरि-धरि आवत गागर तू कौन के रस भरी ! और दिनन तुम एकहि विरियां जात ही पनियां आज केऊ वेर गई ऐसे कहा भयो विनु देखे हरी ॥ १ ॥ जो तू सास ननद की कान करेगी तो तू अपने कुल डरेगी री । 'हरिदास' ठाकुर को प्रभु है रूप विमोहन नैन प्रान गये सव ढरेगी री ॥ २ ॥ ❀ ९२८ ❀ संध्या दर्शन ❀

❀ राग हमीर ❀ साँवरो देखत रूप लुभानी। चले री जात चितयोरी मोतन तब ते संग लगानी ॥१॥ वे वहि घाट पिवावत गैया हों इतते गई पानी। कमलनैन उपरेंना फेरचो 'परमान्द' हि जानी ॥२॥ ❀९२९❀शयन भोग आये❀ ❀राग कल्याण ❀ यह कौन टेव तिहारी कन्हैया जब तब मारग रोके। कैसे के पनियां जाय जुवतिजन आडोइ ठाडो है लकुट लिये दृग झोके ॥१॥ कबहुँक पाछे तें गागर डार देत ऐसें बजावे तारी जैसे कोई चोंके। 'रसिक' प्रीतम की अटपटी बातें सुनिरी सखी समझ न परें वाकी नोंके॥२॥❀६६०❀ ❀ राग हमीर ❀ आवत सिर गागर धरे भरे जमुना जल मारग मिले मोहि नंदजू को नंदना। सुधि न रही री ता छिन ते सुनिरी सखी देख्यो नैनन आनंद को कन्दना ॥ १ ॥ चित तें कछु न सुहाय गेह हू रह्यो न जाय मेरी दिसि चितवत डारचो मोपै फंदना। 'नन्ददास' प्रभु कों जो तू मिलावै तो हौं तोकों सरबस अरपि के पूजों तो चंदना ॥ २ ॥ ❀६३१❀सेनभोग सरे❀ ❀राग कान्हरा❀ कबतें चली यह रीति रहत पनघट पर ठाडो। जाति पांति कुल कौन बडो है दसेक गैया बाढो ॥१॥नंदबाबा जिन ऐसे सिखये जो करि अँखि मोहुकों काढो। 'नन्ददास' प्रभु जैसे मृगी लों रूप गढो प्रेम फंदा गाढो ❀६३२❀ ❀ शयन दर्शन ❀ राग अडानो ❀ हौं जल कों गई री सुघट नेह भरि लाई परी हैं चटपटी दरस की। इत मोहन गाँस उत गुरुजन–त्रास चित्र लिखी ठाढी नाम धरत सखी परस की ॥ १ ॥ टूटे हार फाटे चीर नयनन बहत नीर पनघट भई भीर सुधि न कलस की। 'नंददास' प्रभु सौं ऐसी गाढी वाढी प्रीत फैल परी चायन सरस की ॥२॥ ❀६३३❀ मान ❀ राग केदारा ❀ नागरी बेगि चलो प्यारी। कालिंदी के पुलिन मनोहर ठाढे लालबिहारी ॥ ॥ १ ॥ सीत समीर अरु नीर बहत हैं कुंज कुटीर सुखकारी। जानत हूँ निसि नाहिन वेधी इन्दु पच्छिम कों धारी ॥२॥ रस बस करिलैं छैल छबीलो तोहि मनावत हारी। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल ने सुखनिधि सेज सँवारी ॥ ३ ॥ ❀६३४❀

स्नान-यात्रा (ज्येष्ठ सुदी १५)

❀ मंगल भोग आये ❀ राग रामकली ❀ श्री जमुनाजी तिहारो दरस मोहि भावे । श्रीगोकुल के निकट वहति हो लहरनि की छवि आवे ॥१॥ सुख देनी दुख हरनी श्रीजमुने जो जन प्रात उठि न्हावे । मदनमोहन जु की खरी ये हैं प्यारी पटरानी जू कहावे ॥ २ ॥ वृंदावन में रास रच्यो है मोहन मुरली वजावे । 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कों वेद विमल जस गावें ॥ ३ ॥ ❀ ६३५ ❀ स्नान के दर्शन ❀ राग विलावल ❀ मंगल ज्येष्ट ज्येष्ठा पून्यो करत स्नान गोवर्द्धनधारी । दधि और दूध मधु ले सखी री केसर घट जल डारत प्यारी । चोवा चंदन मृगमद सौरभ सरस सुगन्ध कपूरनि न्यारी ॥ १ ॥ अरगजा अंग-अंग प्रति लेपन कालिंदी मध्य केलि बिहारी । सखियनि जूथ-जूथ मिलि छिरकत गावत तान तरंगनि भारी ॥ २ ॥ 'केसौकिसोर' सकल सुखदाता श्री वल्लभनंदन की वलिहारी ॥ ३ ॥ ❀ ९३६ ❀ राग विलावल ❀ज्येष्ठ मास पून्यो ज्येष्ठा को करत स्नान मुदित गोपाल । आगें द्विज मिलि करत वेद धुनि सुनि-सुनि मगन होत नंदलाल ॥१॥ सीतल जल रजनी अधिवासन वहु सुगंध चंदन छिरकाय । तुलसीदल पुहुपावलि धरकें केसर और कपूर मिलाय ॥ २ ॥ भरि-भरि संख डारत हरि के सिर श्रीविट्ठल प्रभु अपने हाथ। दरसन करत हरखि मन 'व्रजपति' दोऊ द्रगनि भरि निरखे नाथ ॥३॥ ❀ ६३७ ❀ राग विलावल ❀ ज्येष्ठ मास सुभ पून्यो सुभ दिन करत स्नान गोवर्द्धनधारी । सीतल जल हाटक जल भरि-भरि रजनी अधिवासन सुखकारी ॥ १ ॥ विविध सुगंध पुहुप की माला तुलसी दल दै सरस सँवारी । कर लै संख न्हवावत हरि कों श्रीविट्ठल प्रभु की वलिहारी ॥ तैसेंई निगम पढ़त द्विज आगें तैसेंई गान करत व्रजनारी । जै-जै सब्द चारयों दिसि ह्वै रह्यो यह विधि सुख वरखत अति भारी ॥ ३ ॥ करि सिंगार परम रुचिकारी सीतल भोग धरत भरि-

थारी। दै बीरा आरती उतारति 'गोविंद' तन मन धन दै वारी ॥ ४ ॥ ❀ ६३८ ❀ राग बिलावल ❀ पूरन मास पूरन तिथि श्रीगिरिधर स्नान करत मन भायो। अति आनंद सों न्हवावत श्री बिट्ठल ज्यों विधि वेद बतायो ॥१॥ उत्तम ज्येष्ठ ज्येष्ठा नच्छत्र होत अभिषेक भक्तन मन भायो। 'परमानंद' लाल गिरिवरधर अति उदार दरसायो ॥२ ॥ ❀६३६❀ शृंगार ओसरा ❀ ❀ राग रामकली ❀ नमो तरनि-तनया परम पुनीत जग पाविनी कृष्ण मनभाविनी रुचिर नामा। अखिल सुखदायिनी सब सिद्धि हेतु श्रीराधिका रमन रतिकरन स्यामा ॥ १ ॥ विमल जल सुमन कानन मोदजुत पुलिन अतिरम्य प्रिय ब्रजकिसोरा। गोप-गोपी नवल प्रेम रति वंदिता तट मुदित रहत जैसे चकोरा ॥ २ ॥ लहरी भाव ललित बालुका सुभग ब्रजबाल व्रत पूरन रास फलदा। ललित गिरिवरधरन प्रिय कलिंदनंदिनी निकट 'कृष्ण-दास' विहरत प्रबलदा ॥ ३ ॥ ❀६४०❀ राग विभास ❀ श्री जमुनाजी दीन जानि मोहिं दीजे। नंदकुमार सदा वर मांगों गोपिन की दासी मोहि कीजे॥ ॥१॥ तुम तो परम उदार कृपानिधि चरन सरन सुखकारी। तिहारे बस सदा लाडिली वर तट क्रीडत गिरिधारी ॥ २ ॥ सब ब्रजजन विहरत संग मिलि अद्भुत रास विलासी। तुम्हारे पुलिन निकट कुंजनि द्रुम कोमल ससी सुबासी ॥ ३ ॥ ज्यों मंडल में चंद बिराजत भरि-भरि छिरकति नारी। हँसत न्हात अति रस भरि क्रीडत जल क्रीडा सुखकारी ॥ ४ ॥ रानी जू के मंदिर में नित उठि पाँय लागि भवन-काज सब कीजे। 'परमानंददास' दासी ह्वै नंदनंदन सुख दीजे ॥ ५ ॥ ❀ ६४१ ❀ राग रामकली ❀ अधम उद्धारनी मैं जानी, श्री जमुनाजी। गोधन संग स्यामघन सुंदर तीर त्रिभंगी दानी ॥ १ ॥ गंगा चरन परसतें पावन हर सिर चिकुर समानी। सात समुद्र भेद जम-भगिनी हरि नखसिख लपटानी ॥ २ ॥ रास रसिकमनि नृत्य परायन प्रेम पुंज ठकुरानी। आलिंगन चुंबन रस बिलसत कृष्ण पुलिन

रजधानी ॥ ३ ॥ ग्रीष्म ऋतु सुख देति नाथ कों संग राधिका रानी । 'गोविंद' प्रभु रवितनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी ॥ ४ ॥ ❀ ९४२ ❀ ❀ राग रामकली ❀ यह प्रसाद हौं पाऊं, श्री जमुनाजी । तिहारे निकट रहौं निसिवासर राम कृष्ण गुन गाऊं ॥ १ ॥ मज्जन करौं विमल जल पावन चिंता कलह बहाऊं । तिहारी कृपा तें भानु की तनया हरि पद प्रीत बढाऊं ॥२॥ बिनती करौं यही वर मागौं अधम संग विसराऊं । 'परमानंद' प्रभु सब सुखदाता मदन गोपाल लडाऊं ॥ ३ ॥ ❀ ९४३ ❀ राग विभास ❀ सरन प्रतिपाल गोपाल-रति बर्द्धिनी । देति पति-पंथ प्रिय कंथ सन्मुख करत अतुल करुनामयी नाथ अंग अर्द्धिनी ॥१॥ दीनजन जानि रस पुंज कुंजेश्वरी रमति रस रास पिय संग निसि-सरदनी । भक्तिदायक सकल भवसिंधु तारिनी करत विध्वंस जन अखिल अघ-मर्दिनी ॥ २ ॥ रहत नंदसूनु तट निकट निसिदिन सदा गोप-गोपी रमत मध्य रस-कंदिनी । कृष्ण तन वरन गुन धर्म श्री कृष्ण के कृष्ण लीलामयी कृष्ण सुख-कंदिनी ॥ ३ ॥ पद्मजा पाय तुव संग ही मुररिपु सकल सामर्थ्य भई पाप की खंडिनी । कृपा रस पूर वैकुंठ पद की सीढ़ी जगत विख्यात सिव सेस सिर मंडिनी ॥४॥ परयो पद कमलतर और सब छोंडिकें देख दृग कर दया हास्य मुख मंदनी । उभय कर जोरि 'कृष्णदास' विनती करे करौ अब कृपा कलिंदगिरि-नंदिनी ॥५॥ ❀ ९४४ ❀ राग रामकली ❀ तुमसी और न कोई, श्रीयमुनाजी । करौ कृपा मोहि दीन जानि के निज ब्रज वासो होई ॥ १ ॥ राखौ चरन सरन भानु-तनया जनम आपदा खोई । यह संसार सबै विधि स्वारथ को सुत बंधु सगो न कोई ॥२॥ प्रेम भजन में करत विघनता संत संतापै सोई । ताको संग मोहि सुपने न दीजे मांगों नैन भरि रोई । गरल पान डारत अमृतमें विषया रस सों सोई । 'रसिक' कहें हौं दीन ह्वै माँगों चरन समुद्र समोई ॥४॥ ❀ ९४५ ❀ ❀ राग रामकली ❀ श्रीजमुनाजी पतित पावनकरे । प्रथम ही जब दियो दरसन सकल

पातक हरे ॥ १ ॥ जल तरंगनि परसि कर पय पान सों मुख भरे। नाम सुमिरत गई दुरमति कृष्ण जस विस्तरे ॥ २ ॥ गोप-कन्यन कियो मज्जन लाल गिरिधर वरे। 'सूर' श्रीगोपाल सुमिरत सकल कारज सरे ॥३॥ ❀९४६❀ ❀ राग रामकली ❀ नेह कारन प्रथम श्रीजमुने आई। भक्त के चित्त की वृत्ति सब जानि कें ताही तें अति ही आतुर जु धाई ॥ १ ॥ जाके मन जैसी इच्छा हती ताही की तैंसी ही साधजु पुजाई ॥१॥ 'नंददास' प्रभु तापर रीझि रहे जोई श्रीजमुनाजू कौ जसजु गाई ॥ २ ॥ ❀ ९४७ ❀ राग रामकली ❀ कालिन्दी महा कलिमल हरनी। रवि-तनुजा जम-अनुजा स्यामा महासुन्दरी गोविंद-घरनी ॥ १ ॥ जै जमुना जै कृष्णवल्लभी पतितनि कों पावन भव तरनी। सरनागत कों देति अभयपद जननी करति जैसे सुत की करनी ॥२॥ सीतलमंद सुगंध सुधानिधिधारा धरी वपु उर धरनी। 'परमानंद' प्रभु पतित पावनी जुग-जुग साखी निगम नित बरनी ॥ ३ ॥ ❀९४८❀राग रामकली❀ पिय संग रंग भरि करि कलोलें। सबनि कों सुख देन पिय संग करत सेन त्रित्त में तब परत चैन जबहि बोलें ॥ १ ॥ अति ही विख्यात सब बात इनके हाथ नाम लेत कृपा करें अतोलें। दरस करि परस करि ध्यान हियमें धरें सदा व्रजनाथ इनि संग डोलें ॥ २ ॥ अतिहि सुख करन दुख सबन के हरन एही लीनो परन दैजु कौलें। ऐसी श्रीजमुने जानि तुम करौ गुन गान 'रसिक' प्रीतम पाओ नग अमोले ॥३॥ ❀९४९❀ राग रामकली❀नैन भरि देखि अब भानु-तनया। केलि पियसों करे भ्रमर तबहि परे श्रमजल भरत आनन्दमनया ॥१॥ चलत टेढी होही लेत पियकों मोही इन बिना रहत नहीं एक छिनया। 'रसिक' प्रीतम रास करत जमुना पास मानो निर्धनन की हैजु धनया ॥ २ ॥ ❀९५० ❀ राग रामकली ❀ स्याम सुखधाम जहां नाम इनके निसिदिना प्रानपति आय हियमें वसे जोई गावे सुजस भाग्य तिनके ॥ १ ॥ येहि जग में सार कहत वार-बार सबनि के आधार धन निर्धनन के। लेत

जमुने नाम देत अभै पद दान 'रसिक' प्रीतम पिया वसजु इनके ॥ २ ॥ ❀ ९५१ ❀ राग रामकली ❀ कहत श्रुतिसार निरधार करिके । इन विना कौन ऐसी करै हे सखी हरत दुःख द्वंद सुखकंद वरखे ॥ १॥ ब्रह्मसंबंध जब होत या जीवकों तबहि इनकी भुजा वाम फरके । दौरि करि सोर करि जाय पियसों कहै अतिहि आनन्द मन में जु हरखे ॥ २ ॥ नाम निरमोल नग ना कोऊ ले सकै भक्त राखत हियें हार करके । 'रसिक' प्रीतमजू की होत जापर कृपा सोई श्री जमुना जी को रूप परखे ॥ ३ ॥ ❀ ९५२ ❀ ❀ राग रामकली ❀ श्रीजमुना सी नाहि कोऊ और दाता । जो इनकी सरन जात है दौरि कै ताहि कों तिहिं छिनु करि सनाथा ॥ १ ॥ ये ही गुनगान रसखान रसना एक सहस्र रसना क्यों न दई विधाता । 'गोविंद' प्रभु तन मन धन वारनें सबहि को जीवन इनही के जु हाथा ॥ २ ॥ ❀ ९५३ ❀ ❀ राग रामकली ❀ स्याम संग स्याम व्है रही श्रीजमुने । सुरतश्रम विन्दु तें सिंधु सी बही चली मानों आतुर अली रही न भवने ॥ १ ॥ कोटि कामहिं वारों रूप नैननि निहारों लाल गिरिधरन संग करन रमने । हरपि 'गोविंद' प्रभु निरखि इनकी ओर मानो नव दुलहनि आई गवने ॥ २ ॥ ❀९५४❀ ❀ राग रामकली ❀ जमुना जस जगत में जोई गावे । ताके आधीन व्है रहत हैं प्रानपति नैन और बैन में रस जू छावे ॥ १ ॥ वेद पुरान की वात यह अगम है प्रेम कौ भेद कोऊ न पावे । कहत 'गोविंद' श्रीजमुने की जा पर कृपा सोई श्री वल्लभकुल सरन आवे ॥ २ ॥ ❀ ९५५ ❀ राग रामकली ❀ चरन पंकज रेनु श्रीजमुनाजु देनी । कलिजुग जीव उद्धारन कारन काटत पाप अब धार पैंनी ॥१॥ प्रानपति प्रानसुत आये भक्तन हित सकल सुखन की तुम हो जु सैंनी । 'गोविंद' प्रभु विना रहत नहीं एक छिनु अतिहि आतुर चंचल जु नैनी ॥ २॥ ❀९५६❀ राग रामकली ❀ धाय के जाय जो श्रीजमुनाजू तीरे । ताकी महिमा अब कहाँ लगि वरनिये जाय परसत अंग

प्रेम नीरे॥१॥निसदिना केलि करत मनमोहन पिया संग भक्तन की है जु भीरे। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल इन बिना नेक नहीं धरत धीरे॥२॥❀९५७❀

❀ राग रामकली ❀ जा मुख तें श्री यमुने यह नाम आवे। तापर कृपा करें श्रीवल्लभ प्रभु सोई श्रीयमुनाजी को भेद पावे ॥ १ ॥ तन मन धन सब लाल गिरिधरन कों देकें चरन जब चित्त लावे। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल नैनन प्रगट लीला दिखावें ॥ २ ॥ ❀ ९५८ ❀ राग रामकली ❀ धन्य श्री जमुने निधि देंनहारी। करत गुनगान अज्ञान अघ दूरि करि जाय मिलवत पिय-प्रानप्यारी ॥ १ ॥ जिन कोऊ संदेह करो बात चित्त में धरो पुष्टि-पथ अनुसरो सुख जु कारी। प्रेम के पुंज में रास-रस कुंज में ताही राखत रस रंग भारी ॥ २ ॥ श्रीजमुने अरु प्रानपति प्रान अरु प्रानसुत चहुँ जन जीव पर दया विचारी। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रीति के लिये अब संग धारी ॥ ३ ॥ ❀ ९५९ ❀ राग रामकली ❀ गुन अपार मुख एक कहाँ लौं कहिये। तजौ साधन भजौ नाम श्रीजमुनाजी कौ लाल गिरिधरन वर तबहि पैये ॥ १ ॥ परम पुनीत प्रीति की रीति सब जानि के दृढ करि चरन कमल जु ग्रहिये। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल ऐसी निधि छाँडि अब कहाँ जु जैये ॥ २ ॥ ❀ ९६० ❀ राग रामकली ❀ चित्त में श्री जमुना निसिदिन जो राखो। भक्त के बस कृपा करत हैं सर्वदा ऐसो श्री जमुना जू को है जु साखो ॥ १ ॥ जा मुख तें श्रीयमुने यह नाम आवे संग कीजे अब जाय ताको। 'चतुर्भुजदास' अब कहत हैं सबनि सों तातें श्रीजमुने जमुने जु भाखो ॥ २ ॥ ❀ ९६१ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀

❀ राग सूहा ❀ कौन की उपरनी ओढि आये, साँची कहो पिय मोसों। । लटपटी पाग अटपटे पेचन बिनु गुनमाल हिये अधरन अंजन लाये॥१॥ जानत जो कौन के दुराये चाहत हो छिपत नाहीं छिपाये। एती चतुराई जिनि करो रे 'मोहन' मोसों कहो अब कौन तिया बिरमाये ॥३॥ ❀९६२❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ करत गोपाल जमुनाजल-क्रीड़ा । सुर नर असुर थकित भये देखत बिसरि गई तन जिय पीडा ॥ १ ॥ मृगमद तिलक कुंकुमा चंदन अगर कपूर वास वहु भुरकन । कुच युग मगन रसिक नंदनंदन कमल पानि परस्पर छिरकन ॥ २ ॥ निर्मल सरद कलाकृत सोभा बरखत स्वाँति बूंद जल मोती । 'परमानंद' कंचन मनि गोपी मरकत मनि गोविंद मुख जोती ॥ ३ ॥ ❀ ९६३ ❀ भोग दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ जमुना जल गिरिधर करत विहार । आसपास जुवती मिलि छिरकत हँसत कमल मुख चारु ॥ १ ॥ काहू की कंचुकी बंद टूटे काहू के टूटे हार । काहू के वसन पलटि मनमोहन काहु अंग न सँभार ॥२॥ काहू की खूभी काहू की नकवेसर काहू के विथुरे वार । 'सूरदास' प्रभु कहां लौं वरनों लीला अगम अपार ॥ ३ ॥ ❀ ९६४ ❀ संध्या समय ❀ राग हमीर ❀ जमुना तट देखे नंदनंदन । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल पीत वसन तन चर्चित चंदन ॥ १ ॥ लोचन तृपत भये दरसन तें उर की तपत बुझानी । प्रेम मगन तब भई ग्वालिनी तन की दसा भुलानी ॥२॥ कमल नयन रहे तट ठाडे तहाँ सकुच मिलि नारी । 'सूरदास' प्रभु अंतरजामी व्रत-पूरन वपुधारी ॥ ३ ॥ ❀ ९६५ ❀ ❀ शयन दर्शन ❀ राग कानरा ❀ जमुना जल विहरत हैं स्याम । राजत हैं दोऊ बाँह जोरि सखी संग स्यामास्याम ॥ २ ॥ कोऊ ठाडी जब नीर जंघ लों कोऊ कटि हिरद नींव । यह सुख वरनि सकै ऐसो को सुन्दरता की सींव ॥ २ ॥ स्याम अंग चंदन की आभा नागर केसर अंग । मलयज पंक कुमकुमा मिलि जल जमुना एक रंग ॥ ३ ॥ निसि श्रम भीन्यो तन जल निकसे जमुना भई पावन । 'सूर' प्रभु सुख ये मधि युवतीगन-जनके मन भावन ॥ ४ ॥ ❀ ९६६ ❀

उत्सव श्रीद्वारकेशलाल जी को (आषाढ़ कृष्णा ६)

❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ प्रगट भये तैलंग-कुल दीप ।

श्रीलछमन भट अति आनंदित सुत-मुख निरखत आय समीप ॥१॥ मात इलम्मा कूख उदय भयो ज्यों उपजत मुक्ता फल सीप। 'सगुनदास' मुख कहत न आवे जस प्रसरयो नव खंड सप्तद्वीप ॥ २ ॥ ❀ ९६७ ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग❀ गाइन सों रति गोकुल सों रति गोवर्द्धन सों प्रीति निबाही। श्रीगोपाल चरन सेवा रति गोप सखा सब अमित अथाई ॥१॥ गो बानी जो वेद की कहियत श्रीभागवत भलें अवगाही। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल नंदनंदन की सब परछाँई ॥२॥ ❀९६८❀राजभोग दर्शन❀ ❀ राग सारंग ❀ सुंदर तिवारो खसखाने को बनायो है तामें बैठे ब्रजराज कुंवर मनकों हरत हैं। अति सुगंध जल बहुभांतिन के बेला भर लाय-लाय खसीसब छिरक्यो करत हैं॥१॥ सीतल सुगंध त्रिविध समीर बहे कोकिला चकोर मोर डोलत फिरत हैं। 'जीवन' फुहारे छूटें मानो मनमथ लूटें झुकि झुकि-झुकि धार होदनि भरत हैं ॥ २ ॥ ❀ ९६९ ❀ राग सारंग ❀ उसीर भवन छायो सुमन तामें बैठे राधारवन एरी अंस भुज मेली। मृगमद घसि अंग लगाय कपूर जल सों चुचाय सीतल लागे दोऊरी करत सुखकेली॥१॥ गावे सारंग राग सरस स्वर कोकिला सुरत रस चले तें न चलाय रस सों पुलकित द्रुमवेली। 'जगन्नाथ' हित विलास ग्रीष्म ऋतु सुख निवास ललिता-दिक निरखि-निरखि पावे रसभेली ॥ ३॥ ❀९७०❀ राग सारंग❀ वृन्दावन कुंजनि में मध्य खसखानो रच्यो सीतल बियार झुकि गोखन बहत है। सुगंधी गुलाब-जल नाना बहु भांतिन के लै लाय धाय सखि सब छिरकत हैं॥१॥ धार धुरवा छूटत तहाँ नीके दादुर मोर पिक सुक जु फिरत हैं। 'कृष्णदास' फुहारें छूटे मानों मनमथ लूटे झुकि-झुकि-झुकि धारे हौदन भरत है॥२॥❀९७१❀ ❀ फूलके सिंगार के भावके ❀ भोग के दर्शन में❀ राग सारंग❀देखौरी मोहन पनघट पर ठाडो है नव निकुंज तैसीये सरद सुहाई रात। फूल कौ टिपारो बन्यो फूलन कौ मल्लकाछ फूलन के हार उर फूले-फूले करत बात ॥१ ॥ फूलन

को उपरैना फूलन पचरंग आन-आन भाँति फूल के कुंडल छवि अति सुहात। फूलन की वेंनी सिर फूलन के बाजूबंद फूले फूले 'कृष्णदास' यह छवि कही न जात ॥२॥ ❀ संध्या भोग आये ❀ राग कान्हरो ❀ फूल के भवन गिरिधर नवल नागरी फूल सिंगार करे अति हिं राजे। फूलन की पाग सिर स्याम के राज ही फूलन की माल हिये में विराजे ॥१॥ फूल सारी बनी कंचुकी फूल की फूल लहेंगा निरखि काम लाजे। 'छीतस्वामी' फूल-सदन विलसत प्यारी संग मिलवत अंग काम छाजें ॥२॥ ❀६७३❀ ❀ संध्या समय ❀ राग अडानो ❀ कृपा-रस नैन कमल दल फूले। भ्रु विलास देखें कोटिक मनमथ रहे भूलें ॥ १ ॥ वदन कमल पर कुटिल अलक छवि मोतिन हार अवतंस भूले। 'गोविंद' प्रभु प्यारी संग वैठे जहाँ कालिंदी कूले ॥ २ ॥ ❀ ६७४ ❀ शयन दर्शन ❀ राग विहाग ❀ वैठे व्रजराज कुंवर प्यारी संग जमुना तीर सीतल व्यार सखी मंद-मंद आवे। अति उदार वैजयंती स्याम-अंग सोभा देत कंठ भुज मेल दोऊ हँसि विहँसि गावे ॥१॥ झीनो पट दिपत देह प्रीतम सों अति सनेह गौर स्याम अंग सोभा देत कहत न बनि आवें। 'सूरदास मदनमोहन' मोहिनी से वने दोऊ हँसि-हँसि जात अंग अरगजा लगावे ॥ २ ॥ ❀६७५❀ राग विहाग ❀ चारु नट भेष धरि वैठे गोविंद जहाँ सघन गहवर नव निकुंज भवने। नागरी जव ही नैननि सों नैनां मिले तव ही नागर मुदित विपिन गवने ॥ १ ॥ रसिकवर नंदसुत सोहत सिज्जा रची विविध गति विविध पट फूल ऽन्न वने। हँसजा-तट निकट विमल जल वहत तहाँ त्रिगुन दल सिखंड सैल पवने ॥२॥ 'दासकुंभन' प्रभु सुजान तोहि मिलनि कों वहोत आतुर निमुख तवसि चरने। जोवत पथ एकटक लाल सकुँवार सखी गोवर्धनधर अखिल जुवति रमने ॥ ३ ॥ ६७६ ॥

रथयात्रा को प्रथम दिन (आषाढ सुदी १)

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग भैरव की रागमाला ❀ [१]संग त्रियन बन में खेलत रविजा-तट मुरलीधर मध्य रास नृत्यकला गुननिधान। सप्त सुरन तीन ग्राम गाय बजाय लिये आरोही-अवरोही धरन सुरन सम प्रमान ॥ १ ॥ [२]प्रथम राग भैरव गाइये मन मोह लिये चलतें अचल भये अचल तें चल भये। [३]मालकोस की तान लै लै बान बेधत प्रान [४]राग हिंडोल मन कलोल मीठे बोल लेत मन मोल ॥२॥ [५]मेघ ज्यों बरखत रस बुंदनि घुमडि बिरहिनि के मन हरे उमड। [६]श्रीराग गावत नैन नचावत [७]सोरठ गाइए हो सुंदर स्याम धुनि सुनि जागत तन मन काम ॥ ३ ॥ नवल [८]केदारो गावत राग लेत सुलप गति सुघर सुजान। [९]'ब्रजाधीस' प्रभु सरद रेन सुख विलास मदनमोहन पर वारौं तन मन प्रान ॥४॥ ❀ ९७७ ❀ राग सूहा ❀ मेरे तनकी तपत बुझाई। बिदा भई ग्रीषम ऋतु आली अब बरखा ऋतु आई ॥ १ ॥ जब मेरे गृह आवेंगे गिरिधर तब हों नीके करूंगी बधाई। नाना विधि के साज सिंगारौं बिरहनि पीर मिटाई ॥ २ ॥ सुभ मंगल आज कुंज भवन में पोहोप सुवास सुगंध छवाई। 'चतुर्भुज' प्रभु मेरे भवन में पधारो वारौं तन बिसराई ॥ ३ ॥ ❀ ९७८ ❀ राग सुघराई ❀ नई रितु आई माई परम सुहाई। नव सिंगार सजि चलौरी सबै मिलि जहाँ प्रीतम सुखदाई ॥ १ ॥ तन मन भेट करन रुचि बाढ़ी बिरहिनि बिरह सताई। 'कुंभनदास' प्रभु मानगढ़ तोरत ब्रजजन सजत चढाई ॥ २ ॥ ❀ ९७९ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ ❀ राग सुघराई ❀ मुरली मन मोद बढावति। मीठे मधुरे बोल सुनावति याही तें मोहि भावति ॥ १ ॥ राग रागिनी भेद दिखावत नेह नयो उपजावति। जैसी भाँवर मो मन भावति तैसी ताननि गावति ॥ २ ॥ पसु पंछी तहाँ दोरे आवत सुधि बुधि सब बिसरावति। 'सूरदास' स्वामी

---

१ राग भैरवी ताल द्रुपद। राग भैरव ताल आडा चौताला। ३ राग मालकोस ताल झूमरा। ४. राग हिंडोल ताल त्रिताल ५. राग मेघ मलार ताल चर्चरी। ६ राग श्रीराग ताल सुरफाग। ७. राग सोरठ ताल सवारी। ८ राग केदारा ताल धीमो त्रिताल। ९ राग भैरवी ताल एक ताल।

विरमावति चढि सुरभिन टेरि सुनावति ॥३॥ ❀ ६८० ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग सारंग ❀ सारंग गावति सारंग-नैनी पिय को मनहि रिझावत । आछी नीकी तान उपजावत सुघर मधुर सुर बीन बजावत ॥ १ ॥ लेत गति में गति सरस चतुर प्रीतम-प्रानपिया के जिय अति भावत । 'नंददास' प्रभु रीझि मगन भये लै सराहत तब प्यारी सचु पावत ॥ २ ॥ ❀६८१❀ ❀ संध्या समय ❀ रागकल्याण ❀ मदनमोहन पिय गावत राग कल्यान । वाजत ताल मृदंग संख ध्वनि गावत सब्द रसाल ॥१ वीन वेनु मधुर सुर वाजत उपज़त तान तरंग । 'रसिक' प्रीतम पिय प्यारे की छवि ऊपर वारों कोटि अनंग ॥ २ ॥ ❀ ६८२ ❀

रथयात्रा (आषाढ़ सुदी २)

❀ राजभोग सरे ❀ रागटोडी ❀ बैठी अटा मानो काम छटा सी सोच करति दृग वारिनि बोरे । जाय कहो कोऊ मेरे भैयासों एते भूपति तैनें काहेकों जोरे ॥ १॥ नंदनंदन व्रजचंद विराजे तें देखे तेते कारे अरु गोरे । 'नंददास' सब सजल कहावत हारके काम न आवत ओरे ॥ २ ॥ ❀ ६८३ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ झांझ पखावजसूं ❀ राग टोडी ❀ देवी के द्वार तें निकसी देवी दुलहिन हेरत पिया को मग अरवरात मन में । कहां रहे गोविंद गरुडध्वज महाभुज नैननि में प्रान प्रान तनक न तन में ॥ १ ॥ ऐसे हरि दृष्टि परे परम करुना भरे तारन में चंद जैसे आये मानों छन में । 'नन्ददास' प्रभु प्यारी दौरि आय रथ वैठी विछुरी विजुरी मानों आय मिली घन में ॥२॥ ❀९८४❀ ❀ पहिले दर्शन में ❀ राग मलार ❀ तुम देखो माई आज नैनभर हरिजू के रथ की सोभा । प्रात समय मानों उदित भयो रवि निरखि नयन अति लोभा ॥१॥ मनिमय जटित साज सरस सब ध्वजा चमर चित चोभा । मदनमोहन पिय मध्य विराजत मनसिज मन के छोभा ॥ २ ॥ चलत तुरंग चंचल भू

उपर कहा कहूं यह ओभा। आनन्दसिंधु मानों मकर क्रीडत मगन मुदित चित चोभा ॥३॥ यह बिध बनी बनी ब्रजबीथन महियां देत सकल आनंद। 'गोविंद' प्रभु पिय सदा बसो जिय वृंदावन के चंद ॥ ४ ॥ ❀ ६८५ ❀ ❀ भोग आये ❀ राग मलार ❀ देखो देखो नैननि को सुख रथ बैठे हरि आज। अग्रज अनुजा सहित स्यामघन सबै मनोरथ साज ॥ १ ॥ हाटक कलसा ध्वजा पताका छत्र चँवर सिर ताज। तुरंग चाल अति चपल चलत हैं देखि पवन मन लाज ॥ २ ॥ सुद अषाढ दोज सुभ दिन पुष्य नच्छत्र संयोग। बनमाला पीतांबर राजत धूप दीप बहु भोग ॥ ३ ॥ गारी देत सबै मन भावत कीरति अगम अपार। 'माधोदास' चरननि को सेवक जगन्नाथ श्रुतिसार ॥ ४ ॥ ❀ ६८६ ❀ राग मलार ❀ रथचढि चलत जसोदा अंगना। विविध सिंगार सकल अंग सोभित मोहत कोटि अनंगा ॥ १ ॥ बालक लीला भाव जनावत किलक हँसत नन्दनन्दन। गरें बिराजत हार कुसुमन के चर्चित चोवा चंदन ॥२॥ अपने-अपने गृह पधरावत सब मिलि ब्रजजुबतीजन। हर्षित अति अरपत सब सर्वसु वारत हैं तन मन धन ॥३॥ सब ब्रज दें सुख आवत घरकों करत आरति ततछन। 'रसिकदास' हरि की यह लीला बसौ हमारे ही मन ॥ ४ ॥ ❀ ६८७ ❀ राग मल्हार ❀ ब्रज में रथ चढि चलेरी गोपाल। संग लिये गोकुल के लरिका बोलत बचन रसाल ॥१॥ स्रवन सुनत गृह-गृह तें दौरी देखन कों ब्रजबाल। लेत फेरि करि हरि की बलैयाँ वारत कंचन माल ॥ २ ॥ सामग्री लै आवत सीतल लेत हरख नन्दलाल। बांट देत और ग्वालन कों फूले गावत ग्वाल ॥ ३ ॥ जय-जय कार भयो त्रिभुवन में कुसुम बरखत तिहिं काल। देखि-देखि उमगे ब्रजवासी सबै देत करताल ॥ ४ ॥ यह बिधि बन सिंहद्वार जब आवत माय तिलक कर भाल। लै उछंग पधरावत घर में चलत मंदगति चाल ॥ ५ ॥ करि नौछावरि अपने सुत की मुक्ताफल भरि थाल। यह लीला रस 'रसिक' दिवा-

निसि सुमिरन होत निहाल ॥६॥ ❀६८८❀ राग मलार ❀ जसोदा रथ देखन कों आई। देखौरी मेरो लाल गिरेगो कहा करो मेरी माई ॥१॥ मेरो ढोटा पालने सोवे उधरक-उधरक रोवे। अघासुर बकासुर मारे नैन निरंतर जोवे ॥ २ ॥ देहरी उलंघत गिरथोरी मोहन सोई घात में जानी। 'परमानन्द' होत तहाँ ठाडे कहत नन्द जू की रानी ॥३॥ ❀६८६❀ दूसरे दर्शन❀राग मलार❀ रथ बैठे गिरिधारी, तुम देखो सखी। राजत परम मनोहर सब अँग संग राधिका प्यारी ॥ १ ॥ मनिमानिक हीरा कुंदन खचि डांडी चार सँवारी। विधिकर विचित्र रच्यो जो विधाता अपने हाथ सँवारी ॥ २ ॥ गादी सुरंग ताफता की सुंदर फरेवाद छवि न्यारी। छत्र अनुपम हाटक कलसा झूमक लर मुक्तारी ॥ ३ ॥ चपल अश्व दें चलत हँसगति उपजत है छवि न्यारी। दिव्य डोर पचरंग पाट की कर गहि कुंज विहारी ॥ ४ ॥ विहरत ब्रज-बीथिनि वृंदावन गोपीजन मन ढारी। कुसुम अंजुली वरखत सुर मुनि 'परमानन्द' वलिहारी ॥ ५ ॥ ❀ ६९० ❀ भोग आये❀राग मलार❀ तू मोहि रथ लै बैठरी मैया। इतकी ओर बैठी हैं राधा उतकी ओर वल भैया ॥ १ ॥ गोप सखा सब संग चलि हैं मेरे और गावेंगे गीत। मेरे रथ की सोभा देखत सुख पावेंगे मीत ॥२॥ ब्रजजन भवन-भवन प्रति ठाडी देखनि कों मेरी गाडी। आरती लैके उतारही मो पर ठहै-ठहै मारग आडी ॥३॥ सुनत वचन आनन्द सिंधु हि मगन भई जसोदा माई। 'रसिक' मनोरथ पूरन गोविंद वैकुंठ तजि ब्रज आई ॥ ४ ॥ ❀ ८६१ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे मदन गोपाल अँग-अँग सोभा वरनी न जाई। मोर मुकुट वनमाल विराजत पीतांबर और तिलक सुहाई ॥ १ ॥ गज मुक्ता की माल कंठ सो है नंदलाल मानों नीलगिरि सुरसरी धसि आई। श्रीवृंदावन भूमि चारू संग सो है राधा नारि मानों घन दामिनी की छवि छाई ॥ २ ॥ बोलें पिक मोर कीर त्रिगुन व है समीर पुष्प वरखा करें अमरापति आई। 'कुंभनदास' प्रभु

उपर कहा कहूं यह शोभा। आनन्दसिंधु मानों मकर क्रीडत मगन मुदित चित चोभा ।।३।। यह बिध बनी बनी ब्रजबीथन महियां देत सकल आनंद। 'गोविंद' प्रभु पिय सदा बसो जिय वृंदावन के चंद ।। ४ ।। ❀ ९८५ ❀ ❀ भोग आये ❀ राग मलार ❀ देखो देखो नैननि कौ सुख रथ बैठे हरि आज। अग्रज अनुजा सहित स्यामघन सबैं मनोरथ साज ।। १ ।। हाटक कलसा ध्वजा पताका छत्र चँवर सिर ताज। तुरंग चाल अति चपल चलत हैं देखि पवन मन लाज ।। २ ।। सुद अषाढ दोज सुभ दिन पुष्य नच्छत्र संयोग। बनमाला पीतांबर राजत धूप दीप बहु भोग ।। ३ ।। गारी देत सबै मन भावत कीरति अगम अपार। 'माधोदास' चरननि को सेवक जगन्नाथ श्रुतिसार ।। ४ ।। ❀ ९८६ ❀ राग मलार ❀ रथचढि चलत जसोदा अंगना। विविध सिंगार सकल अंग सोभित मोहत कोटि अनंगा ।। १ ।। बालक लीला भाव जनावत किलक हँसत नन्दनन्दन। गरें बिराजत हार कुसुमन के चर्चित चोवा चंदन ।।२।। अपने-अपने गृह पधरावत सब मिलि ब्रजजुबतीजन। हर्षित अति अरपत सब सर्वसु वारत हैं तन मन धन ।।३।। सब ब्रज दें सुख आवत घरकों करत आरति ततछन। 'रसिकदास' हरि की यह लीला बसौ हमारे ही मन ।। ४ ।। ❀ ९८७ ❀ राग मल्हार ❀ ब्रज में रथ चढि चलेरी गोपाल। संग लिये गोकुल के लरिका बोलत बचन रसाल ।।१।। स्रवन सुनत गृह-गृह तें दौरी देखन कों ब्रजबाल। लेत फेरि करि हरि की बलैयाँ वारत कंचन माल ।। २ ।। सामग्री लै आवत सीतल लेत हरख नन्दलाल। बांट देत और ग्वालन कों फूले गावत ग्वाल ।। ३ ।। जय-जय कार भयो त्रिभुवन में कुसुम बरखत तिहिं काल। देखि-देखि उमगे ब्रजवासी सबै देत करताल ।। ४ ।। यह बिधि बन सिंहद्वार जब आवत माय तिलक कर भाल। लै उछंग पधरावत घर में चलत मंदगति चाल ।। ५ ।। करि नौछावरि अपने सुत की मुक्ताफल भरि थाल। यह लीला रस 'रसिक' दिवा-

निसि सुमिरन होत निहाल ॥६॥ ❀६८८❀ राग मलार ❀ जसोदा रथ देखन कों आई । देखौरी मेरो लाल गिरेगो कहा करो मेरी माई ॥१॥ मेरो ढोटा पालने सोवे उधरक-उधरक रोवे । अघासुर बकासुर मारे नैन निरंतर जोवे ॥ २ ॥ देहरी उलंघत गिरथोरी मोहन सोई घात में जानी । 'परमानन्द' होत तहाँ ठाडे कहत नन्द जू की रानी ॥३॥ ❀६८६❀ दूसरे दर्शन❀राग मलार❀ रथ वैठे गिरिधारी, तुम देखो सखी । राजत परम मनोहर सब अँग संग राधिका प्यारी ॥ १ ॥ मनिमानिक हीरा कुंदन खचि डांडी चार सँवारी । विधिकर विचित्र रच्यो जो विधाता अपने हाथ सँवारी ॥ २ ॥ गादी सुरंग ताफता की सुंदर फरेवाद छवि न्यारी । छत्र अनुपम हाटक कलसा झूमक लर मुक्तारी ॥ ३ ॥ चपल अश्व दै चलत हँसगति उपजत है छवि न्यारी । दिव्य डोर पचरंग पाट की कर गहि कुंज विहारी ॥ ४ ॥ विहरत ब्रज-बीथिनि वृंदावन गोपीजन मन ढारी । कुसुम अंजुली वरखत सुर मुनि 'परमानन्द' वलिहारी ॥ ५ ॥ ❀ ६९० ❀ भोग आये❀ राग मलार❀ तू मोहि रथ लै वैठरी मैया । इतकी ओर वैठी हैं राधा उतकी ओर वल भैया ॥ १ ॥ गोप सखा सव संग चलि हैं मेरे और गावेंगे गीत । मेरे रथ की सोभा देखत सुख पावेंगे मीत ॥२॥ ब्रजजन भवन-भवन प्रति ठाडी देखनि कों मेरी गाडी । आरती लैके उतारही मो पर ठहै-ठहै मारग आडी ॥३॥ सुनत बचन आनन्द सिंधु हि मगन भई जसोदा माई । 'रसिक' मनोरथ पूरन गोविंद वैकुंठ तजि ब्रज आई ॥ ४ ॥ ❀ ८६१ ❀ राग मलार ❀ रथ वैठे मदन गोपाल अँग-अँग सोभा वरनी न जाई । मोर मुकुट वनमाल विराजत पीतांवर और तिलक सुहाई ॥ १ ॥ गज मुक्ता की माल कंठ सोहे नंदलाल मानों नीलगिरि सुरसरी धसि आई । श्रीवृंदावन भूमि चारू संग सोहे राधा नारि मानों घन दामिनी की छवि छाई ॥ २ ॥ वोलें पिक मोर कीर त्रिगुन वहे समीर पुष्प वरखा करें अमरापति आई । 'कुंभनदास' प्रभु

गिरिधरलाल की बानिक पर बलि बलि-बलि जाई ॥ ३ ॥ ❀ ९९२ ❀ ❀ राग मल्हार ❀ रथ चढि डोलूंगो, मैया मैं। घर-घर तें सब संग खेलनि गोप सखन कों बोलूँगो ॥ १ ॥ मोहि जड़ाय देहु अति सुँदर सगरो साज बनाय। करि सिंगार ता ऊपर मोकों राधा संग बैठाय ॥ २ ॥ घर-घर प्रति हौं जाऊँ खेलन संग लेहु ब्रजबाल। मेवा बहुत मँगाय मोहि दै फल अति बडे रसाल ॥३॥ सुत के बचन सुनत नंदरानी फूली अंग न माय। सब विधि सहित हरि रथ बैठारे देख 'रसिक' बलि जाय ॥ ४ ॥ ❀ ९९३ ❀ ❀ राग मल्हार ❀ रथ बैठे गोपाल, तुम देखो माई। हीरा मोति पाँति बनी बिच-बिच राजत लाल ॥ १ ॥ बेरख फरहरात कलसान पर अरुन हरित बहुरंग। अतिहि विचित्र रच्यो विस्वकर्मा सोभित चार तुरंग ॥२॥ बालक सब संग के करत कुलाहल भारी। किलकति हँसत दोऊरी मैया मुदित होत गिरिधारी ॥ ३ ॥ खेलन चले सुभग वृंदावन सोभा बरनी न जाई। या छबि पर तन मन धन वारत 'दास' परम निधि पाई ॥४॥ ❀९९४❀ ❀ तीसरे दर्शन ❀राग विलावल❀ प्रगट प्रेम की फांस परी हरि डोलत दौरे दौरे। सकल देव देखत हैं ठाडे हरि हांकत हैं घोरे ॥ १ ॥ जिहिं कर संख चक्र गदा सोभित और न आयुध थोरे। तिहिं कर चाम चमोठा लीने अरजुन के रथ जोरे ॥ २ ॥ जेई मुख वेद निरंतर बोलत तेई मुख बोलत होरे। यह विधि स्वारथ करत जगद्गुरु जानत नाहीं हम कोरे ॥ ३ ॥ बलि-बलि जाऊं स्यामसुंदर की भक्त वत्सलता भोरे। 'माधौदास' सबै संकट तें दास आपने छोरे ॥ ४ ॥ ❀ ९९५ ❀ भोग आये ❀ रागमलार ❀रथ बैठे गिरिधारी, आज माई। वाम भाग वृषभाननन्दिनी पहरें कसुंभी सारी ॥ १ ॥ तैसोई घन उनयो चहुं दिसि तें गरजत हैं अति भारी। तैसेई दादुर मोर करत रट तैसी भूमि हरियारी ॥ २ ॥ सीतल मंद बहत मलयानिल लागत हैं सुख कारी। नन्दनन्दन की या छबि ऊपर 'गोविंद' जन बलिहारी ॥३॥ ९९६

❀ ९९६ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे नंदलाल, तुम देखो सखी। अति विचित्र पहरें पट झीनो उर सोहै वनमाल ॥ १॥ सुंदर रथ मनिजटित मनोहर सुंदर हैं सब साज। सुंदर तुरंग चलत धरनी पर रह्यो घोख सब गाज ॥ २ ॥ ताल पखावज बीन बांसुरी बाजत परम रसाल। 'गोविंद' प्रभु पिय पर बरखत हैं विविध कुसुम ब्रजबाल ॥ ३ ॥ ❀ ९९७ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे ब्रजनाथ, तुम देखो सखी। संकर्षन के संग विराजत गोपसखा लै साथ ॥ १ ॥ एक ओर राधा जुवती सब छत्र चमर ललिता के हाथ। विविध भाँति श्रीगोवर्द्धनधारी 'कृष्णदास' कियो सनाथ ॥२॥ ❀९९८❀राग मलार❀ रथ चढि जादौपति आवत, देखो माई। मोर मुकुट बनमाल पीतपट नटवर भेष बनावत ॥ १ ॥ गरजत गगन दामिनी दमकत पीत ध्वजा फहरावत। संख चक्र बाजत वेद धुनि सुनि जलधर माथो नावत ॥२॥ नाचत देवमुनी सिव सनकादिक नारद तुंबरु गावत ॥ २ ॥ सकल नैन लोचन-फल दीनें 'जन परमानंद' पावत ॥ ३ ॥ ❀ ९९९ ❀ चोथे दर्शन ❀ राग मलार❀ लाल माई खरेई विराजत आज। रत्न खचित रथ ऊपर बैठे नवल-नवल सब साज ॥ १ ॥ सूथन लाल काछिनी सोभित उर वैजयंतीमाल। माथें मुकुट ओढें पीतांबर अंबुज नयन विसाल ॥ २ ॥ स्याम अंग आभूपन पहिरें झलकत लोल कपोल। बारबार चितवत सबहि तन बोलत मीठे बोल ॥३॥ यह छवि निरखि-निरखि ब्रजसुंदरि लोचन भरि-भरि लैहो। फिरि-फिरि झांकि-झांकि मुख देखौ रोम-रोम सुख पैहो ॥ ४ ॥ उतरि लाल मंदिर में आये मुरली मधुर बजाय। निरखि निरखि फूलति नन्दरानी मुख चूमत ढिंग आय ॥ ५ ॥ अति सोभित कर लिये आरती करत सिहाय-सिहाय। 'श्रीविट्ठल' गिरिधरनलाल पर वारत नाही अघाय ॥ ६ ॥ ❀ १००० ❀ ❀ राग मलार ❀ जय श्रीजगन्नाथ हरिदेवा। रथ बैठे प्रभु अधिक विराजत करें जगत सब सेवा ॥ १ ॥ सनक सनन्दन और ब्रह्मादिक इन्द्रादिक सुरि

आये। अपनी-अपनी भेट सबै लै गगन विमाननि छाये ॥२॥ रत्न जटित रथ नीकौ लागत चंचल अश्व लगाये। नर नारी आनन्द भये अति प्रमुदित मंगल गाये ॥ ३ ॥ गारी देत दिवावत अपन पै यह विधि रथ हिंच लाये 'रामराय' गोवर्द्धनवासी नगर उडीसा आये ॥४॥ ❀ १००१ ❀ राग मलार ❀ वा पट पीत की फहरान। कर गहि चक्र चरन की धावनि नहिं बिसरत वह बान ॥ १ ॥ रथतें ऊतरि अवनि आतुर ह्वै कचरज की लपटान। मानों सिंह सैल तें उतरयो महामत्त गज जान ॥ २ ॥ धन्य गोपाल मेरो प्रन राख्यो मेटि वेद की कान। सोई अब 'सूर' सहाय हमारे प्रगट भये हरि आन ॥ ३ ॥ ❀ १००२ ❀ भोग के दर्शन ❀ तमूराम्रं ❀ राग मलार ❀ आयो आगम नरेस देस-देस में आनन्द भयो मनमथ अपनी सहाय कों बुलायो। मोरन की टेर सुनि कोकिला की कुलाहल तैंसोई दादुर हिलमिलि स्वर गायो ॥१॥ छूट्यो घन मत्त हाथी पवन महावत साथी अंकुस बंकुस दै दै चपला चलायो। दामिनी ध्वजा पताको फरहरात सोभा भारी गरजि-गरजि धौं-धौं दमामा बजायो ॥ २ ॥ आगें-आगें धाय-धाय बादर बरखत आय व्यारन की बहुकन ठौर-ठौर छिरकायो। हरी हरी भूमि पर बूढ़न की सोभा बाढी बरन बरन रंग बिछौना बिछायो ॥३॥ बांधे हैं बिरही चोर कीनी है जतन रोर संयोगी साधन सों मिलि अति सचुपायो। 'नन्ददास' प्रभु नंदनंदन को आज्ञाकारी अति सुखकारी ब्रजबासिन मन भायो ॥ ४ ॥ ❀ १००२ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग मलार ❀ गाय सब गोवर्द्धनतें आईं। बछरा चरावत श्रीनन्दनन्दन बेनु बजाय बुलाई ॥ १ ॥ घेरी न घिरत गोप-बालकपें अति आतुर ही धाई। बाढी प्रीति मदनमोहन सों दूध की नदी बहाई ॥ २ ॥ निरखि स्वरूप ब्रजराजकुंवर कौ नयनन निरखि निकाई। 'कुंभनदास' प्रभु के सन्मुख ठाडी भई मानों चित्र लिखाई ॥ ३ ॥ ❀ १००४ ❀ शयन दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ सुंदर वदन सदन-सोभा कौ निरखि नयन मन

थाक्यो । हौं ठाडी वीथिनि ह्वै निकस्यो उझकि झरोकन झांक्यो ॥ १ ॥ मोहन एक चतुराई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो। वारौंरी लाज वैरिन भई री मोकों मैं गँमार मुख ढांक्यो ॥ २ ॥ चितवन में कछु करि गयो मोतन मन न रहत क्यों राख्यो । 'सूरदास' प्रभु सर्वस्व लै गये हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥३॥ ❀१००५❀ आषाढ सुदी ३ (रथयात्रा के दूसरे दिन) ❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ तुम देखौ माई रथ वैठे जदुराय। प्रात समै आवत अलसाने नैननि झुकि झुकि जाँय ॥ १ संख चक्र गदा पद्म विराजत सुंदरस्याम स्वरूप । स्वेत पिछोरा कुल्हे रही लसि मुक्तामाल अनूप ॥ २ ॥ सीसफूल भाल तिलक विराजत रवि ससि सम कनफूल । आरति वारत प्रानप्यारे पर 'गिरिधर' जमुना-कूल ॥ ३ ॥ ❀ १००६ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ पावस ऋतु आगम जानि आये निज कुंजसदन नंदनंदन व्रजनरेस चलत चाल गति गयंद । कटि सोहे आडवंद सीस कुल्है पहिरें स्वेत मोरपच्छ श्रवननि कुंडल झलकत हैं अति अमंद ॥ १ ॥ द्रुम वेलि हरित भूमि सोभित हैं इन्द्रवधु घन गरजत वूँद परत वहोत पवन मंद । कोकिल पिक करत सोर नाचत मन मुदित मोर 'कृष्णदास' नीके वने राधा अरु व्रजचंद ॥ २ ॥ ❀ १००७ ❀

कसूँभी छठ (आषाढ़ सुदी ६)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग सूहा ❀ ठाडे रहो अंगना हो पिय जौलों देह नख-सिख लौं भींजे । न्हाय क्यों न लेहु गगन-पानी डार देहो वसन और पहरो तव गृह-देहरी पाँव दीजे ॥ १ रैन के चिह्न पिय प्रगट देखियत ताहि पोंछ सौंह कीजे । 'धोंधी' के प्रभु तुम वहुनायक देह सुधारि मोहि छीजें ॥ २ ॥ ❀ १००८ ❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ षष्ठि-पंडगू फल प्रात यज्ञपुरुष पुष्टि-प्रवाह उदय किरन लछमन भट ग्रीषम ऋतु अंत । सुद अषाढ वरखा ऋतु आगम अवनी समाज गोपीजन मंगल गायो

प्रथम समागम राधिका-कंत ॥१॥ नर-नारिन मन आनंद देस-देस में आनंद बन-बेली अति आनंद आदि जीव जंत । 'कृष्नदास' सुजस गायो आनंद ऊर उपजायो श्रुति पुरान गायो सुनत सुख पायो मुनि संत ॥२॥ ❀१००९❀ ❀ राग मल्हार ❀ सुद अषाढ़ षष्ठि-पंडगू पुष्टिपंथ धर्मवीर लछमनभट उदित अंग आनंद उपजायो । धरनीधर भूमिमंडल श्रुति पुरान सास्त्र अर्थ आगम--आचार्य जानि गोपीजन मंगल गायो ॥ १ ॥ ग्रीष्म तपत गयो बरखा ऋतु आगम भयो उबटि अंग पिय प्यारी जगत जनायो । करि सिंगार सुरँग बसन मुक्तामनि भूषन तान प्रथम समागम अबनि कुंज सों मनायो ॥२॥ कोकिल पिक बंदीजन द्विज दादुर प्रगट रूप दाता बिंब विकास रूप घन सम झर लायो । 'नंददास' पूरहिं आस बन बेली हरित भई भरि हैं सरोवर समीर नदी नीर सुहायो ॥३॥ ❀१०१०❀ राग मल्हार ❀ कारी घटा सुखकारी, उमड़ि घुमडि आई । पिय सिर पाग कसूँभी सोभित प्रिया के कसूँभी सारी ॥ १ ॥ भुज अंसनि धरि विहरत डोलत नवल भूमि हरियारी । 'श्रीविट्ठल गिरिधर' दंपति छबि इन्दु-वधू लखि हारी ॥ २ ॥ ❀१०११❀ राग मल्हार ❀ लाल माई बांधे कसूँभी पाग । कसूँभी छड़ी हाथ में लिये भीजि रहे अनुराग ॥ १ ॥ कसूँभोई कटि बन्यो है पिछोरा कसूँ-भल है उपरैना । कसूँभी बात कहत राधा सों कसूँभे बने दोउ नैना ॥२॥ हरित भूमि यमुना तट ठाड़े गावत राग मल्हार । 'श्री विट्ठल' गिरिधरन छबीलो स्याम घटा उनहार ॥३॥ ❀१०१२❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ नीके आज लागत लाल सुहाये । श्री वृषभाननंदिनी रचि-पचि आभूषन पहिराये ॥ १ ॥ पाग कसूँभी सीस बिराजत मधि लटकन लटकाये । हीरा लाल रतन निरमोलक रचि-पचि पेच बनाये ॥ २ ॥ अलक तिलक लखि आनन की छवि कोटि चंद लजाये । सिंघद्वार ठाड़े पिय मोहन निरखत मो मन भाये ॥ ३ ॥ बलि—बलि जाऊँ मुखारविंद की दरसन

ताप नसाये। 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन छबीलो निरखि नैन सुख पाये ॥४॥ ❀१०१३❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ ब्रज पर नीकी आज घटा हो। नेंन्ही-नेंन्ही बूँद सुहावनी लागें चमकत बीजु छटा हो ॥ १ ॥ गरजत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा हो। तैसोई सुर गावत चातकपिक प्रगट्यो है मदन भटा हो ॥ २ ॥ सब मिलि भेट देत नंदलाल हिं बैठे ऊँची अटा हो। 'कुंभनदास' गिरिधरनलाल सिर कुसूँभी पीत पटा हो ॥३॥❀१०१४❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ देखौ सखि ठाडे नंदकिसोर। गोवर्द्धन पर्वत के ऊपर तैसेई नाचत मोर ॥ १ ॥ लाल पाग सिर सुभग लाल के लाल लकुटिया हाथ। लाल रतन सिरपेच बनी छबि मोतिन की लर माथ ॥२॥ लालन के आभूषन अंग-अंग पीत बसन फहरात। 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन छबीले स्याम सलोने गात ॥ ३ ॥ ❀ १०१५ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग मल्हार ❀ भवन मेरो कैसो लागत नीको। जबहिं लाल आवत यह मंदिर खरौ भांवतो जीको ॥ १ ॥ कसुंभी पाग खुभि रही नीकी विकसित नंदकिसोर। तैसीय स्याम घटा जुरि आई अरु बोलत बन मोर ॥ ॥ २ ॥ ता दिन विधिना भली बनाई अकेली ही घर मांझ। 'श्रीविट्ठल' गिरिधरनलाल सों बातन ही भई सांझ ॥३॥ ❀ १०१६ ❀ शयन दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ कुंज महल के आँगन मध्य पिय-प्यारी बाँह जोटी फिरत रंग सों रगमगे। अरुन बसन तन मोतिनि की माला गरें चिहुँटे सरीर चीर नीर सों सगबगे ॥ १ ॥ छूटे बार भींजन लागे ललित कपोलनि सों कुंडल किरन नग भूषन झगमगे। 'नागरीदास' घन बरखत पानी तामें रूप के जहाज मानों डोलत डगमगे ॥ २ ॥ ❀ १०१७ ❀ ❀ मान पोढवे में ❀ राग मल्हार ❀ रंग महल ठाढे पिय पाछें प्यारी दोऊन की छबि रही मो जिय अटकि अटकी। इन के कसूँभी सारी लहंगा री सोहे भारी उनके सिर लागि पाग रही लटकि–लटकी ॥ कोकिला करत

गान मधुर सुर लेत तान वारत ब्रजवधूप्रान ब्रीडा पटक-पटकी। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी सरवसु लै चाख्यो गटक गटकी ॥२॥❀१०१८❀

❀ राग मल्हार ❀ पहिरें कसूंभी सारी बैठे पिय संग प्यारी भूमि हरियारी तामे इन्द्रवधू सोहे। पियके निकट ठाडी कंचुकी अंग गाढी बाल मृग लोचनी देखत मन मोहे ॥ १ ॥ तैसीय पावस ऋतु तैसेई उनए घन तैसीय बानिक वनी उपमा कों को है। 'कुंभनदास' स्वामिनी विचित्र राधे भामिनी गिरिधर पिय एकटक मुख जोहैं ॥ २ ॥ १०१६ ❀

देवशयनी (आषाढ सुदी ११)

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ रूप-सरोवर साजे, देखो माई। ब्रज बनिता वर बारी-वृंद में श्री ब्रजराज बिराजे ॥ १ ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोले। कुच चक्रवाक विलोकि बदन विधु बिछुर रहे बिन बोले ॥ २ ॥ मुक्तामाल बगपाँति मनोहर करत कुलाहल कूल। सारस हंस चकोर मोर सुक वैजयंति समतूल ॥३॥ कनक कपिस निचोल विविध रंग विरह व्यथा विसरावे। 'सूरदास' आनंद-सिंधु की सोभा कहत न आवे ॥ ४ ॥ ❀ १०२० ❀ राग मल्हार ❀ प्रसन्न भये हो लाल दियो दरसन जैसी हौं तरसत तैसी सोतैं लागी तरसन। अंग लाग्यो सरसन मन लाग्यो परसन पाव लाग्यो तरसन तू घन नीको लाग्यो बरसन ॥ १ ॥ ना मैं जानों अरचन ना मैं जानों चरचन अपने प्रीतम की सेवा करी परसन। 'तानसेन' के पिय ऐसे मिल बैठे जैसे संभू कों गौरी मिलि हुलसन ॥ २ ॥ ❀१०२१❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ सजल जलद बादल दल देखियत भलेई लाल आये मेरे सदन। तैसीय कोयल कारी बन घन ठौरा ठारी तैसीय दामिनी लगी गगन रमन ॥ १ ॥ भले ही पिया जु आये चारु लोचन मिले हैं सोतिन के स्तन पर लगे हैं भरावरि। 'स्यामसाहि' के प्रभु तुम वहुनायक बारि फेरि डारों पिय आज की आवनि पर ॥२॥ ❀१०२२❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ आई जू स्याम जलद घटा, ओल्हर चहुँ-दिसि तें घनघोर। दंपति अति रस रंग भरे बांह जोटी फिरत कुसुम वीनत कालिंदी तटा ॥ १ ॥ न्हेंनी न्हेंनी बूंदनि वरखन लाग्यो तेसीय चमकत बीजु छटा। 'गोविंद' प्रभु पिय प्यारी उठि चलि ओढें लाल पट दौरि लियो जाय बंसीबटा ॥२॥ ❀ १०२३ ❀ भोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ स्याम घटा जुरि आईं, व्रज पर। तेसीय दामिनी चहुँदिसि कोंधत लेत तरंग सुहाई ॥ १ ॥ सघन छाँह कोकिला कूजत चलत पवन सुखदाई। गुंजत अलिगन सघन कुंज में सोरभ की अधिकाई ॥१॥ विकसित स्वेत पांति वगलनि की जलधर सीतलताई। नव नागर गिरिधरन छबीलो'कृष्णदास' वलिजाई ॥ ३ ॥ ❀ १०२४ ❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ राधे रूप की घटा पोषत चातक मदन गोपालें। दामिनी वारौं दसननि ऊपर छुटी अलकन पर धुरवा वारौं बग पंगति मुक्ता मालें ॥ १ ॥ इंद्र धनुस पचरंग सारी पर वारि डारौं और जावक पर बूढन लाल । 'जन भगवान' मदन मोहन पर तन मन पिक वारौं सुनि-सुनि बचन रसाल ॥ २ ॥ ❀१०२५❀ ❀ मान पोढवे में ❀ राग मल्हार ❀ कौन करै पटतर,तेरी गुन रूप रासि हो राधा प्यारी । श्रिया प्रभृति जेती जग जुवती वारि फेरि डारों तेरे रूप पर ॥१॥ राग मल्हार अलापति सकल कला गुन प्रवीन हेरी तू सुघर। 'गोविंद' प्रभु कों तू न्यायन वस करि कहत भलें जु भलें व्रजराजकुँवर ॥ २ ॥ ❀ १०२६ ❀ राम मल्हार ❀ सघन घटा घनघोर न्हेंनी-न्हेंनी बूंदनि हो पिय बरसे। चहुँदिसि तें गरजत मंद-मंद तेसीय कनक चित्रसारी तामें पौढे पिय प्यारी तेसीय दामिनी अति हरसे ॥ १ ॥ तैसेई बोलत मोर कोकिला करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसे । 'गोविंद' प्रभु सुघर दोऊ गावत केदारो राग तान अब हीं सरसे ॥ ३ ॥ ❀ १०२७ ❀

आषाढ़ी पून्यो (आषाढ़ सुदी १५)

❀मंगलादर्शन❀राग मलार❀ हौं जगाई माई बोलि-बोलि इन मोरा। बरखत मेह अँधियारी चौमासे की कैसे मिलौं नन्दकिसोरा॥१॥ सेज अकेली और दामिनी कौंधति घन गरजत चहुं ओरा। 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर मोही मेरो मन नहिं मो कोरा॥ २ ॥ ❀ १०२८ ❀ शृङ्गार ओसरा ❀ राग मलार❀ एरी माई घन मृदंग रस भेद सौं बाजत नाचत, चपला चंचल गति। कोकिला अलापत पपैया उरपि लेत मोर सुघट सुर साजत॥१॥ दादुर तार धार ध्वनि सुनियत रुनझुन रुनझुन पर बाजत। 'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक कुंज महल दोऊ राजत ॥ २ ॥ ❀ १०२९ ❀ राग गौड मलार ❀ बाजत मृदंग उघटित सुधंग तकझं तकझं धुमकिटता धुमकिट धुमकिट धिलांग तक। द्रगदां-द्रगदां धिन्न दाना जगन रटत झौंत झौं झौंत॥१॥ गत बादर गरज घन दामिनि लरज अलाप लेत खरज होत अनुपम तरज। 'कृष्णदास' प्रभु पास पूरन भई आस नृत्य करत सौं विलास थोंदिग थोंदिग तक थोंदिग–थोंदिग तक थुंग तक थुंग तक ॥ २ ॥ १०३० ॥ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ नाचत लाल त्रिभंगी, रस भरे तैसेई नाचत मोर। जैसी जैसी धुनि मुरली बाजत तैसे तैसे घन गरजत मुरज बजावत री मानो मघवा मृदंगी ॥ १ ॥ सप्त सुरनि लै अलाप गावत तान बंधान मूर्च्छना सुर देत मधुप उमंगी। 'सूरदास' मदनमोहन जानेजु मुकुट मनी उघटत सप्त भेद तान तरंगी॥२॥ ❀१०३१❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मलार ❀ वृंदावन भुवि कुंदादिकयुत मंदानिल रुचिरे ॥ ध्रु० ॥ पुलिनोदित नवनलिनोदर मिलदलिनोदितरसगाने। कर्णादिक पुट चरणांबुज ध्वनि चारु हरिणाक्षि वलिते ॥ १ ॥ निजरसमयताप्रकटन परितः प्रकटित रास बिहारे। गिरिधारण रतिहारण कारण मम रतिरस्तु सदारे ॥ २ ॥ ❀ १०३२ ❀ राग मलार ❀ नागर नंदलाल कुँवर मोरनि संग नाचे। कटितट पट किंकिनी कल नूपुर रुनझुन करे नृत्य करत चपल

चरन पात घात सांचे ॥ १ ॥ उदित मुदित सघन गगन घोरत घन दें दे भेद कोकिला कलगान करत पंचमस्वर वांचे । 'छीतस्वामी' गोवर्द्धननाथ साथ विहरत वर विलास वृंदावन प्रेमवास याचें ॥ २ ॥ ❀ १०३३ ❀

❀ भोग के दर्शन ❀ राग मलार ❀ इनि मोरनि की भांति देख नाचे गोपाला। मिलवत गति भेद नीके मोहन नट-साला ॥ १ ॥ गरजत घन मंद मंद दामिनी दरसावे । रमक झमक बूंद परे राग मल्हार गावे ॥२॥ चातक पिक सघन कुंज वारबार कूजे । वृन्दावन कुसुमलता चरनकमल पूजे ॥ ३ ॥ सुर नर मुनि कामधेनु कौतुक सब आवे । वारि फेरि भक्ति उचित 'परमानंद' पावे ॥ ४ ॥ ❀ १०३४ ❀ संध्या समय ❀ राग मलार ❀ नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहि रिझावत । तैं सोई कोकिला अलापत पपैया सब्द देत तैसै मेघ गरज मृदंग वजावत ॥ १ ॥ तैसोई वृंदावन तैसी है हरित भूमि तैसी व्रजवधू हिलमिलि स्वर गावत । 'विचित्र विहारी' जूकी या छवि ऊपर तन मन धन सब वारत ॥२॥ ❀ १०३५ ❀ शयन दर्शन ❀राग मलार❀ माईरी स्यामघन तन दामिनी दमकत पीतांवर फरहरे । मुक्तामाल वगजाल कहि न परत छवि विसाल मानिनी की अर हरे ॥१॥ मोर मुकुट इन्द्र-धनुस सो सुभग सोहत मोहत मानिनी द्युति थरहरे । 'कृष्णजीवन' प्रभु पुरंदर की सोभानिधान मुरलिका की घोर घरहरे ॥२॥ ❀ १०३६ ❀ ❀मान ❀ ❀ राग मल्हार ❀प्यारी के गावत कोकिला मुख मूंदि रहे पिय के गावत खग नैना मूंदि रहे सब । नागरी के रस गिरिधरन रसिकवर मुरली मल्हार राग अलाप्यो मधुरे जव ॥१॥ दंपति तान सुनत ललितादिक वारति है तनमन फेरत हैं अंचल तव । 'चतुर्भुज' प्रभु को निरखि सुख दंपति कहत कहांधौं कीजे रहिरी भवन अव ॥२॥ ❀ १०३७ ❀

हिंडोरा (श्रावण वदी १)

❀ हिंडोरा विराजे वा दिन ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मलार ❀ जहाँ तहां वोलत

मोर सुहाये। श्रावन रमन भवन वृंदावन घोर घोर घन आये ॥१॥ नेंन्ही नेंन्ही बूंदन बरखन लाग्यौ ब्रज मंडल पे छाये। 'नंददास' प्रभु संग सखा लियें कुंजन मुरली वजाये ॥२॥ ❀ १०३८ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग बिलावल ❀ गोपाल माई फेरत हैं चकडोरि। लरिका पांच-सात संग लीने निपट सांकरोखोरि ॥१॥ चढ़ि घर हो री झरोखा चितयो सखी लियो मन चोरि। बांए हाथ बलैया लीनी अपनो अंचल छोरि ॥२॥ चारों नयन मिले जब सन्मुख रसिक हँसे मुख मोरि। 'परमानंददास' रति नागर चितै लई रति जोरि ॥३॥ ❀ १०३९ ❀ राग मलार ❀ लाल सिर फबी कसुंभी पाग। वाही रंग रगमगी सारी बनाय के अनुराग ॥१॥ अचरज एक लगत हैं प्यारी कही समुझत बेंन। तुम प्रसन्न उत मान वे ते चँवर दुरत छबि रैन ॥२॥ कोमल यह सुभाव तियन को सोचत माँझ समात। यह सुभाव इनको सावन ये अलट-पलट को जात ॥ ३॥ सघन घटा वर बरस रही रस प्रगट्यो स्याम अमोल। 'द्वारिकेस' प्रभु कमल—रसके झूले आज हिंडोल ॥४॥ ❀१०४०❀ ❀ सध्या आरती भीतर होय तब नित्य हिंडोरा विजय तक सध्या में ❀ राग गौरी ❀ लटकत चलत जुवती-सुखदानी। संध्या समै सखा मंडल में सोभित तन गौरज लपटानी ॥१॥ मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली गुंजत मृदुबानी। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधारी आये वन तें लै आरती वारति नंदरानी ॥२॥❀१०४१❀ हिंडोरा में भोग आये पे❀ ❀ राग धनाश्री ❀ साखी—रोप्यौ हिंडोरा नंदगृह महूरत सुभ घरी देखि। विश्वकर्मा रचि पचि गढ्यो सुहाटक रत्न विसेखि ॥ १ ॥ चाल—हिंडोरना हो मनिमय भूमि सुवास। हिंडोरना हो विश्वकर्मा सूत्रधार। हिंडोरना हो कंचन खंभ सुढार ॥ छंद—कंचन खंभ सुढार दांडी साल भमरा फबि रहे। हीरा पिरोजा कनक मनिमय जोति अति जगमग रहे ॥ चित्र फटक प्रकास चहुँ दिसि कहा कहौं निरमोलना। कहै 'कृष्णदास' विलास

निसिदिन नंदभवन हिंडोरना ॥ १ ॥ साखी—सोलह सहस्र ब्रजसुंदरी निरखति स्याम सुभाय। अति आनंदे हुलसि के जुवजन हिलमिल गाय ॥ चाल—हिंडोरना हो जुवजन हिलमिल गाय। हिंडोरना हो आनंद उर न समाय ॥ हिंडोरना हो निरखत नयन निहार। हिंडोरना हो सोलह सहस्र ब्रजनार ॥ छंद—सोलह सहस्र सब जुरि के आई फिरि न उलटि भवन गई। नव-नेह नयन-कुरंग राची अच्युत तनमनमय भई ॥ पीत लहँगा लाल चूनरी स्याम कंचुकी बांहि। कहै 'कृष्णदास' विलास निसिदिन जुवजन हिलमिल गाँहि॥२॥ साखी—रुनक झुनक नूपुर बजें किंकिनी क्वनित रसाल। परम चतुर वनवारी हैं झुलवत सुंदरि नारि॥ चाल—हिंडोरना हो झुलवत सुंदर नारि। हिंडोरना हो परम चतुर वनवारि॥ हिंडोरना हो रमकन झमक विसाल। हिंडोरना हो किंकिनी क्वनित रसाल ॥ छंद—क्वनित किंकिनी रुनत नूपुर जटित तरौना सोहहीं। उर उड़त अंचल मदन वेरख देखि गिरिधर मोहहीं॥ खसित फूलजो सिथिल वेंनी गुप्त प्रगट विहार। कहै 'कृष्णदास' विलास निसिदिन झुलवत सुंदर नारि ॥३॥ साखी—गावत सुघर रस भेद सों तान-मान वंधान। रीझि देति वृषभानुजा हरिगुन सकल निधान ॥ चाल—हिंडोरना हो हरिगुन सकल निधान। हिंडोरना हो श्रीराधाजू परम सुजान॥ हिंडोरना हो गावत सुघर समाज। हिंडोरना हो मुरली मधुर धुनि बाज ॥ छंद—ताल मुरली वीन बाजे लालगिरिधर गावहीं। हरपि सुरपति कुसुम बरषे नभ-निसान बजावहीं ॥ हरपि के कर देत तारी अति प्रकासित गान। कहैं 'कृष्णदास' विलास निसिदिन हरिगुन सकल निधान ॥४॥ साखी—सहज गोपाल नट भेप ही सब ब्रज देखनि आई। जो सुख गोकुल में लहे सो सुख वैकुंठ नाहीं ॥ हिंडोरना हो यह सुख गोकुल मांही। हिंडोरना हो यह सुख वैकुंठ नाहीं ॥ हिंडोरना हो सहज गोप नट भेप। हिंडोरना हो सबहि नयन भरि देख ॥ छंद—नैन निरखत बैन मीठे सैन

कोटिक वारहीं। भुज भरें सुंदरि हरें हरि मन कहत कछुअन आवहीं ॥ स्यामसुंदर भक्तवत्सल लालगिरिधर जहाँ हैं। कहै 'कृष्णदास' विलास निसिदिन यह सुख गोकुल मांहै ॥ साखी—श्री जमुनातट संकेत वट निसि-दिन यह विलास। कुंज सदन गिरिवरधरन हृदय बसौ 'कृष्णदास' ॥ ❀१०४२❀ राग जैतश्री ❀ दंपति झूलत सुरंग हिंडोरे। गौर स्याम तन अति छवि राजत जानों घनदामिनी ऊनिहोरे ॥१॥ विद्रुम खंभ जटित नग पटुली कनक दांड़ी सोभा देत चहुं ओरे। 'गोविंद' प्रभु कों देखि ललितादिक हरषि हँसति सब नवल किसोरे ॥२॥ ❀१०४३❀ भोग सरे भीतर झूले तब ❀राग जैतश्री❀ माई झूले हैं कुँवरि गोपरायन की मध्य राधा सुंदर सुकुमारि ॥ ध्रुव० ॥ प्रथम ही ऋतु पायस आरंभ। श्रीवृषभान मँगाये खंभ॥ काढि भवन तें रतन अमोल। रचि-पचि रुचिर रच्यो है हिंडोल ॥ १ ॥ एक तें एक सरस सुकुमारि। मानों रची विधि कुंकुमगारि॥ जगमगात नव जोबन जोति। निरखि नयन चकचौंधी होति ॥ २ ॥ बरन-बरन चूनरी सुरंग। फबी लौने सोने से अंग॥ राजत मनि आभरन रमनीय। जुही गुही कबरी कमनीय ॥ ॥ ३ ॥ गावत सुघर सरस सुर गीत। दुलरावत मनमोहन मीत॥ प्रेम विवस भई सकत न गाय। उमग्यो है आनंद उर न समाय ॥ ४ ॥ दुरि देखत गोकुल के राय। सोभा निरखत मन न अघाय॥ मुदित 'गदाधर' नंदकिसोर। लोचन भये भरे के चोर ॥ ५ ॥ ❀ १०४४ ❀ ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ झूलनि आईं व्रजनारि गिरिधरनलाल जू के सुरंग हिंडोरना। सुभग कंचन तन पहिरें कसूँभी सारी गावत परस्पर हँसि मृदु बोलना ॥ १ ॥ इत नंदलाल रसिकवर सुंदर उत वृषभानु-सुता छवि सोहना। रमकत रंग रह्यो पिय प्यारी 'गोविंद' वलि बलि रतिपति जोहना ॥ २ ॥ ❀ १०४५ ❀ राग मल्हार ❀ माई तैसोई वृंदाबन तैसीये हरित भूमि तैसिये वीरवधू चलत सुहाई माई। तैसेई कोकिला कल कुहू

कुहू कूजत तैसेई नाचत मोर निरखत नयनां सुखदाई ॥ १ ॥ तैसी ही नवरंग नवरंग वनी जोरी तेसेई गावत राग मल्हार तान मन भाई। 'गोविंद' प्रभु सुरंग हिंडोरे झूलें फूलें आछे रंग भरे चहुँदिसि तें घटा जुरि आई ॥ २ ॥ ❀ १०४६ ❀ राग मल्हार ❀ रंग मच्यो सिंघद्वार हिंडोरे ऽव झूलना। गौर स्याम तन नील पीत पट घन दामिनी हेम विराजत निरखि निरखि व्रजजन मन फूलना ॥ १ ॥ उर पर वनमाल सोहै इंद्र धनुष मानों उदित भयो मोतिनि हार वग पंगति समतूलना। वरखत नव रूप वारि घोख अवनि रत्न खचित 'गोविंद' प्रभु निरखि कोटि मदन भूलना ॥ २ ॥ ❀ १०४७ ❀ राग मल्हार ❀ झूलत सुरंग हिंडोरे राधा मोहन। वरन वरन चूनरी पहिरें व्रजवधू चहुंओरें ॥ १ ॥ राग मल्हार अलापत सप्त सुरन तीन ग्राम जोरें। मदनमोहन जू की या छवि ऊपर 'गोविंद' वलि तृन तोरें ॥ २ ॥ ❀ १०४८ ❀ शयन दर्शन ❀ तमूरासूं ❀ ❀ राग ईमन ❀ सैन काम की लायो सो सावन आयो। चलि सखी झूलिये सुरत हिंडोरे कीजै स्याम मन भायो ॥ १ ॥ हाव भाव के खंभ मनोहर कच घन गगन सुहायो। काम-नृपति वृषभानुनंदिनी रसिकराय वर पायो ॥ २ ॥ ❀ १०४९ ❀

दुहरामंडान, उत्सव श्रीबालकृष्णलालजी को (श्रावन वदी १३)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ वोले माई गोवर्द्धन पर मुरवा। तैसीये स्याम घन मुरली वजाई तैसे ही उठे झुकि धुरवा ॥ १ ॥ वडी वडी वूंदनि वरखनि लाग्यो पवन चलत अति झुरवा। 'सूरदास' प्रभु तुम्हारे मिलनि कों निसि जागत भयो भूरवा ॥ २ ॥ ❀ १०५० ❀ राजभोग सरे ❀ ❀ राग सारंग ❀ प्रगटे श्री वालकृष्ण सुजान। भक्त मन आनंद भयो अति सुंदर रूप निधान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठल के महा महोत्सव वाजत भेरि निसान। वांधी वंदनवार तिहूँ मिलि करत जुवती जन गान ॥ २ ॥ श्रीविट्ठल तव

महा मुदित मन देत ही विप्रनि दान । आसीरवाद पढत द्विजवर बंदीजन करत बखान ॥ ३ ॥ बने विसाल दृग चंचल लोचन मनहु मदन के बान । मृदुल सुभाव मनोहर मूरति श्रीवल्लभकुल के भान ॥ ४ ॥ रुक्मिनी माय परम सुखदायक निजजन जीवन प्रान । 'केसौदास' प्रभुके गुन गावत गावत वेद पुरान ॥५॥ ❀ १०५१ ❀ राग सारंग ❀ भयो श्री विट्ठल के मन मोद। पूरन ब्रह्म श्रीबालकृष्ण प्रभु धाय लिये जब गोद ॥ बारंबार बिधु वदन विलोकत फूले अंग न समाय । बाल दसा की सहज माधुरी अचवत दृग न अघाय ॥ २ ॥ यह सुख देखें ही बनि आवैं जानो रसिक सुजान । दोऊ ओर सत सोभा बाढी 'विष्णुदास' के प्रान ॥ ३ ॥ ❀ १०५२ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ सावन दूल्है आयो, देखो माई । सीस सेहरो सरस गज मुक्ता हीरा बहुत जरायो ॥ १ ॥ लाल पिछौरा सोहे सुंदर सोवत मदन जगायो । तैसीये वृषभाननंदनी ललिता मंगल गायो ॥२॥ दादुर मोर पपैया बोलत बदरा बराती आयो । 'सूरदास' प्रभु तिहारे दरस कों दामिनि दरस दिखायो ॥ ३ ॥ ❀ १०५३ ❀ राग मलार ❀ रंग महल रंग राग, तहाँ बैठे दुल्है लाल तू चलि चतुर रंगीली राधा । अति बिचित्र कियो साज तोसों रंग रहेगो आज तैसेई दादुर मोर पपैया फूले फूल द्रुम बाग ॥१॥ नव सत अंग साजें पहिरे कसूँभी सारी तापर रीझे लाल बीच बीच सोंधे दाग । दूती के बचन सुनि उठि चली पिय पें यह छबि निरखि गावे 'नंददास' बडभाग ॥ २ ॥ ❀ १०५४ ❀ संध्या समय ❀ चौकड़ा ❀ हेम हिंडोरना माई ए हरि प्यारे के संग ॥ ध्रुव० ॥ कनक खंभ ये चार दांडी नग लगे हैं लाल । चुनी चित्र मयार मरुबे बन्यो है परम रसाल ॥ ॥ टेक ॥ भमरा पिरोजा पांति पटुली लगे हैं रतन विसाल । नव झूलें झूलें नागरी हो नवल श्री नंदजू कौ लाल ॥ १ ॥ सजल जलधर घूमरे धुरवा धसे हैं चहुँओर । चपला चहुँदिसि चमक हीं हो दादुरा घनघोर॥टेक॥

कोकिला अलि कूक कूजत रटत चातक मोर। पवन राग मलार रस वस कीने श्री नंदकिसोर ॥ २ ॥ हरित भूमि सुदेस वादर भरे हैं कमल सुरंग। हंस सारस बतक बगुला लीने हैं बालक संग ॥ टेक ॥ चकवा चकई कहाँ लों तहाँ बने हैं विविध विहंग। सरस सरोवर निरखि के मानो लज्जित कोटि अनंग ॥ ३ ॥ सुभ जुवती भार जोवन चलत चाल मराल। चंद-वदनी लंक केहरि मृगनैन विसाल ॥ टेक ॥ सिंगार सोलहो साजिकें हो वनि चली व्रजवाल। मनु हो कृष्ण कुरंग के संग मुदित है मृगमाल ॥४॥ चहूँओर चम्पो मोगरो मरुवो चमेली जाय। वेल वकुल गुलाव को जो मालती महेकाय ॥ टेक ॥ केतकी करन कुंदी रस रहे भँवर भुलाय। श्री जगन्नाथ विलास 'माधौ' रहे हैं रुचि पाय ॥ ५ ॥ ❀१०५५❀ चौकड़ा ❀ रसिक हिंडोरना माई झूलत मदनगोपाल ॥ ध्रुव० ॥ हरि हिंडोरो ही रच्यो कुंजन जमुना कूल। तहाँ वेल चम्पो मोरियो केवरो अरु वहु फूल ॥ निरखि सोभा थकि रह्यो मिटि गयो मन को सूल। तुव लाज खुभी चित्र विचित्र नयन दिये हैं दुकूल ॥ १ ॥ रत्न जटित के खंभ दोऊ लगे प्रवाल ही लाल। कंचन को मरुवा वन्यो पटुली जु परम रसाल ॥ तन कसूंभी चीर पहिरे आई सब व्रजवाल। अंग-अंग सजि नवसत भामिनी दियें तिलक सुभाल ॥ २ ॥ गोपी जू हरि संग झूलहिं आनंद सुख के वोल। वक्र भौंह लगायें वेसर मुखहि भरें तमोल ॥ स्यामसुंदर निकसि ठाडे अपने अपने टोल। गावत राग मल्हार दोऊ मिलि देत हिंडोल झकोल ॥३॥ धन्य–धन्य गोपी सुफल जीवन करत हरि संग केलि। कृष्ण-कृष्ण कहि-कहि नाम वोलत देत हैं रंगरेलि ॥ चिरजियो सखी मदनमोहन फले जसोदा वेलि। 'परमानंद' नंदनंदन चरन निज चित्त मेलि ॥ ४ ॥ ❀ १०५६ ❀ ❀ हिंडोरा के दर्शन ❀राग मल्हार❀ हिंडोरें ऽव झूलत हैं लाल दुलहा दुलहिनि, विहारी वर ललना। गौर स्याम तन अति द्युति भाँति भाँति, ए विहारी

वर ललना ॥ १ नीलांबर पीतांबर की छबि चलत धुजा फहरात, बिहारी वर ललना। 'हरिदास'के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी ए बिहारी वर ललना॥२॥ ❀ १०५७ ❀ राग मल्हार ❀ ए दोऊ रीझे भीजे झूलत रस रंग हिंडोरे ।ध्रु.। नेह खंभ दांडी चतुरायो हाव भाव मरुवे बेलन चोंप पटली अनूप भाव कटाच्छ रमक चित्त चोरे । रस उन्नत रस बरखत मंद गरज हँसनि किलक दसनि चमक चपला हुलास पवन झकझोरें ॥१॥ क्वनित वलय नूपुर मानों विहंग बोलें। 'जगन्नाथ' प्रभु दंपति जात काम रस भोरें ॥२॥ ❀१०५८❀ ❀ राग मल्हार ❀ झूलत दुल्हे दुलहिन संग लिये झुलावत हैं रंगीली नारी। सोहे सिर सेहरो नवल नयो नेहरो ठाठ जोरे बैठे दोऊ सोभा लागत भारी ॥१॥ केसरी धोवती उपरैना सोहे केसर भीनी सारी । पिय 'बिहारीलाल' निरखि सुख दंपति गावत मल्हार राग रंग रह्यो भारी॥२॥ ❀ १०५९ ❀ ❀ राग मल्हार ❀ स्यामा जू दुलहनि दुलहे हो रसिकवर रमकि-रमकि दोऊ झूलत रस भरे। गोपी सब चहुँओर झोटा देति हँसि-हँसि सोभा देखि सुर मुनि थकित चहल परे॥ १ ॥ वृषभानुनंदिनी कों झुलवत व्याप्यो है उर तिहिं छिनु उर लाय लजाय नैना ढर । देखिकें गई मटक सेहरो गयो लटकि उरझि परे मोती छूटी कलीसी जो लर॥२॥ ललिता निरवारि वे कों गहि कर राख्यो झोटा तरल भये वार भूषन झरे। तन मन धन वारौं पल न विसारें लाल ऐसी सोभा देखि 'सूरदास' द्रगनि झरे ॥ ३ ॥ ❀ १०६० ❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ नवल लाल कौ सेहरो, जगमग रह्यो मेरी माइ। दुलहिन नवल किसोरी, दुल्हे स्याम कन्हाइ ॥ कुंज महल में हिंडोरना, बांध्यो परम सुहाइ। झुलवत हैं सब सहचरी झुंडनि-झुंडनि आइ ॥ २ ॥ बोलत मोर पपैया दादुर सब्द सुहाइ। यह सुख सोभा निरखत 'दास रसिक' बलिजाइ ॥३॥ ❀१०६१❀ ❀ राग केदारो ❀ औल्हर आई हो घन घटा हिंडोरे झूलत है स्यामा स्याम।

कंचनखंभ जटित दांडी पटरी लर मरुवा री पीतवसन फरहरात भृकुटी जीते कोटि काम ॥ १ ॥ वनी है अद्भुत जोरी उपमा कों दीजे कोरी झोटा देति सव मिलि व्रज की वाम । आनंद वाढ्यो ठौर-ठौर नाचत हैं मोरी-मोर यह सुख निरखि-निरखि 'सूर' पायो है सुखधाम ॥ २ ॥ ❀ १०६२ ❀

हरियारी अमावास्या (श्रावण वदी ३०)

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ सखीरी हरियारो सावन आयो । हरे हरे मोर फिरत मोहन संग हरे बसन मन भायो ॥ १ ॥ हरी हरी मुरली हरि सँग राधे हरी भूमि सुखदाई । हरे हरे वसन राजत द्रुम वेली हरी-हरी पाग सुहाई ॥ २ ॥ हरी-हरी सारी सखी सव पहिरें चोली हरी रंग भीनी । 'रसिक' प्रीतम मन हरित भयो है तन मन धन सव दीनी ॥ ३ ॥ ❀ १०६३ ❀ राग मल्हार ❀ यह पावसऋतु आई न्हेंनी-न्हेंनी वूंदनि वरखत रिमझिम पवन चलत पुरवाई ॥ १ ॥ हरी भूमि पर अरुन देखियत दामिनी अति दरसाई । तैंसेई चातक रटत श्रवन सुनि विकल होत अधिकाई ॥२॥ करि विचार सवैं मिलि सजनी यह निश्चय ठहराई । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरनलाल कों मिलहिं कुंज वन जाई ॥३॥ ❀१०६४❀ ❀राग मल्हार❀ देखो माई हरियारो सावन आयो । हरयो टिपारो सीस विराजत काछ हरी मन भायो ॥ १ ॥ हरि मुरली है हरि संग राधे हरी भूमि सुखदाई । हरी-हरी वन राजत द्रुम वेली नृत्यत कुंवर कन्हाई ॥ २ ॥ हरी हरी सारी सखिजन पहिरें चोली हरी रंग भीनी । 'रसिक' प्रीतम मन हरित भयो है सर्वस्व न्यौछावर कीनी ॥ ३ ॥ ❀ १०६५ ❀ राग मल्हार ❀ हरयो टिपारो सीस विराजत हरी ही काछनी कटि हरे हरे नृत्य करें जमुना के कूलं । झलक रही चंद्रिका लहलहात हरे हरे हरो ही सिंगार राधा नाहिंन समतूले ॥ १ हरयो ही कुंज भवन हरी हरी द्रुम वेली हरे ही सुर अलापत मन फूले री । गिरिवरधर 'रसिकराय' देखत नैंन अघाय इंद्रादिक ब्रह्मादिक

सिव समाधि भूले री ॥ २ ॥ ❀ १०६६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ सीस टिपारो धरें मल्लकाछ उर गजमोतिन माल। तापर तीन चंद्रिका राजत सोभित हैं नंदलाल ॥ १ ॥ नकबेसर झलकनि कुंडल की मृगमद तिलक सुभाल । कहा कहों अंग-अंग की माधुरी अंबुज नैंन विसाल ॥२॥ भोरहि उठि जात दधि बेचन में देखे नंदद्वार। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर चित्त चोरयो एकटकी लागी तन रही न संभार ॥ ३ ॥ ❀ १०६७ ❀ राग मल्हार ❀ मदनमोहन बन देखत अखारौ रंग । सुलप संचगति बरहा नृत्य करें कोकिला कुहू कुहू तान तरंग ॥ १ ॥ उघटत सब्द पपैया पीउ–पीउ करें मधु व्रत गुंज मानों सरस उपंग। 'गोविंद' प्रभु रीझे सकल सभा सहित जलधर सुघर बजावत मृदंग ॥ २ ॥ ❀ १०६८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ पावस नट नच्यो अखारौ वृंदावन अवनी रंग। नृत्यत गुनरासि बरहा पपैया सब्द उघटत और कोकिला कल गावत तान–तरंग ॥ १ ॥ जलधर तहाँ मंद मंद सुलप संचगति भेद उरपि तिरपि मानु लेत सरस मृदंग। 'गोविंद' प्रभु गोवर्द्धन सिंहासन पर बैठे सुरभी सखा सभा मध्य रीझे वह ललित त्रिभंग ॥ २ ॥ ❀ १०६९ ❀ हिंडोरे दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ झूलै माई गोकुलचंद हिंडोरे नटवर भेष कियें। सोभित तीन चंद्रिका माथे मुरली कर जु लियें ॥ १ ॥ कसूँभी पाग सुरंग पिछोरा मुक्ता माल हियें। रमकि-रमकि झूलत राधा संग व्रजजन सुखहि दियें ॥ १ ॥ निरखि-निरखि फूलत जुवती जन यह सुख नयन पियें। 'श्रीविट्ठल' गिरिधर सुखदायक सब छबि देख जियें ॥३॥ ❀ १०७० ❀ राग मल्हार ❀ हिंडोरे माई झूलत गिरिवरधारी। लाल टिपारो सीस बिराजत मल्लकाछ छवि न्यारी ॥ १ ॥ वाम भाग सोहत है राधा पहिरि कसूँभी सारी। झोटा देत सखी ललितादिक पवन बहत सुखकारी ॥ २ ॥ बाजत ताल मृदंग झालरी गावत सब सुकुमारी । 'कुंभनदास' प्रभुकी छबि ऊपर सर्वसु

डरत वारी ॥ ३ ॥ ❀ १०७१ ❀ राग ईमन कल्याण ❀ हिंडोरे नीकी आज रमकी। उमड़ घुमड़ आई घन घटा वरसि वूँद रस झमकी ॥१॥ हरियारी में हरी सी कंचुकी गोरे गात खय खमकी। सारी सुही सांझ सी फूली मुक्तामाल बग समकी ॥ २ ॥ नवललाल जलधर अंग संग मिलि दीपति दामिनी दमकी। 'रसखुजान' रीझि रस वस भये पावस ऋतु अनुपम की॥ ॥ ३ ॥ ❀१०७२❀ राग ईमन ❀ सोहत वन, आयो री सावन हरियारो। हरित भूमि पर इंद्रवधू सी राधिका सब सखियनि संग लीने पहिरे कसुंभी सारी कंचन तन ॥ १ ॥ रंग भरि सुरँग हिंडोरे झूलत नवनागरी–नागर मानों रंग च्वै चल्यो है एड़ी अँगुरिन। 'सूरदास' मदनमोहन पिय के गुन गावत ये सुख अति आनंद मगन मन ॥ २ ॥ ❀१०७३❀

ठकुरानी तीज (श्रावण सुदी ३)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ कहौ तुम कौन हो कहाँ ते आये अब कित जाओगे सवेरे। जानत हौं पहचानत नहीं आवत हो जु डरे रे ॥१॥ लाल पाग अध भाल लटक रही मोतिनि माल याही तें कहावत तुम चतुर रीझे रे। 'तानसेन' के प्रभु ठाड़े रहो जु स्याम सब सखियनि मिलि घेरे॥ ॥२॥ ❀१०७४❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ चलि वर कुंजन वरसत मेह। पहरि चूनरी सज आभूषन नयननि अंजन देह ॥ १ ॥ नेंन्हीं-नेंन्ही वूँदनि वरस्यो ही चाहत तैसोही बढ्यो सनेह। 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन पिया कों दोऊ भुजा भरि लेह ॥ २ ॥ ❀१०७५❀ राग मल्हार ❀ सुरँग चूनरी प्यारी पचरंग पहिरें पिया को चोर चित्त डगरी। स्याम कंचुकी पर अँचरा उलटि दियो खमकि धरी सिर गगरी ॥ १ ॥ लहँगा हरयो छपाऊ कटि घूमत नखसिख रूप अगरी। 'श्रीविट्ठल' गिरिधर तोहि सों रति लाइ लई उर सगरी ॥ २ ॥ ❀१०७६❀ राग मल्हार ❀ गायो है मलार धुनि सुनि आई व्रजनारि करि के सिंगार चली ठाडी कहा अरसे। चूनरी की सारी

सोहै कंचन किनारी तामें बाल सुकुमारी तिय हांस हिये हरसे ॥१॥ सुनि मान छांडि दियो जल भरनि को मिस कियो इंडुरी जराय लियें कंचन के कलसे। मानिये त्यौहार भट्ठ ठकुरानी तीज आज चमकत बीज सोभा देत देखो मेह बरसे ॥ २ ॥ ❀१०७७❀ राग मल्हार ❀ लाल मेरी सुरँग चूनरी देहु। मदनमोहन पिय झगरो कौन बद्यो सो अपनो पीत पट लेहु ॥१॥ तुम ब्रजराजकुमार कौन को डर हौं अब कहा कहूंगी गेह। 'गोविंद' प्रभु पिय देहु बेगि आवत चहुंदिसि तें मेह ॥ २ ॥ ❀१०७८❀ शृंगार दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ सावन तीज हरियारी सुहाई माई रिमझिम-रिमझिम बरसत भारी। चूनरी की पाग बनी चूनरी पिछोरा कटि चूनरी की चोली बनी चूनरी की सारी ॥ १ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल सब्द करत किलकारी। गरजत गगन दामिनी दमकति गावत मलार राग तान लेत न्यारी ॥ २ ॥ कुंज महल में बैठे दोऊ करत विलास भरत अंकवारी। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर छबि निरखत तन-मन नौछावरि वारी ॥ ३ ॥ ❀१०७९❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ स्याम सुनि नियरे आयो मेहु। भींजेगी मेरी सुरंग चूनरी ओट पीतांबर देहु ॥ १ ॥ दामिनी देखि डरपति हौं मोहन निकट आपुने लेहु। 'चतुर्भुजदास' लाल गिरिधर सों बाढ्यो अधिक सनेहु ॥ २ ॥ ❀१०८०❀ चूनरी पाग और चूनरी पिछोरा मुक्ता-माल हिये। उमगी घटा सावन भादों की पंछी सब्द किये ॥ १ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल टेर दिये। 'ब्रजजीवन' प्रभु गोवर्द्धनधर यह सुख नैन पिये ॥ २ ॥ ❀१०८१❀ हिंडोरा में उत्सव भोग आये ❀ राग मारू ❀ निज सुख पुंज वितान, कुंज हिंडोरना। झूलत स्याम सुजान, कुंज हिंडोरना ॥ संग स्यामाजू परम प्रवीन। जाके सदा रसिक आधीन ॥ ध्रु०॥ कंचन खंभ पेचवा बलेंडी जटित जराऊ सगरी। पन्ना खचित पिरोजा बीच-बीच कनक कलस जगमग री ॥ १ ॥ गजमोतिन सों डाँडी गूँथी चौकी चमक

सुरंगी । रमकत झमकत गहि-गहि लटकत मोहन मदन त्रिभंगी ॥ २ ॥ मरुवे वेलन ध्वजा झालरी द्युति गहवर विस्तरनी । चोंकारत झोटन में मानों कोकिल सब्द उचरनी ॥ ३ ॥ चहूं ओर द्रुम वेली फूली लता सघन गंभीर । जव रमकत दमकत दामिनि सी झलमल जमुना नीर ॥ ४ ॥ सारस हंस चकोर चातक पिक नेह धरे सव पैठे । गुल्म लता द्रुम तनक न दीसत ऐसें जुरि जुरि वैठे ॥ ५ ॥ विजय सुभाव किये घन संपति उल्हर विपिन पर आए । गरजत तरजत मधुर राग लियें केकी सब्द सुहाये ॥ ॥६॥ सहचरी गान करत ऊँचे स्वर श्रीवृन्दावन गाजें । मधुर मंजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज वाजें ॥ ७ ॥ नीलांवर पहिरें नव नागरीलाल कंचुकी सोहें । भींजि गई श्रमजल सों उरजन प्रीतम को मन मोहें ॥८॥ लट सगमगी सलोल वदन पर सीसफूल उलटानो । प्रिया की चौकी सों गिरिधर को चंद्रहार अरुझानो ॥ ९ ॥ दृग रसाल रस भरी भौंह सों हँसि-हँसि अर्थ जनावे । दुरनि मुरनि में चित करपत हैं लालची मन ललचावे ॥ फैलि रह्यो सौरभ सिगरे सखी कुमकुम कृष्नागर को । कहाँ लौं कहौं मत्त भयो वरनौं भाव 'गदाधर' उर को ॥ ११ ॥ ❀ १०८२ ❀

❀ राग मलार ❀ सावन की तीज हिंडोरे झूलै राधा प्यारी सुनिकै मनमोहन आये हैं झूलनि । सखी भेष किये स्याम आये प्रान प्यारी पास अंग-अंग भूपन वैनी भरी फूलनि ॥ १ ॥ नैननि काजर सोहे देखत त्रिभुवन मोहें तापर वेसर के मुक्ता की झूलनि । 'सूरदास' प्रभु नारी रूप किये प्यारी संग झूलत जमुना के कूलनि ॥ २ ॥ ❀ १०८३ ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग मलार ❀

तीज महातम आयो, देख सखी । स्यामास्याम परस्पर झूलत निरखि परम सुख पायो ॥ १ ॥ दिसि–दिसि घोर–घोर घन गरजत मंद-मंद वरखायो । दादुर मोर पपैया वोलत कोयल सब्द सुहाय ॥ २ ॥ ताल मृदंग किन्नरी दुंदुभि प्रेम निसान वजायो । 'सूरदास' प्रभु जुगल विराजत अखिल भुवन

जस गायो ॥ ३ ॥ ❀ १०८४ ❀ राग अडानो ❀ रंग हिंडोरना प्यारी जू झूलनि आई तैसीय पावस ऋतु परम सुहाई। घटा चहुं ओर छाई कोकिला सब्द सुहाई तेसीय अधर धरें मुरली बजाई ॥ १ ॥ बने दोऊ एकदांई तान लेत मन भाई रीझि-रीझि प्यारी उर कंठ लगाई। देववधू उठि धाई पहोप वृष्टि कराई 'रसिक' प्रीतम तहां बलि-बलि जाई ॥ १०८५ ❀राग अडानो ❀ रंग हिंडोरना झूलत राधा सब सखिनि संग बनि-ठनि प्रानप्यारी देखिवे कों आयो। जाके अंग संग कोटि-कोटि सचु पाइयत ललिता अपनी प्यारी के संग झुलायो ॥ १ ॥ सावन तीज सुहाई दुहुँनि के मन भाई प्रथम समागम आनंद घुमडायो। घन दामिनी देह बरसन लाग्यो मेह दोऊ रूपरासि सबहि कों जिय भायो ॥ २ ॥ वे हरखि-हरखि कें झुलाये जब नंदलाल डरपनि लागे और अति सचुपायौ। कहि 'भगवान हित रामराय' प्रभु प्यारी झूलि रति मानी सुख-सिंधु बढायो ॥ ३ ॥ ❀ १०८६ ❀ राग अडानो ❀ राधेजू झूलति रमक-रमक। मनि कंचन को सुरंग हिंडोरा तामधि दामिनि चमक चमक॥१॥गावत गुन गिरिधरलाल के उठत दसन धुति दमक-दमक। बाढ्यो रंग 'गदाधर' प्रभु जहाँ गयो है दमन सब तमक तमक ॥२॥ ❀१०८७❀ ❀ शयन भोग आये ❀ राग इमन ❀ तीज सुनि आये हैं हरि मेरे। आनंद भयो विरह दुख भूल्यो श्रीहरि कमल नयन मुख हेरे ॥ १ ॥ भरि अंकवार झूलि पिय के संग सब सखियनि कों कह्यो सिधारो। कृष्णनाम लै हँसि-हँसि मुरि मुसकाई प्रीतम के बदन निहारो ॥ २ ॥ जब नंदलाल तरल झोटा करि डरपावन मिस रमक बढाई। स्यामा लपटी स्याम गरे में झूमि-झूमि हरि गरे लपटाई ॥ ३ ॥ सो सुख देखि हरखि हिय की रति फूलि-फूलि अंग न माई। वारि फेरि करि-करि न्यौछावर 'नन्ददास' कों बोलि गहाई ॥ ४॥ ❀ १०८८ ❀ राग ईमन ❀बाल आलिनि की मंडली फूली अति अंग न माई। गोपीजन मिलि तीज महातम अप-अपनो करि-करि सरसाई ॥ १ ॥ राधाजू

पै नाम लिवावत हँसि हँसि मोहन संग झुलवत । राधाजू कह्यो कृष्ण श्री वल्लभ कृष्ण कह्यो राधा प्रान ही भावत ॥ २ ॥ रह्यो रंग संग खेलत खात सब सावन मास रतिरस बितयो । 'कृष्णदास' गिरिधर संग मिलि काम नृपति मिस हि मिस जितयो ॥ ३॥ ❀ १०८९ ❀ राग ईमन ❀ सुदी सावन हरियारी तीज आज सुभ दिन परम सुहायो । पुन्य-पुंज गहवर हरि राधा-वर पायो ॥ १ ॥ घर वन बसि कुंजनि सुख विलसत करत आप मन भायो । गोपीजन के जूथ मिले सुख सखियनि मंगल गायो ॥ २ ॥ भयो मनोरथ गोपीजन को हाव-भाव फल पायो । यह सुख वसो सदा जिय मांही 'नन्ददास' जस गायो ॥ ३ ॥ ❀ १०९० ❀ राग ईमन ❀ झूलत रसिक लाडिली सघनवन छायो । लता कुसुम अलि गान मोरपिक त्रिविध समीर वहायो ॥ १ ॥ घन बूंदें सुर कुसुमनि वरषत दामिनि-दीप वनायो । व्रजनारी दृग मीन लखे प्रभु 'व्रजाधीस' मन भायो ॥ २ ॥ ❀ १०९१ ❀ राग ईमन ❀ रमकि झमकि झूलनि में झमकि मेह आयो नहिं सुरझत वातन तें । नव पल्लव संकुलित फूल-फल वरन-वरन द्रुमलतान तर ठाडे भयो है वचाव पातनतें ॥ १ ॥ मंद-मंद झुलवत खंभन लगि ओढें अंवर निज गातन तें । 'कृष्णदास गिरिधारी दोऊ भीज्यो वागो सारी भमरन की भीर भारी टारी न टरत क्योंहू प्रगटी छवीली छटा निज गातन तें ॥ २ ॥ ❀ १०९२ ❀ राग ईमन ❀ सघनकुंज परछाँही प्रीतम दोऊ झूलत रंग हिंडोरे । दादुर मोर पपैया वोलत सीतल पवन झकोरे ॥ १ ॥ तैसेई वरन-वरन आये वादर मंद मंद घन-घोरे । 'रसिक' प्रीतम झूलें सुरंग हिंडोरे निरखि व्रजवधू तृन तोरे ॥ २ ॥ ❀ १०९३ ❀ राग केदारो ❀ झूलत दोऊ कुंज कुटीरे । कंचन खंभ हिंडोरे विराजत तरनि-तनया तीरे ॥ १॥ मुकुलित कुसुम मल्लिका प्रफुल्लित रुचिकर वहत समीर । सारस हँस चकोर मोर खग वोलत कोकिला कीर ॥ २ ॥ मधुरे सुर गावत केदारो वृषभानु-सुता वलवीर । 'गोविंद' प्रभु गिरिराज

धरन पिय सुरस सुभग रनधीर ॥ ३ ॥ ❀ १०९४ ❀ राग बिहाग ❀ नवल-लाल पियके सँग झूलनि आई एहो हिंडोरें। लटपटात पाट की चूनरी बदल परी कछु भोरें ॥ १ ॥ सगबगात गिरिधर पिय के संग बतियाँ कहत थोरें थोरें। 'दासन' के प्रभु रमकि झमकि झूलें कछुक हँसत मुख मोरें ॥२॥ ❀ १०९६ ❀ राग बिहाग ❀ ये दोऊ झूलत हैं बांह जोरें। नवल कुंज के द्वारें देखो रमकत हैं चहुं ओरें ॥ १ ॥ सप्त सुरनि मिलि मुरली बजावत बिच-बिच तान लेत रस थोरे। 'हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी' छबि निरखत तृन–तोरे ॥ २ ॥ ❀ १०९७ ❀ राग अडानो ❀ ब्रज के आंगन माँच्यो, हिंडोरो। वृंदावन की सघन कुंज में जहाँ रंग राच्यो ॥ १ ॥ ब्रज की नारी सबै जुरि आईं गावति हैं सुर सांचो। 'रसिक' प्रीतम की बानिक निरखत संकर तांडव नाच्यो ॥ २ ॥ ❀ १०९६ ❀ राग रायसो ❀ झूलत मोहन रंग भरे गोप बधु चहुँओर। श्रीजमुना पुलिन सुहावनो वृंदाबन सुभ ठोर ॥ १ ॥ राधाजू करें किलकारी ज्यों गरजत घन घोर। तापाछें सब सखियनि मिलिजु करत हैं सोर ॥२॥ तैसेई रटत पपैया बोलत दादुर मोर। 'नंददास' आनंद भरे निरखत जुगल किसोर ॥ ३ ॥ ❀ १०९८ ❀ ❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ यमुना तट नव सघन कुंज में हिंडोरना झूलनि आई। मध्य राधा माधौ बैठे आसपास युवती मन भाई ॥ १ ॥ सावन मास हरित घन वन में रिमझिम रिमझिम बूँद सुहाई। कछु भींजे पट अंग झलमले नव-नव छबि बरनी नहि जाई ॥ २ ॥ विविध भांति झूलत मिलि फूलत रस–प्रवाह उमग्यो न समाई। गावत सावन-गीत मुदित मन संक न मानत निडर सुहाई ॥ ३ ॥ अति रस भरी युवती सब देखीं स्यामसुंदर तब ले उर लाई। चिर संचित अभिलास भयो तब अधरसुधा पीवत न अघाई ॥ ४ ॥ बिच-बिच मुरली धुनि सुनि कूकत केकी पिक चातक तिहिं ठांई। 'चत्रभुजदास' वारने लै लै गिरिधर पिय रति कीरत

गाई ॥ ५ ॥ ❀ राग केदारो ❀ सो तू राखि लेरी झोटा तरल भये । इत नव कुंजद्वार कदंब परसि जात उत जमुना लौं गये ॥ १ ॥ आवत जात पट लपटात लतनि सों ता ऊपर द्रुम पात छये । 'कल्याण' के प्रभु गिरिधर रीझि बस भये झूलत नये-नये ॥ २ ॥ ❀ ११०० ❀ मान पोढवे में ❀ ❀ राग मलार ❀ घन-घटा आई घूमि-घूमि नहेंनी-नहेंनी बूँदनि हो पिय वरसे । चहुँदिसि तें गरजत मंद-मंद तैसीय कनक चित्रसारी तामें पोढे पिय प्यारी तैसीय दामिनी अति दरसे ॥ १ तैसेई बोलत मोर कोकिला करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसे । 'गोविंद' प्रभु सुघर दोऊ गावत केदारो राग तान अब ही सरसें ॥२॥ ❀ ११०१ ❀श्रावण सुदी ४ ❀ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग मलार ❀ आवत लाल–लाडिली फूले । कुंज केलि नवरंग विहारी सुरति हिंडोरे झूले ॥ १ निसि जागे अलसात रगमगे पट पलटे गत भूले । 'विट्ठल विपिन विनोद विहारी' दुरि देखत द्रुम मूले ॥२॥ ❀ ११०२ ❀ राग मलार ❀ झूलत कुंजनि कुंज किसोर । सुरत रंग सुख सेन सूचित नैन रँगीले भोर ॥ १ ॥ सिथिल पलक मँहि वंक विलोकनि विहँसनि चित्त के चोर । फिरि-फिरि उर लपटात स्याम-तन फूले तन कुच कोर ॥ २ ॥ अधर:मधुर मधु प्याय जिवाये विविध वर वदन-चकोर । मादक रस रसानन अघाते लहत मंडल चल छोर ॥ ३ ॥ विच-विच नाचत मिलि गावत सुर मंदिर कल भोर । रीझि पलक चुंवन करि पुलकित झुलावत जोवन जोर ॥४॥ हरिवंसी फूलि हरिदासी निरखत सुरत हिंडोर । 'व्यासदास' अंचल चंचल करि मोद-विनोद न थोर ॥५॥ ❀११०३❀ शृंगार दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ उमड़ि-घुमड़ि घटा आई झूमि-झूमि लता रही भूमि हरि-यारी लागे सुभग सुहाई । तहाँ वैठे पिय प्यारी भूषन छवि न्यारी-न्यारी मुख की उजियारी मानों चाँदनी सी छाई ॥ १ ॥ तनन–तनन तान लेत प्यारी करताल देत गावत मल्हार राग अति मन भाई । 'श्रीविट्ठल' गिरि-

धारीलाल लखि मोही व्रजबाल रीझि-रीझि रहे दोऊ कंठ लपटाई ।। २ ।। ❀ ११०४ ❀ शृंगार में झूले तो ❀ राग मल्हार ❀ झूलौं तो सुरत–हिंडोरे झुलाऊँ । मरुवे मयार करौं हित–चित के तन–मन खंभ बनाऊँ ।। १ ।। सुधि पटुली बुद्धि दांडी बेलन नेह बिछोना बिछाऊँ । अति औसेर धरों रुचि कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊँ ।। २ ।। गरजन कुहुक हिलग मिलिवे की प्रेम नीर बरसाऊँ । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन झुलाऊं जो इकले करि पाऊँ ।। ३ ।। ❀११०५❀

पवित्रा एकादशी (श्रावण सुदी ११)

❀ शृंगार दर्शन पवित्रा धरे तब ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा परिहत गिरिधरलाल । सुंदर स्याम छबीलो नागर सकल घोष प्रतिपाल ।। १ ।। हँसि मन हरत हमारो मोहन संग नागरी बाल । फूली फिरत मत्त करिनीवत् अति आनंद नंदलाल ।।२।। देखि स्वरूप ठगी सी ठाड़ी दंपति दल के साज । 'परमानंद' प्रभु पर न्यौछावर प्रान प्रिया के काज ।। ३ ।। ❀ ११०६ ❀ ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा पहरें श्री गिरिधरलाल । वाम भाग वृषभानुनंदिनी बोलत वचन रसाल ।। १ ।। आसपास सब ग्वाल मंडली मानों कमल अलिमाल । 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन नंद भवन व्रजबाल ।। २ ।। ❀ ११०७ ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा पहिरत श्रीगिरिधरलाल । तीनो लोक पवित्र किये हैं श्रीविट्ठल नयन-विसाल ।। १ ।। कहा कहों अंग-अंग की बानिक उर राजत बनमाल । 'विष्णुदास' प्रभु गोकुल महियाँ बिहरत बाल गोपाल ।। २ ।। ❀११०८❀ राग सारग ❀ पहिरत पाट पवित्रा मोहन नंदरानी पहिरावत । जंबू नद कंचन के तारे बिच बिच रतन जरावत।।१।। पूवा सुहारी और लडुवा लै हँसि-हँसि गोद भरावत । 'कृष्णदास' गिरिधर के मंदिर प्रमुदित मंगल गावत ।। २ ।। ❀ ११०९ ❀ श्रावन सुदी १२ ❀ ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग कानरो ❀ झूलत तेरे नैन-हिंडोरे । श्रवन खंभ भ्रू भई

मयार दृष्टि करन डांडी चहूँ ओरें ॥ १ ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन वैठे जुगल रूप-रति जोरे। कच घन आड दामिनी दमकति मानों इन्द्र धनुष अनुहोरे ॥२॥ दूर देखत अलकावलि अलिकुल लेत सुगंधनि पवन झकोरें। बरनी चमर दुरत चहुँ दिसितें लर लटकन फूंदना चित चोरें ॥ ३ ॥ थकित भये मंडल जुवतिन के जुग ताटंक लाज मुख मोरे। 'रसिक' प्रीतम रसभाव भुलावत रीझि रीझि ताननि तृन तोरें ॥ ४ ॥ ❀ १११० ❀राग कान्हारा❀ ब्रजजुवतिन के जूथ में झूलें पिय-प्यारी हिंडोरे। तैसीय सुरंग सारी पहिरे सुभग अंग खमकि कंचुकी पिय सरसत परसत वरसत रस द्रग कोरे ॥ १ ॥ सुभग सहचरी मिलि ज्यों-ज्यों झुकि झोटा देत त्यों-त्यों तोरि मोरि तन डरी सी आँकौ भरत लेत चतुर चित्त-चोरे। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर की बानिक देखि रीझि-भीजि सब ब्रजजन हुलसत वारत है तृन तोरे ॥२॥ ❀११११❀राग कान्हरो ❀ हिंडोरे माई, झूलत री नंदनंदन। संग वृषभानसुता अति सोहै रिमझिम रिमझिम बूँद सुहाई॥१॥ गावत सावन-गीत बानिक बनि ब्रज-बनिता पिय जिय मन भाई। 'चतुर्भुज' प्रभु तव छबिली छबि निरखि रीझि भींजि सब उर लाई ॥२॥ ❀१११२❀शयन दर्शन❀ राग बिहाग ❀ दीपत दिव्य दरवार श्रीब्रजराज को। रतन जटित को आज हिंडोरो साज को ॥ टेक ॥ छंद—सजे साज चहूँ ओर झगमगे रंगमहल झगमगि रह्यो। झगमगात हिरन के झार मानों पन्नन के जात है नहीं कह्यो ॥ १ ॥ लटकन लटकि रहे चहूँ ओर सारंग न्यारे न्यारे। राते पीरे हरे स्याम सोसनी भरे रंग भारे ॥ २ ॥ चाल—आसमान सो स्वेत सरस और कहि कहि कहा वखानिये। श्रीपति को वैभव वरननि कों पटतर कहा कहि ठानिये ॥ २ ॥ सव गिलास झगमग जहाँ अस चित्र विचित्र समारे। लटकन झगमगत लरिन के मानो गगन तारे ॥ चाल—झगमग जोति देखि भ्रम भूल्यो आई मानो दौरि दिवारी। रमा संकर सेस नारद देखि विधि नहीं जात विचारी ॥ ३॥

जहाँ झूलत पिय अरु प्यारी तहाँ मिलि गोपीजन गुनगावें। राग रागिनी सप्त सुरनि मिलि तान तरंग उपजावे ॥ चाल—झोटा देत ललितादिक फूलि अंग न माय। बढ्यो रंग तहाँ अति अद्भुत छबि मीन बिछुरे नहिं माय ॥४॥ फेंटा फब्यो स्याम के सिर पर उपरैना सुखकारी। सहज सिंगार स्यामा तन सोहे नवल केसरी सारी ॥ चाल—आलस भरे नैन ललिता लखि सैय्या सरस सँवारी। आरति वारि देत न्यौछावर राई लोन उतारी ॥ हँसि चंद्रावली करत समस्या सुरत हिंडोरे झूलिये। 'कृष्णदास' गिरिधरन को जस अब रमक बढावन हूलिये ॥ ५ ॥ ❀ १११३ ❀ राग विहाग ❀ बाल झूलावनि आई, झूले नवल बिहारी। सुरंग हिंडोरो लाल को तहाँ जुगलकिसोर सुहाई ॥ १ ॥ मनि कंचन के खंभ मनोहर विद्रुम डांडी सुहाई। पचरंग डोरी पाट की तहाँ पटुली पाँच जराई ॥ २ ॥ बरन-बरन के फौंदना तहाँ मोती झालर बनाई। मानिनी गावे मोद तहाँ बाजे बहुत बजाई ॥ ३ ॥ रीझि रीझि सुर सुंदरी तहाँ कुसुमनि वृष्टि कराई। देखत सोभा दंपति की तहाँ "कृष्णदास' बलिजाई ॥ ४ ॥

उत्सव राखी को (श्रावण सुदी १५)

❀ शृंगार में राखी धरे तो ❀ राग सारंग ❀ मात जसोदा राखी बाँधति चल अरु श्रीगोपाल के। कंचन थार में अच्छत कुमकुम तिलक कियो नंदलाल के ॥ १ ॥ आरती करत देत न्यौछावर वारत मुक्ता माल के। 'छीतस्वामी' गिरिधर मुख निरखति बलि-बलि नैन विसाल के ॥ २ ॥ ❀१११५❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ आज हौं नंदै जाँचन आई। बाबाजू हँसि कह्यो दसौं दिसि भीतर भवन बुलाई ॥ १ ॥ ठौर-ठौर व्रज घोपनि घर-घर बजत बधाई। जीवन—जनम सुफल करिवे कों अवलोकन सुखदाई ॥२॥ परम पुनीत तप कौ फल भामिनि जो कोऊ दैहै दिखाइ। साज बाज सब संग कर लीने हौं तहाँ दई है पठाई ॥ ३ ॥ भभक भभ-

जीजी भभक जीजी–जीजी भम–भम–भमभ भकाई। रुनन-झुनन और झनन-झनन और, घनन-घनन अधिकाई ॥४॥ पोंहोंपंवी-पोंहोंपंवी ढाढी-ढाढिन वजाई। वावा जू हँसि कह्यो दसोदिसि भीतर भवन बुलाई ॥ ५ ॥ जब जसुमति धाय नंदरानी पहिचानी पाँय लगाई। वाजत हरपि मंजीरा वाजत नव-नव भांति नचाई ॥ ६ ॥ करिहों नची सची संपति भई पाँय परी तब धाई। मनिमय आँगन में दोउ डोलति मोहन कों उर लाई ॥७॥ गोप वधू निरखत सुख पावत गावत गुन समुदाई। वरस द्यौस राखी सुख साखी भाखी वेद वताई ॥ ८ ॥ मंगलमुखी सदा आवत हैं सखी सर्वदा पाई। ढाढिन कह्यो जाय किन देखौ सुख संपति अधिकाई ॥ ९ ॥ वड़े-वड़े गाडा दस दीने रुपे सों लदवाई। चंडौली-चंडौल डोल निरमोल अधिक धन लाई ॥१०॥ को कहि सकै दसौं दिसि यासों जब तें मिले कन्हाई। 'खेमदास' प्रभु गिरिधर जू की जुग-जुग होत वड़ाई ॥ ११ ॥❀ १११६❀

❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग अडानो ❀ सावन की पून्यो मन भावन हरि आये घर झूलूँगी पचरँग डोरी वांधि हिंडोरे। पहिरोंगी सुरंग सारी कंचुकी कसि वाँधौं कारी हीरा के आभूपन सो है तन गोरे ॥ १ ॥ धरि हों उर कुसुम हार निरखोंगी वारंवार नयन निहारि नंदलाल कछुक वेप थोरे। 'रसिक' प्रीतम संग सुखद पावस ऋतु विलसौंगो भेटौंगी आनंद भरि कंठ भुजा जोरे ॥ २ ॥ ❀१११७❀ राग अडाना ❀ भली करी आये प्रीतम प्यारे परव मनावन सलोनो। झूमि-झूमि झूलवत रंग रँगन रस वरखत ब्रज दूनो ॥१॥ एक वेप एक रूप एक गुन पूरन नाहिन ऊनौ। 'द्वारकेस' स्वामिनी हँसि यों कह्यो झूलिये आज है पूनौ ॥२॥ ❀१११८❀ राग अडाना ❀ सुघर रावरे की गोपकुमारि गोकुल की राखी वाँधे हरि राधा हिंडोरे झूलनि नंदसदन आई। प्रफुल्लित मुख सोभित अलक चपल नैना पट भूपन झगमग तन चटक मटक जसुमति मन भाई ॥ १ ॥ कोऊ मृदंग वजावे गावे वीन

सरस सुर मिलावे पिक रिझावे लजावे मोरनि कूक मचाई। 'ब्रजाधीस' केलि करत फूले बन हरित भूमि बडभागिनि पून्यो यह सावन सुखदाई॥२॥ ❀१११९❀ राग अडाना ❀ गोपीजन गावे गीत राखी को है दिन पुनीत स्यामास्याम झूले दोऊ रंग हिंडोरे। रमकि–झमकि झोटा देत नैननि कों सुख देत निरखि-निरखि छबि पर तृन तोरे ॥ १ ॥ सावन की पून्यो मन भावन संग राखी बांधि जमायो है राग-रंग बैठी बाँह जोरे। काछनी काछे लाल मोर मुकुट मुक्तामाल स्यामा को सुहाग–भाग सुजस चहुँओरे। श्रीविट्ठल सुख-साज सज्यो जसुमति ब्रजराज भजो हरि अविचल राधा को चूरो। 'नंददास' बलिहारी भक्तनि कों सुखकारी प्रीतम चकोर प्यारी सरद-ससि पूरो ॥३॥ ❀११२०❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ यह सुख सावन में बनि आवे दुलहे दुलहनि संग झुलावे। नंदभवन रोप्यो सुरंग हिंडोरो गोपवधू मिलि मंगल गावे ॥१॥ नंदलाल कों राधा जू पै हरिजू पैं राधाजी को नाम लिवावे। जसुमति सों 'परमानंद' तिहिं छिन वारि फेरि न्योछावर पावे ॥२॥❀११२१❀ ❀ जन्माष्टमी की बधाई में सेहरा धरें तब ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ रानी जू जीओं दुलहैं तेरो ब्रजजीवन जायो। गोकुल को कुल मंडन पूत यह पायो ॥ १ ॥ देखि द्रग कमल जब स्याम गात सुहायो। लै करि निज गोद मोद सों हुलरायो ॥ २ ॥ पूरब कृत पुन्य पुंज भाग बडे तें पायो। कूखि की बलिहारी जाऊं जस 'कल्यान' गायो ॥ ३ ॥ ❀ ११२२ ❀ ❀ जन्माष्टमी की बधाई में किरीट धरे तब ❀ मंगला दर्शन ❀ राग रामकली ❀ हरि मुख देखिये बसुदेव। कोटि काम स्वरूप सुंदर कोऊ न जाने भेव ॥१॥ चारि भुजा जाकें चारि आयुध देखि हो नर ताहि। अजहुँ मन परतीति नाँही कहे नंद-गृह लै जाहि ॥ २ ॥ झरे तारे परे पहरुवा नींद ब्यापी गेह। निसि अंधियारी बीजु चमके सघन बरसे मेह ॥ ३ ॥ कंस सोयो स्वान सोये मुक्त भये द्वार। बंधी बेडी छूटि गई यह कहो कौन विचार ॥ ४ ॥

सिंह आगें सेस पाछे वहै जमुना पूर। नासिका लौं नीर आयो पार पहिलो दूर ॥ ५ ॥ श्रीमुख तें हुंकार कियो दियो जमना पार। वसुदेव मन परतीति आई वालक गृह-अवतार ॥ ६ ॥ नंद सों मनुहार कीनो कहत हैं वसुदेव। कहें 'सूर' सुत जानि अपनो वोहोत कीजै सेव ॥७॥ ❀११२३❀

❀ शृंगार समय ❀ राग बिलावल ❀ प्रगटित मथुरा माँझ हरी। मात तात हित पुत्र रूप मिस अपनी प्रतिज्ञा सत्य करी ॥ १ ॥ स्याम वरन वपु उर पर भृगु-पद जटित कंचन सिर क्रीट खरी। चारि भुजा वनमाल कोटि रवि संख चक्र गदा पद्म धरी ॥ २ ॥ द्वार कपाट भेदि चले व्रजपति तब सुर कुसुमनि वृष्टि करी। परम पुरुष भगवान जानि जिय वसुदेव मन अति भीति हरी ॥ ३ ॥ जय जय सब्द वोलि निसान ध्वनि व्योम विमाननि भीर भरी। 'गोविंद' प्रभु गिरिधर जसुमति सुत भक्तनि हित आये नंद घरी ॥ ४ ॥ ❀ ११२४ ❀ राग बिलावल ❀ जागी महरि पुत्र मुख देख्यो आनंद तूर वजायो हो। कंचन कलस होम द्विज-पूजा चंदन भवन लिपायो हों ॥ १ ॥ दिन दस ही तें वरपि कुसुम अति फूलनि गोकुल छायो। नंद कहै इच्छा मन पूजी मनवांछित फल पायो ॥ २ ॥ आनंद भरे करे कोलाहल उदित मुदित नर नारी। निरभै भए निसान वजावत देत निसंकन गारी ॥ ३ ॥ नाचत महर मुदित मन कीने पात वजावत नारी। 'सूरदास' प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस-प्रहारी ॥ ४ ॥ ❀ ११२५ ❀

❀ राग बिलावल ❀ आनंद ही आनंद वढ्यो अति। देवनि मिलि दुंदुभी वजाये निसि मथुरा प्रगटे जादोंपति ॥ १ ॥ गावत गुन गंधर्व पुलिक चित नाचें सुर भारी जु रसिक रति। विद्याधर किन्नर सुकंठ कल तिहिं तिहिं ताल जात उघटत गति ॥ २ ॥ सिव विरंचि सनकादि अगोचर फूले चित्त न मात अमित मति। वरखत सुर समूह सुमन गन हरखत कलोल करतजु मुदित गति ॥ ३ ॥ कमलनैन अति वदन मनोहर

देखियत ये विचित्र अनूप गति । स्याम सुभग तन पीत बसन द्युति और मानों सो हैजु सुभग अति ॥ ४ ॥ नखमनि मुकुट प्रभा अति उदित चित्त चक्रत भयें अनुमान न पावत । अति प्रकास निसि विमल तिमिर घट झलमलात रति पति हि लजावत ॥ ५ ॥ दरसन सुखी दुखी अति सोचत खट सुत-सोक सुरति उर आवत । 'सूरदास' प्रभु भये हैं प्राकृत भुज के चिह्न सबैजु दुरावत ॥ ६ ॥ ❀ ११२६ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ कमलनयन ससि-बदन मनोहर देखियत ए विचित्र अनूप गति । स्याम सुभग तन पीत वसन द्युति उर बनमाला सोहित है अति ॥१॥ नखमनि मुकुट प्रभा अति राजत चितैं चकित उपमा नहिं पावत । अति प्रकास निसि विमल तिमिर छटि कमलापति कों नाहि जगावति ॥ दरसन सुखी दुखी अति सोचत षट सुत सोच सुरति उर आवत । 'सूरदास' प्रभु होऊ प्राकृत लै लै भुज के बीच दुरावत ॥३ ॥ ❀ ११२७ ❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ आज बाबा नंदहि जाचन आयो । जनम सुफल करिवे कों अब मैं रहसि बधायो गायो । महरि कहति या बालक के गुन किनहु न मोहिः सुनायो । भलो भलो सब लोग कहत हैं सोई गीतनि गायो ॥२॥ प्रथम ही मच्छ संखासुर मारयो कमठ पीठि ठहरायो । श्रीवाराह नरसिंह औतरे देतन नखन दुरायो ॥३॥ श्रीवामन वैराट विस्तारयो बलिही पाताल पठायो । परसराम पृथ्वी निच्छत्रि करी विप्रनि दान दिवायो ॥४॥ रघुपति रावनके सीस भुजा हनि जानकी लै घर आयो । विभिषन कों राजतिलक दै लंका में बैठायो ॥५॥ अब श्रीकृष्ण प्रगटे पुन्यनि तें तुम्हारो पुत्र कहायो । बालकेलि रसकेलि करेंगे नटवर भेष बनायो ॥६॥ श्री गोवर्द्धन सात दिवस वांये नख अग्र उठावें । रास विलास करें वृंदावन गोपिनि प्रेम वढावें ॥७॥ मारेंगे मल्ल कंस अरु कैसी मल्लन साल सलायो । जस अपार महिमा अनंत ब्रह्माहू पार न पायो ॥ ८ ॥ महरि कहति यह भलो दसोंधी सवहिन के मन भायो । वावा विहँसि आपुने घर तें बकुचा वेगि मंगायो

॥ ९ ॥ झगा–पगा अरु पाग पिछोरा नीके करि पहरायो । हरि दरियाई को गद्दल ऊपर उपनंद उढायो ॥१०॥ सुखानंद सोने को टोडर ढाढी हाथ गहायो । महानंद मेंहगे मोलन को ग्रीवा हार गुहायो ॥ ११ ॥ परमानंद प्रीति करिकै कानन कुंडल चमकायो । धरानंद धीरज धरिकै भरि झोरी धन लायो ॥१ २ ॥ सीधौ वहोत घर सुरानंद ने गाडा भरि पहुँचायो । नित्यानंद सवन सों कहिके सव पे दान दिवायो ॥ १३ ॥ कनक माल किंकिनी मुद्रिका उभय थार भरि ल्यायो । वड़े नंद उठिके वडोताजी सेवक हाथ पठायो ॥ १४ ॥ दीनो वड़ी डोर को हाथी घनघनाय घननायो । गाय भैंस खिरकनि के लेहँडे गोकुल गाम वतायो ॥१५॥ दस हजार मन चना मोंठ को एक खता जतायो । विहँसि उठ्यो विनती यह करिके तवहि,निसान वजायो ॥ १६ ॥ यह विधि विदा कियो है ढाढी वढि कीरति जसु छायो । व्रजवासी विचार रहे जव 'हरि' को हाथ गहायो ॥१७॥ ❀ ११२८ ❀

❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ गोकुल में वाजत कहाँ वधाई । भीर भई है नंदजू के द्वारें अष्ट महासिधि आई । ब्रह्मादिक इंद्रादिक जाकी चरन रेनु नहीं पाइ । सोई नंद जू को पूत कहावें कौतिक सुनो मेरी माई ॥ध्रु व०॥ अंवरीप प्रहलाद विभीपन नित नित महिमा गाई । सो हरि 'परमानंद' को ठाकुर व्रजजन केलि कराई ॥३॥❀११२९❀ शयन भोग आये ❀ राग कानरा ❀

जनम लियो जादौ-कुल राय । करि करुना वसुदेव देवकी अद्भुत वालक दरस दिखाय ॥ १ ॥ अंवुज नैन अमोल मुकुट मनि रतन जटित कुंडल झलकाय । कोमल अलक स्याम-मुख ऊपर श्रीवत्स–लक्ष्म उर सोभाय- ॥ २ ॥ कौस्तुभ मनि पीतांवर सोहे चारि भुजा संखादि धराय । कटि किंकनी कर कंकन अंगद वनमाला पद कमल वनाय ॥ ३ ॥ कोटि चंद भानु उदय मानों सुमिरि सुखद भुव तिमिर नसाय । मात तात आस्वासन करिकें प्राकृत होय चले व्रज धाय ॥ ४ ॥ मात तात छुडाइ

बंध तें गोपुर दिये किवार खुलाय। सेस सहस्र फन बूँद निवारत जमुना त्ररन परसि भई धाय ॥ ५ ॥ लै वसुदेव गये गोकुल नंद–घरनि की सेज सुवाय। निज सामर्थ्य जोगमाया लै मोहन मथुरा दई है पठाय ॥ ६ ॥ जागी महरि उठी जब जसुमति नंदमहर कों लिये वुलाय। जय-जयकार भयो गोकुल में ब्रजजन आनंद उर न समाय ॥ ७ ॥ गोपी-ग्वाल गोप सब ब्रजजन स्त्रवन सुनत ही रंक निधि पाय। हरद दूब अच्छत रोरी सों कर कंचन के थार भराय ॥ ८ ॥ बाजत ताल पखावज आवज मुरली दुंदुभी सब्द सुहाय। नंदमहर घर ढोटा जायो दधि लै छिरकत करत बधाय ॥ ९ ॥ ध्वजा पताका तोरन माला गृह–गृह मंगल कलस धराय। चित्र विचित्र किये प्रमुदित मन दधि माखन के माट धराय ॥ १० ॥ तब ब्रजराज गोप सौं मतौ करि अति आदर सौं विप्र बुलाय। हेम गो रत्न भूमि दच्छिना दै आसीस बचन विप्र पढ़ाय ॥ ११ ॥ यह विधि भयो महोत्सव ब्रज में सुर-समाज कुसुमनि बरषाय। सचि-पचि देव मुनि चढि विमाननि अंबर लियो है छाय ॥१२॥ 'गोविंद' प्रभु नंदनंदन देखत कोटिक मनमथ गये लजाय। श्रीविट्ठल पद रज प्रताप बल यह लीला संपत्ति पाय ॥ १३ ॥ ❀११३०❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ देवकी मन-मन चकित भइ। देखो आय पुत्र मुख काहे न ऐसी कबहूं होय दइ ॥१॥ माथें मुकुट पीत पट कांधे भृगु रेखा भुज चारि करें। पूरब कथा सुनाइ कही हरि तुम मांग्यो यह रूप धरें ॥ २ ॥ छूटे निगड सुवाओ पलना द्वार कपाट उघारयो। अब लै जाहु मोहि तुम गोकुल यह कहिकै सिसु रूपहि धारयो ॥ ३ ॥ तबहिं रोय उठे वसुदेव सुनि नंद भवन गये। वालक धरि वसुदेव कन्या लै आप 'सूर' मधुपुरी आये ॥४॥ ❀११३१❀ ❀जन्माष्टमी की वधाई में टिपारा धरे तव ❀शयन भोग आये❀ राग कान्हरा ❀महानिसि आठैं भादौं की मथुरा प्रगट भये हरि आय। सेवक समग्र करनि सेवा कों

पहिले आये धाय ॥ १ ॥ ग्रह-तारा सव उच्च परे हैं अपुने-अपुने ठाय। दसों दिसा अतिहि प्रफुलित तन उर आनंद न समाय ॥२ ॥ निर्मल गगन भयो तिहिं औसर उडगन सहज प्रकास। खिरक गाम आँगन रतननि के अवनि भई सुभ वास ॥ ३ ॥ जल पूरन सव नदी भई हैं सर-जल कमल विकास। पंछी अलिकुल नाद करत हैं वृच्छन मन हुलास ॥ ४ ॥ त्रिविध समीर वहत अति पावन विप्र-हुतासन फूले। मन प्रसन्न सव साधुनि के भये तप समाधि अनुकूले ॥ ५ ॥ अजन सरूप भयो तिहिं औसर दुंदुभि देव वजाये। किन्नर और गंधर्व सवै मिलि मुदित परम जस गाये ॥ ६ ॥ हरख भयो सिद्धन चारन कें विद्याधर सव नाचे। वाजत ताल मृदंग झालरी देव-वधू सुर साँचे ॥ ७ ॥ सुनि देवता पुहुँप वृष्टिनि कों चढि विमान सव आये। मंद-मंद जलधर गरजत हैं जलनिधि के ढिंग आये ॥ ८ ॥ आधी रात भई जवहीं तव तम आकास गयो। श्रीवसुदेव देवकी के मन परम हुलास भयो ॥ ९ ॥ देवरूप देवकी-कूखतें प्रगटे आनँदकंद। मानो दिसा प्राचीतें उदयो उज्ज्वल पूरनचंद ॥ १० ॥ रूप चतुर्भुज दरसन दीनो हरि संख गदा दिक धारी। पीत वसन सिर वन्यो टिपारो अंवुज नैन सुधारी ॥ ११ ॥ कौस्तुभ मनि श्रीकंठ जगमगे उर श्रीवत्स विराजे। कुंडल स्रवन मकर जानो दिनकर कुन्तल ऊपर भ्राजे ॥१२॥ तव वसुदेव भयो मन विस्मय जव सुत दरसन पायो। जनम-जनम के भाग्य खुले अव मन वांछित फल पायो ॥१३॥ विनती करत दुहूंकर जोरे पूरनव्रह्म स्वरूप। प्रकृति पुरुप अच्चर हूँ ते पर आनँद अनुभव रूप ॥१४॥ वहुत करत अस्तुति देव की निर्गुन जोति स्वरूप जिन अव रूप दिखायो यह तुम जो वपु धर्यो अनूप ॥ १५ ॥ तव हरि वचन कहत दोउनि सों तुम वोहोत तपस्या कीनी। पुनि में प्रगट होय वर दीनो यही मांगि तुम लीनी ॥ १६ ॥ दोऊ वेर पहले तुमरे-गृह वालभाव लै आयो। वहोरि अवे निज रूपधारि कै तुमकों प्रगट दिखायो ॥ १७ ॥

इतनो कहि हरि चुप कर बैठे प्राकृत निज वपु धारे । देखत ही मन मात पिता को निज माया विस्तारे ॥ १८ ॥ ताही समै नन्द-गोकुल में प्रगटे गोकुलचन्द । निज भक्तनि हित सुख के कारन पूरन परमानंद ॥१६॥ नाभी कमल में नाल विराजे घूँघरवारे केस । नैन बिसाल मृदु मुसकनि छबि अधरनि देत सुदेस ॥२०॥ यही रूप सों दरसन दीनो मथुरा में हरि आय । संख चक्र धरि दरसन दीनो सो लीनो उर माय ॥ २१ ॥ तब वसुदेव विचार कियो मन श्रीपति लिये उछंग । खुले कपाट पहरुवा सोये नृपति मनोरथ भंग ॥ २२ ॥ निज फन आत-पत्र सों बूँदनि सेस निवारत आवे । गरजत कोंध मेघ दामिनि की चमकि-चमकि उर लावे ॥२३॥ जमना महा भयानक लागत घोर वेग अति भारी । ज्यों रघुनाथ रूप जलनिधि कों त्यों उतरे गिरिधारी ॥ २४ ॥ तव वसुदेव गये श्रीगोकुल ग्वालनि सोवत पाये । बालक धरयो सेज जसुमति के माया कों लै आये ॥ २५ ॥ महामहोच्छव गोकुल बाढ्यो नन्दहि बढ्यो आनंद । सुत कौ जातकर्म सव कीनों देखि-देखि मुख चंद ॥२॥ विप्रजु तिलक करत घसि चन्दन अगनित गैया दान । बंदी सुत प्रोहित जन कों बहु कीनों सनमान ॥ २७ ॥ दूध दही छिरकत सबहिन कों नाचत गोपी ग्वाल । परम कृपाल 'दास' हित प्रगटे श्रीनवनीत प्रियलाल ॥ २८ ॥ ❀ ११३२ ❀

* जन्माष्टमी की वधाई में पगा धरे तब *

❀ शृङ्गार ओसरा ❀ राग आसावरी ❀ जनम सुत कौ होतही आनन्द भयो नन्दराय । महामहोच्छव आज कीजे बाढ्यो मन न रहाय ॥ १ ॥ विप्र वैदिक बोलिकें करि स्नान वैठे आय । भाव निर्मल पहरि भूषन स्वस्ति वाचन पढाय ॥२॥ जातकर्म कराय विधि सों पितर देव पुजाय । करि अलंकृत द्विजनि कों द्वै लच्छ दीनी गाय ॥३॥ सात पर्वत तिलनि के करि रतन ओघ मिलाय । कर कनक अंवरन आवृत दिये विप्र बुलाय ॥ ४ ॥ पढें मंगल विप्र मागध

सूत वंदी अघाय। गीत गावें हरखि गायक नाचत नट नचवाय ॥ ५ ॥ वाजनियां मन वोहोत हरखे विविध वाजे लाय। जानि मंगल भेरि दुंदुभि फेरि-फेरि वजाय ॥ ६ ॥ ध्वजा पताका ब्रज विचित्रित भवन-भवन धराय। वसन पल्लव रचे तोरन द्वार-द्वार वंधाय ॥ ७ ॥ वृषभ गाय सुवच्छ हरदी तेल तन लपटाय। वसन वर्ह सुवर्णमाला धातु चित्र वनाय ॥ ८ ॥ गोप आये भेट लै लै दूध दधि सँग लाय। पाग पटुका भगा भूषन महामोल सुहाय ॥ ७ ॥ सुनत ही भई मुदित गोपी जसोदा सुत जाय। वसन सकल सिंगार अंजन आदि तन भूपाय ॥ १० ॥ कहा मुख की कहुँ सोभा भई सो वरनि न जाँय। मानो कुम-कुम केसर मधि कमल की सोभाय ॥११॥ लियें वल करि अति उतावल चली तन विसराय। स्रवन कुंडल पदिक हिरदें पहिरें अति उजराय ॥ १२ ॥ विविध वसन वनाये सिर तें खसि कुसुम विसराय। नन्दजू के भवन पैठी वलय प्रगट लखाय ॥१३॥ अति विराजत भये कुंडल हृदै हार कँपाय। वहोत दई असीस यों ही रहो ब्रज सुखदाय ॥ १४ ॥ भई रस उन्मत्त नाचत लोक लाज गँमाय। अजन जन्म निसंक गावें हृदै प्रेम वढाय ॥ १५॥ वजें वाजे जनम उत्सव विविध ध्वनि उपजाय। नन्द के घर कृष्ण आये धर्म सव प्रगटाय ॥ १६ ॥ गोप नाचत दूध दधि घृत नीर सरस न्हवाय। विवस तकि नवनीत लौंदा डारत हाथ उठाय ॥१७॥ वड़े मन ब्रजराज भूपन वसन गाय वनाय। सूत मागध विप्र वंदी किये वोल विदाय ॥ १८ ॥ घरन पठये मनोरथ सव गुनिन के पुरवाय। हरि आराधन और सुत को उदै हृदै लाय ॥ १९ ॥ गृह पुजाये गनिक उत्तम भली भाँति वुझाय। दै असीस चले घरन प्रति परस्पर वतराय ॥ २० ॥ दे वडाइ कंठ भूपन हार वसन मँगाय। नन्द दीने पहिरि फूली फिरत रोहिनी माय ॥ २१ ॥ सकल ब्रज में भई संपति रमारूप वसाय। करन लीला 'रसिक' प्रीतम रहे ब्रज में छाय ॥२२॥ दोहा—धन्य सुक मुनि धन्य भागवत

धन्य यह अध्याय । धन्य-धन्य प्रीतम 'रसिक' गाइ सरस बनाय ॥१॥ ❀ ११३३ ❀ राजभोग आये ❀ राग मलार ❀ आँगन दधि कौ उदधि भयो । गोपी ग्वाल फिरत महराने सकल संताप गयो ॥ १ ॥ बक्सत पगा पिछोरी गुनियनि अति आनंद भयो । नंद जसोदा के मन आनँद 'धोंधी' के प्रभु जनम लयो ॥ २ ॥ ❀ ११३४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ढाढी ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ हौं वृषभानु को मगा, नंद उदै सुनि आयो । देवें को बडो महर देत न करत गहरु लाल की बधाई पाऊं नंद को झगा ॥ १ ॥ तौलों न बिदा ह्वै जाऊं और के कहाँ बिकाऊं जौलों न भवन आवे ऋषि गर्गा । चिरजीवो नंद को कुमार 'सूर' के प्रान आधार जसुमति सुत चले अपने पगा ॥ २ ॥ ❀ ११३५ ❀ राग धनाश्री ❀ हों ब्रजबासिन को मगा । श्रीवल्लवराज गोपकुल मंडन ए दोऊ घर कौ जगा ॥ १ ॥ नंदराय एक दियो पिछौरा तामें कनक तगा । श्री वृषभानु दियो एक टोडर हीरा जटित नगा ॥ २ ॥ कीरति दै कुंवरि की झगुली जसुमति सुत को झगा । 'किसोरीदास' कों दियो कृपा करि नील पीत को पगा ॥३॥ ❀११३६❀

जन्माष्टमी की बधाई में फेंटा धरे तब

❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ एरी सखी प्रगटे कृष्ण मुरारि ॥ ब्रज घर-घर आनंद भयो ॥ दधिकादौं आँगन नंद के । ध्रुव । एरी सखी बाजत ताल मृदंग और बाजे सब साजिकें । भवन भीर ब्रजनारि पूत भयो ब्रजराज कें ॥ १ ॥ घोष-घोष तें बाम वसननि सजि-सजि कें गई । रोहिनी महा वडभागि आदर दै भीतर लई ॥ २ ॥ बिछुवनि के झनकार गलिन-गलिन प्रति ह्वै रहे । हाथनि कंचनथार उर पर श्रमकन च्वै रहे ॥ ३ ॥ ग्वाल गोपिका जात रावरो सगरो भरि रह्यो । फूले अंग न मात सबनि को भागि उघरि रह्यो ॥ ४ ॥ जहाँ व्रजनारी आप सैन कियो ढोटा भये । तहाँ कुतूहल होत मिलि जुवती जूथनि गये ॥ ५ ॥ निरखि कमल मुख चारु आनँदमय मूरति भई । लये अंचल पट छोर मन भाई असीस दई ॥६॥

राय चौकमें घेरि छिरकत दधि हरदी मेलि। पकरि पकरि कें ग्वाल वोल लेत भुज भुजन पेलि ॥७॥ काँवरि मथना माट अगनित गिने नहीं जात हैं। धरे भरे सव ठौर कहां लौं सदन समात हैं ॥ ८ ॥ होत परस्पर मार माखन के गेंदुक करे। एक-एक कौं ताकि वदन अंग लेपत खरे ॥ ९ ॥ ऊपर तें दधि दूध सीस सीसनि गागरि धरें। घौंटुन लों भई कोच रपटि रपटि सगरें परे ॥ १० ॥ व्रजगोपिन के चीर भीजि लगे अंग-अंग सों। गावत हैं जुरि झुंड अपने-अपने रंग सों॥११॥ हो हो वोले ग्वाल हेरी दैदै गाव हीं। जोरि-जोरि सव वाँह वावा नंद नचाव हीं ॥१२॥ नंदराय वड-भाग नाचत में देखत वने। फिरत मंडलाकार अंग-अंग सुखमें सने ॥१३॥ चिबुक-केस सव स्वेत उर पर सगरे छै रहे। रंग कुसकुमा रंग दधि दूधन उरझे रहे ॥ १४ ॥ भाल विसाल रसाल फेंटा सीस सुहावनो। थोंदि थलक और चाल नाचे मृदंग मिलावनो ॥ १५ ॥ गहि-गहि कें भुज-मूल रहे गोप सुख मानि के। रपटि परे जनि नंद सावधान यह जानि कें ॥१६॥ आँगन उदधि आनंद पंक चढ्यो कटि लौं भयो। दई पनारी खुलाइ सरिता ज्यों वीथिनि गयो ॥ १७ ॥ भानुसुता में जाइ मिल्यो रंग आनंद में। कलिंदनंदिनी, आप सुख लूटत यह फंद में ॥ १८ ॥ यह औसर सव साधि घोष-नृपति जू न्हाइयो। जे वरसोंदी खात ते सव विप्र वुलाइयो ॥ १९ ॥ पूजा पितर कराय दान करत वहु भाय सों। घर के मागध सूत झगरत हैं व्रजराय सों ॥ २० ॥ मेटत सगरी रारि मन धन देत अघाइ के। करत वहुत सन्मान भूपन पट पहराय के ॥ २१ ॥ विधि सों गाइ सिंगारि दई द्विजनि केइ ठाठसें। जो माँगों सो देहु कहत नंद विप्र भाट सों ॥२२॥ अभरन अंवर छाय सहस्र पाँच दस आइयो। हँसि-हँसि रोहिनी आय व्रज तरुनी पहिराइयो ॥ २३ ॥ घर-घर वुरत निसान कही न जात कछु ये जियकी। मंगलमय व्रज देस फिरत दुहाई पिय की ॥ २४ ॥

ब्रज दसा कौ रूप कहा कहुँ सखी या समै। निरखि-निरखि 'नंददास' नृत्य करत हैं ता समैं ॥ २५ ॥ ❀ ११३७ ❀

※ जन्माष्टमी की बधाई में दुमाला धरे तब ※

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग आसावरी ❀ प्रथम ही भादौं मास अष्टमी रोहिनी बुधवारी। प्रगटे कूखि महिर जसोदा के लाडिले गिरिधारी ॥ १ ॥ सुनि ब्रजजुबती अपने श्रवनन जहाँ तहाँ तें धाई। मंगल थार धरे हाथनि पर गावति-गावति आई ॥ २ ॥ मंडित द्वारें धरत साथिये रोपति बंदन-माला। पाँइनि परत कहत रानी सों भले जने तुम लाला ॥३॥ करत बधाई जसुमति माई मगन भई रस भारी। तुम्हारी कूखि पर हम नंदरानी वारि-वारि सब डारी ॥ ४ ॥ बाजत थारी और मृदंगा और बाजत है ताला। हरद दही की काँवरि लै लै आये गोप गुवाला ॥ ५ ॥ बैठे फूल तबे नंद अति ही सबहिन देत बधाई। हरी हरी दुब विप्र भाटन ले रायजू के सीस धराई ॥ बिनती करत कहत रायजू सों धन्य जन्म विधि कियो। ऐसो सुत प्रगट्यो तुम्हरे गृह आज सुफल है जियो ॥७॥ नाचत गावत करत कुलाहल मगन भये रस भारी। फिरि फिरि पहरि हुलसि देवे कों भूषन वसन उतारी ॥ ८ ॥ दीने दान विप्र भाटनि कों माला मूँदरी चीरा। रतन जटित कुंडल पहराये मोती झलकत हीरा ॥ ९ ॥ आनंद रस उच्छाह भाव सों सव ब्रज उमग्यो आज। फूले डोले यह मुख बोलें पुत्र भयो ब्रजराज ॥ १० ॥ तब नंदरानी अपनी सखनि सों आनंदराय बुलाये। पूरन भाग चुंवत रस आनन विहँसत भीतर आये ॥ ११ ॥ हँसि करि बोली जच्चा सुहागिन आओ पिय मन भाये। बैठि मतौ करिये विलसनि कों हम घर लालन जाये ॥१२॥ चरुवा चढावनि कों पिय मेरी पहलें सास बुलावो। रतन जटित गादी मूढा पर आनि के वैठावो ॥ १३ ॥ चरुवा चढावनि कों नख सिख लों आभूपन पहिरावो। भाँति भाँति के चीर पाटंबर इतनी

वेर मंगावो ॥ १४ ॥ सथिये धरनि कों ननद हमारी तुम पिय वोलि लै आओ। इतने जटित अपने सिंघासन आनिकें वैठावो ॥१५॥ सथिये धरनि कौ नेग वहुत है सो दीजे मन भायो। तातें कहत सुनों पिय तुम सों यह दिन क्योंहु पायो ॥ १६ ॥ हँसि व्रजराज कहत रानी सों यातें चौगुनो देहैं। ऐसो सुत तुम जाय दिखायो देतहु न अघे हैं ॥ १७ ॥ चंद्रावली व्रजमंगल राधे करि करि लाड वुलावो। उनही के भाग दियो फल हमकौं उनहीं पे मंडवावो ॥१८॥ हम ही तुमही लालन लेकैं उनकी गोद वैठावो। उनको चीत्यो भयो हमारे लालें तुमहि खिलाओ ॥ १९ ॥ और पिय मेरी द्यौरानी जिठानी आदर दै वोलि लावो ॥ भाँति-भाँति सारी आभूपन सव ही कों पहिरावो ॥२०॥ थेला भरि-भरि दाम मंगावो देहु रोहिनी हाथा। हँसि हँसि खरचे रानी रोहिनी जाकी सिरानी गाथा ॥ २१ ॥ गाड़ा भरि-भरि सौंज-पंजीरी इतनी वेर मंगावो। गुड़ घी देखि खुरैरी मेलि पंजीरी वहोत सनावो ॥ २२ ॥ भरि भरि मेरी द्यौरानी जिठानी हँसि हँसि करिके लेहैं। यह दिन हमकों दियो विधाता देखि देखि सुख पैहें ॥ २३ ॥ हँसि व्रजराय जू वाहिर आये माय वहनि वोलि लाये। सगरी सौंज धरी लै आगें करौ आप मन भाये ॥ २४ ॥ सास नवलदे चरुवा चढावै आछे चीति वनाये। झांकि-झांकि देखति नंदरानी चरुवा वोहोत मन भाये ॥ २५ ॥ सोनो मोती हीरा के सव आभूपन पहिराये। हंसि-हंसि पहरे सास नवलदे केऊक जोरी मंगाये ॥२६॥ वेटी स्यामदे धरत साथिये आछे मोरि संभारे। मोतिन के अच्छत कुमकुम लै चीति किये उजियारे ॥ २७ ॥ गुड घी पूजि सात सोंकनि सों दुहुं ओर चिपकाये। सथियन को उद्योत देखिकें रानी जू वहोत सिहाये ॥ २८ ॥ देत भतीजे कों झगुली कुलही और हाथन को चूरा। खगवरीया कठुला लटकन और पायन कों पनसूरा ॥ २९ ॥ इतनों दे करि मानदे स्यामदे गमदे झगरौ ठान्यो। तुमरो देन सुनों वीर मेरे एकौ नहिं मन मान्यो ॥ ३० ॥

हँसि ब्रजराज कहत बहनिनसों कहौ कहा अरु दीजे। बाँह पकरि के कहत रामदे कह्यो बीर मेरो कीजे ॥ ३१ ॥ लैहों भाभीजू की पायल जे हैं अति बहु मोली। रानी जू को बंटा लाय आय राय जू खोली ॥ ३२ ॥ तुमारी ननद हठीली छबीली ते क्योंहू नहिं माने। बोलि लई पास भाभी जू दे करिके मुसिकाने ॥ ३३ ॥ भांति भांति सारी आभूषन तुम हम सब पहिरायो। मोंहो माँग्यो सो दियो बधाई जो हमारे मन भायो ॥ ३४ ॥ तुम्हारे घुरसार को अलल बछेरा सो छोरि हौं लेंहों। बहोत ठाठ गाय भेंसिनि के इतनो लै घर जैहों ॥ ३५ ॥ दीने ठाठ गाय भैंसिन के अरु दीने रथ जोरे। घोड़ा घोडी बछेरी बछेरा बहु दीने खोलि डोरे ॥ ३६ ॥ गाडा भरि-भरि सोनो दीनो दीने मोती हीरा। के लख गाम दिये अनगिनती ऐसे रायजु वीरा ॥ ३७ ॥ मुरि करि बोली बेटी स्यामदे एक हौंस वीर मेरे। रतन जटित सुखपाल मंगावो जेहैं आछी तेरे ॥ ३८ ॥ इतनी सुनि आनंदरायजू दियो सुखपाल मंगाई। तामें बैठी बेटी स्यामदै भतीजे कौ नेग चुकाई ॥ ३९॥ इतनो लै कर चली स्यामदै मुरि-मुरि देत असीसा। आनंदराय कुंवर बलि गिरिधर जीवौ कोटि बरीसा ॥ ४० ॥ वीरन मेरे जग उजियारे भाभी कुल उजियारी। चित्र विचित्र कूखि जसोदा की जिन जायो गिरिधारी ॥४१॥ सोने कूखि मढाय जसोदा प्रगट्यो जग सुखदाई ॥ 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन लाल पर बार-बार बलिजाई ॥ ४२ ॥ ❁ ११३८ ❁

छट्ठी कौ उत्सव (भादो बदी ७)

❁मंगला दर्शन ❁ राग रामकली ❁ माई सोहिलौ आज नंदमहर-गृह बाजे बाजे मंदिलरा अनूपम गति। नर-नारी मिलि मंगल गावें ऋषिमुनि वेद पढत ब्रह्मा सिव सुर फूले सुरपति ॥ १ ॥ भयो आनंद तिहुँपुर घर-घर भक्त अभय कीने दान अति। 'जगन्नाथ' प्रभु प्रगट भए हैं कूखि सिरानी रानी जसुमति ॥२॥ ❁११३९❁ शृंगार ओसरा ❁ देवगंधार❁ लाल कौ जन्मद्यौस दिन

आयो । गाम-गामतें जाति बुलाई मोतिनि चौक पुरायो ॥ १ ॥ दिन दस पहले बाजत बाजें पंच सब्द धुनि घोर । सब मिलि गावत गीत बधाई देख कुतूहल सोर ॥ २ ॥ प्रथम सप्तमी रात ब्यारू कौ सब अपनी मिलि जानि । पूरी बुकनी नाना विंजन लडुवा मठरी पाति ॥ ३ ॥ इहि विधि करि सब हाथ पखारे बीरा दियो मंगाय । जनम द्यौस दिन बरजत है तातें कोऊ कछू नहिं खाय ॥ ४ ॥ घटिका चार घोखरानी हित सब उठे कृष्ण गुन गाय । लाल न्हवावत पंचामृत सों जुवती मंगल गाय ॥ ५ ॥ पुनि फुलेल अरु अंग उबटनौ केसर चंदन गात । उष्णोदक न्हवावे लालन अंग अंगोछत मात ॥ ६ ॥ रंग केसरी बागो कुलही सूथन पटका लाल । आभूपन बहुत से पहिरे काजर नैन बिसाल ॥ ७ ॥ लाल के भाल तिलक गोरोचन कमलपत्र दोऊ गाल । मोरचंद गुंजा धरि बैठे सिंघासन नँदलाल ॥ ८ ॥ सनमुख तब सिंगार लडेंती उत भूपन अनूप । स्याम कंचुकी सारी केसरी राजत जुगल स्वरूप ॥ ९ ॥ ऊपर पीतांबर लै ओढे व्रजजन गावत गीत । कनकथार मोतिनि साथिये मुठियाँ आरती चीत ॥ १० ॥ अच्छत पीरे कुमकुम घोरिकें तिलक करत हैं मात । मुठियाँ वारि आरती वारी भेंट धरत बलि जात ॥११॥ तिल गुड मिली दूध अचयो पुनि बीरा देत विसेप । हरखित दान देत नंद बाबा 'द्वारकेस' प्रभु देख ॥ १२ ॥ ❀ ११४० ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ सब मिलि ग्वालिनि देत असीस । नंदराय नंदरानी कौ ढोटा जीओ कोटि बरीस ॥१॥ धन्य ये कूख भई सुभ लच्छन जिन सगरो व्रज छायो । ऐसो पूत जायो नंदरानी निज व्रज अटल बसायो ॥ २ ॥ अब यह बेटा बढौ इन पाँइनि आँगन ठुम-ठुम डोले । 'श्रीविट्ठल-गिरिधर' रानी तुमसों मैया कहि–कहि बोले ॥ ३ ॥ ❀ ११४१ ❀

ग्रहण की रीति के पद

राजभोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन खुले तो—

❀ राजभोग आरती पाछे ❀ ❀ राग सारंग ❀ जाकों वेद रटत ब्रह्मा रटत संभु रटत सेस रटत नारद सुक व्यास रटत पावत नहीं पार री। ध्रुवजन प्रहलाद रटत कुंती के कुँवर रटत द्रुपद-सुता रटत नाथ अनाथन प्रतिपाल री ॥ १ ॥ गनिका गज गीध रटत गौतम की नारि रटत राजन की रमनी रटत सुतन दै-दै प्यार री। 'नंददास' श्रीगोपाल गिरिवरधर रूप रसाल जसोदा कौ कुँवर लाल राधा उर हार री ॥ २ ॥ ❀११४२❀

शयन भोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन होय तो—

❀ राग मालव ❀ पद्म धर्यो जन ताप निवारन। चारो भुजा चारों कर आयुध धरें नारायन भुव भार उतारन ॥१॥ चक्र-सुदर्सन धरयो कमल-कर भक्तन की रच्छा के कारन। संख धरयो रिपु उदर विदारन गदा धरी दुष्टन संहारन ॥ २ ॥ दीनानाथ दयाल जगतगुरु आरति हरन भक्त चिंतामनि। 'परमानंददास' कौ ठाकुर यह अवसर छाँड़ो जनि ॥ ३ ॥ ❀११४३❀ राग मालव ❀ वन्दौं धरन-गिरिवर भूप। राधिका-मुख कमल लंपट मत्त मधुप स्वरूप ॥ १ ॥ रसिकवर संगीत सुखनिधि क्वनित वेनु अनूप। 'कृष्णदास' उदार परम लोल माल अनूप ॥२॥ ❀११४४❀

दिवाली के दिन ग्रहण होय तो साँझ कूं—

❀ शयन दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ गाय खिलावन खिरक चले री। गिरिधरलाल ललित लरिका संग बाबा नंद बलदाऊ भले री ॥ १ ॥ श्रीदामा आदि सुबल अर्जुन सब भोज विसाल बने री। नाचत गावत करत कुलाहल करौ सिंगार आज दिवारी ॥ २ ॥ सुनि निज नाम नेंचुकी निकसी गाँग बुलाई काजर पीरी। कौन लाल कहे कुरुर—कुरुर डाढ मेलि आतुर ह्वै दौरी ॥३॥ नंदकुमार निवेरि भारि मुख बछरा छोरि दिये री।

हँसि-हँसि कहत सुनोरे भैया हौं खेलत खेल नये री ॥ ४ ॥ गोधन पूजि ग्वाल पहिराये काहू कों पगा काहू कों पिछौरी । व्रजभामिनि मिलि मंगल गावत 'रसिक' प्रभु करौ राज जुग-जुग री ॥५॥ ❀११४५❀ राग कानरा ❀ गाइ खिलाइ आये नँदनंदन सोभित ताल मृदंग वजाये । हँसि-हँसि ग्वाल देत कर तारी आछे-आछे मंगल गाये ॥ १ ॥ अति आनंद नंद जू की रानी गजमोतिनि के चौक पुराये । वार-वार न्यौछावर वारत जवही लाल घर भीतर आये ॥ २ ॥ आछे चीर वहुत भांतिन के गोपी-ग्वाल सव पहिराये । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' लाल को मुख चूमत और लेत वलाये ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ११४६ ❀

❀ शीतकाल संबंधी रीत के ❀

लाल वस्त्र को टिपारा धरे तव—

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ देखो सखी सुंदरता को पुंज । अंग-अंग प्रति अमित माधुरी देखि मदन भयो लुंज ॥ १ ॥ नखसिख सुभग सिंगार वन्यो है सोभा मनिगन रुंज । 'चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल सिर लाल टिपारौ गुंज ॥२॥ ❀ ११४७ ❀ भोग दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ नाचत गावत वन तें आवत लाल टिपारौ सीस रह्यो फवि । घन तन वसन दामिनी मानों कुंडल किरन निरखि मोहे रवि ॥ १ ॥ 'हित हरिवंस' और सोभानिधि गौरज मंडित अलकनि की छवि । स्याम धाम सरस्वती सकुचि रही या वानिक वरनत को कवि ॥ २ ॥ ❀ ११४८ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग गौरी ❀ आज लाल टिपारे छवि अति जु वनी । विच-विच चारु सिखंड विच-विच मंजरी-न्यूत विराजनी ॥ १ ॥ धेनु-रेनु रंजित अलकावलि सगमगात सौंधे सनी । मधुप-जूथ उडिकें वैठत सखी पारिजात अवतंस सनी ॥ २ ॥ अंगद वलय कर मुद्रा खचित नग कटितट पीत काछे काछनी । श्रीवत्स लक्ष्म उरहा विसद सखी कंठलसत कौस्तुभमनी ॥३॥

त्रिभंग भँवरी लेत सुख अग्रता निधि धिमि कटि थुंग-थुंगनि ग्वाल-ताल गत उघटनी। 'गोविंद' प्रभु त्रैलोक विमोहित नृत्यत रसिक सिरोमनी॥४॥ ❀ ११४९ ❀ शयन दर्शन ❀ राग ईमन ❀ आवत मदन गोपाल त्रिभंगी। नृत्यत आवत बेनु बजावत करत कुलाहल ग्वालन संगी ॥ १ ॥ कटि पीतांबर उर बनमाला बन्यो टिपारो लाल सुरंगी। बचन रसाल सुरति यों भूली सुनि बन मुरलीनाद कुरंगी ॥ २ ॥ बरखत कुसुम देवगन हरखत बाजत ढोल दमामा जंगी। 'परमानंद' स्वामी नटनागर स्याम विनोद सुरति रस रंगी ॥ ३ ॥ ❀ ११५० ❀

पीले वस्त्र को टिपारा धरे तब

❀ संध्या में ❀ राग गौरी ❀ आवत ब्रज कों री गोधन संगे। मधुव्रत मधुमाते सुख देत मुरली बजावत तान तरंगे ॥ १ ॥ पीत टिपारौ लाल काछनी कटि बनजु धात अति विचित्र सोहत साँवल अंगे। 'गोविंद' प्रभु पिय सखा भुज अंस धरें करत कमल गान श्रुति तरंगे ॥२॥ ❀११५१❀

* माणिक और जडाऊ को टिपारा धरे तब *

❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ आज बने बन तें आवत हैं गोपाल। पाडर-सुगंध सुमन-निवारी कमल मल्लिका माल ॥ १ ॥ कटि पट पीत तिखंडी ओढें सीस जटित टिपारौ लाल। बाम दच्छिन चितवत नागर चंचल नैन विसाल ॥ २ ॥ फरकत श्रवन चारु चल कुंडल मृगमद तिलक सुभाल। संकुचित चलत अधर कर पल्लव कूजत बेंनु रसाल ॥३॥ मनिगन खचित रुनत पग नूपुर क्वनित किंकिनी जाल। 'कृष्णदास' प्रभु मनमथ नायक गोवर्धनधर लाल ॥ ४ ॥ ❀ ११५२ ❀

* और कोई जात को टिपारा धरें तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ बिमल कदंब मूल अवलंबित ठाडे हैं पिय भानु-सुता तट। सीस टिपारो कटि लाल काछिनी उपरैना फरहरत

पीत पट ॥१॥ पारिजात अवतंस रुरत सखी सीस सेहरो बनी अलक लट। बिमल कपोल कुंडल की सोभा मंद हास जीते कोटि मदन भट ॥ २ ॥ वाम कपोल वाम भुज पर धरि मुरली बजावत तान विकट छट। 'गोविंद' प्रभु के जु श्रीदामा प्रभृति सखा करत प्रसंसा जय नागर नट ॥ ३ ॥ ❀ ११५३ ❀ राग टोडी ❀ नवल निकुंज महल रसपुंज में रसिकराय टोडी स्वर गायो। मिटि गयो मान नवल नागरि को अंग ही अंग अनंग जनायो ॥ १ ॥ दौरी आइ कंठ लपटानी एही तान मेरे मन भायो। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर नागर नट यह विधि गाढौ मान मनायो ॥ २ ॥ ❀ ११५४ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ गायन सों पाछें-पाछें काछिनी सों कटि काछे बन्यो है टिपारो आछो लाल गिरिधारी के। धातु को तिलक किये बनी गुंजमाल हियें बनके सिंगार सब विपिन विहारी कें ॥ १ ॥ नटवर भेष किये ग्वाल मंडली संग लिये गावत बजावत देत कर तारी के। 'गोविंद' प्रभु बन तें ब्रज आवत दौरि-दौरि ब्रजनारी झाँकत मध्य जारी के ॥ २ ॥ ❀ ११५५ ❀ राग नट ❀ राधे तेरे नैन किधों बट-पारे। अँखियनि डोरे चटक रहे हैं घूमत ज्यों मतवारे ॥ १ ॥ अंजन दै पिय को मन रंजत खंजन मीन मृग हारे। 'सूरदास' प्रभु के मिलिबे कों नाचत ज्यों नटवारे ॥ २ ॥ ❀ ११५६ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ चंद्रमा नटवारी मानों साँझ समै बन तें ब्रज आवत नृत्य करन। उडुगन मानों पहोंप-अंजुली अंबर अरुन बरन ॥ १ ॥ नंदमुख सन्मुख ह्वै बामदेव मनावन विघ्नहरन। 'नंददास' प्रभु गोपिनि के हित बंसी धरी गिरिधरन ॥ २ ॥ ❀११५७❀

* किरीट धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ आज अति सोभित हैं नंदलाल। क्रीट मुकुट सिर सुभग विराजत गलें फूलन की माल ॥ १ ॥ ठाडे कुंज-द्वार राधा सँग वेनु बजायो रसाल। 'परमानंददास' को ठाकुर बलि बलि

गईं ब्रजबाल ॥ २ ॥ ❀ ११५८ ❀ भोग के दर्शन मैं ❀ राग पूर्वी ❀ सोहत गिरिधर मुख मृदुहास । कोटि मदन कर जोरि उपासित विगलित भ्रू विलास ॥ १ ॥ कुंडल लोल कपोलन की छबि नासा मुक्ता प्रकास । सोभा सिंधु कहाँ लौं वरनौं बारनें 'गोविंददास' ॥ २ ॥ ❀ ११५६ ❀

पीलो दुमालो धरें तब

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ अधिक रजनी मानी हो नंदलाल । दुलहिन संग बिराजत चित्रसारी सुंदर नैन विसाल ॥१॥ पीत दुमालो सुखद सुख सुंदर गुनमै दर्सित सोभा भारी करत अधरामृत पान रसाल । रंग महल वैठे 'नंददास' प्रभु सीत-बस होत मनहूँ अधिक गोपाल ॥२॥ ❀११६०❀ ❀राग आसावरी❀ ए, दोऊ एकरंग रंगे गहरे रंग मजीठ । हौं वाके मन वे मेरे मन बसि रहे आली री कहा करेगौ वसीठ ॥ १ ॥ पीत दुमालो लाल सिर सोहै तासों मेरो मन मोह्यौ अद्भुत छबि देखि मानो सिला भई लीठ । 'ब्रजाधीस' प्रभु संग लाज गई मेरी मुसकि ठगौरी लागी तातैं बावरी सी डोलौं वे तो लंगर ढीठ ॥ २ ॥ ❀११६१❀

* रंग-बिरंगी दुमाला धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ अति छबि बन्यौ दुमालो सीस । मन्मथ मान हरन हरि चितवत आज बन्यौ गोकुल को ईस ॥ १ ॥ ठाढ़े निकसि सिंघद्वार ह्वै संग सखा लीने दस बीस । 'परमानंददास' कौ ठाकुर जीओ कोटि वरीस ॥ २ ॥ ❀११६२❀

* दुपेंची खिरकीदार पाग धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मालकोस ❀ आये हो जु अलसाने जो ए हम जानि पाये अनत रंग-रंगे राग के । रीझे काहु तिय सों रीझि को सवाद जान्यौ रस के चखैया भँवर काहू बाग के ॥ १ ॥ जहीं ते जु आए लाल तहीं क्यों न जाओ जू जाके रस सों रस पागे जाग के । 'तानसेन' के प्रभु

तुम बहुनायक बातें जनि बनाओ सँवारो पेच पाग के ॥२॥❀११६३❀
❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ सोहत सुरंग-दुरंग पाग कुरंग लाल कैसे लोयन लोने । कपोल विलोलन में झलके कल कुंडल कानन कोने ॥१॥ रंग-रंगीले के अंग सबै नवरंग रँगे ऐसे पाछे भये न आगें होने । 'नंददास' सखी मेरी कहा ऽचले काम के आये टटावक टोने ॥ २ ॥ ❀११६४❀
❀ राग नट ❀ लाडिलौ ललित लाल वारी हौं आज की बानिक पर । तीन पेच पाग टेढी सोहत स्याम धरी कुलहै सु तूल भरी फूलि उभरी सु भर ॥ १ ॥ भूषन वसन और कहा कहौं ठौर वंक अवलोकनि वेनु लै निकर । 'चतुर्भुज' प्रभु नैन सों चुरावत रूप सुधा रस लाल गोवर्द्धनधर ॥ ॥ २ ॥ ❀ ११६५ ❀

* केसरी पाग और वागा धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ आज बने मोहन रँग भीने । केसरी पाग सिथिल अलकावलि सीस चन्द्रिका दीने ॥ १ ॥ केसरी बागो अति राजत है हरी इजार चरननि में कीने । हार हमेल दरपन लै निरखत 'रसिक' प्रीतम चरननि चित दीने ॥ २ ॥ ❀ ११६६ ❀ राग सूहा ❀ अरुन दृगनि की सोभा मोपै बरनी न जाय । नीची चितवन सरस नरसयी लियें री आलस पाय ॥ १ ॥ लटपटी पाग केसरी बाँधे ढरकि रही आधे सिर आय । तेहि समैं हरयो मन 'गिरिधर' मदनमोहन पिय दरस दिखाय ॥२॥ ❀११६७❀

* श्याम पाग धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ स्याम लग्यो संग डोले, माई मेरे । जित जाऊँ तित आडोइ आवे बिना बुलायो बोले ॥ १ ॥ कहा करों इन नैना लोभी बस कीनें बिनु मोले । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर हँसि-हँसि घूँघट खोले ॥ २ ॥ ❀ ११६८ ❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ मेरे जीवन सुजान कान्ह प्रान हू तें प्यारे लाल गिरिके धरन मेरे मन के हरन । स्याम

पाग सिर सोहे कछुक रिसौंही भौंहें दसन हँसन लागें कुसुम झरन ॥ १ ॥ चिबुक तिलक भाल कंठ सोहे मुक्तामाल हीरन के सोहे लाल पग आभरन । स्यामा तन स्याम सारी कंचुकी की छबि न्यारी पायल झनन बाजे राधे के चरन ॥ २ ॥ हँसि परसत लाल करत विविध ख्याल ब्रजबाल जुरि आईं बरन-बरन । सुगंध कपूर डारि मृगमद खैरसार लाल हिं खवावे बीरी प्यारी अधरन ॥ ३ ॥ पहिरें कुसुममाल प्यारी गलबाँहि डार मुखहिं निहोरैं लाल यह हैं परन । यही मन कौ हुलास कहत 'कल्याणदास' ब्रजवास माँगें रहि तिहारे सरन ॥ ४ ॥ ❀ ११६९ ❀ राग बिहाग ❀ तेरे अंग स्याम सारी सोहे । मानों पिय के अभिसार करन कों करि अँधियारी दबी जात हो ज्होंन जो है ॥ १ ॥ तू अति ही नीकी लागत तेरी उपमाकों कामतिय कोहै । 'रसिक' प्रीतम ढिंग तोहि राखत तातें छिनु न बिछोहे ॥२॥ ❀११७०❀

❀ सफेद घटा होय तब ❀

राग आसावरी ❀ राजभोग आये ❀ जेंवत दोऊ रंग भरे । चार भाँति के व्यंजन आने षटरस रुचिर करें ॥ १ ॥ गोपीजन के मंडल राजत लोक वेद बिसरें । सकल मनोरथ पूरक नंदनंदन प्रति-प्रति रूप धरें ॥ २ ॥ बासर केलि मुदित गिरिधारी सुख विलसत सगरें । 'लालदास' प्रभु यह विधि क्रीडत भोजन अखिल करें ॥ ३ ॥ ❀ ११७१ ❀ राग आसावरी ❀ गोपवधू अपनी सौंज बनाई ।रुनक-झुनक त्यों-त्यों ढिंग आवत नूपुर सब्द सुहाई ॥१॥ कोऊ ठाढी श्रीमुख चितवत आनंद उर न समाई । व्यंजन मीठे खाटे खारे जेंवत हरि न अघाई ॥ २ ॥ कोऊ कहत अबकें कब मिलि हो देओ संकेत बताई । प्रभु 'कल्यान' ब्रजजन की जीवन गिरिधर सब सुखदाई ॥ ३ ॥ ❀ ११७२ ❀ राग आसावरी ❀ जेंवत श्रीवृषभाननंदिनी कान्ह कुँवर की परछाँई । जोई-जोई व्यंजन भावत रुचिसों सोई-सोई सब ललिता ले आई ॥ १ ॥ हित सों जिमावति मोहन प्यारो मधु मेवा पकवान मिठाई । अति

अनुराग बढ्यो जु परस्पर 'द्वारकेस' तहाँ वलि-वलि जाई ॥२॥ ❀ ११७३ ❀
❀ राग आसावरी ❀ दोऊ मिलि जैंमत कंचन थारी । मधुमेवा पकवान मिठाई परोसति है ललितारी ॥ १ ॥ भोजन करत छहों रस मिलि संग वृषभान दुलारी । अचवन कों जमुनाजल सीतल कनक रत्न भरी झारी ॥ २ ॥ अति सुगंध कपूर लोंग युत प्रीतिसों रुचिर सँवारी । हँसि मुसिकाय दसन खंडित वीरी 'सूरदास' वलिहारी ॥३॥ ❀ ११७४ ❀ राजभोग दर्शन ❀
❀ राग टोडी ❀ आधौ मुख नीलाम्वर सों ढाँप्यो विथुरी अलकें सोहें । एक दिसा मानों मकर चाँदनी एक दिसा घन विजुरी कोंधत हँसे हरें मन मोहें ॥ १ ॥ कबहूँ कर पल्लव सों निरवारत ऊँचे लै धरत जव निकसत पूरन ससि जोहें । 'सूरदास' मदनमोहन कव के ठाढे निहारत त्रिभुवन में उपमा कों कोहै ॥ २ ॥ ❀ ११७५ ❀

* पीली घटा होय तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ पीरे पटवारो अंग-अंग को है सांवरो नाम न जानों आली काहि को है दावरो । जमुना के नीरें तीरें धेनु चरावै वांसुरी वजावै गायक कौ रिझवारो ॥ १ ॥ हौं दधि वेचन जाति वृंदावन सव सखियनि मिलि कियो है वावरो । 'कृष्णजीवन लछिराम' के प्रभु प्यारे नन्दनन्दन एतो जसोदा को दावरो ॥ २ ॥ ❀ ११७६ ❀ राग आसावरी ❀ ठाढोरी खिरक माँह कौन को किसोर । साँवरे वरन मन हरन वंसीधरन काम करन कैसी मति जोर ॥ १ ॥ पवन परसि जात चपल होत देख पियरे पट कौ चटकीलौ छोर । सुभग साँवरी छोटी घटा तें निकसि आई वे छवीली कटा कों जैसो छवीलो और ॥ २॥ पूछत पाहुनी ग्वारि हा-हा मेरी आली कहा नाउं को है चित वित चोर । 'नंददास' जहिं चाहि चकचौंधा आइ जाइ भूल्योरी भवन-गमन भूल्यौ रजनी भोर ॥ ३ ॥ ❀ ११७७ ❀

* हरी घटा होय तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ माइ मेरो हरि नागर सों नेह । जव तें

दृष्टि परे मनमोहन तवतें विसरयो गेह ॥ १ ॥ कोऊ निंदौ कोऊ वंदौ मो मन गयौ सँदेह । सरिता सिंधु मिलि 'परमानंद' भयौ एक रस तेह ॥ २ ॥ ❀ ११७८ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग पूरवी ❀ सोहत हरित कंचुकी छूटे वंद। तैसिय लटकि रही दिसि दच्छिन पगिया ही जो कुरंग ॥ १ ॥ निरखि निरखि सौभग सव सकुच जात अनंग । यह छवि धरे 'रससिंधु' द्वार ठाढे जुवतीवृंद संग ॥ २ ॥ ❀ ११७९ ❀

* लाल घटा होय तव *

❀ राजभोग दर्शन ❀राग विलावल❀ गोकुल की पनिहारिनि पनियां भरनि चलीं वड़े-वड़े नैना तामें खुभि रह्यो कजरा । पहिरें कसूंभी सारी अंग-अंग छवि भारी गोरी-गोरी वहियन में मोतिनि के गजरा ॥ १ ॥ सखी संग लिये जात हँसि-हँसि वूझत वात तनहू की सुधि भूली सीस धरें गगरा । 'नंददास' वलिहारी वीच मिले गिरिधारी नैननि की सैननि में भूलि गई डगरा ॥ २ ॥ ❀ ११८० ❀

* श्याम घटा होय तव *

❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ रानी जू एक वचन मोहि दीजे । पठवो सदन हमारे सुतकों कह्यो मान मेरौ लीजे ॥ १ ॥ जव कछु नीकी सौंज वनावत तव घर जिय अकुलात । अटक रहत तुम्हारे सुत पर इन विन लियौ न जात ॥ २ ॥ निसिदिन खेलो मेरे आँगन नयननि निरखि सिराऊं । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन छेल कों हँसि-हँसि कंठ लगाऊं ॥ ३ ॥ ❀ ११८१ ❀ राग टोडी ❀ जसोदा एक वोल जो पाऊँ । रामकृष्ण दोऊ तिहारे सुत को सखनि सहित जिमाऊं ॥ १ ॥ जो तुम नंदराय सों सकुचौ तो हौं उन्हें सुनाऊ । जोपे आज्ञा देहो कृपा करि भोजन ठाट वनाऊं ॥२॥ जव वाके घर गये स्याम घन अपनो भवन वतायो । 'परमानंद' प्रेम भर उमगी घर वैठे पहुँचायो ॥ ३ ॥ ❀११८२❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सुहा ❀

ए कहुँ उमडि घुमडि गाजत हो पिय कहुँ वरखत कहुं उघरि जात। कहुं दमकत चमकत चपला ज्यों एक ठोर न ठहरात ॥१॥स्याम घन के लच्छन तुम ही में स्यामघन मेह-नेह आडंवर वृथा वहे जात। 'मुरारीदास' प्रभु तिहारे वाम चरन पूजिये जु को किनकी कही वातन कों पत्यात ॥२॥ ❀ ११८२❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ मीठी-मीठी वतियाँ लाल मनुहार करन आये। कहा कहिये तेरे हृदय की सुन्दरताई जैसे तन स्याम तैसे रहे मन तातें व्रजजुवतिनि मन भाये ॥ १ ॥ क्ति सकुचत पिय खरे नीके लागत प्रानप्रिया के रंग छाये। धन्य-धन्य हो ते त्रिगा कौन सुकृत कीनें तातें 'गोविंद' प्रभु पिय पाये ॥ २ ॥ ❀ ११८३ ❀ शयन दर्शन ❀ राग विहाग ❀ अरी सखी सुंदर स्याम सलौना। चंचल चपल चितवन में ही कीनो है कछु टौना ॥ १ ॥ भूली लोकलाज कुल सजनी ना जानों कहा होना। 'परमानंद' कहो हों कैसी भूलि गई गृह-गौना ॥ २ ॥ ❀ ११८४ ❀ ❀ मान पोढवे में ❀ राग कान्हरा ❀ मनावन आये मनाय नहिं जाने प्रानेस्वर प्रानन के प्यारे। कौन कौन गुन सुमिरों प्यारे तिहारे काहे कों दुरावत मो तन दोऊ नैना निहारे ॥१॥ मेरी सी मोसों औरनि की औरनि सों ऐसे रंग ढंग नित्य प्यारे तिहारे। 'नंददास' प्रभु प्यारे एक रस रहो क्यों न कैसे प्रान पत्यारे ॥ २ ॥ ❀ ११८५ ❀ राग विहाग ❀ पोढे स्यामाजु सुख सेज। संग श्रीवृषभानतनया रस रंग की हेज ॥ तरुनी तन छवि कनक वेलि तमाल मोहन तेज। सोभा की सीमा है दंपति 'गोविंददास' गनेज ॥२॥❀११८६❀

* स्याम घटा के दूसरे दिन *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग विलावल ❀ जैसो स्याम नाम तैसो तन मन सब कियौ भली कीनी स्याम आज मेरे मन भाये हो। वौरे लागत कहुँ अरुन अधरविंव अव नीके लागो लाल कजरा रंगाये हो ॥ १ ॥ जैसोई नील-पट नटक पीतपट निपट कपट दूर कियो कुन्दन ह्वै आये हो। 'नन्ददास'

दृष्टि परे मनमोहन तबतें बिसरयो गेह ॥ १ ॥ कोऊ निंदौ कोऊ बंदौ मो मन गयौ सँदेह । सरिता सिंधु मिलि 'परमानंद' भयौ एक रस तेह ॥ २ ॥ ❀ ११७८ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग पूरवी ❀ सोहत हरित कंचुकी छूटे बंद । तैसिय लटकि रही दिसि दच्छिन पगिया ही जो कुरंग ॥ १ ॥ निरखि निरखि सौभग सब सकुच जात अनंग । यह छबि धरे 'रससिंधु' द्वार ठाढे जुवतीवृंद संग ॥ २ ॥ ❀ ११७९ ❀

※ लाल घटा होय तब ※

❀ राजभोग दर्शन ❀राग बिलावल❀ गोकुल की पनिहारिनि पनियां भरनि चलीं बड़े-बड़े नैना तामें खुभि रह्यो कजरा । पहिरें कसूंभी सारी अंग-अंग छबि भारी गोरी-गोरी बहियन में मोतिनि के गजरा ॥ १ ॥ सखी संग लिये जात हँसि–हँसि बूझत बात तनहू की सुधि भूली सीस धरें गगरा । 'नंददास' बलिहारी बीच मिले गिरिधारी नैननि की सैननि में भूलि गई डगरा ॥ २ ॥ ❀ ११८० ❀

※ श्याम घटा होय तब ※

❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ रानी जू एक बचन मोहि दीजे । पठवो सदन हमारे सुतकों कह्यो मान मेरो लीजे ॥ १ ॥ जब कछु नीकी सौंज बनावत तब घर जिय अकुलात । अटक रहत तुम्हारे सुत पर इन विन लियौ न जात ॥ २ ॥ निसिदिन खेलो मेरे आँगन नयननि निरखि सिराऊं । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन छेल कों हँसि-हँसि कंठ लगाऊं ॥ ३ ॥ ❀ ११८१ ❀ राग टोडी ❀ जसोदा एक बोल जो पाऊँ । रामकृष्ण दोऊ तिहारे सुत कों सखनि सहित जिमाऊं ॥ १ ॥ जो तुम नंदराय सों सकुचौ तो हौं उन्हें सुनाऊं । जोपे आज्ञा देहो कृपा करि भोजन ठाट बनाऊं ॥२॥ जब वाके घर गये स्याम घन अपनो भवन बतायो । 'परमानंद' प्रेम भर उमगी घर बैठे पहुँचायो ॥ ३ ॥ ❀११८२❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सुहा ❀

नित्य की सेवा में ऋतु-समयानुसार के अवशिष्ट रहे कीर्तन

वर्षाऋतु में ❀ जागवे के ❀ राग मल्हार ❀ उमडि घुमडि वादर आयेरी चहुँ दिसि तें जसोदा लालें जगाय । ग्वाल-वाल सव टेरत ठाडे वेगि चलिहु उठि धाय ॥ १ ॥ कवकी कहत वेगि उठि वेठहु वहु विधि विंजन धरे हैं वनाय । 'परमानंद' प्रभु मात वचन सुनि उठे लाल मुसिकाय ॥ २ ॥ ❀११९४❀ ❀ राग मल्हार ❀ घूमड रहे वादर सगरी निसा के अहो महरि लालें दीजे जगाय । वर्षा-रितु कहुँ वरसे अचानक वालक जाय डराय॥१॥ चिरैयन के चुंहचहात जसोदा करि अपुनो निरवरि घर-काज । दधि मंथन वैठी लावो दूध-दहीं घोस वढत व्रजराज ॥ २ ॥ वछरा छोर वलभद्र जगावहु दुहि-दुहि लावत हैं सव गाय । 'नंददास' लाल जगाय तिहिं छिन लीनो अंक जसोदा माय ॥ ३ ॥ ❀ ११९५ ❀ कलेऊ ❀ राग मल्हार ❀ वूँदन झर लायो आँगन जहाँ करत कलेऊ दोऊ भैया । भवन में आवो लाल संग सव लाओ वाल कहत जसोदा मैया ॥ १ ॥ भीजेगो वसन तन खेलवे कों सव दिन मेरो कह्यो मान लालन लेहों वलैया । 'परमानंद' प्रभु जननी कहत वात प्यावत मथि-मथि घैया ॥२॥ ❀ ११९६ ❀ छाक ❀ राग मल्हार ❀ आरोगत मोहन मंडल जोरे । व्यंजन स्वाद खरे ही लागत ज्यों गरजत घनघोरे ॥ १ ॥ न्हेंनी न्हेंनी वूँद सुहावनी लागत पवन चलत झकझोरे । वहोछारन की फुही परत अंग आवत जव ही सकारे ॥ २ ॥ देखो लाल गाय सव इत-उत वछरा तृन तोरे । श्रीगिरिधरलाल कों देखि महासुख 'कुंभनदास' तृन तोरे ॥ ३ ॥ ❀ ११९७ ❀ राग मल्हार ❀ आरोगत नागर नंद-किसोर । उमडि घुमडि चहुँ दिसि तें छायो सघन घटा घनघोर ॥१॥ न्हेंनी-न्हेनी वूँदन वरखन लाग्यो पवन चलत झकझोर। 'चतुर्भुज' प्रभु पातर ले भाजे सघन कुंज की ओर ॥ २ ॥ ❀ ११९८ ❀ राग मल्हार ❀ चहुँदिस टपकन लागी वूँदे । वहोछारन व्यंजन भीजेंगे द्वार पिछोरी मूँदे ॥१॥भोजन करत सीस धरि छतना याही सुखहित गूँदे । वहे सुचेत 'नंददास' प्रभु कोन कीच अव खूँदे ॥२॥ ❀ ११९९ ❀ राग मल्हार ❀ मोहन जेंवत छाक ग्वाल-

प्रभु तन मन भये स्याम धनि वह वाम जिन कजरा रंगाये हो ॥ २ ॥ ❀ ११८७ ❀ शयन दर्शन ❀ राग अडानो ❀ पिय तेरी चितवनि में कछु टौना । तन मन धन बिसरयो जबही तें देख्यो स्याम सलौना ॥ १ ॥ ढिंग रहिबे कों होत विकल मन भावत नाहिन भौना । लोग चवाव करत घर-घर प्रति धरि रहिये जिय मौना ॥ २ ॥ छूटि गई लोक-लाज सुत पति की और कहा अब हौना । 'रसिक' प्रीतम की बानिक निरखत भूलि गई गृह-गौना ॥ ३ ॥ ❀ ११८९❀ ॰ सहेरा धरे तब ॰

❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ बसौ मेरे नैननि में यह जोरी । नव दूलहे ब्रजराज लाडिलौ दुलहिनि नवल किसोरी ॥ १ ॥ नवल पाग सिर नवल सेहरो नवल छबि बरने ऐसो कोरी । 'हित हरिवंस' करत नौछावर देत पीतपट छोरी ॥ २ ॥ ❀ ११९० ❀ राग नट ❀ आज बने दूलहे श्री ब्रजराज । संग सोहत वृषभाननन्दिनी बडडे गोपसमाज ॥ १ ॥ रतन जटित को सीस सेहरो रतन पेच सिरताज । 'नन्ददास' प्रभु चलत मंद गति वारति आरति साज ॥ २ ॥ ❀ ११९१ ❀

॰ शयन में श्रीमस्तक पर मोर चंद्रिका धरे तब ॰

❀ शयन के दर्शन में ❀ राग बिहाग ❀ गिरिधरलाल बने रंग भीने ।टेक पिय के पाग केसरी सोहे । देखत रति पति को मन मोहे ॥१ ॥ तापर एक चंद्रिका धारी । प्यारी जु अपने हाथ सँवारी ॥ २ ॥ पिय के अरुन नयन मन भाये । प्यारी बहु विधि लाड लडाये ॥३॥ पिय के पीक कपोलन राजे । अधरनि अंजन रेखा साजे ॥ ४ ॥ पिय के उर मरगजी माल । बोलत सिथिल बचन नंदलाल ॥५॥ छबि पर 'रामदास' बलिहारी । अंग अंग राचे कुंज-बिहारी ॥ ६ ॥ ❀ ११९२ ❀ ॰ बादर बरसते होय वा दिन ॰

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ माई मेरो बहू नायक सों नेह । कहूं धूप कहुँ छांह जनावत कहूं बादर कहूँ मेह ॥१॥ मंद-मंद मुसक्याय स्याम घन नैननि करत सनेह । 'धोंधी' के प्रभु तुम बहुनायक कहूँ अंग कहुँ गेह ॥ २ ॥ ❀ ११९३ ❀

नित्य की सेवा में ऋतु-समयानुसार के अवशिष्ट रहे कीर्तन

वर्षाऋतु में ❀ जागवे के ❀ राग मल्हार ❀ उमडि घुमडि वादर आयेरी चहुँ दिसि तें जसोदा लालें जगाय। ग्वाल-बाल सब टेरत ठाडे वेगि चलिहु उठि धाय ॥ १ ॥ कबकी कहत वेगि उठि वेठहु बहु विधि विंजन धरे हैं वनाय। 'परमानंद' प्रभु मात वचन सुनि उठे लाल मुसिकाय ॥ २ ॥ ❀११९४❀ ❀ राग मल्हार ❀ घूमड रहे वादर सगरी निसा के अहो महरि लालें दीजे जगाय। वर्षा-रितु कहुँ वरसे अचानक वालक जाय डराय॥१॥ चिरैयन के चुंहचहात जसोदा करि अपुनो निरवरि घर-काज। दधि मंथन वैठी लावो दूध-दहीं घोस वढत व्रजराज ॥ २ ॥ वछरा छोर वलभद्र जगावहु दुहि-दुहि लावत हैं सव गाय। 'नंददास' लाल जगाय तिहिं छिन लीनो अंक जसोदा माय ॥ ३ ॥ ❀ ११९५ ❀ कलेऊ ❀ राग मल्हार ❀ वूँदन झर लायो आँगन जहाँ करत कलेऊ दोऊ भैया। भवन में आवो लाल संग सव लाओ वाल कहत जसोदा मैया ॥ १ ॥ भीजेगो वसन तन खेलवे कों सव दिन मेरो कह्यो मान लालन लेहों वलैया। 'परमानंद' प्रभु जननी कहत वात प्यावत मथि-मथि घैया ॥२॥ ❀ ११९६ ❀ छाक ❀ राग मल्हार ❀ आरोगत मोहन मंडल जोरे। व्यंजन स्वाद खरे ही लागत ज्यों गरजत घनघोरे ॥ १ ॥ न्हेंनी न्हेंनी वूँद सुहावनी लागत पवन चलत झकझोरे। वहोछारन की फुही परत अंग आवत जव ही सकारे ॥ २ ॥ देखो लाल गाय सव इत-उत वछरा तृन तोरे। श्रीगिरिधरलाल कों देखि महासुख 'कुंभनदास' तृन तोरे ॥ ३ ॥ ❀ ११९७ ❀ राग मल्हार ❀ आरोगत नागर नंद-किसोर। उमडि घुमडि चहुँ दिसि तें छायो सघन घटा घनघोर ॥१॥ न्हेंनी-न्हेनी वूँदन वरखन लाग्यो पवन चलत झकझोर। 'चतुर्भुज' प्रभु पातर ले भाजे सघन कुंज की ओर ॥ २ ॥ ❀ ११९८ ❀ राग मल्हार ❀ चहुँदिस टपकन लागी वूँदे। वहोछारन व्यंजन भीजेंगे द्वार पिछोरी मूँदे ॥१॥ भोजन करत सीस धरि छतना याही सुखहित गूँदे। वहे सुचेत 'नंददास' प्रभु कौन कीच अव खूँदे ॥२॥ ❀ ११९९ ❀ राग मल्हार ❀ मोहन जेंवत छाक ग्वाल-

मंडली मांह । झुमझुम रही देखि राधा सब कदंब की छांह ॥१॥ व्यंजन देत निहोरे कर-कर कोउ लेत कोउ करतजु नांह । 'नंददास' आस जूठन की फूले अंग न समाह ॥२॥ ❀ १२०० ❀ भोग सरवे को ❀ राग मल्हार ❀ भोजन भयो लाल नीकी विधि सों सघन कुंज की मांह । गरज गरज घन बरस्यो प्रबल अति कछु हम जान्यो नांह ॥ १ ॥ करि अचवन अब देखो व्रज-सोभा कदमखंड बन मांह ।'नंददास' प्रभु तुम चिरजियो हम नित जूठन खांह ॥२॥ ❀ १२०१ ❀ बीरी को ❀ राग मल्हार ❀ पान मुख बीरी राची हरि के रंग सुरंगे । एसी कृपा सदा हम ऊपर टारो जनि तुम संगे ॥१॥ हरि हम तुम बिन कौन काम के परत प्रेम में भंग । 'परमानंद' दूध में पानी ज्यों मिलिवो अंग में अंग ॥२॥ ❀१२०२❀शीतकाल में❀व्रतचर्या के❀राग रामकली❀ हरियस गावत चली व्रज-सुंदरि नदी यमुना के तीर । लोचन लोल बाँह जोटी कर श्रवनन झलकत बीर ॥१॥ बेनी सिथिल चारु कांधे परि कटि पट अंबर लाल । हाथन लिये करडी फूलन की उर मुक्तामनि माल ॥२॥ जल प्रवेस करि मज्जन लागी प्रथम हेम के मास । जैसे प्रीतम होय नंदसुत व्रत ठान्यो इहि आस ॥ ३ ॥ तब तें चीर हरे नंदनंदन चढे कदंब की डारि । 'परमानंद' प्रभु वर देवेकों उद्यम कियो है मुरारि ॥४॥ ❀ १२०३ ❀ ❀ राग रामकली ❀ बसन लिये चढि कदंब की डार । करत अनीत स्यामसुँदर तुम हम जल मांझ करत पुकार ॥१॥ सीत लगत कंपत तन ठाडी करि हो कृपा व्रजराजकुमार । तब नंदलाल कहत अबलन सों सुनि हो सकल व्रजनार ॥२॥ व्रत तुम्हारो भंग होत जिय जानि कियो उपकार । ऐसी कबहु न कीजे अब तें श्रुति मरयादा टार ॥ ३ ॥ पट दीने रुचि सों मनमोहन अंतर प्रीति परस्पर सार । 'कृष्णदास' गिरिधर जू की लीला सुकमुनि मुख विस्तार ॥ ४ ॥ ❀ १२०४ ❀ दीनता आश्रय को ❀ राग बिहाग ❀ दृढ़ इन चरनन केरो भरोसो० । श्रीवल्लभ नख चंद्र छटा बिनु सब जग मांझ अंधेरो ॥१॥ साधन और नहीं या कलि में जासों होत निबेरो । 'सूर' कहा कहे द्विविधि आंधरो विना मोल को चेरो ॥ २ ॥ ❀१२०५ ❀

❀ राग गौरी ❀ मुरली वारे साँवरे नेक मारग माहि बतावरे। संग न सहेली फिरों अकेली कित नंदीसुर गाँवरे ॥१॥ भूलि परी संकेत सघन वन हौं अबला कित जाऊं। मृगनयनी के वचन सुनत ही आइ मिले तिहिं ठाँऊं ॥ २ ॥ मारग मिले अंक भरि भेटे भलो वन्यो है दाँऊं। कहि 'भगवान हित रामराय' प्रभु राधा रमन जाको नाऊं ॥३॥ ❀ १२०६ ❀ राग जंगलो❀ अरी तुम कौन हो री वन में फुलवा वीनन हारी। रतन जटित को बन्यो वगीचा फूल रही फूलवारी ॥ १ ॥ कृष्णचंद्र वनवारी आये मुख क्यों न वोलो सुकुमारी। तुम तो नंदमहर के ढोटा हम वृषभानदुलारी ॥ २ ॥ या वन में हम सदा बसत हैं हम ही करत रखवारी। विनु बूझे वीनत हो फुलवा जोवन मदमतवारी ॥३॥ तव ललिता एक मतो उपायो सेन वताई प्यारी। 'सूरदास' प्रभु रस वस कीने विरह वेदना टारी ॥४॥ ❀ १२०७ ❀ ❀राग हमीर ❀ लाडिले गुमानी देखत दृगन अघानी। कुसुम कली हौं वीनन आई सघन लता अरुझानी ॥१॥ सोंधे सारी कमल वदन पर मधुप करत नक वानी। 'प्रभु 'कल्याण' गिरिधर छवि निरखत वालतिया छतियाँ सियरानी ॥ २ ॥ ❀ १२०८ ❀ **घैया** ग्वाल समे की ❀ राग विलावल ❀ जसोदा मथि-मथि प्यावत घैया। करि तवकडी धरत हैं आगे रुचि सों लेत कन्हैया ॥१॥वहोरि धरत हरि लेत हैं पुन-पुन सुंदर स्याम सुहैया। औट्यो दूध धरयो वेला भरि पीवत कान्ह कन्हैया ॥२॥ मन मोहन भोजन कों वैठे परोसत लेकर मैया। खटरस के प्रकार धरे सब निरखि 'रसिक' वलि जैया ॥३॥ ❀१२०९❀ राग गोरी सांझ की घैयां को ❀ घैया पीवत सुंदर स्याम। मथि-मथि देत मात यसोदा रुचि सों लेत घनस्याम ॥१॥ जल अचवाय वदन फिर पोंछ्यो आभूपन सब धरे उतार। सूक्ष्म भूपन रहे अंग प्रति सो छवि निरखि जननी वलिहार ॥२॥ दूधभात फिर दियो रोहिनी रुचि सों खात मनोहर वाल। जल अचवाय वीरी दई जननी यह छवि निरखत 'रसिक' निहाल ॥३॥ ❀१२१०

